यहग्रन्थ श्रीमल्लोंका गच्छान्तरीय प्रथम कहानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदायके जैनाचार्य गच्छाधिपती श्रीरत्नऋषिजी महाराजके सुशिष्य सरलस्वभावी मुनिश्री दगडुऋषिजी महाराज संग्रहित तथा अनुवादित —

रत्न अमोल मणि प्रकाशिका

※ अपर–नाम ※

आवश्यक निर्पक्ष सत्य बोध.

प्रथम–भाग.

अतिउत्तम विशेष उपयोगी विषयोंसे भरपूर

भव्यहितार्थ छपवाके प्रसिद्धकर्ता.

नवलमलजी सूरजमलजी धोका.

मुकाम–यादगीर. जिल्हा–गुलबुर्गा.

प्रथम आवृत्ति प्रत ५००, सर्वप्रत १०००,

सोलापूर 'सच्चिदानंद प्रेसमें' छापा.

श्री वीर संवत् २४४५ विक्रम संवत् १९७५

इसवी सन् १९१८ कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा

मूल्य सदुपयोग.

इस पुस्तकको उघाडेमुखसे, दिपकके प्रकाशमें वाजिंत्रके सहायसे इत्यादिक अयत्नासे पढनानही ?

श्रीगुरुभ्यो नमोनमः

समर्पण—पत्रिका.

परमपूज्यपाद—जैनाचार्य, गच्छाधिपती, बालब्रह्मचारी, सर्वज्ञ मार्गके सूर्य, चारित्र चुडामणि, मुनिमण्डल शिरोमणि, कवीवरेन्द्र, दयासिन्धु, शुद्धनिर्योहक, शुद्धाचारी, 'मम गुरुवर्य,' श्री श्री १००८ श्रीरत्नऋषिजी महाराज—

सोलापूरसें आपका कुशिष्य दगडुऋषि आपके पवित्र चरणारविंदमें अत्यन्त भक्तिभावसें सविनय 'तिख्खुत्ता' के पाठसें पांचुअंग नमायके वंदना=नमस्कार करके सुखशान्ति पूछताहुं, सो अहोकृपानिधान आपके मथे पर अनुग्रह दृष्टि कर आवधारीयेजी

और—सविनय नम्रप्रार्थना करताहुंकि—आपने मुज दासको संसार समुद्रसें तारनेकेलिये मेरा हाथपकडके मुझको बाहेर निकालके ज्ञानदान देकर मेरेपर अथाग उपकार कियाहै, औरभी विशेष उपकार करतेहो! वो उस उपकारके बोजेमें दबाहुवा मे यह पुस्तक आपके चरणोमें समर्पण करके कृतज्ञ (सफल) होताहुजी!

आपका कृपाभिलाषी दासानुदास—

प्रस्तावना और—आभार पत्रम्.



☞ मनुष्य जीवनका फल धर्महै ! विना धर्म—पशु और—मनुष्यमें क्या तफावतहै ? इसलिये वितराग =सर्वज्ञप्रभुके प्रणित शुद्धतत्त्वज्ञानके शिवाय धर्म हो शक्ता नहीं, "दशवैकालिक" सूत्रके चतुर्थ अध्ययनकी १०वी गाथामें भी कहाहैकि—' पढमं नाणं तओ दया ' अर्थात्-प्रथमज्ञान पीछे दया, सत्यज्ञानविना शुद्धक्रिया होतीनहीं, इसलिये सत्यतत्त्वज्ञानकी बहुत जरूरतहै, ज्ञानकेलिये गुरु और—पुस्तककी विशेष जरुरहै, गुरु गमसें पुस्तक पढनेमें ज्ञान होताहै !

इसलिये नवीन अभ्यासीयोंके विशेष उपयोगमें आवे, और—देव गुरु धर्मका जाणपणा सामायिक प्रतिक्रमन वगैरह क्रियाकालमें उनका उपयोग वाचनेमें तथा सिखनेमें अच्छीतरहमें लग है, इसलिये एक अतिउत्तम पुस्तककी जरुरीआत मालुम पडी—

मैं कुच्छ ऐसा विद्वान नहींहु, मैं एक सामान्य साधु हुं ! मम गुरुवर्य श्रीरत्नऋषिजी महाराजके कृपासें कुछ भाषारन लिखशक्ताहु, कितनेक शास्त्रमेंसें तथा कवीवरेन्द्र तिलोकऋषिजी अमोलकऋषिजी, कृत ग्रन्थोमसें छुटक २ विशेष उपयोगी अतिउत्तम-

ज्ञानका संग्रहकरके नवीन पाठीयो को बहुत उपकार करने वाला यह पुस्तक मैंनेलिखाहे । इसका प्रथम नाम " रत्न अमोल मणि प्रकाशिका. " रख्खाहै, उसका दो अर्थहै । प्रथमतो इस ग्रन्थमें संग्रहितकियाहुवा ज्ञान-रत्न अमोल मणिके माफक प्रियपाठक गणोके हृदयमें=आत्मामें प्रकाश करने वालाहै, इसलिये यह पोथीका नाम " रत्न अमोल मणि प्रकाशिका " है । और-दुसरा अर्थ २ महापरोपकारी सत्पुरुषोके नामका प्रकाश रुप यादगीरीकाहै, अर्थात्-प्रथमतो जैनाचार्य, गच्छाधिपती, वालब्रह्मचारी, चारित्र चुडामणि, पण्डितशिरोमणी, ज्ञानभानु, मम गुरुवर्य श्रीरत्नऋषिजी महाराजने मुझको सद्बोधदेकर महाद् सदाता संसार असारके फन्दमेंसें निकालकर ज्ञानादिक दान दीया-सो मेरेपर उनका तो अथाग उपकारहै । और-बालब्रह्मचारी परम पण्डित श्री अमोलकऋषिजी महाराजने मुझको वारंवार योग्य सलाह देतेरहे, औरभी देतेहै, सो उनका भी विशेष उपकार मानताहुं । और-घरवालासम्प्रदायके परमपूज्यपाद, प्रवर पण्डित, संतशिरोमणि श्री म-णिलालजी स्वामीजीने-मेरेकु मुंबई ठिकाणा-चिंचपोकली जैनस्थानकमें श्री वीर संवत् २४४०, इस्वी सन् १९१३ नवेम्बर, तारीख १२, शालिवाहन शके

१८३५, विक्रम् सवत् १९६०, कार्तिक शुक्ल १४ बुधवार सुबुकु ८ बजे श्रीसघ सामने–महाभयकर दुखद आवस्थामें देखके विशेष सहाय्यता देकर **मम** गुरुवर्य श्रीरत्नऋषिजी महाराजके नामसें मुझको सयम आरुढ कीया–सो मेरेपर उनका अथाग उपकारहै। इसलिये उपरोक्त तीनु महापरोपकारी सत्पुरुषोंके नामका समावेश यह पुस्तकके प्रथम नाममें कियाहै।

और–इस ग्रन्थमें जो निर्पक्ष सत्य ज्ञानहै, वो निर्पक्ष सत्य ज्ञानकी आत्मार्थी प्रियपाठक गणोको विशेष आवश्यकता समजके इस् ग्रन्थका अपर नाम '**आवश्यक निर्पक्ष सत्य बोध**' है।

☞ **पांच** सात ग्रन्थकी स्वाध्याय करनेसें जितना बोध होसकताहै, उतनाही बोध यह एकही ग्रन्थ वाचनेसें और–सिखनेसें होसकताहै, यौ तो सबी जिनवाणी अनुपम और–अमोलहै, परतु इस ग्रन्थको मनन और–धारण करनेसें बहुतही अधिक बोध होवेगा, क्योंकि–इस ग्रन्थके नवु प्रकरणहै, उसमें जो जो विषयहै, वो सब सक्षेपसें और–हिंदी सरल भाषामें लिखेगयेहै, इस पुस्तकमें कोन् कोन्स विषयहै? सो यह सर्व खुलासा आगे विषयानुक्रमणिका परसें मालुम होजायगा, सक्षेपमें कहेतो इतना ही हैकि–आत्मार्थी

प्रियपाठक गणो को मनन और धारण करने योग्य भ मेवा ज्ञान इसमें मौजूद है ! इसीलिये यह अमूल्य ग्रन्थहै, इसका मूल्य मेरी समझसें स्द्वर्तन मात्र है, यह इतना सिद्ध हुवा तो मै अपने परिश्रमको सफल समझुगा ! मै तो मदबुद्धिहुँ, परन्तु मुझ प्रियपाठक जिनवाणीके सहज रोचक होनेसें इस ग्रन्थकी रुचिरता आवश्यक वाचकाको बहुत पसन्द होवेगी !

इस पुस्तकका प्रथम प्रकरण सुधारनेमें लिंबडी सम्प्रदायके विद्वान मुनिमहाराज श्री गुलाबचदजी स्वामीजीने मुजको बहोत सहाय्य करीहै, इसलिये मैं उनका उपकार मानताहु ! और–मै जब शरीरसें बहोत अशक्त था तब परमपूज्यपाद श्रीरत्नचदजी महाराजके सम्प्रदायके वृद्धनिर्वाहक, आत्मार्थी मुनिश्री मोतीलालजी महाराजने मेरेको तन मनसें रूपमें विशेष साहाय्यता देके बहोत २ साताउपजाईहै, इसलिये मैं उनका भी बहोत २ उपकार मानताहु !

लि० सब सन्तोका दास—

दगडु ऋषि.

   

श्री " रत्न अमोल मणि प्रकाशिका "
अपर नाम ' आवश्यक निर्पक्ष सत्य बोध ' नामक ग्रंन्थका प्रथम् भागकी विषयानुक्रमणिका प्रारंभ

प्रकरण—दुसरा.

प्रकारण—तीसरा.

प्रकरण—चौथा.

प्रकरण—पांचवा.

प्रकरण—छट्टा [६ वा]

प्रकरण–सातवा.

इति श्री " रत्न अमोल मणि प्रकाशिका " अपर नाम ' अ वश्यक निर्पक्ष सत्य बोध ' नामक ग्रन्थका प्रथम-भागकी विषयानुक्रमणिका समाप्तम्.

सूचना — यह पुस्तक मंगाने वालोने टपाल खर्च बुक पोष्ट के लिये ०-॥ आनेका तिकीट निचेके पत्ते प्रमाणें भेजना चाहिये।

हामारा पत्ता.

गंगाराम रतनचंद भन्डारी.

जिल्हा- सोलापूर,
पोष्ट- सोलापूर सदर बजार,
ठिकाणा- लष्कर सदर बजार.
मुकाम- सोलापूर सदर बजार.

आपञ्च परमेष्टिभ्यो नमो नम

रत्न अमोल मणि प्रकाशिका.

* अपर नाम *

आवश्यक निर्पक्ष सत्य बोध,

प्रथम—भाग.

मङ्गलाचरणम्.

* अनुष्टुप्. *

नमस्कृत्य महावीरं । गौतमञ्च गणाधिपम् ॥१॥
लिख्यते बाल बोधाय । रत्नअमोलमणि प्रकाशिका
निष्पक्षपात बुध्याऽयं । ग्रन्थ सत्यस्य बोधकः ॥
नाम्नाऽऽवश्यक निर्पक्ष—सत्य बोधस्ततो मतः ॥२॥

प्रकरण—पहिला.

अरिहंत प्रभूके १२ गुण.

१ अनंत ज्ञान, २ अनंत दर्शन, ३ अनंत चारित्र, ४ अनंत तप, ५ अनंत बल वीर्य, ६ अनंत क्षायिक म्सयक्त्व, (समकित) ७ वज्रऋषभ नाराच संघयण, ८ सम चौरस सस्थान, (सठाण) ९चौतीस अतिशय, १० पैंतीस वाणी गुण, ११ एक हजार आठ उत्तम लक्षण, १२ चौसठ इन्द्रके वदनीक

☞ इस ग्रन्थका नामः—१रत्नऋषीजी महाराज, २अमोलकऋषीजी महाराज और ३मणिलालजी महाराज, यह ३महत उपकारी पुरुषोंके नामका प्रकाशरुप यादगीरी है.

पूज्यनीक * यह बारा गुण युक्त श्रीअरिहतप्रभुको मेरा नमस्कार हे.

अरिहंतप्रभुके ३४ अतिशय.

१ अरिहत प्रभुके मस्तकादिक सर्व शरीरके रोम (केश) नख मर्यादा उपरांत वढे नही.

२ अरिहंतप्रभुके शरीरको रज मैल प्रमुख किसीभी प्रकारका अशुभ लेप लगे नही.

३ अरिहतप्रभुके शरीरमें रक्त और–मांस गायके दुधसेंभी अति उज्वल और–मधुर होता है.

* और–कितनेक जने अनत चतुष्टय तथा अष्ट प्रतिहार्य यह मिलके १२ गुण कहते है. अब ए अष्ट प्रतिहार्य इस मुजब है १ अरिहत प्रभू–मणिरत्नमय सिव्हासनपर बिराजतेहै. २ अरिहतप्रभूके पिछे प्रभूके शरीरसें १२ गुणा उँचा आशोक वृक्ष शोभताहै. ३ प्रभुके शिरपर एकपरएक ऐसें तीन छत्र होतेहै. ४ प्रभूके दोनो तरफ चौविश जोडे चमर विंझे ५ प्रभूके पीठे चोटीके ठिकाणे 'भामंडल' रहता है ६ प्रभूके चारोंतरफ अचेत (निर्जीव) वैक्रिय फूलोंकी वृष्टि होती है ७ प्रभूके वाणीका विस्तार च्यारोंतरफ एकर योजनमें होता हे और ८ प्रभूके उपर आकाशमें साढीबारा क्रोड गैबी बाजे बाजतेहे.

४ अरिहंतप्रभूका श्वासोश्वास पद्म कमल जैसा सुगन्धी होता है.

५ अरिहंतप्रभु—आहार (भोजन) और निहार (दिसा=जगल) करे सो चर्मचक्षुवालेको देखनेमें आवे नही.

☞ यह ८ प्रतिहार्य युक्त प्रभू बारह परिषदामें बिराजतेहै तब परिषदा इसतरह बैठती है श्रावक श्राविका और विमानिक देवता ए तीन इशान कुणमें बेठतेहै साधु साध्वी और विमानिक देवोकी देवियों ए तीन अग्निय कुणमें बैठतेहै भवनपति बाणव्यतर ज्योतिषी ए तीन वायू कुणमें बेठतेहै भवन पतिकी देवी बाणव्यतरकी देवी ज्योतिषीकी देवी ए तीन नैऋत्य कुणमें बैठती है. (ए चार जातिके देवता चार जातिकी देवागना और चतुर्विध सघ इस तरह १२ जातकी परिषदा होती है और कोइ ऐसाभी कहते है कि चार जातिके देवता चार जातिकी देवागना ओर मनुष्य मनुष्यणी—तिर्यंच—तिर्यचणी, ऐसी १२ जातकी परिषदा • ☞ यह १२ जातकी परिषदाको अरिहत सर्वज्ञ प्रभू निर्पक्ष सत्य विनय मुल—दया मय धर्मका उपदेश देतेहै. उसवक्त समवसरणका थाट अलौकिक होताहै जिस क्षेत्रमें अन्य मतियोंका जोर ज्यादा होताहै. और

६ अरिहंतप्रभु–विहार करे तब उन्के आगे २ आकाशमें देदिप्यमान गरणाट शब्द करता चक्र चले और-प्रभू विराजे तब खडा रहै.

७ अरिहंतप्रभूके शिरपर आकाशमें तिन छत्र और-लंबो२ लटकती हुइ मोतियोंकी झालर युक्त दिखते है.

८ अरिहंतप्रभूके दोनो तरफ अति उज्वल कमलके तंतू, गायका दुध और-चादीके पत्रे जेसें

चहोत २ परिषदा आनेका सभव (अवसर=प्रसंग) होताहै तब देवता समवसरणकी रचना करते है. पहिला कोट चादीका बनाकर सोनेके कागूरे करतेहै. उस्के भीतर १३०० धनुष्यका अतर छोडके सोनेका कोट और रत्नोंके कागुरे बनातेहै. और–उस्के भितर १३०० धनुष्यका अतर छोटके रत्नोंका कोट और–मणिरत्नके कागुरे बनातेहै, अब पाहिले कोटमें चढनेके १०००० पक्तियें और–दुसरे–तिसरे कोटपर चढनेके पाच पाच हजार पक्तियें, यौं सर्व २०००० पक्तिये एकेक हाथके अतरसें है जिसके ५००० धनुष्य हुये, २००० धनुष्यका एक कोशके हिसाबसें २॥ कोशका उंचा समवसरण होताहै. (ऐसा दिगम्बर आमनाके ग्रन्थमें लिखाहै.)

रत्न जडीत दंडी युक्त चमर विझते हुये दिखते है.

९ अरिहंतप्रभू-जिहां२ बिराजते है. वहां२ मणिरत्नका-स्फाटिक जैसा अति निर्मळ देदिप्यमान सिंहके स्कंधके समान अनेक रत्नोंसें जडा हुवा अंधकारका नाश करनेवाला पाद पिठीका युक्त सिंव्हासन प्रभुसें ४ अंगुल निचे दिखता है.

१० अरिहतप्रभूके आगे छोटी२ सहस्र ध्वजा और रत्नस्थंभ युक्त इंद्रध्वजा दिखती है.

११ अरिहतप्रभू-जिहां२ खडे रहे अथवा विराजे वहां२ आशोक वृक्ष अनेक शाखा प्रतिशाखा पत्र-पुष्प-फल-सुगंध-छाया-ध्वजा पताका-करके सुशोभीत प्रभूके शरीरसें १२ गुणा ऊंचा दिखता है

१२ अरिहंतप्रभूके पिछे चोटीके ठिकाणे शरद ऋतुके झाज्वल्मान सूर्य मंडलकी तरह सूर्यसें १२ गुणा अधिक तेजस्वी अंधकारका नाश करनेवाला * 'भामंडल' रहता है

*गृन्थमें भी लिखा है कि 'भामडल'के प्रभावसें प्रभूके ४ मुख चारों दिशामें दिखता हें जिससें देशना (व्याख्यान) सुननेवाले सर्व जनोको ऐसा भास (मालुम) होता हे कि प्रभू हमारे सन्मुखही देख रहे है ऐसे ब्रह्माजीको चर्तुमुखी कहनेकाभी यही कारण होगा ?

१३ अरिहंतप्रभू-जिहां२ विचरतेहै वहां२ भूमि (प्रथवी) वहोत सम (वरोवर) अर्थात-खड्डे टेकडे रहित होती है.

१४ अरिहंतप्रभू-विचरे तब् रस्तेमें वब्बुळादिकके कॉटे उलटे होते है.

१५ अरिहंतप्रभू-जिहां२ विचरे वहां२ शीतकालमें उष्णता, और-उष्णकालमें शीत होकर ऋतु सर्वको सुखदायी होती है

१६ अरिहतप्रभू-जिहा२ विचरे अथवा विराजमान होवे वहां२ चारोंतरफ एक२ योजन (४ कोशका एक योजना) तक मंद-शितल सुगंधी वायु (पवन=हवा) चलती है जिसमें अशुचिमय सर्व वस्तु दूर होजाती है

१७ अरिहंतप्रभू-जिहां२ समोसरे(पधारे)वहां२ चारोंतरफ वारीक२ सुगंधी अचेत जलकी एक२ योजन प्रमाणें वृष्टि होती है. जिसमें धुल दट जाती है.

१८ अरिहंतप्रभू-जिहां २ विराजे वहां २ चौंतरफ देवताके वैक्रिय वनाये हुये अचित पंचवर्णी पुष्पकी वृष्टी ढींचण (गोडे) प्रमाणें एक२ योजनमें होती है. जिसके मुख उपर और-विंट नीचे रहते है.

१९ अरिहंतप्रभू-जिहां २ विचरे वहां २ अम-

नोज्ञ (खोटे) वर्ण गन्ध-रस स्पर्श उपसमें, अर्थात् नाश होजाते है

२० अरिहंतप्रभू–जिहा२ विचरे वहा१ मनोज्ञ (अच्छे) वर्ण गन्ध रस-स्पर्श-प्रकाश होते है.

२१ अरिहंतप्रभू–जब् देशना (व्याख्यान) देते है तब चौतरफ एक २ योजनतक प्रभुका शब्द सर्व प्रपदा बराबर श्रवण कर सके और-सर्वको वितरागप्रभुकी वाणी बहोत प्रिय लगती हे

- २२ अरिहतप्रभु–अर्धमागधी * (आधी मगध देशकी और-आधी सर्व देशकी मिली हुई) भाषामें देशना फरमाते हैं.

२३ अरिहतप्रभूकी-भाषाकों आर्य तथा अनार्य सर्व देशोंके द्वीपद अर्थात् मनुष्य पशु-पक्षी-सर्प इत्यादिक सब अपनी२ भाषामें समझते है

२४ अरिहतप्रभूकी–देशना सुनकर जाति वैर (जैसा के सिन्ह बकरीका, तथा बीली उदरेका इत्यादिक) और-भवान्तरके वैर विरोध सर्व नष्ट होजाते हैं

२५ अन्य दर्शनी और अन्यमति अरिहंतप्रभूको देखके गर्व=अभिमान छोडकर नम्र होते है

* 'भगव चरण अधमागधीए भासाए धम्ममाइक्खति'

२६ वादी प्रतिवादी विवाद करनेके लिये अरिहंतप्रभूके पास आते है. परंतु प्रभूको उत्तर देनेको अशक्त (असमर्थ) होते है.

२७ अरिहंतप्रभू-जिहां२ विचरते है. अथवा विराजते है. वहांसें चारों तरफ पचीस२ योजनतक 'इति' अर्थात् मुषक तीड-इत्यादिक जीवोंका उपद्रव नही होता है.

२८ अरिहंतप्रभू-जिहां२ विचरते है अथवा विराजते है वहांसें चारों तरफ पचीस२ योजनतक मरकी प्लेग हेजेकी बिमारी नही होती है.

२९ अरिहंतप्रभू-जिहां२ विचरते है अथवा विराजते है वहांसें चारों तरफ पचीस २ योजनमें स्वदेशके राजाका तथा शैन्यका उपद्रव नहीं होवे.

३० अरिहंतप्रभू-जिहां २ विचरे अथवा विराजे वहांसें चारों तरफ पचीस २ योजनमें परदेशके राजाका तथा शैन्यका उपद्रव नहीं होवे.

३१ अरिहंतप्रभू-जिहां २ विचरे अथवा विराजे वहांसें चारों तरफ पचीस २ योजनतक अति वृष्टि नहीं होवे

३२ अरिहंतप्रभू-जिहां २ विचरे अथवा विराजे वहांसें चारों तरफ पचीस २ योजनतक

नाष्टष्टि नहीं होवे

३३ अरिहंतप्रभू–जिहां २ विचरे अथवा विराजे वहांसें चारों तरफ पचीस २ योजनमें दुर्भिक्ष=दुष्काळ नहीं होवे

३४ जिहां-तीड महामारीका उपद्रव स्वचक्री परचक्री का भय, इत्यादि आव्वलका त्रास होवे वहां अरिहंतप्रभूके पधारनेसें सर्व उपद्रव शीघ्रसें (जलदीसें) नाश होजावे ! और-जिहांतक वहांपर प्रभु विराजते है. वहांतक नवा उपद्रव नहीं होता है।

अरिहंत प्रभुकी वाणीके ३५ गुण. *

१ अरिहत सर्वज्ञ प्रभु संस्कार युक्त वचन बोले.

२ अरिहंतप्रभु–उँच स्वरसें बोले जिसको चारों तरफ एक २ योजन तक बैठी हुई प्रपदा अच्छी तरहसें श्रवण करती है

३ अरिहंतप्रभु–सादी भाषामें बोले, परंतु मान-

* अब–अरिहतप्रभुके वाणीके ये ३५ गुणोंके तरफ हरएक उपदेशकको आवश्य ध्यान लगाना चाहिये, युरोपीयन वक्ताओं श्रोतागणपर प्रबल असर करते है, उसका यह सबब हैकि-वे लोक उपदेश देनेकी रीतिका अभ्यास करते है !

पूर्वक शब्दोंमें बोले, 'रे, तु!' इत्यादि तुच्छकार वाचक शब्द नही बोले.

४ जैसे आकाशमें महा मेघका गर्जारव होताहै. तैसेंही अरिहंतप्रभुकी वाणीभी गंभीर होतीहै. और वाणीका अर्थभी गंभीर=गहन=उंडा होताहै, अर्थात उच्चार और तत्व, ए दोनोंमें गंभीर वाणी बोलतेहैं.

५ जैसें कोइ गुफामें तथा शिखर बन्ध प्रसादमें जाकर बोलनेसे प्रतिछंद अर्थात् प्रतिध्वनि होतीहै, वैसेही अरिहत सर्वज्ञ प्रभुकी वाणीभी प्रतिध्वनी करतीहै. (Thundering Tone.)

६ अरिहंतप्रभू-सरस अथवा स्निग्ध वचन बोले

७ अरिहंतप्रभु-राग युक्त वचन बोले, ६ राग और ३० रागणीमें उपदेश देवे, जिससें श्रोतागण तल्लीन होजावे (Harnmonious Tone) जैसें कि-विणासें मृग, और-पुंगीसें-सर्प, तल्लीन होताहै. वैसेंही प्रपदा खुश होतीहै.

☞ सुचनाः—यह सात अतिशय उच्चारके बारेमें कहे अब अर्थ सम्बन्धी अतिशय कहतेहै

८ अरिहंतप्रभु-थोडे शब्दमें बिशेष अर्थका समास करके बोले. इसलिये प्रभुके वाक्योंको 'सूत्र' कहे जातेहै !

९ अरिहंतप्रभू-परस्पर विरोध रहित वचन बोले, एक वक्त 'अहिंसा परमो धर्म' ऐसा कहकर, फिर "धर्म निमित्ते हिंसा करनेमें दोष नही" ऐसा विरोधवाला वाक्य (वचन)प्रभू कभी नही बोलतेहै

१० अरिहंतप्रभु-जुदा २ अर्थ प्रकाशे तथा जो परमार्थ चलाहै उसीको पूरा करके, फिर-दूसरा समास प्रकाशे, परंतु-गरबड करे नहीं

११ अरिहंतप्रभु-संशय रहित बचन कहे. और-ऐसें खुलासेसें फरमावेकि-सुननेवालेको बिलकुल सन्देह नहीं रहे.

१२ अरिहंतप्रभू-दोप रहित वचन बोले, अर्थात्-स्वमति-अन्यमति तथा बडे २ पंडित जनभी प्रभुके वचनमें किंचित् मात्रभी दोप नही निकाल सके

१३ अरिहंतप्रभू सर्वको सुहाता*वचन कहे कि-जिसको सुनतेही श्रोताजनका मन एकाग्र होताहै

१४ अरिहंतप्रभु-देश-काल उचित बोले, अर्थात बडे विचक्षणतासें समय विचारके बोले !

१५ अरिहंतप्रभु-मिलते वचन कहे. अर्थका विस्तारतो करे., परतु अट्टम् सट्टम् कहकर वक्त पूरा

* मनुभी कहतेहैकि- " सत्य ब्रूहि प्रिय ब्रूहि अर्थात्-सत्य ऐसा बोलोकी जो सुननेवालेको प्रिय लगे,

नही करे !

१६ अरिहंतप्रभू–तत्व ज्ञान प्रकाशे. अर्थात्–जीवादिक नव पदार्थका स्वरूपसें मिलता वचन कहे. तथा सार२ कहे. असारको छोड देवे !

१७ अरिहंतप्रभु–संक्षेपसें कहे. अर्थात्–पदके अगाडी दूसरा पद थोडेमें पूरा कर देवे तथा निःसार बात. और-संसारीक क्रियादिककी बात थोडेमें पुरी करे उसका विस्तार नही करे.

१८ अरिहंतप्रभू–बात रुप कहे. परंतु ऐसा खुला अर्थ प्रकाश करेकि छोटासा बालकभी मतलब समझ लेवे !

१९ अरिहंतप्रभु–स्वश्लाघा और परनिंदा रहित वाणी प्रकाशे. देशनामें अपनी स्तुती. और परकी (अन्यकी) निंदा नहीं करे ! (पापकी निंदा करे, परंतु पापीकी निंदा नही करे.)

२० अरिहंतप्रभू–मिष्ट मधुर वाणीसें उपदेश देवे. जैसें दूध और-मिश्री मिष्ट, मधुर, होतीहै, उससेंभी अधिक प्रभुकी वाणीमें मिष्टता और माधुर्यता होतीहै, इसलिये श्रोताजन व्याख्यान छोडकर जाना पसन्द नहीं करतेहै.

२१ अरिहंतप्रभू–किसीकोभी मार्मिक वचन

नहीं बोले. और कोइकीभी गुह्य (गुप्त) बात खुली होवे ऐसी बात नहीं करे.

२२ अरिहंतप्रभू–दुसरेकी योग्यता देखकर गुणकी प्रशँसा करे परंतु कोइकीभी खुशामदी नही करे, और-योग्यतासें अधिक गुण नहीं कहे

२३ अरिहंतप्रभू–सार्थ धर्म प्रकाशे जिससें परोपकार होवे तथा आत्मार्थ सिद्ध होवे ऐसा फरमावे

२४ अरिहंतप्रभू–अर्थका तुच्छपणा नही करे अर्थात् छिन्न भिन्न करके नही फरमावे !

२५ अरिहंतप्रभू–शुद्ध वचन कहे, अर्थात् व्याकरणके * नियमानुसार शुद्ध भाषा प्रकाशे

२६ अरिहंतप्रभू–मध्यस्थपणे वाणी प्रकाशे अर्थात्-बहोत जोरसेंभी नही तथा बहोत जलदीसेंभी नही. और-बहोत धीरेसेंभी नहीं इस तरह वाणी प्रकाशे

---

* व्याकरणकी कितनी जरूरत हे सो इसपरसे ध्यानमें लेना चाहिये, अशुद्ध वाणीमें अर्थ हितकारक होनेपरभी श्रोतागणके हृदयमें बात जचती (ठसती) नहीं है, इसलियें उपदेशक वर्गको लाजीमहै कि वितराग सर्वज्ञ प्रभुके गुणोका अनुकरण करना, और व्याकरण पढना योग्यहै !

२७ अरिहंतप्रभुकी-वाणी श्रोताजनोंको चमत्कारीक लगेकि "हा हा! प्रभुके फरमानेकी क्या चातुरीहै और-क्या शक्ति है ?"

२८ अरिहंतप्रभु-हर्ष युक्त वाणी प्रकाशे. जिससें सुननेवालेको हुवे हुवे रस प्रगमें.

२९ अरिहंतप्रभु-विलंब रहित वाणी प्रकाशे बिचमें विश्राम नहीं लेवे.

३० सुननेवाला जो प्रश्न मनमें धारकर आया होवे उसके प्रश्नका विना पूछेही खुलासा होजावे. इसी तरह अरिहतप्रभु-वाणी प्रकाशे.

३१ अरिहतप्रभू-कोइकोभी अपेक्षा वचन नहीं कहे एक वचनकी अपक्षासें दुसरा वचन कहे और-जो परमार्थ प्रभु फरमावे ओ श्रोताजनोके हृदयमें हुवे हुव ठस जावे.

३२ अरिहतप्रभू-अर्थ-पद-वर्ण-वाक्य-सर्व जुदे २ फरमावे.

३३ अरिहंतप्रभू-सात्त्विक वचन प्रकाशे, इंद्रादिक जो वडे २ तेजस्वी प्रतापी आजावेतोभी डरे नही.

३४ अरिहंतप्रभू-जो अर्थ फरमातेहै उसकी जिहांतक सिद्धि नहीं होवे वहांतक दूसरा अर्थ

प्रकाशे नही एक बात द्रढ करके फिर-दूसरी बात प्रकाशे.

३५ अरिहंतप्रभु-उपदेशमें चाहे कितनाभी लंबा समय चला जावे तोभी थके नही. उत्साह वढताही रहे

अरिहंतप्रभू १८ दोष रहितहै.

१ मिथ्यात्व नही-श्रीअरिहत सर्वज्ञ प्रभूके समक्षमें जो जो पदार्थ आयेहै ओ सब (सर्व) सत्यहै. अर्थात् जैसे पदार्थहै वैसाही उनका श्रद्धानहै परंतु बिलकुल विपरीत नहीहै

२ अज्ञान नही-सर्व लोकालोककी कोइभी वस्तु अरिहंतप्रभुसें गुप्त (छानी) नहीहै. सर्व चराचर पदार्थको जान रहेहै, और-देख रहेहै.

३ मद नही-अरिहंतप्रभु-सर्व गुण सम्पन्न होनेपरभी सब् तरहके अभिमानसें रहितहै. क्यौंकि 'सम्पूर्ण कुम्भो न करोति शब्दं' सम्पूर्णताका येही चिन्हहै सो सत्यहै. और-अरिहत सर्वज्ञ प्रभु मद=गर्व=अहंकार रहित होकर "विनयवंत भगवत कहावे. (तो भी) ना काहूंको शिश नमावे." अर्थात्-प्रभु विनयके सागर होकेभी किसीकी खुशामंदी नही करतेंहै, और-लघुताभी वताते नहीहै.

४ क्रोध नही-अरिहंतप्रभू महा क्षमाके सागरहै. " क्षमा सूरा अरिहंता " ऐसा कहतेहै सो सत्यहै.

५ माया नही-अरिहंतप्रभू सदा सरळ स्वाभावी =निष्कपटी रहतेहै.

६ लोभ नही ज्ञान रुप अखूट लक्ष्मीका भंडार श्रीअरिहंतप्रभूके पासहै ऐसें सर्वज्ञ दिनदयाळ प्रभूको किसीभी प्रकारका लोभ नही होताहै

७ रति नही-अरिहंतप्रभू मनोज्ञ वस्तुके संयोगसें हर्षित नही होते हैं. क्योंकि- ओतो, 'वितरागदेवहै' और-अवेदी=निष्कामीहै, इसलिये उनको रति मात्रभी ' रति ' नही है.

८ अ रति नही-अरिहंतप्रभू अनिष्ट=अमनोज्ञ वस्तुके संयोगसें किंचित् मात्रभी खेद उत्पन्न नही होताहै.

९ निद्रा नही-अरिहंतप्रभूके दर्शना वरणीय कर्मका क्षय होनेसे निद्राका नाश किया है. प्रभूतो सदाकाल जाग्रतही रहतेहै !

१० शोक नही- अरिहंतप्रभू-भूत -भविष्यत् वर्तमान. यह ३ काळके ज्ञात होनेसें उनको किसीबातका आश्चर्य नहीहै. और-किसीबातका शोकभी नहीहै.

११ अलिक नही–अरिहंतप्रभू कभी झुट नही बोले और–उनका वचनभी नही पलटे. प्रभू एकांत सत्यके प्रकाशकहै ?

१२ चोरी नही–अरिहंतप्रभु कोइकीभी वस्तु आज्ञा बिना ग्रहन नही करे

१३ मत्सर भाव रहित– जिनेश्वर देवसें अधिक गुणोका धारक कोइभी नहीहै तोभी गोशालावत् कोइ ढोंग करके अपनी प्रभुता बडावे. तोभी अरिहंत सर्वज्ञ प्रभु मत्सर भाव कभी धारण नही करतेहै.

१४ भय नही–अरिहतप्रभु. ७ प्रकारके भयसें रहितहै. १ इहलोक भय. (मनुष्यको मनुष्यका भय) २ परलोक भय (मनुष्यको तिर्यंचका तथा देवताका भय.) ३ आदान भय (धनादिक लेन देवका भय) ४ अकस्मात भय ५ आजीविका भय. ६ मरण भय. ७ पूजा श्लाघाका भय, (अपकीर्तिका भय) यह सात भय प्रभुको नहीहै. इन सब भयसें प्रभू विरक्तहै !

१५ प्राणी वध नही करे.–अरिहतप्रभू महादयालुहै. प्रभु सर्वथा प्रकारे त्रस- थावर जीवोंकी हिंसासें निवर्तेहै प्रभुतो सदा "माहणो माहणो"!

(कोइभी जीवको मतमारो. मतमारो) ऐसा उपदेश फरमातेहैं, अर्थात्—प्रभू किंचित् मात्र हिंसाकी सम्मतिभी नही देतेहै!

१६ प्रेम नही—अरिहंतप्रभुने शरीर स्वजनोंकातो त्याग कर दियाहै. फिर-कोइपर प्रेम करनेकातो कुच्छभी कारणही नही रहा. और-वंदनीक तथा निंदनीक. यह दोनोकोभी समान गिनतेहै. ऐसा नहीं हैकि जो पुजा (वंदना) गुणग्राम सेवा -भाव भक्ति करे उसपर तुष्टमान होकर उसका कार्य सिद्धि करें? और-जो आशातना करे उसको कुच्छ दुःख देवे? ऐसा. नही. नही! निरागी प्रभू पूजा श्लाघा नहीं इच्छते हैं. नहीं कीसी प्रकारका फल देतेहै!

१७ क्रीडा नही—अरिहंतप्रभू सर्व प्रकारकी क्रीडासें निवृत्त हुएहै, गाना (गायन) बजाना-रास खेलना-नाचना रोशनी (दिपक) प्रमुख करना-मंडप बनाना-फल फुल चढाना, धूप दीपसें भोग लगाना, इत्यादिक हिंसक क्रियासें प्रभूको प्रसन्न करनेवाले लोक बडी=भारी मोहदिशामेंहै, क्योंकि सर्व प्रकारकी क्रीडासें प्रभु निवृत्त हुएहै!

१८ हास्य नही—हास्यतो कोइ अपूर्व वस्तु दे-

खनेसें अगर सुननेसें आताहै, परंतु सर्वज्ञ अरिहंतप्रभुसेंतो कोइभी वस्तु गुप्त नहीहै. इसलिये कोइ वस्तु या कोइ वचन प्रभूको अपूर्व और आश्चर्यकारक नहीं लगतीहै. इसलिये प्रभुको हँसनेका क्या कारणहै ?

तीर्थंकरके चिट्टी अंगुलीका बल.

१२० योधेका बल. एक घोडेमें, १२ घोडेका बल. एक पाडा (भैंसा=रेटा)में, १५ पाडेका बल एक हाथीमें, ५०० हाथीका बल. एक केशरी सिंव्हमें, २००० केशरी सिंव्हका बल, एक अष्टापद पक्षीमें, १० लाख अष्टापद पक्षीका बल. एक बलदेवमें, २ बलदेवका बल. एक वासुदेवमें, २ वासुदेवका बल एक चक्रवर्तीमें, क्रोड चक्रवर्तीका बल एक देवतामें, क्रोडदेवताका बल एक इंद्रमें, ऐसें अनंते इंद्र मिलकरभी श्रीतीर्थंकर प्रभुकी चिट्टी अंगुलीको नही नमा सक्तेहैं.

सिद्ध भगवंतके ८ गुण.

१ ज्ञाना वरणीय कर्मके क्षय होनेसें अनंत ज्ञानी हुये. जिससें लोका लोककी सर्व रचना जानतेहै,

२ दर्शना वरणीय कर्मके क्षय होनेसें अनंत दर्शी हुये. जिससें लोकालोकका स्वरूप हस्तामलकी

तरह देख रहेहै, ३ वेदनीय कर्मके क्षय होनेसें निराबाध (व्याधी= वेदना रहित) हुये, ४ मोहनीय कर्मके क्षय होनेसें अगुरु लघु (भारीपणा. हल्केपणा रहित) हुये, ५ आयुष्य कर्मके क्षय होनेसें अजरामर (जरा=वृद्धपणा. और-मृत्यू रहित) हुये, ६ नाम कर्मके क्षय होनेसें अमूर्ती (निराकार) हुये, ७ गोत्र कर्मके क्षय होनेसें खोड (अपलक्षण=दोष) रहित हुये, ८ अंतराय कर्मके क्षय होनेसें अनत शक्तिवंत (खामी रहित) हुये ॥ यह ८ गुणके धारक सिद्ध-भगवंतको मेरा नमस्कारहै,

आचार्यजीके ३६ गुण.

पांच महाव्रत पाले, पांच आचार पाले, पांच समिति और-तिन गुप्ति करके सहित. पांच इंद्रि-य वशकरे. नववाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य पाले. और-चार कषाय वर्जे ॥ यह ३६ गुणके आचार्यजीको मेरा नमस्कारहै

उपाध्यायजीके २५ गुण.

इग्यारे अगके भणनहार, ते इग्यारे अंगके नाम. १ श्रीआचारंगजी, २ सुयगडायंगजी,

३ ठाणांगजी, ४ समवायगजी ५ विवहा पन्नति (भगवती) जी. ६ ज्ञाता धर्मकथाजी. ७ उपासक दसांगजी ८ अतगड दसांगजी. ९ अनुत्तरो ववाइजी १० प्रश्नव्याकरणजी ११ विपाक सूत्रजी. तथा १४ पूर्वके पाठी –

ते १४ पूर्वके नाम.

१ उत्पादपूर्व २ अग्रणीयपूर्व ३ वीर्यप्रवादपूर्व. ४ अस्तिनास्ति प्रवादपूर्व ५ ज्ञानप्रवादपूर्व. ६ सत्यप्रवादपूर्व. ७ आत्मप्रवादपूर्व ८ कर्मप्रवादपूर्व. ९ प्रत्याख्यान (पच्चख्खाण) प्रवादपूर्व १० विद्याप्रवादपूर्व. ११ कल्याणप्रवादपूर्व. १२ प्राणप्रवादपूर्व १३ क्रियाविशालपूर्व. १४ लोकबिंदुसारपूर्व. ॥ इग्यारे अंग और–ग चवदापूर्व मिलके २५ गुणके धारक उपाध्यायजीको मेरा नमस्कार है.

दुसरे तरह उपाध्यायजीके २५ गुण.

इग्यारे अंग, तथा बारमा 'द्रष्टीवादजीसूत्र,' जिस्में चउदे पूर्वके पाठक, चरण सित्तरी करण सित्तरीके गुण युक्त, तथा आठ प्रभावनासें पवित्र जैनधर्मको दीपावे, और–तिनें योग वशमें करे॥

यह २५ गुणके उपाध्यायजीको मेरा नमस्कारहै.

तीसरे तरह उपाध्यायजीके २५ गुण.

इग्यारे[११] अंग. बारा उपांग[२३] चरण[२४] सित्तरी करण[२५] सित्तरी विशुद्ध पाळे ॥ यह २५ गुणके उपाध्यायजीको मेरा नमस्कारहै

साधुजीके २७ गुण.

५ पांच महाव्रतके पाळणहार. १० पांच इंद्रियोंके जितणहार, १४ चार कषायके टालणहार. १५ भावसचे १६ करणसचे, १७ जोगसचे, १८ क्षमावंत, १९ वैराग्यवंत, २० मन समा धारणया, २१ वय समा धारणया, २२ काय समा धारणया, २३ ज्ञान सम्पन्न, २४ दर्शण सम्पन्न, २५ चारित्र सम्पन्न. २६ वेदणी समा अहियासनिया. २७ मरणांति समा अहियासनिया ॥ यह २७ गुणके धारक साधुजीको मेरा नमस्कारहै.

१७ प्रकारे संयम.

'संयम'के सत्तरे प्रकार—हिंसा. झुट चोरी. मैथुन परिग्रह ए पांच आश्रवसें निवर्ते तथा श्रुतइंद्रिय चक्षुइंद्रिय घ्राणइंद्रिय रसइंद्रिय स्पर्श ॥ ए पांच इन्द्रि वशकरे. और—क्रोध. मान

माया, लोभ, ए चार कषायसें निवर्ते, ॥ मनसे किसीकाभी बुरा नही चिंतवे. वचनसे कोइभी प्रकारका झुट नही बोले, काया (शरीर) को अयत्नासें नहीं प्रवर्तावे, यह तीन दंडसें निवर्ते॥ यह १७ प्रकारे संजम हुवा !

दुसरी तरह १७ प्रकारे संमय.

१ 'पृथ्वी काय संजम'–पृथ्वी (मट्टी) को एक जवारी जितनेसें कंकरमें असंख्याता जीवहै, उस्मेंका एकेक जीव निकलकर कबूतर जीतना शरीर बनावेतो लक्ष योजन (जोजन) के जंबुद्वीपमें नही मावे, ऐसा जीवोका पिंड जानके मुनि किंचित् मात्र दुःख नही देवे, संघट्टाभी नही करे तो फिर–मकान बाधनेका वगैरा जिस २ कामोंमें पृथ्वीकायकी हिंसा होती होवे ऐसा उपदेश वरनातो कहां रहा ?

२ 'अप काय संयम'–अप (पाणी) के एक बुंदमें असंख्याता जीवहै उस्मेंका एकेक जीव निकलकर सरसव जित्नी काया करेतो लक्ष योजनके जंबूद्वीपमें नहीं मावे. ऐसा जीवोंका पिंड जानके मुनि पाणीका संघट्टाभी नही करे तो फि

स्नानादिकका उपदेश करनातो कहा रहा? पृथ्वीसें पाणीके जीव सूक्ष्महै.

३ 'तेउ काय संयम'–तेउ (अग्नि)के एक तिणगियामें (तिणखलामें) असंख्याता जीवहै. उस्मेंका एकेक जीव निकलकर खसखस जित्नी काया करेतो लक्ष योजनके जंबूद्वीपमें नही मावे, ऐसा जीवोंका पिंड जानके मुनि अग्निका संघट्टाभी नहीं करे, तो फिर–अग्नि प्रजालना, धुप खेवना, रोशनी कराना. इत्यादिक सावज्ज उपदेश करनातो कहा रहा? पाणीसें अग्निके जीव सूक्ष्महै.

४ 'वाउ काय संयम.'–वायु (हवा) के एक झपटमें असंख्याता जीवहै. उस्मेंका एकेक जीव निकलकर वडके बीज जित्नी काया करेतो लक्ष योजनके जंबूद्वीपमें नही मावे ऐसा जीवोंका पिंड जानके मुनि हवाकी घात होवे ऐसा कार्य नहीं करे, तो फिर-पखा लगाना वगैरा उपदेश करनातो कहां रहा? अग्निसें हवाके जीव सूक्ष्महै.

५ 'वनस्पति काय संयम'–वनस्पति (हरी लीलोतरी) कितनीकके एक शरीरमें एक जीवहै (अनाज. बीज. प्रमुख) कितनीक लिलोतरीमें संख्याते-असंख्याते जीवहै (हरी, पत्र, शाका-

प्रमुख) कितनीक लिलोतरीके एक जीवका श-रीरमें अनंत जीवहै. (कंद मुल. तथा कोमल वन स्पति प्रमुख) ऐसा जीवोंका पिंड जानके मुनि महाराज संघट्टाभी नही करतेहे तो फिर–फल फु-लादिकका छेदन भेदन करनेका उपदेश देनातो कहा रहा ?

☞ अब कोई ऐसा कहेकि पृथव्यादिक पाच स्थावरोंके जीवोंमें हलन चलनादिक शक्ति नहीं है तो फिर–उनको दुःखभी कहासे होवे ! उनका समाधान ' श्रीआचारांग सूत्र ' के पहिले अध्य-यनके दुसरे उद्देशेमें कहाहैकि–किसी (कोइ) जन्मसे अन्धा, बहिरा, गुंगा, असमर्थ पुरुषको कोई निरदयी पुरुष उसके अंग उपांग पावसे (प-गसे) लगाकर मस्तक तक शस्त्रसे छेदन भेदन करेतो उस प्राणीको पीडा (दुःख) कैसी हो-तीहै ? सो उसकाही जीव जाने तथा सर्वज्ञ (के-वलज्ञानी) जानतेहै. परंतु ओ प्राणी कोइभी तर-हसें अपना दुःख दुसरेको कह सक्ता नहीहै तैसे ही पाच स्थावरोंके संघट्टसे उनको असह्य वेदना होतीहै. उन्को दरशानेकी सत्ता नहीहै. परतु क्या करे बिचारे ? कर्मोदयसे परवश पडेहै. ऐसे महा

दुःखी प्राणी इन्को अशरण अनाथ जानके मुनि निजात्माकि तरह रक्षा करतेहै.

६ ' बेइंद्रिय संयम '–बे (दो) इंद्रिय (काया=शरीर और–मुख वाले–लट्ट कीडे प्रमुख.)

७ ' ते इंद्रिय संयम '–तिन इंद्रिय (काया, मुख, और नाक वाले–जूँ. लिख किडी. चाचण, खटमल, प्रमुख)

८ ' चौरिंद्रिय '– चार इंद्रिय (काया, मुख नाक और–आँख वाले–डाँस मख्खी, मच्छर तीड पतंग विच्छु, खेकडा, प्रमुख.) इन विकलेंद्रिय जीवोंकी रक्षा करे

९ 'पचेंइद्रिय संयम'–पांच इंद्रिय (काया, मुख नाक आँख और–कानवाले–जीवोंके मुख्य चार भेद १ नारकीके जीव, २ तिर्यच=पशू पक्षी साप प्रमुख जीव. ३ मनुष्य. ४ देवता) इनकी रक्षाकरे

यह ५ स्थावर और ४ त्रस प्राणी इन सबको मुनि तिन करण तिन जोगसें किंचित् मात्रभी दुःख नही उपजावे यथा शक्ति रक्षा करे.

☞ कितनेक लोक १ आयुष्य निभानेको (शरीरके निर्वाह अर्थे) २ यश किर्ती मिलानेको (उत्सवादिक कार्यमें) ३ मानके मरोडेसें (पूजाके

अर्थे) ४ जन्म मरणसें छुटनेको (धर्म=मोक्षकी इच्छासें) ५ दुःखसें छुटनेको ॥ इसने कारण इन छेइ कायाकी हिंसा आप=स्वताहा करतेहै, और दुसरे पास करातेहै. और जो कोइ छे काया जीवोंकी हिंसा करतेहै उस्को भला जानतेहै वो प्राणी महा मुढ (मूर्ख) है. यह हिंसा सुख निमित्त करतेहै परंतु आगमिक=आगु बहोतर दुःख रूप होवेगी, ऐसा श्री वीर प्रभुने ' आचारांग ' सूत्रके पहिले अध्ययनमें फरमायाहै.

१० 'अजीव काय संयम'—अजीव (निर्जीव) वस्तू-वस्त्र पात्र पुस्तक प्रमूखकोभी अयत्नासें नही वापरे कारण जिस्की मुदत पके पहिले उसका विनास होजाय, क्योंकि हर कोइभी वस्तु विना आरंभसें नही निपजतीहै और—गृहस्थको मुफत नही मिल्तीहै. प्राणसें प्यारी वस्तूकोभी गृहस्थ धर्मार्थ साधु मुनिको दे देवे,अर्थात्—आर्पण करतेहै. तो साधु मुनिको योग्यहैकि दुसरी अच्छी वस्तुके लालचसें उस वस्तुका विनास नही करना चाहिये,

११ ' पेहा संयम '—हर कोइभी वस्तु विना देखे वापरना (उपयोगमें लेना) नहीं इससें

अपने देहकी (शरीरकी) भी रक्षा होतीहै. और-विष युक्त प्राणीसें बचावभी होताहै.

१२ ' उवेहा संयम '-मिथ्यात्वी और-भृष्टाचारीयोंका विशेष समागम (हमेशाका परिचय) वर्जे तथा मिथ्यात्वियोंको समदृष्टी (जैनी) बनावे. जैनी गृहस्थको साधुपणा समजावे. और-धर्मसें डिगे उनको पीछे दृढ करे.

१३ ' पमज्जणा संयम '-अप्रकाशित भूमिमें तथा रात्रिको रजोहरणसें पृथ्वी पूंजे (झाडे) विना चले नही तथा वस्त्र पात्रमें तथा शरीरपर कोइ जीव दृष्टी आवे. या मालुम् पडेतो गोच्छा (पुंजणी) सें पूंजकर अलग (दूर) करदेवे.

१४ ' पारिठावणीया संयम ' मल मूत्र आदि परठावणेकी जगा. जिहां हरी लीलोतरी तथा लीलन फुलन दाणे बीज तथा हर कोई जीव जंतु कीडी प्रमुख नही होवे वहा यत्ना सहित परठावे.

१५-१६-१७ ' मन वशमें रखे, वचनसें झुट नही बोले. काया यत्नासें परवर्तावे, यह १७ प्रकारका संयम हुवा, सो उपाध्यायजी सम्पूर्ण तरह पालतेहै. ॥ इति ॥

१० प्रकारे यती=साधुका धर्म.

गाथा.

खंति मुत्तिय अज्जव, मद्दव लाघव सच्चेय ॥
संयम तव आकिंचण बंभचेर वासीयं ॥१॥

अर्थ—१खंति=क्षमावंत, मुत्ति=निर्लोभता, ३ अज्जव=ऋजुता=सरलता, ४ मद्दव=मृदुता=नम्रता=निरऽभिमानी, ५ लाघव=लघुता=हालकपणा धारण करना, ६ सच्चेय=सत्यता, ७ संजम=संयम, ८ तव=तप, ९ आकिंचण=परिग्रहपणा रहित, १० बंभ=ब्रह्मचर्य ॥ इति ॥

ब्रह्मचर्यकी ९ वाड उपदेश युक्त.

☞ सूचनाः जैसें कृषाना आपने खेतके रक्षाके वास्ते काँटेकी वाड (कुपाट) लगाताहै. वेसेंही ब्रह्मचारी अपने ब्रह्मचर्य (शील)व्रत रूप अति पवित्र फलित क्षेत्रकी स्वरक्षाकेलिये नव नव रूप ९ वाड करतेहैं.

१ पहिली वाडमें-ब्रह्मचारी पुरुष मनुष्यणी तिर्यंचणी और नपुंसक जिहां रहना होवे वहां (उस जगह)में रहना नहीं, जो कदाचित् रहेतो जैसें बिल्लीवाले मकानमें उंदरे (च्चवे) रहेतो वो उंदरेका विनाश (घात) होताहै. वैसेंही शील (ब्रह्मचर्य) की घात होतीहै

२ दूसरी वाडमें-ब्रह्मचारी पुरुष, स्त्रीके शृंगार हाव भावकी कथा=वार्ता करे नही. जो कदाचित् करेतो जैसें लिम्बु इमली आदि खटाइका नाम लेनेसें मुखमें पाणी छुटताहै तैसेंही मन चालितहोके अति उत्तम शील व्रतका भंग होताहे

३ तीसरी वाडमें ब्रह्मचारी पुरुष स्त्रीके आसन-पर बैठे नही अर्थात् जिस जगह स्त्री बैठी होय उस जगह कभी दो घडी (४८ मिनीट) तक बैठे नही, जो कदाच बैठेतो जैसें-भूरे कोळेका फलके स्पर्शसें कणिक (गहूँका आटा) नाश होवे वैसेंही शील रत्नका नाश होवे

४ चौथी वाडमें-ब्रह्मचारी पुरुष, स्त्रीके अंग उपांगादिक विषय (विकार) दृष्टीसें देखे नही जो कदाचित् देखेतो. जैसें कभी आख (नेत्र) वाला मनुष्य सूर्यकी सन्मुख बहोत देखनेसें नेत्रका विनाश होताहे. तैसेंही अमूल्य शीलका नाश होताहै.

५ पांचमी वाडमें-ब्रह्मचारी पुरुष टट्टी भीत=दीवाल पणिच पडादादिक के अंतरसे स्त्री पुरुष संसारके भोग विलास रंग राग गीत=गायन हास्य क्रीडा-दिकके शब्द कानमें-सुननेमें आवे वहां रहे नही जो कदाच रहेतो जैसें-घीकाघडा और-मैनका

गोळा अग्निकेपास रहनेसें पिगलताहै. तैसेंही मन पीगलकर अति उत्तम शिलका विनाश होताहै

६ छट्टी वाडमें—ब्रह्मचारी पुरुष पहिले जो संसारमें स्त्रीके साथ कामक्रीडा करी होवे उसको याद करे नहीं जो कदाच याद करेतो जैसें—कोई परदेशी एक बुड्ढीके पाससें छाछ पीकर परदेशको चलेगये फिर—छे महीनेसें ओही परदेशी वहा पीछे चले आये. तब ओ बुड्ढीनें उनको देखके ऐसा कहाकि—अहो भाइ तुम आव्वल मेरेपासमें जिस मटकेके आंदरकी छाछ पीकर गयेथें तब तुह्मारे पिछे उस मटकेके आंदर छाछमें मरा हुवा साप निकलाथा! इत्ना सुनतेही उनको तुर्तही वो सापका जहेर चढा. और—वो परदेशी वहां मरगये, तैसेंही पूर्वकी काम क्रीडा संभारनेसें (याद करनेसें) उत्तमोत्तम ब्रह्मचर्यकाभी घात होताहै.

७ सातमी वाडमें—ब्रह्मचारी पुरुष दिन २ प्रते (नित्य=हमेशा) कामोतेजक—सरस २ आहार करे नही. जो कदाच करेतो जैसें—सन्निपातके रोगीको दूध सक्करका आहार आयुष्यका घात करताहै. तैसेंही अमूल्यरत्न ब्रह्मचर्यका विनाश होताहै

८ आठमी वाडमें—ब्रह्मचारी पुरुष मर्यादा (प-

माण) उपरांत (क्षुधा=भुक उपरात=अणभावतो) दाव २ कर (ठास २ कर) आहार करे नही जो कदाच करेतो जैसें -सेरभर खीचडी पके एसी हाडीमें सव्वासेर खीचडी पकानेसें ओ हाडी फुट जावे. तैसेंही ब्रह्मचर्यभी तुट जावे=नाश होवे

९ नवमी वाडमे–ब्रह्मचारी पुरुष शरीरकी शोभा विभूषा (शृंगार) इत्यादिक चित्तको अकर्षण करनेवाला रुप करं नहीं जो कदाच करेतो जैसें– निर्भागीके हाथमें चिंतामणी रत्न टीकता नहींहै तैसेंही ब्रह्मचारीका ब्रह्मचर्य (शील)भी रहता नहींहै

इति श्रीमल्लोका गच्छान्तरीय आदि (प्रथम=मुळ) सम्प्रदायिकके स्वामी परम पूज्यपाद श्रीमान श्रीकहानजी ऋषिजी महाराजके सम्प्रदायके सरल स्वभावी मुनिश्री दगडु ऋषिजी संग्रहित "रत्न अमोल मणि प्रकाशिका." अपर नाम 'आवश्यक निर्पक्ष सत्य बोध.' नामक ग्रन्थका प्रथम प्रकरणं समाप्तं.

॥ श्रीजिनेंद्राय नम ॥

प्रकरण–दुसरा.

गुरु वंदनाके ३२ दोष अर्थ युक्त.

१ 'अणाढा दोष '–अर्थात्–वंदना करनेसें जो कर्माकी निर्जरा रुप फल होताहै उसको नहीं जानता फक्त आपने कुल परपरासें यह आपने गुरु है इसलिये वदना करनीही चाहिये, वगेरा विचारसें आदर भाव रहित वंदना करेतो दोष

२ 'स्तब्ध दोष. '–यह दो प्रकारसें लगे. एकतो शरीरमे शूल प्रमुख रोगोंकी पीडासे दुःखीत हुवा वंदणा करती वक्त प्रफुल्लित चित्त नही होवे सो 'द्रव्य स्तब्ध दोष' और-दुसरा स्वभाविकही शुन्य चित्तसें हुल्लास भाव नही आवेसो 'भाव स्तब्ध दोष.'

३ 'परविध दोष. '–जैसें मजूरको मजूरी देकर कोइ काम कराया. वो काम जैसा तैसा करके चला जावे. तैसेंही विचारसें यथा विधी वदना नही करे सो दोष.

४ 'सपिंड दोष '–आचार्यजी उपाध्यायजी और साधुजी ए सबको भेली एकही वक्त वंदना

करे, अलग२ वंदना नही करेतो दोष.

५ 'टोल दोष.'–वंदना करती वक्त शरीरकु एक स्थान स्थिर नहीं रखे तथा तीड पक्षिकी तरह हलता हुवा. वंदना करेतो दोष.

६ 'अंकुश दोष.'–जैसें हाथी अंकुशके डरसें मावतकी इच्छा मुजब चले. तैसेंही गुरुजीके कोपके डरसें वंदना करे. परंतु स्वइच्छासें वंदना नही करेतो दोष

७ 'कच्छप दोष'–पाणीमेंका काच्छवेकी तरह चारोंही तरफ देखता जाय, और–वंदना करता जाय सो दोष.

८ 'मच्छ दोष'–जैसें पाणीके आश्रयसें मच्छी रहतीहै. तैसें किसीभी प्रकारका आश्रयके लिये वंदना करेतो दोष.

९ 'मन प्रदुष्ट दोष.'–आपने मन प्रमाणें गुरूजीने कार्य जो नही कीया. इसलिये मनमें द्वेष भाव रखकर वंदना करेतो दोष.

१० 'वंदिका वंदन दोष.'–इस्के पांच भेद १ दोनो हाथ गोडे उपर रखकर वदना करे २ दोनो हाथके बीच दोनो गोडे रखकर वंदना करे. ३ दोनो हाथके बीच एक गोडा रखकर वंदना

४ एक हाथ खोलेमें रखकर वंदना करे. ५ दोनो हाथ खोलेमें रखकर वंदना करे ॥ यौं पांच तरह वंदना करेतो दोष.

११ 'भय दोष.'—लोकमें अपयशके डरसें तथा गुरुमहाराजके कोप (गुस्सा) के डरसें वंदना करेतो दोष.

१२ 'भंजन दोष.'—और-सब जनोनें वंदना करी तो अब मुझकोभी करना चाहिये. ऐसें विचारसें वंदना करेतो दोष.

१३ 'मित्र दोष.'—गुरु महाराजके साथ मित्रता करके वंदना करे. अर्थात्–पूज्य बुद्धि नही रखेतो दोष.

१४ 'गारव दोष.' मै गुरुमहाराजको यथा विनय विधी सहित वंदना करुगातो लोक मुझको तुर पंडित विनयवंत कहेंगे. इत्यादि अभिमान वसें वंदना करेतो दोष

१५ 'कारण दोष.'—मै यथा विनय विधी स- वंदना करुंगातो गुरुमहाराज मुझको इच्छित देवेंगे ऐसा समझकर वंदना करेतो दोष.

६ 'स्तैन्य दोष.' मै वंदना करते वक्त लोक तो मेरेको छोटा समझेंगे. इसलिये कोई देखे

नही ऐसी तरह छिपकर=गुपचुप वंदना करेतो दोप'

१७ 'प्रत्यनीक दोप'–गुरु महाराज स्वाध्याय (सज्झाय) तथा आहार वगैरे अन्य कार्यमें लगे होवे उस वक्त उनको खिजानेको. आगर वैर भावसें वंदना करेतो दोप

१८ 'रुष्ट दोप'-आप क्रोधमें रुष्ट होवे और-गुरु-महाराजकुभी क्रोधमें रुष्ट करके वंदना करेसो दोप.

१९ 'तर्जित दोप,–तर्जन (हाथके आंगुष्टेके पासकी) आंगुलीसें गुरुमहाराजको बताकर ऐसा कहेकि यह ऐसें गुरु क्या कामके ? कुच्छ देतेतो नहींहै. फक्त योंही मुफत वदना करना पडताहै. इस तरह कहे अथवा चितवे इत्यादि ऐसें विचारसें वदना करे सो दोप.

२० 'शठ दोप'–मुर्खकी तरह गुण अवगुण कुच्छ नही समजता फक्त अन्यकी देखा देख दंडवत वगैरा करे सो दोप.

२१ 'हीलना दोप'–गुरुमहाराजको ऐसा कहेकि तुम वंदने योग्यतो नहीं हो. परंतु तुह्मारा गौरव (वडेपना) रखनेको मै तुमकु वंदना करताहूं इत्यादिक निंदाके वचन कहके अथवा चितवके वंदना करे सो दोप.

२२ 'कु चित्त दोप'—गुरुमहाराजके सन्मुख बातोंभी करता जाय और—वंदनाभी करता जाय सो दोप.

२३ 'अंतारित दोप'—गुरुमहाराजको बहोत दुरसें कोइ जाने और कोइ नही जाने. इस तरह वंदना करे सो दोप

२४ 'व्यंग दोप'—गुरुमहाराजके सन्मुख रह-कर वंदनातो नही करे. आजु बाजु रहकर वंदना करे सो दोप.

२५ 'कर दोप'—जैसें राजाजीका हॉसल दिये विना छुटका नहीं. तैसेंही गुरु महाराजको वंदना करे विनाभी छुटका नही होनेका. इत्यादिक ऐसें विचारसें वंदना करे सो दोप.

२६ 'मोचन दोप' आपने मनमें ऐसा कहेकि चलो गुरुमहाराजको वंदना करके आवे पाप कट जावे. फिर—सबदिनकी नचीताइ इत्यादि ऐसें विचारमें वंदना करे सो दोप.

२७ 'आश्लिष्ट दोप' वदना करती वक्त भी आपना मस्तक और हाथ गुरुमहाराजके चरणहत लगाना पडताहै. सो नही लगाता हुवा. तेहे -ऊँटकी तरह गरदन झुकाकर चला जावेतोंभीहै.

साधुको वंदना करणेसें ६ गुण प्राप्ति.

१ 'विनयोपचार'-प्रथम विनय गुणका आराधिक होवे अर्थात्-इस विश्वमें जितने गुणहै. उन सब गुणोंमेका अव्वल दरजेका गुण विनय=नमृताहीहै जिहां विनय गुण होताहै वहां सर्व गुण आकर्षीत=खैचते हुवे आपसेंही चले आतेहै! विनयसें सत्य ज्ञानकी प्राप्ति होतीहै और-सत्य ज्ञानसें शुद्ध वस्तुका स्वरूप जान पडताहै. जो शुद्ध वस्तुका स्वरूप जानेगा ओही यथार्थ श्रद्धेगा जानपने विना शुद्ध श्रद्ध जमनी=स्थीर होनी वहोतही मुश्कील है इसलिये ज्ञानसेंही 'दर्शन'-सम्यक्त्व रत्नकी प्राप्ति होतीहै और धर्मका मूल 'विनय'=नमृताहीहै. सो आगारी और अणगारी धर्म प्राप्त करके अनुक्रमें सर्व कर्म क्षय करेगा ओही जीव परम शिव सुख=अक्षय मोक्ष स्थानको प्राप्त होवेगा! विशेष विनयका विस्तार मुनिश्री अमोलक ऋषि कृत अति उत्तम-'परमात्म मार्ग दर्शक' नामका ग्रंथमें देखो!

२ 'मान भंग'-मिथ्या अभिमान नामक महा भयंकर शत्रुका नाश करके निर अभिमानी होवे.

३ ' पूज्य भक्ति ' पूज्यपुरुषोंकि भक्तिका महा लाभ प्राप्त करे

४ ' जिनाज्ञाऽराधन '—श्रीजिनेश्वर सर्वज्ञ वितराग प्रभुकी आज्ञाका पालने वाला होवे.

५ ' धर्म वृद्धि '— गुरुमहाराजके कृपासें सूत्र धर्म और चारित्र धर्मकी वृद्धि करे.

६ ' अक्रिय '—और–यों धर्मकी आराधना करनेसें सर्व कर्मका नाश होकर ' अक्रिया=पाप रहित सिद्ध रूप जो परम पदहे उसकी प्राप्ति होवे

☞ सूचना—अव देखीये साधुको वंदना करनेसें कितना वडा भारी लाभ प्राप्त होताहै

साधुकी संगत करणेसें १० गुण प्राप्ति.

१ ' साधुके संगतसे=दर्शनसें प्रथमतो ज्ञान सुननेका योग वने २ जो सुनेगा उनको अवश्यही ज्ञान प्राप्त होवेगा ३ ज्ञानसें विज्ञान (विशेष ज्ञान) वढनेका स्वभावहीहै ४ विज्ञानसें सुकृत दुकृत के फलको जानने-वाला होवे. उससें दुकृत कर्मका त्याग करे. ५ जो दुकृत कर्मका त्याग=पच्चख्खाण किया सोही संयम (आश्रवका रुंधन) हुवा. ६ जिसनें आश्रवका रुंधन किया उसने तीर्थकर देवकी आज्ञाका आराधन किया.

७ आश्रवका रुंधन और वीतराग सर्वज्ञ प्रभुकी आज्ञाका आराधन है ओही तपहै, ८ और-तपस्यासेंही कर्म कटतेंहै ९ कर्म कटनेसें अक्रिया स्थिरजोग= सर्व पाप रहित होतेंहै. १० जो सब पाप रहित होतेहै उनको ही मोक्ष सुख प्राप्त होताहै.

☞ सुचना-अब औरभी इधर जरा लक्ष दिजीयेकि- साधुकी संगत (दर्शन) सें कितना बडा भारी लाभ प्राप्त होताहै ! अब ऐसें महा उत्तम तरण तारण सत्पुरुषोंकी आशातना नही करना चाहिये. इसलिये यहा ३३ आशातना लिखताहुं

गुरुजीकी ३३ आशातना.

१ गुरुमहाराजके आगे चले नहीं. २ गुरुमहारजके बरोबर चले नहीं. ३ गुरुमहाराजके पीछे अडकर चले नही. ४ गुरुमहाराजके आगे व्यर्थ खडा रहे नही ५ गुरुमहाराजके बरोबर खडा रहे नहीं. ६ गुरुमहाराजके पीछे अडकर खडा रहे नही ७ गुरुमहाराजके आगे बैठे नही. ८ गुरुममहाराजके बरोबर बैठे नही. ९ गुरुमहाराजके पीछे अडकर बैठे नहीं. १० गुरुमहाराजके पहिले सुची करे नही. ११ गुरुमहाराजके पहिले इरियावही (आवा गमनादिक पापसें निवृत्त होनेका पाठ)

पडिक्में नही। १२ कोइभी दर्शन आदि कार्यार्थ आवेतो गुरुमहाराजके पहिले आप होकर उसीको बोलावे नही. १३ आप सुता होवे और-गुरु महाराज बोलावेतो आप सुनतेही तुर्त उठकर उनके प्रश्नका उत्तर बडी नम्रतासें देवे. १४ गुरुमहाराजके हुकमसें आप किसी कार्यार्थ कही जाकर पीछे आया होवे. उसके मध्यमें जो कुच्छ हुवा होवे सो सब बयान निष्कपटतासें गुरुमहाराजके आगे प्रकाश करके कहे. १५ आहार वस्त्र पात्र पुस्तकादिक कोइभी वस्तु किसीके पाससें ग्रहण करी होवे ओ वस्तु पहिले गुरुमहाराजको बताकर फिर आप ग्रहण करे. १६ कोइभी वस्तु आप दुसरेके पाससें ग्रहण करी होवेओ वस्तु पहिले गुरुमहाराजको विनय=नमृता सहित इस तरह आमन्त्रण करेकि;अहो तरण तारण परम पूज्य गुरु देव यह वस्तुको अवश्य आप ग्रहण करके मुजको कृतार्थ=सफल करो इत्यादि अति नमृ पणेसें विनंती करे! जो गुरुमहाराज उस वस्तुको स्विकार करेतो आप मनमें वहोतर खुशी होवे. और-गुरु देवका वहोत २ आभार मानकर उनके गुणग्राम करे. १७ कदाच जो गुरुमहाराज उस वस्तुको

ग्रहण नही करेतो उनके आज्ञा (हुकम) सें वहांपर विराजते हुवे आपने संयति स्वधर्मीयोकोभी अलग२ आमंत्रणा करते वक्त सबको अलग२ ऐसा कहेकि–अहो तरण तारण माहानु भाव! आप मेरे-पर पूर्ण अनुग्रह करके इस वस्तुको ग्रहण करके मुझको तारो. सफल करो? इत्यादि अतिनम्रपणे-सें विनंतीकरे! जो उसवस्तुको आपनेस्वधर्मी=संयतिजीने ग्रहण करीतो आप मनमें वहोत२ खुशी होवे. ओर–उनकाभी वहोत २ आभार मानकर गुणग्राम करे! कदाच उस वस्तुको कोइनेभी ग्रहण नही करीतो फिर–गुरुदेवके आज्ञासें उस वस्तुको आप उपयोगमें लेवे. १८ गुरु और शिष्य एकही मांडलेपर आहार करनेको बैठें होवेतो सरस मनोज्ञ आहार गुरुमहाराजके भोगमें आवे ऐसा करे १९ गुरुजी जो आदेश (हुकम) फरमावेतो उसे सुना अनसुना नही करे परंतु गुरुमहाराजका हुकम वहोत २ आदर भावसें ग्रहण करे. २० गुरुमहाराजका हुकुम सुनतेही तुर्त आसनको छोडके खडा होकर दोनु हाथ जोडके अति विनय नम्रतासें उत्तर देवें२१ गुरुमहाराजके साथ वारतालाप करती वक्त जी? तहेत? प्रमान? इत्यादिक

उंच शब्दोंसें करके उनका वचन सुने. तथा बडी नमृतासें प्रत्युत्तर देवे २२ परंतु गुरुमहाराजकु ऐसा नही कहेकि रे ! तूं ! क्या ! कहता है. इत्यादिक ऐसें हलके शब्द कभी बोले नही २३ गुरुमहाराज कृपा करके जो जो हितशिक्षा देवे. ओ हितशिक्षा आप बहोतही योग्य जानके उत्सुकतासें=हर्षभावसें ग्रहण करे. और-उस प्रमाणें वर्ताव करनेकी इच्छा दरसावे. और यथा शक्ति वर्तावभी करे. २४गुरुमहाराज जो ऐसा फरमावेंकी. गिलानी रोगी-तपश्वी-नवादिक्षित-ज्ञानी इन संयति महा पुरुषोंकी वैयावच्च (सेवा-भक्ति) करो ! तो तुर्त आपना सब काम छोडकर गुरुमहाराज कहे सो कार्य करे? परंतु यों (ऐसा) नहीं कहेकि यह आमुक सब काम मैं भाकेलाही करूं क्या? कुच्छतो तुमभी करो २५ छद्मस्थ आदि प्रसगमें व्याख्यान प्रमुख कोई कार्यमें गुरुमहाज भूलगये होवे अगर कोई काम बिगड गया होवे तोभी शिष्य-गुरुमहाराजकी भूल प्रगट करे नही. कदाच गुरुमहाराज पुछेतोभी आप गुरु महाराजको अति आदर सत्कार सनमान पूर्वक उँच वचनोसें विनय=नमृता सहित यथा तथ्य मर्यादासें कहे. २६ गुरुमहाराजको कोईभी प्रश्नादिक

पुछेतो पहिले आप उत्तर देवे नही.गुरुमहाराज जो खुशीसें आज्ञा देवेतो आप उस वक्त गुरुदेवको 'तिख्खुत्ता'के पाठसें यथा विनय¹ विधी सहित वंदना=नमस्कार करके उनका उपकार दरसाय-कर अति नम्र पणेसें उत्तर देवे २७ गुरुमहाराजकी महीमा सुनकर आप बिलकुल नाराज नही होवे. और-आप विशेष खुशीहोकर गुरुदेवकी गुण=कीर्ति करे २८ साधु-साधवी श्रावक-श्राविका। में भिन्न भेद नही करे कि यहतो मेरे और-यह गुरुमहा-राजके, २९व्याख्यान धर्मोपदेश तथा संवाद करते विशेष वक्त होजावेतो गोचरी आदिकका काल (वक्त=टैम) उल्लंघता होवे तोभी आप यौं(ऐसा) नहि कहेकि अब कहां लग इसको घसीटोगे ! अ-मुक कामकाभी कुच्छ ध्यान है या नही है? इत्या-दिक ऐसें वचन कहकर अंतराय देवे नही, ३० गुरुमहाराजके वस्त्र पात्र बिछाना रजोहरण पुंजणी प्रमुख उपगरणको आप पग आदिक लगावे नही और-कदाचित् भुलकर लग जावेतो उसी वक्त आप गुरुदेवको यथा विनय विधी सहित तिख्खुता' के पाठसें वंदना=नमस्कार करके जो अपराध हुवा होवे उस अपराध बदल क्षमावे अर्थात्-माफी

मांगे. २१ जो अधिकार गुरुमहाराजने व्याख्यानमें फरमाया होवे उस (ओ) अधिकारको आप विशेष विस्तारसे ओही (उसी) परिषदामें आपना प्रसंसा निमित्त पीछे कहे नही, २२गुरुमहाराजके वस्त्र पाट प्रमुख उपगरण आपने काममें लगावे नही. कदाचित्त-कोई जरुरीका ऐसाही प्रयोजन जो पडजायकी अब वापरे विना चले नही तब गुरुदेवकी आज्ञा लेकर यत्ना सहित वापरे. ३३ गुरुमहाराजसें सदोदीत नीचा रहे (१) द्रव्यसेंतो आपका बैठनेका आसन नीचा रखे दोनु हाथ जोड कर आदर सत्कार सनमान देवे और उचे वचनोसें वारतालाप करे हामेशा विनय=नमृतासें वरते. तथा आज्ञा प्रमाणे काम करे इत्यादि ! (२) भावसें निराभिमानी निष्कपटता नम्रता सरल स्वभावी दासानु दास वृतिसें हामेशा रहे गुरु महाराजका भला इच्छे !

☞ सूचना—यह ३३ आशातनाको टालके जो जो गुण उपर बताये हे उस मुजब प्रवर्ती करके गुरु भक्ति सदा करने वाले जीव परमात्म मार्गमें प्रवर्तने वाले होते है !

पुछेतो पहिले आप उत्तर देवे नही. गुरुमहाराज जो खुशीसें, आज्ञा देवेतो आप उस वक्त गुरुदेवको 'तिख्खुत्ता'के पाठसें यथा विनय विधी सहित वंदना=नमस्कार करके उनका उपकार दरसायकर अति नम्र पणेसें उत्तर देवे. २७ गुरुमहाराजकी महीमा सुनकर आप बिलकुल नाराज नही होवे. और-आप विशेप खुशीहोकर गुरुदेवकी गुण=कीर्ति करे २८ साधु-साधवी श्रावक-श्राविका में भिन्न भेद नही करे कि-यहतो मेरे और-यह गुरुमहाराजके, २९ व्याख्यान धर्मोपदेश तथा संवाद करते विशेप वक्त, होजावेतो गोचरी आदिकका काल (वक्त=टैम) उल्लंघता होवे तोभी आप यौं(ऐसा) नहि कहेकि अब कहां लग इमको घसीटोगे ? असुक कामकाभी कुच्छ ध्यान है या नही है? इत्यादिक ऐसें वचन कहकर अंतराय देवे नही,, ३० गुरुमहाराजके वस्त्र पात्र बिछाना रजोहरण पुंजणी प्रमुख उपगरणको आप पग आदिक लगावे नही और-कदाचित् भुलकर ,लग जावेतो उसी वक्त आप गुरुदेवको यथा विनय विधी सहित 'तिख्खुता' के पाठसें, वंदना=नमस्कार करके जो अपराध हुवा होवे उस अपराध बदल क्षमावे अर्थात्–माफी

मांग. ३१ जो अधिकार गुरुमहाराजने व्याख्यानमें फरमाया होवे उस (ओ) अधिकारको आप विशेष विस्तारसें ओही (उसी) परिषदामें आपना प्रसंसा निमित्त पीछे कहे नहीं, ३२गुरुमहाराजके वस्त्र पाट प्रमुख उपगरण आपने काममें लगावे नही. कदाचित्-कोई जरूरीका ऐसाही प्रयोजन जो पडजायकी अब वापरे विना चले नहीं तब गुरुदेवकी आज्ञा लेकर यत्ना सहित वापरे. ३३ गुरुमहाराजसें सदोदीत नीचा रहे (१) द्रव्यसेंते आपका वैठनेका आसन नीचा रखे दोनु हाथ जोड कर आदर सत्कार सनमान देवे और उचे वचनोंसें वारतालाप करे हामेशा विनय=नमृतासें वरते. तथा आज्ञा प्रमाणे काम करे इत्यादि ! (२) भावसें निराभिमानी निष्कपटता नम्रता सरल स्वभावी दासानु दास वृतिसें हामेशा रहे गुरुमहाराजका भला इच्छे !

☞ सूचना—यह ३३ आशातनाको टालके जो जो गुण उपर वताये है उस मुजब प्रवर्त्ती करके गुरु भक्ति सदा करने वाले जीव परमात्म मार्गमें प्रवर्तने वाले होते है !

गुरु आशातनाका फल.

दशवैकालिक सूत्रमें फरमायाहैकि १ जो कोइ मूर्ख मनुष्य जाज्वलमान अग्निको पांवसें दवायकर बुझाना चाहाताहै. उसके पांव जरुरही जलतेहै २ और-द्रष्टी विष सर्पकी जो द्रष्टी मात्रसेंही अन्यको जला डाले. ऐसें द्रष्टी विष सर्पको जो कोइ मूर्ख मनुष्य कोपायमान करके जो सुख चहावे ओ आवश्यही मरताहै ३ जो कोइ मूर्ख मनुष्य महा हलाहल विष (जेहर) खाकर, अमरत्व चहाताहै ओ आवश्यही मरताहै. ४ जो कोइ मूर्ख मनुष्य मस्तकसें पहाडको तोडना चहाताहै उसका मस्तक अवश्यही फूटताहै. ५ जो कोइ मूर्ख मनुष्य मुष्टी प्रहरसें भाला बरछी आदि शस्त्रोको मोचना चहाताहै. उसका हाथ जरूरही कटताहै? और-इत्यादिक ऐसें अनहोनेके काम कदापि मंत्रके प्रयोगसें अगर पूर्व पुण्यके जोगसें, सुखदाताभी होजावे परंतु गुरुमहाराजकी आशातना करके कोइ किसीभी तरहका सुख चहावेतो कबीभी सुख नही मिलनेका; और-दुःखतो जरूरही मिलेगा! गुरुमहाराजकी आशातना करनेसें आदि सर्व गुणोको नाश होताहै. और-वि-

तराग सर्वज्ञ प्रभुजीने ऐसा फरमायाहै कि ' नयावि मोख्खो गुरु हिलणाए ' अर्थात्-गुरुमहाराजके निंदकको त्रिकालमेभी कदापि मोक्ष नही मिलताहै.

आठ प्रकारके श्रावक.

१ ' अम्मापिउ समाणे '-साधूओंको सर्व कार्य आहार-पाणी-वस्त्र-पात्र-औषधी प्रमुखकी चिंता रखके साता उपजावे. और-कदाचित्त साधु प्रमाद वश होकर साधु समाचारीसें चूक जायतो आँखोसें देखकरभी स्नेह रहित नही होवे. यथा उचित विनय=नम्रता सहित हितशिक्षा देवे सो माता पिता. समान श्रावक !

२ ' भाउ समाणें '-हृदयमेंतो साधुओंपर बहोत२ स्नेह रक्खे लेकिन विनय-भक्तिमें आळस (परमाद) करे. परंतु संकट समय यथा योग्य प्राण झोंकके साहाय्यता करे. सो भाइ समान श्रावक.

३ ' मित्त समाणे '-कोइ कारण सर ओंसें रुस जावे परंतु अपने स्वजनोंसेंभी ओंको अधिक समजे. सो

४ ' सव्वति समाणे ' दयी. छिद्र गवेषी होताहै ॥

साधु चूक जायतो उस दोपको प्रगट करे सो शोक तुल्य श्रावक.

५ 'आयस समाणे'—साधुओंका प्रकाश्या हुवा सूत्रार्थ जिसके हृदयमें यथार्थ विंवित होवे, भूले नहीं, सो आदर्श (आरीसा=कॉच) जैसा श्रावक.

६ 'पडाग समाणे'—साधुओंके वचनका जिसको निश्चय (भरोसा) नहीहै, वो मूर्खों=पाखंडियोंके भरमानेसें उनका चित्त पताकाकी तरह फीर जावे सो पताका समान श्रावक.

७ 'खाणु समाणे,—साधुओंका सद्बोध श्रवण करकेभी अपना असत्य दुराग्रह (खोटी पकडीहुइ बात) का त्याग करे नही. सो खीला=खुँटा समान श्रावक.

८ 'खरंठ समाणे'—हितशिक्षा देनेवाले साधुओंकी निंदा करे तथा अयोग्य शब्दोंसें अपमान करे ओर– झुटा कलंक चढावे सो अशुची=विष्टा जैसा श्रावक.

☞ सूचनाः—यह ८ प्रकारके श्रावकोंमेंसे शोक समान ! और–'खरट समान ए दो तरहके जो श्रावकहे वो 'मिथ्याद्रष्टी' है, परतु वो साधुजीके दर्शनको आतेंहै इसलिये श्रावक कहे जातेहै!

श्रावकजीके २१ लक्षण.

१ ' अल्प इच्छा '–थोडी इच्छा रक्खे अर्थात्–शब्द रूप गंध रस इत्यादि विषयतृष्णा को कमी करे. विषय तृष्णामें अत्यंत ग्रध्ध (लयलीन) नही होवे.

२ ' अल्पारम्भ '–छे कायाका आरम्भ वडावे (वधारे) नही, अनर्था दंड सेवन करे नही, जितना आरम्भ घटता होवे. उतना घटानेका उद्यम करे

३ ' अल्पपरिग्रही '–उघाडी तथा ढांकी जमीन. खेतं घरं प्रमुख, चांदी सोनां (सुवर्ण) धनं धान्य. दो पँग. चार पगका जीव और–धर विखेराकी कोइभी वस्तु प्रमुख परिग्रहकी इच्छा. थोडी रक्खे. अर्थात्–विशेष तृष्णा नहीकरे, कुकर्म कुव्यापार करणेकी बिलकुल इच्छा नहीं रक्खे, जितनी सामग्री प्राप्त हुइहै उतनेमें संतोष धारे, और– यथा शक्ति करीहुइ मर्यादाको सकोचे=कम करे,

४ ' सुशील '– ब्रह्मचर्य पाळे, तथा आचार विचार प्रशंसनीय रक्खे.

५ ' सुव्रति '—व्रत पचख्खाण शुद्ध निरति-

केवली (सर्वज्ञ) भाषित दया में धर्म. यह पवित्र तीन तत्वकी शुद्ध श्रद्धावंत होवे अर्थात्–जिनेश्वर सर्वज्ञ प्रभुके तथा साधुके वचन (वाणी) पर पूर्ण विश्वास रक्खे.

१९ ' आराधिक '–अरिहंत सर्वज्ञ प्रभुके वचनानुसार करणी करके शुद्ध वृत्ति रक्खे.

२० ' जैन मार्ग प्रभावक '–तन मन धन सें पवित्र दया धरमकी उन्नत्ती करे.

२१ ' अरिहंतके शिष्ये-साधु साध्वी को जेष्ट शिष्ये, और-श्रावक श्राविकाको लघु शिष्ये माने, (समझे)

श्रावकजीके २१ गुण.

[1]अखुद्दो [2]रुववं, [3]पगइ सोमो, [4]लोगपियाओ ।
[5]अकूरो [6]भीरु, [7]असढ्ढ, [8]सुदक्खिन, [9]लज्जालू,
[10]दयालू ॥ १ ॥
[11]मझत्थ, [12]सुदिठी, [13]गुणानुरागी, [14]सुपक्खजुतो.
[15]सुदिहदिठी । विसेसन्न [16] [17]वुड्डानुराग, [18]विनीत,
[19]कयन्नु, पर हियत्थकारिए [20], [21]लद्ध लख्खो ॥ २ ॥

१ 'असुद्दो'=अक्षुद्र अर्थात्–क्षुद्र (खराब) स्वभाव (प्रकृति) रहित होके सरल गभीर-धैर्यवंत होवे, और–अपराधिकाभी खोटा नहीं चिंतवे, तो फिर–दुसरेका कहनाही क्या ? सबको हित कर्ता होवे. और-हरेक कार्य दीर्घ विचारसें करने वाले होवे.

२ 'रुववं'=रुपवंत होवे यह बात किसीके स्वाधीनकी नही है. परंतु जो जीव पुण्यका संचय करके आतेहैं. ओही श्रावकके घर आवतार (जन्म) लेतेहैं. वो स्वभाविक रुपवंतभी होतेहै लेकिन यहा ऐसा नही समझनाकि रूप हीनको धर्म ग्रहण नही करना ? धर्मको तो सबही ग्रहण कर सक्तेहैं धर्म सबकोही सुखका कर्ता होताहै. फक्त इहांतो व्यवारीक शोभाके लिये कहाहै.

३ 'पगइ सोमो'=प्रकृतिका शीतल होवे परंतु ऐसा नही होवेकि रुप 'रुडा, गुण वाइडा, जैसो रोहीडाको फूल' इस मारवाडी कहनावत मुजब गुण विना रूपवत शोभता नहीहै. इसलिये प्रकृतिका शीतल होना चाहिये, क्योंकि क्षमा गुण ही सब सद्‌गुणोंको धारण कर सक्ताहै शीतल स्वभावसें सब जीव निडर रहतेहैं. तथा आप वि-

श्वासु होताहै. और–कोइ प्रसंगपर अनेक प्राणी-को सद्बोधकी प्राप्ति करके धर्मात्मा बना सक्तेहै!

४ ' लोगपियाओ '=श्रावकजी सबको प्रीय-कारी लगतेहै. और–यह लोक परलोक अर्थात्–दोनो लोकके विरुद्ध कोइभी कर्तव्य करते नहीहै! गुणवंतकी या किसीकीभी निंदा नही करे. तथा सरळ–भोळा–मूर्ख–दुर्गणी–इत्यादि कोइकीभी हंसी थट्टा=मस्करी नही करे. धनेश्वरी तथा गुण-वंत प्रख्यातवंत इत्यादिककी ईर्षा नही करे. बहोत लोकोके विरोधीके साथ मित्रता नही करे, स्वजन-जाति बंधु, तथा अनाथ दुःखी जीवोंको आप यथा शक्ति साहाय्यता करे उदार परिणामसें दान वि-शुद्ध शील (ब्रह्मचर्य) सुद्धाचार तथा विनय= नम्रतादिक उत्तम गुण धारण करे.

५ ' अकूरो '=अक्रूर=शांत निर्मळ चित्त वाला होवे. अर्थात्–जिसका मन निर्मल होताहै. वो स-बको निर्मळ समजताहै और–कोइकेभी छिद्र नही देखताहै. छिद्र ग्राहीका चित्त सदा मलीन रहताहै. वो अनेक सद्‌गुणोपर पाणी फीराके दुर्गणो तर-फही लक्ष रखताहै, जिससें वडेर संत महात्मा त्यागी वैरागी योंकाभी द्रोही (शत्रु) बन जाताहै.

और–दोनो लोकमें अनेक आपदा भुगतताहै. ऐसा समजके श्रावकजी हरेक सद्गुणोंकेही ग्राही होतेहैं?

६ 'भीरु'=डरे. अर्थात्–पापसें डरे. जो पाप कर्मसें डरेगा वोही गुणग्राही होके गुणोका भंडार होवेगा, ओर–जिसके पास गुण रूप रत्नोंका खजाना भरा होवेगा वो गुण रूप रत्नको हरण करने वाले या खराब करने वाले चोरोंसें जरूरही डरेंगे. रखे (कदाच) सुगुणका नाश नही होवे! या किसी प्रकारका कलंक नही आवे! अब १ 'द्रव्य चोर'=अधर्मी पापी, दुर्व्यसनी, अनाचारी, पाखंडी, म्लेछ, कृतघ्नी, विश्वासघातकी, निंदक, चोर, जार, लपट इत्यादि अयोग्य मनुष्यका संग नही करे, और–२ 'भावचोर'=मद मतसर कपट दगा. निंदा. चुगुली. व्यभिचार, हिंसा, मृषा, आदि दुर्गणोंको अपने गुण रूप रत्नोंके खजानेमें प्रवेश नही करने देतेहैं इन दोनो चोरोंका प्रसंग बडा भयंकर होताहै. इन चोरोंने बडे २ प्राक्रमी, जपी, तपी, ज्ञानी, ध्यानी, महात्मा, पंडित, आदि सत्पुरुषोंको धूलमें मिला दियेहैं. इसलिये इन चोरोंसें तथा लौकिक अपवाद (निंदा) सें. ओर–परलोक नरकादिक

गतिसें डरना ही उचितहै. जो डरेगा वोही कुकर्मसें बचेगा ! डरना यहभी एक अव्वल दरजेका अति उत्तम गुणहै, इस गुणसें अनेक गुण आकर्पण होके चले आते है, इसवास्ते इस गुणकी बहुतही जरूर है, परंतु धर्मोन्नतिके स्थान इस गुणका आश्रय लेना उचित नहींहै जैसें जो औषधि जिस मरज (रोग) पर वापरनेकी होतीहै वोही मरजपर वापरनेसें गुण करती है. तैसेंही–यह बात अवश्य ध्यानमें रखनेकी है.

७ 'असठ'=सुज्ञ चतुर जो यथा उचित स्थानपर यथा उचित वस्तुका और–यथा उचित गुणका व्यय करतेहै, उनको 'असठ' अर्थात्–सुज्ञ =चतुर कहतेहै, औरभी 'सठ' नाम मूर्खकाहै, जो मूर्ख=अज्ञानी असमज होताहै, उसको कार्याकार्यका विचार नही होताहै, तैसें श्रावक नही होतेहै, श्रावकतो कार्याकार्यका विचार आवश्य करके जो करने लायक काम होवे ओही कार्य करतेहै, और–किसीकाभी मन नही दुःख पावे, ऐसी चतुराइके साथ प्रवर्ततेहै, उनकोही चतुर कहे जातेहै, अथवा चारही गतिसें तिरनेका उपाय धर्म, और–चार कषायको पतली करनेका उपाय

उपसम जो करे वोही श्रावक चतुर, 'असठ'= सुझ होतेहै।

८ 'सुदक्खिन'=सुदाक्षिण, अर्थात्—अच्छे विचक्षण हुश्यार निघामें समजनेवाले अवसरके जाणनेवाले श्रावक होतेहै वो धर्मकी वृद्धि दयाकी वृद्धि, ज्ञानकी वृद्धि करे. और-देव गुरु धर्म की प्रभावनाके कार्यमें तथा इत्यादिक सुकार्यमें सुदक्षिणता वापरतेहै नविर सुयुक्ति निकालकर ज्ञानकी चमत्कारीक वातो रचतेहै. अर्थात्—धर्म वृद्धिमेंही चतुराइका प्रसार करनेसें यह लोकमें यशःस्वी बनके प्रख्याति पातेहै. और—न्यायसें उपार्जन करी हुइ लक्ष्मी बहुत कालतक सुख दाता होतीहै. और—सबको सुखदाता होनेसें आगे आपभी सुखी होतेहै.

९ 'लज्जालु'—लज्जावंत अर्थात्—इह लोककी पर लोककी व्रत भंगकी कुकर्मकी लज्जा धरे (रख्खे)। लज्जावंत कितनाही दुर्गुणी हुवा तोभी ओ ठिकाणेपर आताहै. कहाहैकि 'लज्जा गुणोघ जननी.' लज्जा अनेक सद्गुणोकी जननी=जन्म देनेवाली माताहै. अर्थात्— लज्जा गुण होनेसें शील संतोष दया क्षमा आदि अनेक सद्गुण आ-

कर्पीत होके चले आतेहै. लज्जावंतसें झगडा तंटा व्यभिचार दगा फटका नही होताहै. इससें वो सबको प्यारे लगतेहै. और–आदर सत्कार सनमान पातेहै. इत्यादि अनेक सद्गुणोकी धारक लज्जाको श्रावकजी अपने अंगमें धारण करतेहै.

१०'दयालू'–दया यहतो सर्व सद्गुणोंका और–सर्व धर्मका मूलहीहै. जिसके घटमें दया होतीहै. वोही धर्मात्मा साधु श्रावक कहे जातेहै. खाली (युंही) दया२ का पोकार करनेसें दयालु नही होतेहै. परंतु दयाके कृत्य निःस्वार्थ बुद्धिसें करके बताने वालेही दयालु होतेहै. दयालु अपनी आत्मा समान सब आत्माको जानतेहै. अपनेको दुःखसें जैसा दुःख होताहै. वैसाही दुसरेकोभी दुःख होताहै. सो धर्मका और–उपकारका कारण जानकर आपनेसेंभी ज्यादा दुसरेकी हिफाजत करतेहै. अर्थात्–परोपकारके लियेतो वक्तपर प्राणभी झोंक देतेहै. धनकीतो फिर कहनाही क्या? जितना समय परोपकारके काममें लगे उतनाही आयुष्य लेखे लगा समझे! और–जितना द्रव्य परोपकारमें लगे उतनाहीं धन अपना समझतेहै. और–हरेक कार्यमें किसी जीवका नुकसान नही होवे. ऐसें प्रव-

र्ततेहै. दुष्काळ आदि विकट प्रसंगमें गरीव दुःखी इत्यादि अनाथ जीवोको यथा शक्ति साहाय्यता करे. तन मन धनसें जितनी दयाकी वृद्धि होवे उतनी आवश्य करे!

११ ' मझत्थ '=मध्यस्थ परिणामी होवे. कोइभी अच्छी और-वूरी वस्तुपर अत्यंत राग और द्वेष नही करे. कदाच छद्मस्थके जोगसें मनोज्ञ अमनोज्ञ वस्तु देखकर राग द्वेष मय परिणाम प्रगमेंतो ज्ञानसें अपने मनको तुर्त घेरलेतेहै. वो जानतेहैंहेकि पुद्गल (वस्तु) का स्वभाव सदा=हमेशा पलटतेही रहताहै. अच्छेके वूरे और-वूरेके अच्छे होतेहै जिसके स्वभावमें फरक पडे उसपर राग अगर द्वेष करना निर्थकहै. यह शरीरभी पोपतेर रोगी, वृद्ध, और मृत्यु रुप वन जाताहै, कुटुम्भी पोपतेर वदल जाताहै. लक्ष्मीभी क्षण भगुरहै. ऐसा जानते हुवेभी कर्म आधीन होके त्याग नही सक्तेहै मगर शुष्क=लुख्ख वृत्ति तो जरूर रख्खे, क्योंकि अत्यत गृधी पणा अत्यंत निबड=मजबूत कर्मोका वंधन होताहै फिर वो छुटना वहोतर मुष्किल होजाताहै. और-लुख्ख वृत्तिसे सिथिल कर्मोका वंधन होताहै. वो शीघ्र छुट सकताहै जैसें

धाय मात अन्यके बच्चेको लाड कोड करतीहै. लेकिन यह मेरा नही ऐसा समजतीहै. वैसाही जानके श्रावक मध्यस्थ वृत्ति रख्खे. और–कोइ मत मतांतरकी खेंचातानीमें नहीं पडे. न्याय मार्गको स्वीकार करे. दोपको त्याग देवे.

१२ 'सुदिठी'=सदा सु=भली दृष्टी रख्खे. किसीकाभी बूरा नहीं चिंतवें.कोइभी पदार्थको विकार दृष्टीसें नहीं देखे. सौम्य=शांत शीतल दृष्टी रख्खे. अर्थात्–वो सम्यक दृष्टी वाले श्रावकजी होतेहै!

१३ 'गुणानुरागी–गुणवंतका अनुराग (प्रेम) करे, आप गुणवंत होनेको गुणानुराग यह अव्वल दरजेका उपायहै. गुणानुरागम्यह सम्यकदृष्टीका मूल्य श्रेष्ट लक्षणहै. गुणानुरागही अनेक गुणोंके समोहको और–गुणी जनोंको खैचकर गुणानुरागीके पास लाताहै. इस विश्वालयमें अनेक पदार्थहै. उसकी पहीचान गुणानुरागीकोही होतीहै. कहाहैकि 'भाग्य हीनं न पश्यंति, बहु रत्ना वसुंधरा.' अर्थात्–यह पृथवी बहुत गुणीजन रत्नोंसें भरीहै. उनको भाग्यहीन देख सक्ते नहीहै. भाग्यवान् गुणानुरागीही देख सक्तेहै! और–गुणानुरागी ज्ञानवंत क्रियावंत क्षमावंत धैर्यवंत विन-

यवत त्यागी वैरागी ब्रह्मचारी संतोषी धर्मदीपक इत्यादि गुणवंतोको देखकर बिलकुल इर्षा रहित होकर विशेष खुशी होवे. वो समजतेहैकि-इनही पुरुष रत्नोसें जगतमें क्षेम=कल्याण वर्ततहे..ऐसा जानके गुणवंतोकी तन मन धनसें यथा शक्ति सेवा भक्ति करतेहे, इच्छित वस्तु=आहार (अन्न भोजन) वस्त्र औषध पुस्तक स्थानक वगैरासें साता उपजाकर धर्मानुराग वडातेहै. नम्रतासें आदर सत्कार सन्मान करके उनका उत्साह वडातेहै, और-मनसें भला जाने. वचनसें गुण-कीर्ती करे, कायासें सेवा भक्ति करके पुण्यानु-बन्धी पुण्य उपार्जन करतेहै. इत्यादि यह गुणा-नुरागीयोंके लक्षण पूर्ण पणे ध्यानमें लेकर गुणा-नुरागको सद्गुणोका सागर समझके श्रावकजी गुणानुरागी होतेहै !

१४ ' सुपक्ख जुत्तो '=सुपक्ष, अर्थात्-न्यायप क्षको धारण करे. अन्याय पक्षको त्याग (छोड) देवे अत्र इहा कोइ कहेगाकि प्रथम-तो तुमने राग द्वेष करनेकी मनाइ करी ! और-अब अच्छे पक्षको धारण करनेका कहतेहो ? अत्र उनसें कहा जाता-हैकि-वस्तुको यथार्थ जानना और-यथार्थ कहना

इसमें कुच्छ हरकत नहींहै. जेसें यह जहरहै. इसको खानेसें मृत्यु प्राप्त होतींहै ! और-यह अग्निहै इसका दाहक गुणहै, ऐसेंही यह पाप कर्म है सो दुःख दाताहै अनाचिर्णको (पापको) जो सेवन करेगा उसीको साधु नही कहना इत्यादि यथार्थ कहकर सुखार्थी आत्माको दुःखके मार्गसें गमन करते हुवेको बचाना, उसीमें राग द्वेष या निंदा नही समजना, यहतो सद्बोध और-सद्धर्म प्रवृत्ति करानेकी सद्भावनाहै, और-जिसको सत्य असत्यका भान नहींहै. उसको अज्ञानी कहा जाताहै. और-जो असत्यका पक्ष धारण करे उसको मिथ्यात्वी कहतेहै. इसलियें श्रावक जन इन दोषोंसें निवृततेहै. सो सुपक्षी कहेजातेहै औरभी पक्ष संसारीक सम्बन्ध परिवारकोभी कहतेहै. सो श्रावकजी वहोत करकेतो धर्मात्माके कुलमेंही उत्पन्न होतेहै. कदापि पापोदयसें मिथ्यात्वी कुलमें जन्म होवे. और-पीछे पुण्योदयसें सद्गुरु आदिक सुसंयोग मिलनेसें धर्मकी प्राप्ती होवे. वो श्रावक धर्म अंगीकार करेके उन श्रावकजीको उचितहैकि बने वहां तक किसीभी उपायसें अपने कूटुंब परिवारको धर्मात्मा बनावे. क्योंकि-अधर्मी=मिथ्यात्वीयोंके प्रसंगमें हमेशा रहनेसें क्लेश चिंता

आदि उत्पन्न होवे तथा वृतोंका शुद्ध पालन होना बहोत मुशकिल होवे. इसलिये जैसें चेलणाजी भूलकर मिथ्यात्वीयोंके कुलमें आगये. परंतु उनोने प्रयत्न करके अपने पति श्रेणिक महाराजाको और सब अपने परिवारकोतो क्या ? परंतु अपने सर्व देशको जैनी=धर्मात्मा बनादियाहै. तैसेंही यथा शक्ति अवसर उचित प्रयत्न सबको करना चाहिये, ऐसें सत्पुरुष जक्तमें उत्पन्न हुवेही प्रमाण गिने जातेहै.

१८ 'सुदीह दिठी'=अच्छी दीर्घ दृष्टी. अर्थात्–लंबी दृष्टी वाले होवे. कोइभी कार्य बिगर विचारे करे नही, जिस कार्यमें बहोत लाभ. और क्लेश (मेहनत, परिश्रम) थोडा होवे, और–उस कार्यको बहोत जन स्तुती=श्लाघा करे. ऐसा कार्य करतेहै, जो कृतव्यकर्म निपजानेकीरिती और-उसके गुणको तथा फलको जानेंगे वोही श्रावक लोक अपवादसें बचेंगे, और–वो राजदरबारमें पंच पंचायतीके सल्लाके काममें माननीय होतेहै. अर्थात् –बहोत जन उनसें विचार करके काम करतेहै. और–वो श्रावकजीभी ऐसें विचक्षण होतेहैकि पापकर्ममेंभी सल्ला देते वक्त आप धर्म निपजालेतेहै,

जैसें किसीने सक्कर गालनेकी परवानगी मागी. तब आप बहोत विचक्षणतासें ऐसा जबाब देतेहै- कि अमुक इतने उपरात सक्कर गालनेकी कुच्छ जरुरत नहीं दिखतीहै. इस कार्यमें अमुक (जो जो विशेष पापकारी वस्तु होवे सो) निपजानी नही चाहिये, इत्यादि विवेक रख्खे! अहो भव्य जीवो धर्म विवेक मेहीहै. विवेकी श्रावक व्यवहारको साधते हुवेभी अपनी आत्माको पापसें बचालेतेहै!

१६ 'विसेसन्न'=विशेष ज्ञानी होवे. अर्थात्- अधिक जानपणा होनेसें वो भली बूरी सब बातके जानकार होतेहै, क्योंकि-बूरी बातको बूरी जानेगा. तबही बूरी बातसें अपनी आत्माको बचा सकेगा, शास्त्रमेंभी कहाहैकि 'जाणियव्वा. न समायारियव्वा' पाप आदि के अतिचारका जानतो होना परंतु आदरना नही. ऐसें गुणोकेभी जानकार होना चाहिये! जो व्रतादिक गुणका व फलका जानकार होके व्रतादिक गुण स्वीकार करताहै. उनके अंतःकरणमें वो गुण चिरस्थायि होके. उन गुणोंका वो यथातथ्य फलभी प्राप्त करसक्तेहै, जैसें सुवर्ण और-पीतल तथा गायका दूध और-आकका दूध. वगैरा कितनेक पदार्थ

रूपमेंतो हुवेहुव एक सरीखे दिखतेहैं. परंतु गुणों-मेंतो जमीन आसमान (आकाश) जितना अंतर (फरक) होताहै. तैसेंही इस सृष्टीमें कितनेक ऐसें २ पदार्थ व मनुष्यहैकि–उपरसें वेश मात्र प्र-वृत्तिसें एक सरीखें ऐसें दिखतेहैकि–यहतो सच्चे साहूकार सच्चे भक्तराज सच्चे धर्मात्मा सच्चे महात्मा शुद्ध साधु बडे विद्वान बडे पंडित, बडे गुणीजन आत्मार्थी उत्तम पुरुषहै.इत्यादिक और-फिर उनकी गुप्त पोल जब खुलतीहैं. तब वो जितने उंच चडे दिखतेथे उससें अधिक नीच दिखने लग जातेहैं. तथा लोकीक लोकोत्तरसें इसभव परभवसें नीचे गिरजातेहैं. और–आप लाजते–हुवे पवित्र दया धर्मकोभी लजातेहैं. ऐसें दुरात्माके अवगुण जा-ननेको श्रावक बडे कुशल (हुशियार) होतेहैं वह उनकी बोलीमें, चालीमें, आहार विहारमें, दृष्टीमें परिक्षा करतेहैं, धर्मकी हीनता नही होवे, ऐसें उनको बना देतेहैं और–जो सच्चा बाह्य अभ्यंतर शुद्ध प्रवृत्तिवाले महात्मा होवे उनके गुण कितेन करे और–अच्छी तरह धर्मकी वृद्धि करतेहै!

१७ 'वृद्धानुराग'=इस विश्वमें एक२ सें अधिक केइ महान सत्पुरुषहै. ऐसा जानके श्रावकजी

जैसें किसीने सकर गालनेकी परवानगी मांगी. तव आप वहोत विचक्षणतासें ऐसा जवाव देतेहै- कि अमुक इतने उपरात सकर गालनेकी कुन्छ जरुरत नही दिखतीहै. इस कार्यमें अमुक (जो जो विशेष पापकारी वस्तु होवे सो) निपजानी नही चाहिये, इत्यादि विवेक रख्खे! अहो भव्य जीवो धर्म विवेक मेहीहै. विवेकी श्रावक व्यवहारको साधते हुवेभी अपनी आत्माको पापसे वचालेतेहै!

१६ 'विसेसन्न'=विशेष ज्ञानी होवे. अर्थात्- अधिक जानपणा होनेसें वो भली वूरी सव वातके जानकार होतेहै, क्योंकि-वूरी वातको वूरी जानेगा. तवही वूरी वातसें अपनी आत्माको वचा सकेगा, शास्त्रमेंभी कहाहेकि 'जाणियव्वा. न, समायरियव्वा' पाप आदि के अतिचारका जानतो होना परंतु आदरना नही. ऐसें गुणोकेभी जानकार होना चाहिये! जो व्रतादिक गुणका व फलका जानकार होके व्रतादिक गुण स्वीकार करताहै. उनके अंतःकरणमें वो गुण चिरस्थायि होके. उन गुणोंका वो यथातथ्य फलभी प्राप्त करसक्तेहै, जैसें सुवर्ण और-पीतल तथा गायका दूध और-आकका दूध. वगैरा कितनेक पदार्थ

रूपमेंतो हुवहुव एक सरीखे दिखतेहैं. परंतु गुणों-मेंतो जमीन आसमान (आकाश) जितना अंतर (फरक) होताहै. तैसेंही इस सृष्टीमें कितनेक ऐसें २ पदार्थ व मनुष्यहैकि-उपरसें वेश मात्र प्रवृत्तिसें एक सरीखें ऐसें दिखतेहैकि-यहतो सच्चे साहूकार सच्चे भक्तराज सच्चे धर्मात्मा सच्चे महात्मा शुद्ध साधु वडे विद्वान वडे पंडित, वडे गुणीजन आत्मार्थी उत्तम पुरुषहै.इत्यादिक और-फिर उनकी गुप्त पोल जव खुलतीहै. तव वो जितने उंच चडे दिखतेथे उससें अधिक नीच दिखने लग जातेहै. तथा लोकीक लोकोत्तरसें इसभव परभवसें नीचे गिरजातेहै. और-आप लाजते-हुवे पवित्र दया धर्मकोभी लजातेहै. ऐसें दुरात्माके अवगुण जाननेको श्रावक वडे कुशल (हुशियार) होतेहै वह उनकी वोलीमें, चालीमें, आहार विहारमें, दृष्टीमें परिक्षा करतेहै, धर्मकी हीनता नही होवे. ऐसें उनको बना देतेहै और-जो सच्चा बाह्य अभ्यंतर शुद्ध प्रवृत्तिवाले महात्मा होवे उनके गुण किर्त करे और-अच्छी तरह धर्मकी वृद्धि करतेहै ! १७ 'वृद्धानुराग'=इस विश्वमें एकर सें अधि केइ महान ,सत्पुरुषहै. ऐसा जानके श्रावक

अपनी आत्मामें सदा लघुवृत्ति धारण करतेहै. व्यवहार पक्षमें और—निश्चय पक्षमें जो वडे होवे उनकी यथा योग्य सेवा भक्ति करतेहै. व्यवहार पक्षमें जेष्ट दो तरहके होतेहै १ माता पिता वडेभाइ, सेठ तथा वयमें वडे, लोकमें माननीय, इत्यादिकको यथा उचित भक्ति करके उनको परम संतोष उपजातेहै. और साधु साध्वी श्रावक श्राविका इत्यादि धर्मपक्षी जो वयोवृद्ध,गुणोवृद्ध,शुद्ध व्यवहारिक प्रवृत्तिमें प्रवर्तने वाले, उनकीभी यथा उचित तनमनसें भक्तिकरे. इस भक्तिसें जगतमें यशवृद्धि होतीहै. और—वृद्धपुरुष संतुष्ट होकर अनेक पुराने खजानेकी वस्तु द्रव्यादिक, और— भाव वस्तु शास्त्रकी कूंचियो वतातेहै, तथा वृद्धपुरुषोंका शांतिपूर्वक अंतःकरणका दिया हुवा आशिर्वादही बहुत गुणोका करता होताहै. और—भाववृद्ध (गुणवृद्ध) उनको कहतेहैकि जो दिखनेमें—वयमें तथा शरीरमें लघु दिखतेहै. दिक्षाभी थोडे कालकी होतीहै. परंतु कर्मोकी क्षय उपसमताके जोगसें कितनेकको स्वभाविक अंतःकरणकी विशुद्धता होनेसें ऐसा अनुभव ज्ञान प्रगट होजाताहैकि—उनके हृदय उद्गारसें अनेक ज्ञानादि गुणोकी भरी-

हुइ तात्विक वातों प्रगट होतीहै, और-सम्यक्त्वादि गुण जिनके मजबूत होतेहै. ऐसें सत्पुरुष मान-प्रतिष्ठाके अर्थी कभी होनेके सववसें वो अपने गुणप्रगट करते नहीहै, परंतु विचक्षण श्रावक उनकी आकृति व प्रवृत्ति उपरसें उनकी पहिचान करलेतेहै, जैसें जोहरीकापुत्र रत्नवाले पत्थरको पहचानलेताहै. तैसें ही वो उनकी व्यवहारीक प्रवर्तीके तरफ लक्ष नही देते हुवे. उनकी यथा उचित तह-मनसें भक्ति करतेहै, ऐसें सत्पुरुष जो कदापि तुष्टमान होजावेतो दोनों लोकमें निहाल (कल्याण) करदेवे, इसका सारांश येहीहैकि वृद्धपुरुषोंकी भक्ति वहोतर गुण कारक होके विशेष सुख दाता होतीहै.

१८ 'विनीत'=विनयवंत=नम्रतावंत होवे. यहतो सर्व सद्गुणोंका और-सर्व धर्मका मूलही है. अर्थात्-इस विश्वमें जितने गुण है उन सब गुणोंमेका अव्वल दरजेका यह वडा उत्तम गुण विनय=नम्रताहीहै, इसलिये इस गुणकी बहुतही आवश्यकताहै. पहिले (प्रथम) यह गुण जिनके आत्मामें होताहै. वो विनय गुण दुसरे अनेक गुणोंको खेंचकर लाताहै, विनयसें ज्ञान, ज्ञानसें

समकित. तथा जीव अजीवकी पहचान, जीव अजीवकी पहचानसें रक्षण. (दया) दया तथा सम्यक्त्वसे वैर विरोधकी निवृत्ति, और-वैर विरोधके निवृत्तिसें मोक्ष, यों विनयसें अनुक्रमें सर्व सद्गुणोंकी प्राप्ती होतीहै, ऐसा जानकर श्रावकजी सदा सवसें नम्रता सहित वर्ततेहै. किसीभी तरहका अभिमान नहीं रखतेहै, जो नम्र होताहै वोही सवसें वडा होताहै !

१९ 'कायन्नु'=कृतज्ञ होवे. अर्थात्-अपनेपर किसीने उपकार किया होवे. उस उपकारको भूले नही, सत्पुरुषोंकाभी ऐसा स्वभाव होताहैकि-त्रोराइ जितने उपकारकोभी आप पहाड जितना उपकार समजतेहै, और-उस उपकारको फेडनेकी हमेशा (सदा) अभिलाषा रखतेहै परंतु कृतघ्नी नही होतेहै ! ग्रन्थमेभी लिखाहैकि-कृतघ्नीकेलिये यह प्रथवी ऐसी कहतीहैकि—

पर्वताणां न भारोमे। न भारः सागरस्य मे।
कृतघ्नस्य महा भारो। भारो विश्वास घातिनः

अर्थात्-वडे २ पहाडोका और-वडे२ समुद्रोका मेरेको विलकुलही वजन नही लगताहै. परंतु, कृ-

तघ्नी (किये हुवे उपकारको नही मानने वाला) का और–विश्वास घातकी. इन दोनोका भार (वजन)को मैं सहन नही कर शक्तिहू !!

☞ कृतघ्नता. महा जबर पापका कारणहै कृतघ्नीका जगतमें विश्वास रहता नहीहै, कृतघ्नीको दिया हुवा ज्ञान, तप, संयम, प्रमुख सब उलटा प्रगमताहै, जैसें सर्पको पिलाया हुवा दूध विष रुप होजाताहै, ऐसेर कृतघ्नीमें अनेक दुर्गुणहै. ऐसा जानकर श्रावकजी ऐसें कृतघ्नीका स्पर्शभी नही करतेहै, और–उपकारी सत्पुरुषोंका उपकार फेडनेमें हमेशा (सदा) तत्पर रहतेहै, मोका (अवसर=समय) आनेसें सवाया उपकार फेडदेतेहै. तथा परमानंद मानतेहै कि आज मैं कृतार्थ हुवा !

२० 'पर हियत्थ कारीए' पर कहतां दुसरेके 'हियत्थ' कहता हित=सुख उपजे ऐसे कार्यके 'कारीए' कहतां करने वाले. यह व्यवहार भाषाका शब्दहै. परंतु व्यवहारमें जो परोपकार को करताहै, सो निश्चयमेंतो अपनी आत्मापरही उपकार करताहै, क्योंकि परोपकारका फल उनकेही आत्माको सुखदाता होताहै. इसलिये श्रावकजी प[illegible] कार्यको निजहितका कार्य

कर जो करतेहै उनको इस कार्यका (ए परोपकारके कार्यका) गर्वनही होताहै. जिससें वो कार्य वहोत फल दाता होताहै, क्यौंकि–गर्व= अहंकार है सो फल (लाभ) का नाश करताहै, और–जो मूल शब्दमें परहित करणेका कहा है सो ओही वरोवरहै. क्योंकि–इस जगतमें स्वार्थ (मतलब) साधने रूप वडी जब्बर लाय (आग) लगरहीहै. परंतु मतलव साधनेका खास (सच्चा) अर्थमेंतो नहीं समझतेहै, तथा जनलोक जो मतलव साधनेका कार्य करतेहै. वो कार्य उलटा उनके मतलवका नाश करणेवाला होजाताहै. ऐसें अज्ञ जीवोंको समजानेकेलिये यह उपकार करणेका सत्य उपदेशही वहुत फायदे मंद होताहै, श्रावकजीकी आंतरिक दृष्टीतो स्वार्थ साधनेकी तरफ रखतेहै. और–व्यवहारिकमें अज्ञ जीवोंको रस्ते लगाने. अर्थात्–अपने व्यवहारिक परहितकेलिये, धनका, कुटुंवका, या शरीरका, नुकसानभी जो कभी होता होवेतो उसकी दरकार नही करे, और–सच्चे दिलसे परोपकार करतेहै. अन्य जीवोंको यथा शक्ति सुख शांति उपजातेहै. और–व्यास ऋषि ने कहाहैकि—

श्लोक-अष्टादश पुराणा नां। सारोऽयं वच-
नद्वये॥ परोपकारोऽस्ति पुण्याय।
पापाय परपीड नम्॥ १॥

अर्थात्-अठारेही पुरानका सारांश मैंने यह देखाहैकि-परोपकार बरोबर पुण्य नहीं, और-परको (दुसरेको) पीडा (दुःख) देने बरोबर पाप नहीं, ऐसा जानकर श्रावकजी यथा शक्ति हमेशा परोपकार करतेही रहतेहै!

२१ 'लद्धलक्खो'='लब्ध'=प्राप्तकियाहै. 'लक्ष'=ज्ञान! मोक्ष प्राप्त करणेके चार कर्तव्योमें अव्वल दरजेका कर्तव्य ज्ञानहीहै. इसलिये मुमुक्षु जीवोंको अक्षय मोक्ष परम सुख प्राप्त होवे ऐसा ज्ञानाभ्यास करणेकी बहुतही अतूरता=जरूरत रहतीहे? जैसें क्षुधितको आहार की, प्यासेंको पाणी की, रोगीको औषधकी, लोभीको दामकी. कामीको कामकी. इत्यादिक को जैसी अतूरता होतीहै. वैसी ही अतूरता श्रावकजीको ज्ञान ग्रहण करणे की होतीहै. जैसें पूर्वोक्त इच्छक इच्छित वस्तु प्राप्त होनेसें ओ उस वस्तुको प्रेमातुर होकर ग्रहण करताहै. तथा अतृप्तिसें उस व-

स्तुको भोगवताहै, तैसेंही श्रावकजी अति आदर-पूर्वक सत्य ज्ञान हामेशा ग्रहण करते हुवे कभी तृप्त नही होतेहै, ग्रन्थमेभी कहांहैकि-" खण्डे खण्डेषु पाण्डित्यम्"=खड२ करके अर्थात् थोडा२ ज्ञान ग्रहण करकेभी बुद्धिवंत होके थोडे कालमें पंडित होतेहै. एकेक गुण ग्रहण करणेसें अनेक गुणोंकेधारी होजातेहै, ऐसा समझके सामायिक आवश्यक (प्रतिक्रमण) सूत्र. तथा मूल सूत्र, सूत्रका अर्थ. और-सूत्रमेंसें दोहन (शोधन) करके बनाये हुवे थोकडे वगैरा ज्ञानाभ्यास करतेहैं, सर्वज्ञप्रभुनेभी शास्त्रमें कहांहैकि-"निग्गंथे पव्वयणे, सावए सेवि कोवि ए." अर्थात्-पालित श्रावक निग्रंथ प्रवचन =शास्त्रके जानने वाले थे, औरभी वितराग सर्वज्ञ प्रभुजीने शास्त्रमें ऐसा फरमायाहैकि-"सील-वया बहु सुया," अर्थात्-राजमती महासती जीने दिक्षा जब धारण करी तब उस-वक्तमें महासती शीलवंती होके बहोत सूत्रोंकी जानने वाली थी, इन दाखलें परसें जाना जाताहैकि-श्रावक श्राविका ए दोनोंहीको सूत्र (शास्त्र) का जानपना जरूर२ होना चाहिये, जो सूत्र ज्ञानके जान होवेंगेतो उनकी श्रद्धा पक्की होवेगी. और जो आपने व्रत

शील तप नियम निर्मळ पाळ सकेंगे तथा आराधीक होवेंगे ॥ इति ॥

☞ सुचनाः—यह उपरोक्त श्रावकजीके २१ लक्षण, तथा श्रावकजीके २१ गुण युक्त इस काल प्रमाणें होवे उनको श्रावकजी कहना —

श्राविकाजीके २१ लक्षणोंमें तथा २१ गुणोंमें तफावत.

अब जैसें २१ लक्षण तथा २१ गुण श्रावकजीके कहेहै, वैसेही २१ लक्षण तथा २१ गुण श्राविकाजीके जाणना चाहिये, इसीमें फक्त इतनाही तफावत (फरक) हैकि–जो स्त्री पर्यायके सबबसें व्यापार आदि कितनेक कार्योका प्रसंग बहुत कम आताहै. तैसेंही श्राविकाजीकोभी गृह (घर) सम्बंधी कार्योका प्रसंग विशेष रहताहै. उसमें बहुतही यत्नासें वर्तनेकी हुश्यारी रखनेकी जरूरहै. अर्थात्–वो श्राविकाजीने ऐसा विचार करना चाहियेकि–मे पूर्वो उपार्जित (पूर्व संचित) पापोदयमें तो मैं स्त्री पर्याय पाइहूं. जिससें पराधीनता. और–मा""सदाही छ'कायाका कुटारंभका प्रसग हो" जरूरही विशेष

कर चलुंगी. विन देखे, विन पुंजे, किसीभी वस्तुको नहीं वापरूंगी. सासु, सुसरा, जेठ, जेठाणी, नणंद, पती, इत्यादि कुटुंबीयोंके यथा शक्ति अवसर (समय)उचित लज्जा मर्यादा सहित आज्ञामें चलुंगी! और–लज्जा, क्षमा, दया, शील, संतोप, विनय= नम्रता गुरुभक्ति, नियमानुसार, यथा शक्ति, धर्म-ध्यान, दान, पुण्य, इत्यादिक शुभ वृतीसें वर्तुंगी तो यह मेरा जन्मभी मै सुखसें पूर्ण कर सकुंगी. और–आते (आगेके) भवमें पुनः स्त्री जन्म नहीं पावुंगी. और–इस भवमें तथा परभवमें सर्व सुख प्राप्तकर सकुंगी. इत्यादि ऐसा शुभ विचारसें सर्वको सुख दाता होके धर्मकी वृद्धि करती वर्ते सो श्राविका!

इति श्रीमल्लोका गच्छान्तरीय आदि (प्रथम=मुळ) सम्प्रदायिकके स्वामी परम पूज्यपाद श्रीमान श्री-कहानजी ऋषिजी महाराजके अनुयायि सरल स्वभावी मुनिश्री दगडु ऋषिजी महाराज संग्रहित "रत्न अमोल मणि प्रका-शिका." अपर नाम 'आवश्यक निर्पक्ष सत्य बोध ' नामक ग्रन्थका द्वितिय प्रकरण समाप्तं.

कियाहै. उसी मार्गपर चलनेसें अपनी आत्माका परम कल्याण होवेगा ! परंतु ऐसा नहीं कहांहैकि –जल्दीसें फलांग मारकर दान शिल आदि धर्मको छोडकर एकदम–बडे तपस्वीराज, महाराज, धीराज, बज जानेसें, और–घणी खमा, घणी खमा, कहलानेसें (बहुत क्षमा हुवे विना ही) तथा झुटे नामके अभिमानमें फुलनेसें क्या कल्याण होवेगा? बिना गुणका नाम कितना हास्यपद गिनाजाताहै? इस वातका युक्त (पूर्ण) विचार करके श्रीजिनेश्वर सर्वज्ञ प्रभुके फरमान मुजब अनुक्रमसें चारोंही साधनोको आराधना चाहिये.

☞ अब–ऐसा विचार करणा चाहियेंकि–सबसें जो अधिक गुणाढ्य होताहै उसकोही सबका (सर्वका) प्रमुख=बडा पद दिया जाताहै वैसेंही दान प्रमुख धर्मके चारोंही साधनोंमें प्रथम दानको प्रमुख (बडा) पद दियाहै इसलियें सबसें अधिक दान देने वाले महाशय महा गुणवंत प्रतक्षही भाष (मालुम) होताहै क्योंकि–दानही शील आदि मार्गमें प्रवर्ता शक्ताहै इसलिये धर्मार्थियोंको अव्वल दान धर्मकी आराधना करनेकी बहुतही जरूरतहै इसलिये इहा दातारके ७ गुण कहताहै

इतिश्री दानकी महीमा संपूर्ण.

महीनेतक नित्य=हमेशा एक क्रोड, आठ लक्ष, (१,०८,०००००) सोनैये (१६ मासे सुवर्णकी १ महोर) अमोघ वारासें सव्वा प्रहर दिन चडे वहां तक दान देतेहै। वारह महीनेमें तीन अब्ज, अठ्यांसी क्रोड, अस्सी लाख,(३,८८,८०,०००००) इतने सोनैयें (मोहरो) का दान देतेहै. यह दान धर्मकी पहिले (प्रथम) आराधना करके फिर-विशुद्ध शील, अर्थात्-शुद्धाचार=चारित्र ग्रहण करतेहै. और फिर तप करतेहै, तव क्षायिक भावकी प्राप्ती होनेसें क्षपक श्रेणि प्रतिपन्न होके ४ घनघातिक कर्मोका नाश करके केवल (सर्वज्ञ, पूर्ण ब्रह्म) ज्ञानकी प्राप्ति होतीहै. और-फिर-जिस मार्गसें, अर्थात्-दान आदि चारोंही साधनोकी अनुक्रमें अराधना करणेसें मोक्ष मार्गकी प्राप्ति करीहै. उस (ओही) मार्गके विषे मुमुक्षुजनोको (मोक्षके अभिलाषीयोको) प्रवर्तानेको परमात्माने यह चारोंही वार्तोका द्वादशांगी द्वारा विविध भांतीकर वरणन दर्शायाहै !

और-जिस मार्गसें अपने परम पूज्य सत्पुरुषोंने आत्महित साधाहै. और-वोही मार्ग अपनेको स्वीकारनेका विविध भांती करके फरमान

अर्थात्–लगाया हुवा द्रव्य व्याजमें दूगुणा, पारमें चौगुणा, और–खेतीमें सो गुणा कदा-चित् होजाताहे, परंतु–नियम नही ॥ और-सत्पात्र दानमें लगाया हुवा द्रव्यतो अनत गुणा होताहै, ऐसा अनंत गुणा लाभका देनेवाला पदार्थ (दान) को तुच्छ वस्तुकी वाच्छामें नही गमाना चाहियें। अब इधर जरा देखियेकि सत्पात्र(सुपात्र) दानके प्रभावसें–१ सुबाहु कुमर महा रूपवत और महा संपदा=लक्ष्मीका भुक्ता हुवा,और–२सालीभ द्रजी सेठकी ऋद्धि देखकर श्रेणिकराजाभी चकित गये, ३ धना सार्थवाह सेठ सत्पात्र दानके भावसें श्री ऋषभदेव=तिर्थंकर सर्वज्ञ वितराग भु हुवे, और–इत्यादि ऐसें २ अनेक दाखके=द-ष्टांत पाये जातेहै, इसलिये अब जरा दिलमें विचारीयेकि सत्पात्र दानका कितना बडाभारी हा लाभका दाता होताहै.

२ 'क्षान्ति'–दातार क्षमावंत होना चाहिये, क्योंकि–कितनेक पात्रोंकी प्रकृतीमें स्वभावसेही उष्णता बनी रहतीहै, वो कभी अच्छे=साताकारी दानकोभी बखेड (निंद) डालतेहै. और–तपस्वि योंकी प्रकृतीभी बहूत करके तेजस्वी होतीहै, इस-लिये इत्यादि प्रसगपर दातारोंको सहन

दातारके ७ गुण अर्थ युक्त.

श्लोक–एहिक फल न पेक्षा ।
क्षान्ति निष्कपटत न सूयत्वम् ॥
अविपवादित्व मुदित्व ।
निरऽहँकारित्व मितिहि दातृ गुणा ॥१॥

अर्थात्–१ दातार दान देकर उसके फलकी वांच्छा नहीं करे, क्योंकि वांच्छा करणेसें उस दानका पूर्ण फल प्राप्त नहीं होताहै. इस वक्तमेंभी देखतेहैंकि–जो ऑनररी विन वदला लिये सेवा (नोकरी) करणेवाले खेरखवाहै उनको वक्तपर मालिक संतुष्ट होकर उनकी मेहनतसें भी अनेक गुणा अधिक (ज्यादा) लाभ दे देतेहै, और–नौकरी लेने वाले कदाच जो पूरा काम नही वजावेतो वो दंडभी पातेहै, तैसेही दानमेभी समझना चाहिये !

श्लोक–व्याजे स्याद्वाद्वि गुणं वितं ।
व्यापारेच्च चतुर्गुणं ॥
क्षेत्रे शत गुणं प्रोक्तं ।
दानेऽनंत गुणं भवत् ॥१॥

४ ' अन सूयता '–दातार इर्षा रहित होना चाहिये, दातारी पनेका सर्व आधार शक्ति=मा-प्तता पर रहाहै. इसलियें इसमें किसीकीभी वरो-वरी आगर अधिकाइ कदापि नही करनी चा-हिये, और–जो कोइ इर्षा रखके (करके) दान करतेहै, अर्थात्–अमुक इसीने अमुक इतना कि-यातो मैभी अमुक इतना करूं ? या इससें अधि-क (जादा) करू ? अगर अमुक यह इतना दान क्यौं करताहै ? इत्यादि इस तरह दुसरेकी इर्षा लानसें अपने किया हुवा दान धर्मका फल वरोवर नही लगताहै ! अपनेसें जो कोइ अधिक दान देनेवाले महाशय होवे उनकी और–जो कोइ शक्ति हीन होकरभी थोडा बहुत दान क-रता होवे उनकी यह दोनो महाशयजीकी शुद्ध भावसें इस तरहसें प्रसंस्या करेकी धन्यहै इनको ए महाउत्तम सत्पुरुषोंको दान आदि भक्ति क-रके महा उत्तम लाभ प्राप्त करलेतेहै. इत्यादि इस तरह उनकी गुण कीर्ति=स्तुति करे !

५ ' अविपादित्व '—दातारको अखिन्न भावी रहना चाहिये. कदाच ऐसा नही विचार करणाकि–यह झगडा क्या मेरे पिछे लगगया

रखनेकी वहोतही जरूरहै, किंचित्–मात्रभी पात्रोंका मन दुःखना नही चाहिये, और–उनको वहोत संतुष्ट रखना चाहिये, यही दातारोंका मुख्य कर्तव्यहै, पात्रोंकी तरफसें जो जो आघात होवे उसको समता=संतोष पूर्वक सहन करके अपना=स्वताका दान धर्म रूप कर्तव्यहै उसकी हमेशा वृद्धि करताही रहना चाहिये, जिससें उस पवित्र दानका फलभी पूर्ण प्राप्त होताहै. और–अपनी सुकीर्तिभी विश्वव्यापिनी वन जातीहै !

२ ' निष्कपटता '–दातार निष्कपटी=कपट रहित होवे. अर्थात्–दातारतो सरल स्वभावी ही होना चाहिये, क्योंकि–कपट रखनेसें दानका फल (लाभ) वरोवर नही होताहै. कपटी दातार फक्त लोकोंको अपना गौरव (वडेपणा) वताना चहाताहै. इसलिये सामान्य (छोटी या हालकी) वस्तुभी विशेष भभकेके सात देताहै. जैसें छाछ देकर दूधका नाम लेताहै, और–कपटी दातारका जव कपट प्रगट होताहै. तव जगतमें उसकी वहोत२ अपकीर्ति होतीहै. और–उस दानका फलभी नष्ट होजाताहै. और–उनको उलटा वहोत–पश्चाताप-करना पडताहै.

वक्त आपने हृदयमें उदारपणा रक्खे और–दान दिये पीछे प्रमोदभाव धारण करके दानका फल बराबर प्राप्त करे!

६ 'सुदित्व'=दातारको उल्लास भावी होना चाहिये, वो पात्र देखकर बडा (बहुत) खुषी होवे. और–ऐसा विचार करेकि–आज मेरे अहो भाग्यहैकि–ऐसें अति उत्तम महान सत्पुरुष सनमुख पधारके मेराघर पावन=पवित्र करतेंहै, और –शुद्ध दान ग्रहण करके मेरा द्रव्य लेख लगातेंहै. मुझको कृतार्थ करतेंहै. महा दुःख रूप संसार समुद्रसें तारतेंहै. यह जो इहा नही होतेतो यह मेरी संपत्ति क्या काम आती? जितनी वस्तु पात्रमें पडतीहै. उतनाही महा लाभ प्राप्त रूप द्रव्य मेराहै, बाकी रहकेतो दुसरेही मालिक बन जायेंगे.

तणदे तणु ण दाणो ।
धम्म रहियो मित्य काय समजी जी॥१

अर्थात्–जो कोइ कृपण होताहै, वो माता, पिता, स्त्री, पुत्र, मित्र, इत्यादिकको कोठता हुवा अपनी आत्माकोभी ठगताहै क्योंकि–वो तन देना (मरना) तो कबूल करताहै. परतु तृण (घासकी काडी) मात्र भी देना कबुल नही करताहै।

सब दोडर कर मेरे पासही आतेहै! और-मेरे
कोही मांगतेहै! मै किनकोर देवुं? और-अब
कदाच 'ना' कहुंतोभी अच्छा नहीं दिसताहै
और-मेरी कीर्तिकाभी भंग (नाश) होवेगा
इत्यादि ऐसा विचार दान देनेके पहिले करे
तथा दान देती वक्त यह देवूं? क्या वह देवु
यह इतना देवु? क्या यह उतना देवुं? ऐसा म
नमें विचार करे, और-अच्छीर वस्तु छिपावे
तथा घरमें शुद्ध वस्तु होनेपरभी नट जावे, (नहीं
करके कहे) और-दान देतार अटक जावे आ
गर थोडा२ देवे. इत्यादि दान देते वक्त ऐस
करे तथा दानदिये पीछे अपने मनमें ऐसा पश्चा
तापकरे की. ए अमुक इतनी वस्तु क्यौं दीइ
वह अमुक उतनी वस्तु क्यौं दीइ? अब मै क्य
करूंगा? इत्यादि इसी तरह जो कोइ 'स्वीत्र
भाव युक्त दान देतेहै, वो दानके फलमें विपरि
तता करलेतेहै *ऐसा जाणकर (समझकर
दान देनेके पहिले अपने मनके परिणामोमें (भावमें
उत्सुकता (उल्लासता) रक्खै, तथा दान दे

* किप्पणण जतण वचय।
वंचय सुयणण जणक तीए मित्तो ॥

दान देने योग्य वस्तुके नाम.

अव्वल साधुजीको तथा साध्वीजीको दान देने योग्य १४ प्रकारकी वस्तु शास्त्रमें फरमाइहै. सो. १ 'असणं'=अग्निपर सिजाकर अगर सेखकर अचेत किया हुवा २४ प्रकारका अनाज (अन्न) २ 'पाणं'=२१ प्रकारका धोवणका पाणी, गरम पाणी, छाछ, इक्षुका रस, (साटेका रस) इत्यादि अचित पाणी, ३ 'खाइमं'=सुखडी, पक्वान, आचित, मेवा, मिठाइ, प्रमुख. ४ 'साइमं'=लवग, सुपारी, जायपत्री, चुरण खटाइ वगैरे. ५ 'वत्थ' =वस्त्र, सुतके, सणके, रेशमके, सफेत वर्णके. ६ 'पडिग्गह'=काष्टके, (लकडेके) तूम्बाके, मटीके आहार, पाणी, औषधी आदि ग्रहण करणे योग्य पात्रे. ७ 'कंबल'=उनके वस्त्र ८ 'पाय पुच्छणं' =उनका मेणका आदि 'अद्रष्टी'=जिहां दिखे नहीं ऐसी जगह पर वापरती वक्त पूंजणेकेलिये रजोहरण, और–वस्त्र, पात्र, शरीर, पूजणेकेलिये 'गुच्छा'=पूंजणी, तथा पग पुछनेको जाडा वस्त्र, यह ८ प्रकारकी वस्तु मुनि महासती को आवगी दीइ जातीहै. अर्थात्–मुनि

आगर हर कोइ प्रकारसें नष्ट होजागा इसलियें द्रव्य प्राप्त रूप महा उत्तम लाभ लेनेकी यह अ पूर्व वक्त (समय) मेरे हाथ लगीहै. ऐसा सत्पात्र दान रूप अति उत्तम महालाभ लेना होवे उतना जरूरही लेलेवूं ! ऐसें अपने मनके परिणाम हम्मेशा अति उत्तम रखके हर्ष युक्त उलट भावसें=पीछे नही देखता हुवा दान देवे !

७ ' निर्हंकारीत्व '–निरऽभिमानी (अभिमान रहित) होवे. और–ऐसा विचार करेंकि--श्रीती-र्थंकर प्रभुजीतो बारह महीनेतक निरंतर=दररोज एक क्रोड, आठ लक्ष (१,०८,०००००) सो-नैये (१६ मासें सुवर्णकी, १ महोर) अमोघ धा-रासें सवा पहर दिन चडे वहांतक दान देतेहै ! बारह महीनेमें तीन अब्ज अठ्यांसी क्रोड. अस्सी लाख (लक्ष) (३,८८,८०,०००००) इतने सोनै-ये (मोहरो) का दान देतेहै, ऐसें अति उत्त-मोत्तम महा दानेश्वरीयोंके आगें में क्या विचारा पामर कौनसी गिनतीमें हुं ? और–में भारे कर्मी पापी क्या दे शक्ताहुं ? इत्यादि ऐसा शुभ विचार करके आप निरऽभिमानी रहे !

☞ इति श्री दातारके ७ गुण अर्थ सहित सपूर्ण. ☜

वन जायतो (साधु साध्वीयोंके तथा पडिमा धारी श्रावकोंके और-दयापालनेवाले श्रावकोंके काममें आनेसें) माहा निर्जरा होके महा पुण्यकी उपार्जना होतीहै, इस शिवाय औरभी धर्मशास्त्र, थोकडे, ढाळ, स्तवन, सज्झाय प्रमुखके पुस्तकें, सुखपात्ति आसन (बेटका) माला, पुंजणी, रजोहरण, वगैरा जो जो धर्म क्रियामें साहाय्यताके कर्ता उपकरणोहैं, उसकाभी जोग दानेश्वरी=दातार अपने घरमे रखतेहै, और-वक्तपर वो वस्तु सुपात्रको देकर महालाभ प्राप्त करलेतेहै।

इति श्री दान देने योग्य वस्तुके नाम सपूर्ण

दान देनेकी विधी.

श्लोक-संग्रह सुचस्थानं ।
पाद वंदन भक्ति प्रणामंच ॥
वाकाय मनःशुद्धी-रेपण ।
शुद्धिष्य विधी माहु ॥ १ ॥

अर्थात्-दान देनेकी इच्छा वालेको-१ अव्वलतो जोर वस्तु दानमें देने योग्य होवे उसका अपने घरमें 'संग्रह' करना योग्यहै, ।म

वस्तु देकर पिछी ग्रहण नही करी जाय॥ ८
'पाडिहारिय'=कहतां जे वस्तु मुनिको दे
पिछे लेने योग्य वस्तुके नाम कहतेहै, ९ 'पी
छोटे पाट, बाजोट, प्रमुख १० 'फलग'–व
पाट शयनके लिये ११ 'सेज्जा'=सज्झा
ध्यान, करनेको स्थानक (जगह, मकान) १
'संथारह'–बिछानेकेलिये–गहुंका, शाल
कोद्रवका, इत्यादि पराल. १३ 'ओसह'–अ
षध सुंठ कालालूण, तथा सेखेला=गरमकि
हुवा लूण काली मीरच, पचाया हुवा अजव
वगैरा फुटकर वस्तु १४ 'भेषजेणं'–चूरण, गोल
इत्यादि बहुत वस्तु मिलकर जो औषधी अक
बनाइ होवे वो दवाइ–शतपाकादिक तेल प्रमुख

☞ सूचनाः—यह १४ प्रकारकी वस्तु=
दार्थ साधु साध्वीयोंको देने योग्यहै सो द
देनेकी इच्छावाले सद्गृहस्थ यह वस्तु अप
निमित्त तथा अपने कुटुम्बके निमित्त लाया हो
अगर कोइ वस्तु बनाइ होवेतो उस वस्तुमेंसे बच
यकर सुज्जती (सचेत वस्तुके संघटे रहित
रखतेहै. फिर–वो वस्तु अपने घर कार्यमें
काम आतीहै. और–पुण्योदयसें सुपात्रका जो

धन जायतो (साधु साध्वीयोंके तथा पडिमा धारी श्रावकोंके और-दयापालनेवाले श्रावकोंके काममें आनेसें) माहा निर्जरा होके महा पुण्यकी उपार्जना होतीहै, इस शिवाय औरभी धर्मशास्त्र, थोकडे, ढाळ, स्तवन, सज्झाय प्रमुखके पुस्तकें, मुखपत्ति आसन (बेटका) माला, पुजणी, रजोहरण, वगैरा जो जो धर्म क्रियामें साहाय्यताके कर्ता उपकरणोहै, उसकाभी जोग दानेश्वरी=दातार अपने घरमें रखतेहै, और-वक्तपर वो वस्तु सुपात्रको देकर महालाभ प्राप्त करलेतेहैं।

इति श्री दान देने योग्य वस्तुके नाम सपूर्ण

दान देनेकी विधी.

श्लोक-संग्रह मुचस्थानं ।
पाद वंदन भक्ति प्रणामंच ॥
वाकाय मनःशुद्धी-रेपण ।
शुद्धिष्य विधी माहु ॥ १ ॥

अर्थात्-दान देनेकी इच्छा वालेको-१ अव्व- जो२ वस्तु दानमें देने योग्य होवे उसका घरमें 'संग्रह' करना योग्यहै, जिससें

वक्तपर 'ना' कहनेका प्रसंग नहीं आवे, २जो पात्र (दानको ग्रहणने=लेने योग्य) आवे; उनको यथा योग्य 'उच्चस्थान' में खडे रख्खे. ३ फिर उनके गुणानुवाद (स्तुति) करके नम्रता सहित ऐसा कहेकि–अहो तरण तारण महानुभाव आप बडी कृपा करके मुझको पावन (पवित्र) करणेको पधारेहो, इत्यादि कहकर, ४ फिर–यथा योग्य विनय विधी सहित पाचुं अंगनमायके "तिख्खुत्ता" के पाठसें 'वंदना'=नमस्कार करे, ५ और–दोनो हाथ जोडकर नम्रता युक्त अपने इहां जिसर वस्तुका जोग होवे उसकी इस तरह आमंत्रणा करेकि–अहो तरण तारण परम दयालु अवतो मेरेपर जरूर कृपा किजीये! यह अमुक शुद्ध वस्तु लिजीये! वह अमुक शुद्ध वस्तु लिजीये! इत्यादि. ६ और–अपने परिणामोमें उल्लासपणा=उदारपणा रख्खे, तथा उलट भावसें=बिलकुल नहीं अचकाता दान देवे, ७ दान दियेबाद प्रमोदता युक्त=अति हर्ष सहित ऐसा कहेकि–आज मेरे धन्य भाग्यहेकि–जिससें यह मेरी अमुक वस्तु लेखे लगी, इत्यादि ऐसा कहे, ८ दानेच्छुको दान तो अपने हाथसें

ही देना उचितहै. और–कहतेभीहैकि–“ हाथे सोही साथे” अर्थात्–जो जो दान अपने हाथसें दिया जाताहै सो वोही साथमें आताहै, ९ और–दान देती वक्त घबरावे नही, यत्ना सहित जो जो दान देने योग्य वस्तु होवे उसकी चौकस करके देख देखके देवे, रखे (कदाच) वो वस्तु सडी बिगडी नही होना, और–प्रकृतिकोभी प्रतिकुल (दुखदायी) नही होना, अर्थात्–ओ वस्तु भोगवनेसें संयममें विघ्न नहीं होवे. ऐसी शुद्ध वस्तु देवे। यह दान देनेकी नवधा भक्ति=नव प्रकारकी विधी बताइहै।

☞ इति श्री दान देनेकी विधी संपूर्ण ☜

दानका गुण.

श्लोक–हिंसायाः पर्यायो–लोभोऽत्र ।
निरस्यते यतो दाने ॥
तस्माद तिथि वितरणं ।
हिंसाव्यु परमण मवेष्टम् ॥ १ ॥

अर्थ—लोभका त्याग करे विना दान नही होताहै, लोभहैसो हिंसाका रूपहै. इसलियें दानसें

लोभका त्याग होनेसें हिंसाकाभी त्याग हुवा, और–दयाका आराधन हुवा, जिनोने दया रूप पवित्र व्रतका आराधन किया, उनोनें सब व्रतोंका आराधन किया, इसलियें दान रूप अति उत्तम गुण सब गुणोमें श्रेष्ठहै. और–सब गुणोंको आराधने वाला होताहै !

☞अब–औरभी इधर जरा लक्ष (ध्यान) देकर विचारीयेकि–सत्पात्र दानके प्रभावसें–'धन्नासार्थवाह' तथा 'शंखराजा' आदिकने सत्पात्रको दान प्रतिलाभकर (देकर) तीर्थंकर गोत्र उपार्जन कियाहै, ऐसा यह महा उत्तम दान परमात्म पदको प्राप्त करणेका मूल्य यही साधन =उपायहै. परम पदके अभिलाषी सद्ग्रहस्थ इस दान रूप अति पवित्र व्रतको यथा विधी शुद्ध भाव भक्तिसें जरूरही अराधन करेंगेतो वो पर-

.ऐसें एक अव्रति सम्यक् दृष्टीके पोषणेमें अधिक (ज्यादा) फल होताहै, २ सहस्र अव्रति सम्यक् दृष्टीके पोषणसें जितना फल होताहै. उतना फल एक व्रतधारी श्रावकके पोषणेमें होताहै. ३ सहस्र व्रतधारी श्रावकके पोषणेसें भी अधिक फल एक महाव्रतधारी साधुको पोषणेमें होताहै, ४ सहस्र महाव्रतधारी साधु पोषणेसें भी अधिक फल एक जिनेंद्र भगवतको दान देनेमें होताहै!

गाथा—सुपुरिसाणां दाणं ।
कप्प रुख्खस्स समाण सोहंवा ॥
लोहिणं दाणं जइ ।
विमाण सोहा सव्वस्स जाणेह॥१॥
(रत्नसार ग्रंथ)

अर्थः—सत्पुरुषोंको यथा विधीसें दिया हुवा दान कल्प वृक्षके समान फलद्रुम होताहै, और-कुपात्र=लोभीयोंको दिया हुवा दान जैसें मुडदेके विमान सिणगारणे समान शोभाका देने वालाहै अर्थात्-क्षणिक कीर्तिका कर्ता होताहै, विशेष लाभालाभका कारण नहीहै!

सूत्र—कहणं भंते जीवा सुहदीहा उयत्ताए। कम्मं पकरेंति गोयमा नो पाणेअइवाइता, नो मुसंअइवाइता, तहारूवं समणंवा माहणंवा वंदिता जाव पज्जुवासित्ता जाव अन्नयरेणं पीइ कारएणं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभित्ता एवंखलु जीवा जाव पकरेंति ॥

भगवती सूत्र शतक ५, उद्देशे ६ में,

अर्थ—अहो भगवान्! जीव शुभ (सुखे२ सुख भोगवके आयुष्य पूरा करे ऐसा) दिर्घ=लंबा आयुष्य किस करणीसें पावें!, उत्तर—अहो गोतम! जो जीव हिंसा नही करे, झुट नही बोले, और—साधु, साध्वी, तथा श्रावक, श्राविका, यह चारों तिर्थके गुणानुवाद (स्तुति) करे, आदर—सत्कार—सन्मान करे, तथा उनको मनोज्ञ=अच्छा. आहार, पाणी, खादिम, स्वादिम, प्रमुख प्रतिलाभे=देवे. वो जीव सुखे सुखे पुराकरे ऐसा लंबा=दीर्घ आयुष्य पावे!

इति श्री पात्रोंके दान देनेका फल सपूर्ण.

सामायिकके ३२ दोष.

ए ३२ दोष कंठाग्र करके याद (ध्यान) रखना

१० मनके दोप.

१ विवेक रहित सामायिक करेतो दोष; अर्थात्-जीसमें विवेक नही है, वो औसरमेंभी क्या समझेगा ?

२ यश (जस) कीतिके लीए सामायिक करेतो दोष

३ इस भवके लाभके अर्थे सामायिक करेतो दोष, जैसेकि " करूंगा सामाइ, तो होवेगा कमाइ " इत्यादि ऐसें विचारसें !

४ गर्व=अंहकार सहित सामायिक करेतो दोष.

५ भयसें=डरतो२ सामायिक करेतो दोष

६ सामायिकमें, संशय (सका=कल्पना) लावेतो दोष,

७ सामायिकमें, नियाणो करेतो दोष

८ सामायिकमें, क्रोध, मान, माया, लोभ, ए ४ कषाय करेतो दोष

९ सामायिकमें, विनय(नम्रता) हीन करेतो दोष

१० सामायिकमें, अपमान तथा आशातना करेतो दोष.

१० वचनके दोष.

१ सामायिकमें, झुट तथा अप्रिय वचन बोलेतो दोष

२ सामायिकमें, अणविमासी (विनाविचारे) भाषा बोलेतो दोष

३ सामायिकमें, झुट उपदेश देवे, और सुश्रद्धाको उत्थापे, तथा सराग पणे गीत गावेतो दोष.

४ सामायिकमें, सूत्र (शास्त्र) के विरुद्ध, और परपीडाकारी वचन बोले, तथा उतावलो २ बहोत बोलेतो दोष.

५ सामायिकमें, क्लेश (झगडा=तंटा) करेतो दोष

६ सामायिकमें, १ स्त्रीकथा, २ राजकथा, ३ भत्तकथा, ४ देशकथा, ए ४ विकथामेसें कोइ पापकारी कथा करेतो दोष.

७ सामायिकमें, हंसी, थट्टा=मस्करी, कतुहल=गम्मत करे, तथा गरीब, अपग, दुःखीको चीडावे, या हसी करेतो दोष.

८ सामायिकमें, अक्षर, पद, मुख उतावलो२ बोलेतो दोष

९ सामायिकमें, अजुगती भाषा बोले, तथा अक्षर, पद, अशुद्ध बोलेतो दोष.

१० सामायिकमें, अव्रतिकुं, आवो पधारो कहे, तथा दुसरेकुं समझे नहीं ऐसा गरवड२ सें वोलेतो दोष.

१२ कायाके दोष.

१ सामायिकमें, अयोग आसनपर वैठे, तथा ठासणी मारके वैठेतो दोष

२ सामायिकमे, अस्थिर आसन पर वैठेतो दोष.

३ सामायिकमें, चंचल दृष्टीसें. तथा विषय=विकार दृष्टीसें देखेतो दोष.

४ सामायिकमें, घर संसारका काम करेतो दोष.

५ सामायिकमें, विनाकारण ओठो (टेका=आसरा) लेवेतो दोष.

६ सामायिकमें, शरीर संकोचे, तथा वार२ हाथ पांव पसारेतो दोष.

७ सामायिकमें, आळसकरे तथा क्रोधसें आंगळीया मोडेतो दोष.

८ सामायिकमें, हाथ पांव आंगळीया प्रमुख शरीरका करडका मोडेतो दोष.

९ सामायिकमें ग्यान ध्यान छोडकें शरीरका मेळ उतारेतो दोष

१० सामायिकमें घर संसारके कामकी चिंता=फीकर करेतो दोष.

११ सामायिकमें, निद्रालेवे. तथा विना पुंज्या खाज खीणेतो दोष.

१२ सामायिकमे, विनाकारण व्यावच (सेवा =चाकरी) करावेतो दोष

काउस्सग्गके १९ दोष.

यह १९ दोष कंठाग्र करके याद रखना.

१ काउस्सग्गमें, गोडा उपर पग रखेतो दोष.

२ काउस्सग्गमें, काया (शरीर) को आगे पीछे चळावेतो दोष.

३ काउस्सग्गमें, ओठो (टेका=आसरा) लेके बैठे अगर खडा रहेतो दोष.

४ काउस्सग्गमें, मस्तक नमायके (झुकायके) उभा रहेतो दोष.

५ काउस्सग्गमें, दोनु हाथ उचा रखेतो दोष.

६ काउस्सग्गमें, 'मु'=मुख ढाकें या घुंगट काढेतो दोप

७ काउस्सग्गमें, पग उपर पग रखेतो दोप

८ काउस्सग्गमें, टेढ़ा=वाका उभा रहेतो दोप.

९ काउस्सग्गमें, साधुजी महाराजके बरोबर उभा रहेतो दोष.

१० काउस्सग्गमें, गाडीका उभण (धुरी)

सरिखा रहे. तथा डांस मच्छर आदि जीवोकुं -उडावेतो दोष.

११ काउस्सग्गमें, आडा उभा (खडा) रहे. तथा लुळके उभा रहेतो दोष.

१२ काउस्सग्गमें, रजोहरण तथा पुंजणी हाथमें रखेतो दोष.

१३ काउस्सग्गमें, एक आसण पर उभा नही रहेतो दोष.

१४ काउस्सग्गमें, नेत्र मीचे, अगर दृष्टीको चल विचल करेतो दोष.

१५ काउस्सग्गमें, माथो (मस्तक) हलावेतो दोष.

१६ काउस्सग्गमें, हुं, हुँ, कार करेतो दोष.

१७ काउस्सग्गमें, शरीर थरर धुजावे. तथा आळस मोडेतो दोष.

१८ काउस्सग्गमें, गुणर तथा बडबडाट करेतो दोष.

१९ काउस्सग्गमें, होठ जीभ मुख हलावे, तथा चित्त स्थिर नही रखेतो दोष.

पोषध व्रतके १८ दोष.

यह १८ दोष कंठाग्र करके याद रखना.

* पोषा करनेके पहिले दिन यह ६ दोष टाळना *

१ पोसाके पहिले दिन, हजामत तथा स्नानादिक करेतो दोष.

२ पोसाके पहिले दिन,मैथुन=कुशील. सेवेतो दोप

३ पोसाके पहिले दिन, दावी२ चापी२ (ठासर के) सरस२ आहार खावेतो दोप.

४ पोसाके पहिले दिन, कपडे (वस्त्र) धोवे, धुवावेतो दोप.

५ पोसाके पहिले दिन, गेणा (गहेना=दागीना) पहेरेतो दोप.

६पोसाके पहिले दिन,कपडे रंगे. तथा रंगावेतो दोष.

☞ सुचनाः—जो कोइ ऐसा विचार करेकि कलतो मुझको पोसा करनाहै इसलिये पोसाके निमित्त, यह ६ दोपमेंसें कोइभी दोष लगाना नही !

(पोपा ग्रहण करे पीछे यह १२दोप टाळना)

७ पोसामें अव्रतिकुं आदर सत्कार सन्मान देवे तथा व्यावच (सेवा=चाकरी) करेतो दोष.

८ पोसामें, शरीरके शोभा निमित्ते केश दाढी मुच्छादिक सदारेतो दोप

९ पोसामें, आपने तथा दुसरेके शरीरका मेळ (मळ) उतारेतो दोप

१० पोसामें, निद्रा (निंद) ज्यादा लेवेतो दोष.

११ पोसामें, विना पुज्या शरीरकी खाज खीणेतो दोप.

१२ पोसामें, सरागपणे ४ विकथा करेतो दोष

१३ पोसामें, दुसरेकी चहाडी (चुगली) या निंदा करेतो दोष.

१४ पोसामें, वेपार, धंदा, लेनदेनकी तथा खालीगप्पा मारेतो दोष.

१५ पोसामें, आपना तथा स्त्रीयादिकका शरीर, विषय=विकार दृष्टीसें देखेतो दोष.

१६ पोसामें, जात गोत=कुल मिलाके सम्बंध वतावेतो दोष.

१७ पोसामें, दुसरेकेपास सचेत वस्तु होय. तथा वो उघाडे मुंडे बोले, उससें बोलेतो दोष.

१८ पोसामें, डरे, या हँसी मस्करी करे, तथा संसारकी चिंता, रूदन, सोग, संताप करेतो दोष.

☞ इति श्री पोषध वृतके १८ दोष सपूर्ण ☜

इति श्रीमलोका गच्छान्तरीय आदि [प्रथम=मुळ] सम्प्रदायिकके स्वामी परम पूज्यपाद श्रीमान श्रीकहानजी ऋषिजी महाराजके अनुयायि सरल स्वभावी मु. दगडु ऋ. म सग्रहित "रत्न अमोल मणि प्रकाशिका." अपर नाम 'आवश्यक निर्पक्ष सत्य बोध ' नामक ग्रन्थका

☞ त्रितिय प्रकरण समाप्त. ☜

श्रीपार्श्वनाथाय नम

प्रकरण—चौथा.

सामायिक करणेका महा लाभ.

अब 'सामायिक चारित्र' के दो भेद १ 'भाव सामायिक,' और-२ 'द्रव्य सामायिक' राग (प्रेम) द्वेष का त्याग करके सर्व इष्ट अ-निष्ट पदार्थोंमें सम (संतोष) भाव रक्खे, और-आत्म तत्वके तरफ एकाग्रता=निश्चलता युक्त लक्ष लगावे, सो 'भाव सामायिक' है, और-सावद्य =सावज्ज योगकी=जोगकी प्रवृतीका त्याग करना सो 'द्रव्य सामायिक' समजना! इसके दो भेद, १ सर्व व्रती सामायिक है सो महाव्रतधारी साधु-जीकी है, और-२ देशव्रती सामायिक है सो अ-नुव्रतधारी श्रावकजीकीहै, क्योंकि-वो मोहोदयसें सपूर्णपणे यथा योग्य आराधन करसक्ते नहींहै! सामायिक है सो पांच 'चारित्र' मेका पहिला सामायिक चारित्र है. और-बारह व्रतोमेका नवमा सामायिक व्रतहै, और-छेः आवशकमेका पहिला सामायिक 'आवशकहै, तथा सामायिक व्रत है सो जघन्य कच्ची दो घडी (४८ मिनीट) का

संयम=संजम हीहै, संयम जाव जीवका होताहै. इसलियें खान पान सयनादि कार्यकी नियमित छुट्टीहै, और-सामायिक है सो स्वल्प=थोडा कालकीहै. इसलियें यह वदोवस्त कियाहै. एक सामायिकका महुर्त कची दो घडीकाहै. अर्थात्-४८ मिनटका होताहै.

दुहा—लक्ष खंडी सोना तणी ।
लक्ष वर्ष देवे दान ॥
सामायिक तुल्ये नहीं ।
भाख्यो श्री भगवान् ॥ १ ॥

अर्थ—कोइ नित्यमत्य एकेक लाख खडी (२० मणकी एक खंडी) सोनैये दानमें देवे, और-कोइ एक सामायिक करेतो, उस एक सामायिकके तुल्ये वो दान नहींहै!

अब जो कोइ श्रावक समभावसें=राग द्वेष रहित शुद्ध सामायिक करेगा वो ९२ क्रोड, ५९ लाख, २५ हज्जार, ९ सो, २५ पल्योपम, और एक पलके आठ भाग करना, उसमेंके ३ भाग इतना देवताका आयुष्य वांधे, और-नर्क गतीका आयुष्य बांधा होवेतो तोडदेवे!

☞ ऐसा महा लाभको प्राप्त करणेवाली, जन्म मरणादिक महा दुःख निवारणे वाली, चित्त समाधी करणे वाली, मोक्ष पंथ लगाने वाली, दुःख दारिद्रका नाश करणे वाली, आत्म रूप अनंत शक्तिको प्रकाश करणे वाली, राग द्वेष रूप महा दुष्ट शत्रुओंका नाश करणे वाली, ज्ञानादिक तीन रत्नका सर्वोत्तम लाभ देनेवाली, ऐसी महा उत्तम सामायिक हामेशा त्रीकाळ आवश्य=जरूर करणी चाहियें ! कदाचित्-त्रीकाळ जो नही बनेतो, फजरकु (सुबुकु) और-शामकुं यह दो वक्त तो जरूर२ करणा चाहिये, कदाचित्-कोइ वक्त बहोत२ निकट कार्यके सबबसे दो वक्त जो नही बनेतो नित्य=हररोज एक वक्ततो जरूर२ ही करणीही चाहिये !

औरभी इधर जरा लक्ष दिजीयेकि-अन्य=जनलोक भी ऐसा कहतेहैकि-'आठ पहरघरकीतो, दो घडी हरीकी.' तथा'आठ पहर कामकीतो, दो घडी रामकी ' अर्थात्-आठ प्रहर घर प्रपंचके कार्यमें लगाते हो तो दो घडीतो जरूरही नित्य प्रत्ये आत्मकल्याणके सुमार्गमें लगानीही चाहिये !

☞ अब जो कोइ यह नवमा सामायिक व्रत तह (सत्य) मनसें सम्यक् प्रकारे आराधन करेंगे वो इहां अनेक सुख भोगवकें फिर-स्वर्ग सुखका अनुभव लेके, आगे शास्वतां मोक्षका अक्षय परम सुख पावेंगे ?

इतिश्री सामायिक करणेका महा लाभ सपूर्ण.

श्री नवकार महा मंत्र.

१ णमो अरिहंताणं, २ णमो सिद्धाणं, ३ णमो आयरियाणं, ४ णमो उवज्झयाणं, ५ णमो लोए, सव्वसाहूणं ॥६ एसो पंच णमुकारो, ७ सव्व पावप्पणासणो, ८ मंगलाणं च सव्वेसिं, ९ पढमं हवइ मंगलं॥ ॥ इति नमस्कारः ॥१॥

[पद ९, सपदा ८, गुरु अक्षर ७, लघु अक्षर ६१, सर्व अक्षर ६८.]

तिख्खुतो (वंदना) का पाठ.

तिख्खुतो, आयाहिणं, पयाहिणं, करेमि वंदामी णमं सामि, सक्कारेमि, सम्मणेमि,

कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि' मथ्थएण वंदामि ॥ इति ॥२॥

सुखसाता हैजी महाराजजी साहेब.

सामायिक सूत्र विधी युक्त.

☞ विधी—अहो देवानु प्रियाजी, अब प्रथम असार संसार मायाजालके प्रपच=कामकाजसें निव्रत होके फल फूल पान इत्यादि सचेत, (सजीव), वस्तु रहित होकर परम आनदके सात धर्म ध्यान करणेको एकात साताकारी स्थान (ठिकाणा) पोषधशाला—उपसरा—स्थानक में आयके, सीर (मस्तक) परसें पगडी, टोपी, पटका, रुमाल आदि जो होवे वो तथा अगरखी, कोट, कुडता, खमीस, ज्याकीट, सेरवान, प्रमुख जो आगमें होवे वो निकालकर यह सब वस्त्र एक बाजु रखना, फिर—शुद्ध धोतर एक लाग (काछा) सहित पहेरकें वो धोतरकी एक लाग खुली रखना, और—आग उपर शुद्ध आगवस्त्र=उपरणा—दुपट्टा—पच्या ओढके फिर—हाथमें 'पुंजणी' (गुच्छा) लेके बेठनेकी जगा (जमीन) जीव जतनासें पुजकर (साफकरकें=झाडकें) फिर—वहापर 'बेटका' (आसन=पथरणा) बिछाके 'मुखपत्ती' प्रतिलेहकर मुख-

पर बाधना, और—'पूर्व' तथा 'उत्तर' दिशाके बिचमें 'इशान' कुण, (दिशा) सनमुख खडा होके श्री 'सिमंधर' स्वामीजीकू तथा वहापर जो सयती=मुनिराज अगर महासत्तीजी विराजमान होवे वो महा सत्पुरुषोंको तीन तीन वक्त विनय नम्रता सहित 'तिक्खुतो'के पाठसें पाच अंग नमायके वंदना=नमस्कार करके सुख साता पुछके अति नम्रतासें ऐसा कहनाकि अहो परम कृपालु महराज अब 'सामायि' चउविसथ्थों' की आज्ञा दिजीये, कृपा दृष्टीकी-वृष्टी किजीये, ऐसा कहके फिर—'आसन' पर खडा रहके प्रगट एक 'नवकार महा मंत्र कहके—

फिर—इरियावहीका पाठ कहना.

आवसइ इच्छा कारण संदिसह भगवान् इरिया वहिय पडिकमामि, इच्छं इच्छामि, पडिकमिउं, इरिया वाहयाए, विराहणाए, गमणा गमणे, पाण कमणे, बीय कमणे, हरिय कमणे, ओसा उत्तिग, पणग दग, मट्टी मक्कडा, संताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दाविया, ठाणा ओठाणं, संकामिया,

कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं, पज्जुवासामि, मथ्थएंण वंदामि ॥ इति ॥२॥

सुखसाता हैजी महाराजजी साहेब.

सामायिक सूत्र विधी युक्त.

☞ विधी—अहो देवानु प्रियाजी, अब प्रथम असार ससार मायाजालके प्रपच=कामकाजसें निव्रत होके फल फूल पान इत्यादि सचेत (सजीव) वस्तु रहित होकर परम आनदके सात धर्म ध्यान करणेको एकात साताकारी स्थान (ठिकाणा) पोषधशाला—उपसरा—स्थानक में आयके, सीर (मस्तक) परसें पगडी, टोपी, पटका, रुमाल आदि जो होवे वो तथा अगरखी, कोट, कुडता, खमीस, ज्याकीट, सेरवान, प्रमुख जो आगमें होवे वो निकालकर यह सब वस्त्र एक बाजु रखना, फिर—शुद्ध धोतर एक लाग (काछा) सहित पहेरकें वो धोतरकी एक लाग खुली रखना, और—आग उपर शुद्ध आगवस्त्र=उपरणा—दुपट्टा—पच्या ओढके फिर—हाथमें 'पुंजणी' (गुच्छा) लेके बैठनेकी जगा (जमीन) जीव जतनासें पुजकर (साफकरकै=झाडके) फिर—वहापर 'बेटका' (आसन=पथरणा) बिछाके 'मुखपत्ती' प्रतिलेहकर मुख-

पर बाधना, और–'पूर्व' तथा 'उत्तर' दिशाके वि-
चमें 'इशान' कुण (दिशा)सनमुख खडा होके
श्री 'सिमंधर' स्वामीजीकू तथा वहापर जो सयत्ती
=मुनिराज अगर महासतीजी बिराजमान होवे वो महा
सत्पुरुषोंको तीन तीन वक्त विनय नम्रता सहित 'ति-
खुत्तो'के पाठसें पाच अंग नमायके वदना=नम-
स्कार करकें सुख साता पुछके अति नम्रतासें ऐसा
कहनाकि अहो परम कृपाळु महराज अब 'सामायि'
चउविसथ्थों' की आज्ञा दिजीये, कृपा दृष्टीकी-
वृष्टी किजीये, ऐसा कहके फिर–'आसन' पर खडा
रहके प्रगट एक 'नवकार महा मंत्र कहके–

फिर–इरियावहीका पाठ कहना.

आवसइ इच्छा कारण संदिसह भगवान् इ-
रिया वहिय पडिक्कमामि, इच्छं इच्छामि, पडिक्क-
मिउं, इरिया वाहयाए, विराहणाए, गमणा ग-
मणे, पाण क्कमणे, वीय क्कमणे, हरिय क्कमणे, ओसा
उत्तिंग, पणग दग, मट्टी मक्कडा, संताणा सकमणे,
जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइ-
दिया, चउरिंदिया, पांचिंदिया, अभिह्या, वत्ति-
या, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया
किलामिया, उद्दविया, ठाणा ओठाणं, संकामिया

जीवियाओ, विवरोविया, [ ] सम्बंधी पाप=दोष लाग्यो होयतो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥३॥

फिर—तस्सउत्तरीका पाठ कहना.

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोहि करणेण, विसल्ली करणेणं, पावाण, कम्माणं, निग्घाय, णठाए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नथ्थ उससिएणं, निससिएणं, खासिएण, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण, भमलिए पित्त मुच्छाए, सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहि खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिठ्ठिसंचालेहि, एव माइ एहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे, काउस्सग्गो, जाव अरिहताणं, भगवंताण, नमुक्कारेणं, न पारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ४ ॥

☞ विधी—अब 'ठाणेणं' शब्द बोलतेके सात् खडा रहकर 'काउस्सग्ग' करना, कदाच शरीरमें व्याधीके कारणसें तथा आशक्त पणासें अगर तपशादिकके कारणसें खडा रहके 'काउस्सग्ग' करनेकी शक्ति नहीं होवेतो नीचे बैठकर करना, तथा जीभ, दात, होट, हाथ, पाव (पग) आगलीया, प्रमुख शरीरकु हालाना=चळाना नहीं, इत्यादि १९

दोष रहित शांत चित्तसें मनमें ' इरियावही ' का पाठ तथा एक ' नवकार महा मंत्र 'की ' काउस्सगमें ' चिंतवणा करना. तथा ' काउस्सग 'में ' तस्स मिच्छामि दुक्कड. ' फक्त इतनाही यह शब्दकी चिंतवणा नही करना फिर–' काउस्सग ' पारके (छोडके) ' णमो अरिहंताण ' ऐसा प्रगट बोलके.

फिर–च्यार ध्यानका पाठ कहना.

काउस्सग माहे मन चल्योहोय, वचन चल्योहोय, काया चलीहोय, अर्तध्यान रौद्रध्यान ध्यायो होय, धर्मध्यान शुक्लध्यान नही ध्यायो होय तो देवसी सम्बंधी पाप=दोप लागो होय-तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ ५ ॥

फिर–लोगस्सका पाठ कहना.

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंत कित्तइस्सं चउवीमपि केवली ।।१॥ उसभ मजिय च, वंदे । सभव माभिणदणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं, सुपास । जिण च, चंद प्पह वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च, पुप्फदंतं । सीअल सिज्जस वासुपुज्ज च ॥ विमल मण त च, जिणं धम्म सतिं च, वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथु अरं च, मल्लि वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥ वदामि रिट्ठनेमिं ।

पासं, तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभि-शुआ विहुय रयमला, पहीण जरमरणा ॥ चउ-वीसंपि जिणवरा । तिथ्थयरामे, पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया । जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइचेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवर गंभीरा सिद्धा सिद्धिं, मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ ६ ॥

☞ विधी—अब 'बेटका'=आसन परसें जयना सहित नीचे उतरके सयती महापुरुषोंको यथा विनय वीधी सहित पाचु अग नमायके 'तिख्खुत्ता' के पाठसें वदना=नमस्कार करके, सुख साता पुछके अति नम्रतासें ऐसा कहना॥कि–'अहो परम दयालु महाराज 'अमुक इतनी' सामायिककी आज्ञा दिजीये, कृपा दृष्टिकी वृष्टी किजीयें' । कदाच वहापर मुनि महासतीजी नही होवेतो 'इशाण कुण' सनमुख खडा होके श्री'सिमधर' स्वामीजीकु उपर लिखे प्रमाणें यथा विनय विधी सहित 'तिख्खुत्ता' के पाठसें वदना आदि करके 'सामायिक' की अज्ञा मगके, वहापर मतमें जो बडे साहाधर्मी भाइ होवे उनकीभी अज्ञा लेके 'सामायिक' ग्रहण करना=आदरना ।

☞ सूचनाः—अब 'करेमि भंते' यह प्रथम शब्दसें 'जाव नियम' तक् कहेबाद अपनेको जितनी स्थिरता होवे उतने [ ] महुर्त कहके, फिर 'पज्जुवासामि' शब्दसें 'अप्पाण वोसिरामि' तक् सपूर्ण पाठ कहना। एक 'सामायिक'का 'महुर्त' ४८ मिनीटका होताहै।

फिर—सामायिकका पाठ कहना.

करेमि भंते सामाइयं, सावज्ज जोगं पच्चख्खामि, जाव नियमं, [महुर्त] पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ७

☞ विधीः—अब 'बेटका' पर बैठके डाबा गोढा (ढींचण) खडा रखके उस गोढेपर दोनु हाथ खुणीतक् जोडकर दो वक्त 'नमुथ्थुणं'का पाठ कहना, पाहिली वक्ततो निचे लिखे प्रमाणे सपूर्ण पाठ कहना, तथा दुसरी वक्तमें वैसाही प्रथमसें "नमुथ्थुणं" पाठ 'सिद्धि गइ नामधेयं' तक् कहके, फक्त 'ठाणं संपत्ताणं' यही शब्दके ठिकाणेपर 'ठाण संपाविओ कामस्स' कहके आगे वोही पाठ 'नमो जिणाणं, जिय भयाणं' तक् सपूर्ण पाठ कहना।

फिर—नमुथ्थुणं का पाठ कहना,

नमुथ्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तिथ्थयराणं, सयंसं बुद्धाणं, पुरिसुत्तामाणं, पुरिस सीहाणं, पुरिसवर पुडरियाणं, पुरिसवर गंधहथ्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोग नाहाणं, लोग हियाणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जोय गराणं, अभय दयाणं, चख्खु दयाणं, मग्ग दयाणं, सरण दयाण, जीव दयाणं, बोहि दयाण, धम्म दयाणं धम्म देसियाण, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं धम्म वर चाउरंत चक्कवट्टीणं, दिवोताण, सरण गइ पइठाण. अप्पाडिहय वर नाण, दसण धराण, विअट्ट छउमाणं, जिणाण, जावयाण, तिन्नाण, तारयाण, बुद्धाण, बोहियाण, मुत्ताण, मोयगाणं, सव्वन्नूण, सव्व दरिसिण, सिव मयल मरुअ मणत मख्खय, मव्वावाह मपुणरावित्ति, सिद्धिगइ नामधेय. ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिय भयाण ॥ इति ॥ ८ ॥

☞ विधीः—अब सामायिकके ३२ दोष टाळकर, शात चित्तसें पूर्ण क्षमा, दया, शांति, वैराग्यभाव, सहित नामस्मरण, शास्त्रश्रवण, ग्यान, ध्यान,

थोकडे, छुठक बोल, स्तवन सझाय आदि कहकर यथाशक्ति 'पचक्खाण' = व्रत धारण करना !

☞ सामायिक करणेकी विधी पाठ सपूर्ण ☜

☞ विधी—जब 'सामायिक' पारनेका वक्त= टैम हुए बाद, गरबड रहित, शात मनसें "इरियावही" का पाठ कहके फिर—"तस्स उत्तरी" का पाठ अनुक्रमें कहतेर 'ठाणेणं' शब्द गेलत्तेकेसात "काउस्सग्ग" करणा, फिर—स्थिर चित्तसें मनमें 'काउस्सग्ग' में 'इरियावही' का पाठ, और—एक "नवकार महा मत्र" की चिंतवणा करके, फिर— 'काउस्सग्ग' पारना, (छोडना) और—'णमो अरिहताण' ऐसा मगट बोलके, फिर—"च्यारध्यानका पाठ" कहकर "लोगस्स" का भी पाठ कहना, फिर—'बेटका' पर बैठकें डावा गोढा खडा रखके उसगोढेपर दोनु हाथ खुणतिक जोडके दो वक्त "नमुथ्थुणं" का पाठ कहना !

☞ सुचना—"काउस्सग्ग" करनेकी तथा दो वक्त "नमुथ्थुण" का पाठ कहनेकी रीत विशेष खुलासें सहित विधी अव्वल "सामायिक सूत्र विधी युक्त." प्रारभमें कहीहै ! उस प्रमाणे इहा समज लेना!

फिर—सामायिक पारनेका पाठ कहना.

एहवा नवमाथूक सामायिक विरमण व्रतके वि
षे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते ओले:
१ सामायिकमें खोटी तरह मन प्रवर्ताव्यो होय, २
खोटी तरह वचन प्रवर्ताव्यो होय, ३ खोटी तर
काया प्रवर्तावी होय, ४ सामायिकमें समता नह
करी होय, तथा उपयोग रहित करी होय, ५ अ
णपुगी पाडी होयतो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति

सामायिकमें, दस मनका, दस वचनका, बार
कायाका, यह बत्तीस दोषमेसें जो कोइ पाप=दो
लागो होयतो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥

सामायिकमें आहर सज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन
संज्ञा, परिग्रह संज्ञा, यह चार संज्ञा मांहेली जे
कोइ संज्ञा करी होयतो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति

सामायियमें स्त्री कथा, राजकथा, भक्तकथा,
देश कथा, यह चार कथा मांहेली जे कोइ कथ
करी होयतो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥

सामायिक सम काएणं, फासियं, पालियं,
सोहियं, तिरिय, किट्टियं, आराहियं, आणाए,
अणुपालियं, न भवइ, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति

- सामायिक व्रत विधिसेलिया, विधिसे पारा,

विधि करणेमें अविधि हुइ होवेतो तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥

सामायिकमें, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अणाचार, जाणतां, अजाणतासें तथा मन वचन कायासें जे कोइ पाप=दोष लागो होयतो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

सामायिकमें, कानो, मात्रा, मिंडी, अनुस्वार, पद, अक्षर रहस्व, दीर्घ कमी, ज्यादा विपरित इत्यादी अशुद्ध कह्यो होवेतो, अनंत सिद्ध, केवली भगवतकी साखे, तस्स मिच्छामि दुक्कड.

इतिश्री सामायिक विधी पाठ संपूर्ण

अनुपूर्व्वि गिणनेका महा फल.

चौपाईः—अनुपूर्व्वि गुणज्यो जोय। छेमासी तपको फळ होय ॥ संदेह मत आणो लगार। निर्मेळ मने जपो नवकार ॥ १ ॥ शुद्ध वस्त्र धरी विवेक। दिन२ प्रत्ये गणवि एक ॥ एम अनुपूर्व्वि जे गुणे। ते पांचसो सागरका पापकु हाणे॥२

दुहाः—चचल मनकु स्थिर करण। " ठाण योग " सुत्र अनुसार ॥ " अनुपूर्व्वि " रचा रचि। " आचार्य करण उपकार ॥ १ ॥ अ कर्मके हरणकुं। मंत्र वडो " नवकार " ॥ ना

द्वादश अगमें। शोध लियो ततसार ॥ २ ॥ एकही वक्त "नवकार" को। शुद्ध जपे जो सार ॥ वो बांधे शुभ देवको। आयुष्य अपरम्पार ॥ ३ ॥ उगणीस लाख त्रेसट हजार। दोसो त्रेसट पल ॥ (पल्योपम) ॥ त्यां सुधी सुख भोगवे। एक "नवकार" मंत्र को फल ॥ ४ ॥ विघन हरे मंगल करे। पावे स्वर्ग विमाण ॥ कोडा कोडी तिरगये। गणधर कीया बखाण ॥ ५ ॥ पढ्या न पिंगल पारसी। पढ्या न गीता छद ॥ एक मत्र "नवकार" से। सदा करो आनद ॥ ६ ॥

☞ "अनुपूर्व्वि" गिणनेका फल समाप्त.

अनुपूर्व्वि पढनेकी रीत.

जिहां १ का अंक होवे वहां "णमो अरिहंताणं" कहना.

जिहां २ का अंक होवे वहां 'णमो सिद्धाणं' कहना.

जिहां ३ का अंक होवे वहां 'णमो आयरियाणं' कहना.

जिहां ४ का अंक होवे वहां 'णमो उव्वज्झायाणं' कहना.

जिहां ५ का अंक होवे वहां 'णमो लोए-सव्वसाहूणं' कहना.

अनुपूर्वी १

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

अनुपूर्वी २

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

अनुपूर्वी ३

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

अनुपूर्वी ४

२	३	४	१	५
३	२	४	१	५
२	४	३	१	५
४	२	३	१	५
३	४	२	१	५
४	३	२	१	५

अनुपूर्वि ५

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

अनुपूर्वि ६

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

अनुपूर्वि ७

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	१	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

अनुपूर्वि ८

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

अनुपूर्वि. ९

૧	૨	૪	૫	૩
૨	૧	૪	૫	૩
૧	૪	૨	૫	૩
૪	૧	૨	૫	૩
૨	૪	૧	૫	૩
૪	૨	૧	૫	૩

अनुपूर्वि १०

૧	૨	૫	૪	૩
૨	૧	૫	૪	૩
૧	૫	૨	૪	૩
૫	૧	૨	૪	૩
૨	૫	૧	૪	૩
૫	૨	૧	૪	૩

अनुपूर्वि. ११

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

अनुपूर्वि १२

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

अनुपूर्वि १३

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

अनुपूर्वि १४

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

अनुपूर्व्वि. १५

१	४	५	३	२
४	१	५	३	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	४	१	३	२

अनुपूर्व्वि १६

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

अनुपूर्व्वि १७

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	१

अनुपूर्व्वि. १८

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

अनुपूर्वि.१९

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

अनुपूर्वि.२०

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

२४ तीर्थंकरकेनाम.

१ श्री ऋषभदेव स्वामी.	१३ श्री विमलनाथ स्वामी.
२ ,, अजितनाथ स्वामी	१४ ,, अनतनाथ स्वामी.
३ ,, सभवनाथ स्वामी	१५ ,, धर्मनाथ स्वामी.
४ ,, अभिनदन स्वामी.	१६ ,, शातिनाथ स्वामी.
५ ,, सुमतिनाथ स्वामी.	१७ ,, कुथुनाथ स्वामी
६ ,, पद्मप्रभु स्वामी	१८ ,, अर्हनाथ स्वामी
७ ,, सुपार्श्वनाथ स्वामी	१९ ,, मल्लीनाथ स्वामी.
८ ,, चद्रप्रभु स्वामी.	२० ,, मुनीसुव्रत स्वामी.
९ ,, सुविधिनाथ स्वामी	२१ ,, नेमिनाथ स्वामी
१० ,, शीतलनाथ स्वामी	२२ ,, रिष्टनेम स्वामी
११ ,, श्रेयासनाथ स्वामी	२३ ,, पार्श्वनाथ स्वामी
१२ ,, वासपूज्य स्वामी.	२४ ,, महावीर स्वामी.

२० विहरमानकेनाम.

१ श्री सीमधर स्वामी	९ श्री सुरप्रभु स्वामी
२ ,, जुगमधर स्वामी.	१० ,, विशालधर स्वामी.
३ ,, बाहूजी स्वामी	११ ,, वज्रधर स्वामी.
४ ,, सुबाहुजी स्वामी.	१२ ,, चद्रानन स्वामी
५ ,, सुजात स्वामी	१३ ,, चद्रबाहु स्वामी
६ ,, स्वयप्रभू स्वामी	१४ ,, भुजग स्वामी
७ ,, ऋषभानद स्वामी	१५ ,, ईश्वर स्वामी.
८ ,, अनतवीर्य स्वामी.	१६ ,, नेमप्रभ स्वामी.

१७ श्री वीरसेन स्वामी.	१९ श्री देवजस स्वामी.
१८ ,, महाभद्र स्वामी	२० ,, अजीतवीर स्वामी.

११ गणधरके नाम.

१ श्री इंद्रभूतिजी.	७ श्री मोरीपुत्रजी.
२ ,, अग्निभूतिजी.	८ ,, अकपितजी.
३ ,, वायुभूतिजी.	९ ,, अचलजी
४ ,, विगतभूतिजी	१० ,, मेतारजजी.
५ ,, सुधर्मास्वामीजी.	११ ,, प्रभासजी.
६ ,, मडीपुत्रजी.	

१६ सतीयाके नाम.

१ श्री ब्राह्मीजी	९ श्री मृगावतीजी
२ ,, सुदरीजी.	१० ,, चेलणाजी.
३ ,, कौसल्याजी.	११ ,, प्रभावतीजी.
४ ,, सीताजी	१२ ,, सुभद्राजी.
५ ,, राजेमतीजी	१३ ,, दमयंतीजी.
६ ,, कुताजी	१४ ,, सुलसाजी.
७ ,, द्रौपदीजी	१५ ,, शिवाजी.
८ ,, चदणाजी.	१६ ,, पद्मावतीजी.

ये चोविस तिर्थंकर, विसविहर मान, इग्यारे गणधर, सोळे सतीयाको, त्रीकाळ २ वदणा=नमस्कार होजो; तिख्खुत्तो, जाव, मथ्थएण वदामि.

चारसरणा.

अरिहंत सरण पव्वज्जामी। सिद्ध सरणं जव्वज्जामी॥ साहूसरण पव्वज्जामी। केवली पण्णतं धम्म सरण पव्वज्जामि॥

पहिला सरणा श्रीअरिहंत भगवंतकाः- ते अरिहतप्रभु चौतीस अतिशय, पैंतिस वाणी गुण, अष्ट प्रतिहार्य अनंत चतुष्टय, वारे गुण करके विराजमान, आठारे दोष रहित, चौसष्ट इंद्रके वदनीक-पूजनीकः इत्यादिक अनंत गुणे-करी विराजमानहै, ऐसें अरिहत प्रभूका, इसभव परभव भवोभव सरणा होजो!

दूजा सरणा श्रीसिद्ध भगवंतकाः-सिद्ध भगवंत अष्ट गुण इकतीस अतिसय करके सहित, मोक्षरुप सुख स्थानमें वीराजमान, अनत अक्षय, अव्यावाध, अजर, अमर, अविकारी, अनत सुखमें वीराजमान, अष्टकर्म रहितहै, ऐसें सिद्ध प्रभुका, इणभव, परभव, भवोभव, सरणा होजो!

तीसरा सरणा साधू मुनिराजकाः-साधूजी सत्तावीस गुण करके सहित, कनक कामनीके त्यागी, सत्तरे भेदे सयमके पालणहार, वारे

भेदे तपके करणहार, छन्नु दोष टाळके आहार पाणी वस्त्र पात्र स्थानकके भोगवणहार, निर्लोभी, बावीस परिसह सम परिणामें सहे, शांत-दांत-क्षांत, इत्यादिक अनेक गुण सहित, ऐसें निग्रंथ साधूजी महाराजका, इणभव, परभव भवोभव, सदा काळ सरणा होजो !

चौथासरणा केवळी परूप्या दयाधर्मका-धर्म दो प्रकारका- 'श्रुतधर्म '-सो द्वादशांगी जिनागम ॥ चारित्रधर्म-सो अगारी, तथा अणगारी, यह धर्म आधी व्याधी उपाधी का विणास करणे वालाहै, मोक्ष रुप शास्वत सुखका दाताहै; ऐसा दयाधर्मका इणभव, परभव, भवोभव, सदा सरणा होजो !

यह चार सरणा, दुःख हरणा । और न दुजो कोय ॥ जे भव्य प्राणी आदारे । तो अक्षय अमर पद होय ॥

तीन मनोरथ.

आरंभ परिग्रह तजीकरी । पंच महाव्रत धार ॥ अंत अवसर आलोयणा । करुं संथारो सार ॥ १ ॥

पहिला मनोरथः-समणोपासक (साधूकी सेवा करनेवाले) श्रावकजी ऐसा चिंतवेकी, कबमें चौदे प्रकारका बाह्य, और नव प्रकारका अभ्यंतर परिग्रहसें तथा आरंभसे निवर्तुगा ? यह आरभ परिग्रह काम क्रोध मद मोह लोभ विषय कपायका वढानेवाला, दुर्गतिका दाता, मोह मत्सर राग द्वेषका मूळ, धर्म ज्ञान क्रिया क्षमा दया सत्य संतोष समकित संयम तप ब्रह्मचर्य और सुमतीका नाश करनेवाला, आठारे पापका वढानेवाला, अनंत संसारमें भमानेवाला, अध्रुव, अनित्य, अशाश्वता, अशरण, अतरण, निर्ग्रंथोंका निंदनीक, ऐसा अपवित्र आरंभ परिग्रहका मै जब त्याग करूगा, सो जो दिन मेरा परम कल्याण होवेगा !

दुसरा मनोरथः—समणोपासक श्रावकजी, ऐसा चिंतवे=विचारे की, कब मैं द्रव्य और भावे मुंड (साधु) होके, दश प्रकारका यति धर्म, नववाड विशुद्ध ब्रह्मचर्य, पांच महाव्रत, पाच सुमति, तीन गुप्ति, सत्तरे भेदे संयम, वारा प्रकारे तप, छे कायाका दयाल, अप्रतिबंध पणे विहार,

१४ भत्तेसु-आहार पाणी, आदि खाणे पीणेकी वस्तुका वजन.

छे कायाके नियम.

१५ प्रथ्वीकाय-कची मट्टी, लुण, क्षार, वगैरे.
१६ अपकाय-पाणी के परेंडे, निवाण वगैरे.
१७ तेउकाय-अग्नी, दीवा, चुल, चीलम, वीडी.
१८ वायुकाय-हवा, पंखा, झुला, वगैरे.
१९ वनस्पतिकाय-लिलोतरी, शाक, भाजी, फल, फुल, घास, वगैरे.
२० त्रसकाय-हालते चलते जीव, कीडे, खटमल, पशु, मनुष्य, वगैरे जीवोंकु, जाणके, नही मारना.
२१ अस्सी-हथीयार, चक्कू, सुई, तरवार, बंदूक
२२ मस्सी-वेपार, लिखनेका कागद दउत कलम.
२३ कस्सी-खेतीवाडी तथा आसामीसें लेन देन.

यह २३ बोलोकी हामेशा मर्यादा करणेसें, सर्व लोकमें जो महा पाप हो रहाहै. उसकी बहोत अव्रत आनी बंद होजातीहै, और-यो कमी करतें२ कोइ वक्त सर्व व्रती. (साधू पणा) प्राप्त होके मोक्षका परम सुखकी प्राप्ति होतीहै !

☞ इति श्री चतुर्थ प्रकरण समाप्तं. ☜

॥ श्री परमात्माय नम ॥

प्रकरण–पांचवा.

श्रावक शब्दका विस्तारसें अर्थ.

'श्रावक' श्रावक शब्दकी 'श्रु' धातू होतीहै, जिसका अर्थ श्रवण करना=सुनना ऐसा होताहै. अर्थात्–जो धर्म शास्त्रको श्रवण करेगा सो श्रावक! औरभी 'श्रा वं कं' यह शब्दके तीन अक्षर है, उस तीन अक्षरका ऐसाभी अर्थ होताहैकि–'श्रं' कहतां श्रद्धावत अर्थात्–निग्रन्थ प्रवचन (वीतराग देवकी वाणी) जो शास्त्रके वचन हैं उसपर पूर्ण आस्ता रक्खे, तह मेव सत्य श्रद्धे, देव दानव मानव इत्यादि किसीकाभी चलाया धर्म मार्गसें चळे नही, तथा अधर्म मार्ग अंगिकार करे नहीं, अर्थात्–हिंसादिक पापका मार्ग अंगिकार करे नही. जेन धर्मको तन मन धन अर्पण करके निर्पक्ष सत्य दया धर्ममें प्रवर्ते, 'वं' कहता विवेकवत. अर्थात्–जैसें व्यापारी लोक ग्राहाकोंकी गर्दीमेंभी आपना नफा उपार्जन करनेका अवसान भूलते नहीहै, तैसेंही श्रावकभी ससारका हरेक कार्य करते हुवेभी पापसें

आपनी आत्मा बचाने रुप नफेके कामको भुलते नहींहै थोडे पापसें जो काम निकलता होवेतो जादा पाप करते नहींहै, और—ऐसाभी अर्थ होताहेकि ' वे ' कहतां विनयवंत होवे. अर्थात्— इस विश्वमें जितने गुण है, उन् सब् गुणोंमेंका अव्वल दरजेका गुण विनय=नम्रतांही है, जिहां विनय गुण होताहै. वहां सर्व गुण आकर्षीतः=खैंचाते हुवे आपसें आपही चले आतेहै ' कं ' कहतां क्रियावंत होवे. अर्थात्—जो नित्य नियमीत क्रिया श्रावकको करनेकी है. ओ टैमो टैम् सदा (हमेशा) करते है, सो श्रावकजीकी अष्ट प्रहरकी क्रिया विस्तार सहित इहां कहतां हुं !

श्रावकजीकी अष्ट प्रहरकी क्रिया.

श्रावक प्रथमतो निंद्रा (निंद) आदि प्रमाद घटायके दो घडी रात्र (रात) बाकी रहे तब् विवेकतां सहित जाग्रत होवे कारण कदाच दुसरा कोई पापी जीव जाग्रत नहीं होवे ऐसी तरह उपयोग सहित चुप चाप यथा * विनय विधी

* इस ग्रन्थके ' प्रकरण— चौथेमें सामायिक चौवीसत्थो " की विशेष खुलासेवार विधी कहीहै, विधी इहा समज लेनाजी !

कि ' सामायिक, व्रत धारण करे, तथा प्रति-मण ' करनेका काळ=वक्त (लाल दिशा) होवे वहां तक आपने मनमें ऐसा विचार रेकि-मै कौनहुं? मेरी जात क्या है? मेरा कुल या है? मेरे देव गुरु कौन है? मेरा धर्म क्या ? और- मेरा कृत्या कृत्य (करने योग्य तथा हीं करने योग्य) क्या है? इत्यादिक ऐसा शुभ वेचार करेकि-आजके दिन मैं कौन कौन सें धर्म कृत्य करसक्ताहु? जो धर्म कृत्य उसदिनमें होने सें होवे. उसीका आभिग्रह (नेम) निश्चय करतेहै. फेर-" प्रतिक्रमण " करनेका वक्त होवे तब यथा विनय * विधी सहित "रायसी प्रतिक्रमण" करते है, फिर-१२ भावना ४ सरणा, ३ मनोरथ, अनुपूर्व्वि, प्रमुख पढतेहै. यथा शक्ति *

*इस ग्रन्थका यह "प्रकरण पाचवा" में देवसी रायसी आदि ' पाच प्रतिक्रमण'-की विशेष खुलासें सहित विधी लिखीहै सो ओही विधी इहा समज लेना!

* इस ग्रन्थके " प्रकरण-चौथा " में १४ नियम, और ६ कायाकी मर्यादा करनेका खुलासा लिखाहै, उसी प्रमाणें यथा शक्ति मर्यादा धारण करना।

नियमीत लाभ होनेसें जादा तृष्णा नहीं बढाते हैं, वेपारके लाभमें धरमकाभी हिस्सा (भाग.) रखते है, धरमका भाग, पंचका भाग, राजाका भाग, गोपवते नहीं है, तथा दगावाजी, कपटाई, ठगाई, चोरी, जारी, अन्याई, प्रमुख अयोग्य काम (कार्य.) नहीं करतेहै, तथा–कपाई पारधी प्रमुख हिंसक लोकोंके साथ लेन देन नहीं करतेहै, और–विश्वास घातभी नहीं करतेहै, तथा महा हिंसक=निर्दय, महा मिथ्यात्वी, चोर, जार, कपटी, लंपट, जुगारी, दगावाज, महाक्रोधी, क्लेशी, लोकोंका (जगतका).निंदनिय, जातीका निंदनिय, राजाका निंदनिय, इत्यादि ऐसें आयोग्य=नालायक खराव मनुष्यकी संगत नहीं करतेहै, और–नाटक, रंग रागादिक गायन, ख्याल, तमाशा इत्यादि देखनेको जाते नहीहै, तथा घर कार्यकेलिये–नौकरकी जरूर होवेतो, वो नौकर विश्वासु होके लज्यावंत, क्षमावंत, धैर्यवंत, दयालु होवे, इत्यादि ऐसें गुणी जनको नौकरी रखतेहै, और–दुकानके काममें जो मुनीम= गुमास्ता की जरूर होवेतो वो मुनीमजी प्रथमतो विद्वान होके पूर्ण विश्वासु होवे, विनय

करते है, कदाच शरीरके कारणसें नहीं बनेतो पाणी उपरांत कुच्छ भोगवते नहीं हैं, अर्थात्- रात्रीको तीन आहारका त्याग तो जरूर २ ही करते है, कारण रात्रीका भोजन महा पापका कारण है, संध्या समय 'स्थानकमें' सामायिक-प्रतिक्रमण करते हैं ॥ सामायिक पूर्ण हुये बाद फिर-दिवसमें किये हुये कार्यका चिंतवण (हिशेब आदि करके) निवृत्त होते हैं, ॥ सयन (सुवनेको.) स्थानको (ठिकाणको) विषय विकार उत्पन्न करे, ऐसें चित्र (तसवीर=फोटो.) आदिसें श्रृंगार ते नहीं है, परंतु-हित शिक्षणके संक्षेपित शब्दोंमें लेखके तखते लगा रखते हैकि-कदाच जो मन विशेष कुमार्गमें जाते हुयेको वो सत्य ज्ञानसें तुरत रोक रखे, तथा स्व स्त्रीके साथभी अमर्यादित वार्ता नहीं करे, तथा विशेष विषयासक्त नहीं होवे, कारण- विशेष विषयासक्त होना बडा हानीकारक समजते हैं, अर्थात्--वीर्यका जितना रक्षण होवे, उतनाही सुख दाई समझते हैं, कदाच ज्यादा इच्छा नहीं रूकेतो छेः परवी वगैरा धर्म पर्वोमें आवश्य ब्रह्मचर्य पालतेहै, और- अन्य रात्रीकोभी एक वक्तसें ज्यादा विषय सेवन नहीं करते हैं, तथा स्त्रीकी

सेजामें निद्रित नही होते है, तथा निद्राके पहिले 'नवकार महा मंत्र' '४ शरणा' 'जिनस्तवन' 'मंगलीक' वगैरे नाम स्मरण करनेसें महालाभ प्राप्त होता है, और-सुखे समाधे निद्रा आतीहैं, और-इत्यादिक बाकी की क्रिया जो है, वो, श्रावकजीके-" अर्थ सहित प्रतिक्रमण " सें जाण लेना! तथा इत्यादि नित्य नियमीत क्रिया जो करते हैं, सो श्रावक कहे जाते है!

☞ पांच प्रतिक्रमणकी विधी. ☜

यहआवश्यक (प्रतिक्रमण) पाच तरहसें किया जाताहै, और-(प्रतेक प्रतिक्रमणके (६) छे आवशक होतेहै.) १ प्रथम जो चार प्रहर दिनमें लगाहुवा पापकी निव्रतीकेलिये शामको जो प्रतिक्रमण करतेहै, उसको " देवसी प्रतिक्रमण " कहतेहै, इसमें जिहां२ " तस्स मिच्छामि दुकडं." यह शब्द आताहै वहा२ देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो तस्स मिच्छामि दुकडं." ऐसा कहना चाहिये, और-पांचमे आवशकमें (४) चार " लोगस्स " का " काउस्सग्ग " किया जाताहै, २ और-चार प्रहर

रात्रीके पापकी निवृतीकेलिये वडी फजर (जरा पहेटको=लाल दिशा के समयमें) जो प्रतिक्रमण करतेहै, उसीको " रायसी प्रतिक्रमण " कहतेहैं, इसमेभी छेःही आवशकमें जिहां२ 'देवसी' शब्द आयाहै, वहां२ 'रायसी' शब्द बोलतेहै, और-प्रतेक पाठके पिछेसें=सेवटको "रायसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो तस्स मिच्छामि दुक्कडं." ऐसा कहतेहै, और-पांचमें आवशकमें (४) चार " लोगस्स "का " काउस्सग्ग " किया जाताहै, ३ और- अब पंधरा आगर चउदा दिनके अन्तरेसें जो प्रतिक्रमण करतेहै, उसीको " पक्खी प्रतिक्रमण " कहतेहै, इसमेभी छेःही आवशकमें जिहां२ 'देवसी' शब्द आताहै सो वोही देवसी शब्दके साथ " पक्खी " शब्द लगाया=कहां जाताहै, और-प्रतेक पाठके पिछेसें=सेवटको " देवसी पक्खी सम्बन्धी पाप-दोष लागो होयतो तस्स मिच्छामि दुक्कडं " कहना चाहिये ! और-पाचमें आवशकमें (१२) बारा " लोगस्स " का " काउस्सग्ग " करतेहै, ४ और-चार२ महिनेके अन्तरेसें अर्थात्-आषाडी पौर्णिमाको, तथा

ार्तिकी पौर्णिमाको, और–फाल्गुन पुर्णिमाको ो प्रतिक्रमण करतेहे, उसीको "चौमासी प- तेक्रमण" कहतेहै, यह तीन पुर्णिमाको दीन शास्त्र (श्याम) होनेके जगे आव्वल (पहिले) "देवसी प्रतिक्रमण" प्रथम आवशकसें अनुक्रमें पाच आवशक पूर्ण करके फिर=नंतर "चौमा- सी प्रतिक्रमण" की आज्ञा (हुक्म) लेकर फिर– पहिले आवशकसें अनुक्रमें छेःही आवशक संपूर्ण करतेहे, और–इसमेभी छेःही आवशकमें जिहार 'देवसी' शब्द आताहै, वहार 'चौमासी' शब्द कहना चाहिये, और–प्रत्येक पाठके पीछे (शेवट) मे "चौमासी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो. तस्स मिच्छामि दुक्कडं" कहना चाहिये, और–पांचमें आवश्यकमें (२०) वीस 'लोगस्स' का 'काउस्सग्ग' करणा चाहिये, और बारा महिने (एकवर्ष) में भाद्रपद शुद्ध पंच मीको जो 'प्रतिक्रमण' करते है, उस्को "सं- वत्सरी प्रतिक्रमण" कहतेहे, इस दिन शाम- को जलदीसें प्रथम "देवसी प्रतिक्रमण" पहिले आवशकसें अनुक्रमें पाच आवश्यक पूर्ण करना, फिर–दुसरी वक्त औरभी "सवत्सरी

प्रतिक्रमण " करनेकी आज्ञा लेके., फिर-प- हिलेही आवशकसें छेःही आवशक सपूर्ण कर ना चाहिये, और-इसमेंभी छेःही आवश्यकमें जिहांर " देवसी " शब्द आताहै, वहांर " सं वत्सरी " शब्द कहतेहै, और-प्रत्येक पाठके अं- तमें " संवत्सरी सम्बन्धी पाप=दोष लागो हो- यतो तस्स मिच्छामि दुकडं. " ऐसा कहतेहै, और-पांचमें आवश्यकमें (४०) चालीस " लो- गस्स " का ' काउस्सग्ग " करना चाहिये, और-प्रत्येक (पांचुही) " प्रतिक्रमण " में दोर वक्त " काउस्सग्ग " करना पडताहै, तथा "सा- मायिक-चौवीसत्थो " काभी " काउस्सग्ग " करते है, सो कोइभी " काउस्सग्ग " में "तस्स मिच्छामि दुक्कड. " फक्त इत्नाही शब्दकी चितवणा नहीं करना चाहियें!

☞ यह छे आवशककी विशेष विधी अपनेर गुरु आमना प्रमाणें करना !

प्रतिक्रमण करणेका महा लाभ.

अब-यथा विधीसें विनय=नम्रता, भाव भक्ति सहित, पापका पश्चाताप युक्त शुद्ध मनसें हामेशा " देवसी " तथा " रायसी " आदिक पांचुही

" प्रतिक्रमण " काळोकाळ करनेसें, जो किया हुवा पाप शिथिल (ढीला) हो जाताहै, ओर– आपने कृत्या कृत्यसें वाकीफ होकर मनुष्य कर्तव्यमें परायण (ज्ञानवंत=हुशार) वनताहे, फिर–वो अनेक पाप कार्यमें प्रवृतते हुवेभी, मन रूपी हत्ती जो विषय=विकार रूपी मस्ती में आजायतो, उस्को भाव रूपी बलमें शुद्ध ज्ञान रूपी अंकुश देकर तुर्तही रोक (वशकर) शक्ताहे, ओर– चित्तकी शुद्धी, सुज्ञानकी वृद्धी, मनकु समाधी, होके–क्षमा, दया, सत्य शील, संतोष, इत्यादि अनेक सद्‌गुणोकी प्राप्ति होतीहै, जिससें दोनो लोकका सुधारा होके इच्छित सुखकी प्राप्ती होतीहै, ऐसा समजके शुद्ध चित्तसें यथा विधी " प्रतिक्रमण " करणे वाला उत्कृष्ट पंधरा भवमें मोक्ष सुख पाताहै, ओर–उत्कृष्टा रसायण आवेतो तीर्थंकर गोत्रकी उपार्जना करके तिसरे भवमें तीर्थंकर परमात्मा वनताहै !

प्रतिक्रमण करणेकेलिये उपदेश.

वीस वोल तीर्थंकर गोत्र उपार्जन करणेकेहे, उसमें ऐसा कहाहेकि–" दोनुं वक्त (देवसी, रायसी,) आदि 'प्रतिक्रमण' करणेसें जीव कर्मोकी कोड खपावे, उत्कृष्टा रसायण आवेतो ती-

धंकर गोत्र बांधे, " ऐसा महा लाभ प्राप्त करने वाला, जन्म मरणके दुःखसें छुडाने वाला, चित्त शुद्धी, ज्ञान वृद्धी करनेवाला, क्षमा, दया, सत्य, शील, संतोष, इत्यादि सद्गुणोकी प्राप्ती कराने वाला, दोनो लोक सुधारणे वाला, स्वर्ग सुख देने वाला, मोक्ष मार्ग लगानेवाला, आत्मरूप अनंत शक्तिको प्रकाश करने वाला, राग द्वेष शत्रुओंका नाश करने वाला, ज्ञानादि त्रीरत्नका लाभ देने वाला, परम आनद उपजाने वाला, ऐसा महाउत्तम " प्रतिक्रमण " हमेशा दोनु वक्त 'देवसी' तथा 'रायसी' प्र०जरूरही करना चाहिये, कोइको जो " प्रतिक्रमण " नही आता होवेतो उनोने आब जरूर२ ही सिखना चाहिये, सिखनेके लिये बिलकुल जराभी हइगई नही करना, कदाचित्–कोइको गाथा=पद जल्दीसें नही आवेतो उनोने कन्टाळा (परमाद= आळस) करके " प्रतिक्रमण " सिखनेका छोडना नही चाहिये, तथा दररोज हमेशा वारंवार बोल (शब्द) घोकते रहना, और–"प्रतिक्रमण" सिखणेमेंही ध्यान (चित्त) लगाना चाहिये, इस्में बिलकुल=जराभी परमाद (आळस=हइगई) नही करणा, और–अब इधर देखो, कहांहैकि–

"उधर्मे नासते दरिद्रे." यह शब्द तरफ जर्रा लक्ष-देके आपने शुद्ध भाव रूप पवित्र उम्मेदको वढायके आवश्य (जरूर) आवश्यक (प्रतिक्रमण) सिखके महा उत्तम लाभ संपादन (प्राप्त) कर लेना चाहियेजी !

और- अब जो कोइ वृद्ध वयके सबबसें "प्रतिक्रमण" सिखनेसें कदाचित् नही आवेतो उनोने ऐसा करणा चाहियेकि-आपने ग्राममें कोइ स्वधर्मी भाइको "प्रतिक्रमण" आता होवेतो उनके पास यथा विनय विधी सहित शुद्ध चित्त-सें "प्रतिक्रमण" सुनना, सरधना, और-यथा शक्ति व्रतोकी मर्यादा=प्रमाण करके अति उत्तम महा लाभ उपार्जन (प्राप्त) करणा चाहिये !

और-ऐसा विचारेकि-आज मेरे धन्य भाग्य-हैकि-यह महाशयजीने मुझको "प्रतिक्रमण." सुनायाके कृतार्थ (सफल) किया, तथा यह अमुक इत्ना वक्त मेरा लेखे लगाया, और-ऐसाही आवसर (वक्त) पर ओरभी मुझको "प्रतिक्रमण" सुनानेकि-आवश्य कृपा किजीये! ऐसा महा उत्तम पवित्र लाभ दिजीये ! ऐसा कहकर यथा योग्य उन्का बहुमानकरे, मिष्ट मधुर वच-नोसें गुणानुवाद (स्तुती) करे, यथा शक्ति साता उपजावे, और-दया धर्मकी वृद्धि करे ! जो कोई

यथाविधी विनय=नम्रता पूर्वक शुद्ध भाव भक्ति सहित, पापका पश्चाताप युक्त, तह मनसें सम्यक् प्रकारे, " प्रतिक्रमण " आराधन करेगा वो इहां अनेक सुख भोगवके, स्वर्ग सुसका अनुभव लेके आगे शाश्वत मोक्षका परम सुख पावेगा! ॥इति॥

आवश्यक करणेकी आवश्यकता.

आवश्यक शब्दका शब्दार्थ ऐसाहेकि–आवश्यक कहता बहुत जरूरीसें कार्य करणेका होवेकि–जिसको किये विना स्वआत्माका और–परआत्माका कल्याण कदापी नही होवेगा, उस्कोही " आवश्यक " कहतेहै, और–इस विश्वमें इस प्राणीको दुःख देने वाला पापहै, और–सुख देनेवाला धर्म है, यह बाततो सबको मान्य हे, परंतु धर्मका क्या स्वरूप है? और–पापका क्या स्वरूपहै? इस बातका तो प्रथम जाण होना चाहिये, और–उस जाण पणेको अर्थात्–ज्ञानको वारंवार याद करते रहना कि–जिसका प्रकाश सदा (हमेशा) आपणे हृदयमें बना रहै, और–पाप कर्मको निवारे (छोडे) तथा धर्म मार्गमें सदा जीवकी प्रकृती प्रगमती रहे, जिससें यह जीव सर्व दुःखका नाश करके अनन्त अक्षय आत्मिक शिव सुखकी प्राप्ती करणेको समर्थ बने! ॥इति॥ पांचवा प्रकरण समाप्तं. ॥

प्रकरण—छट्ठा. [६ वा]

तिख्खुत्तो (मुनिको वंदना) का पाठ.

तिख्खुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं, करेमि, वं-
ामि, णमं स्वामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं,
ागलं, देवयं, चइयं, पज्जुवासामि, मथ्थएण व-
ामि, ॥ इति ॥१॥

☞ सुख साता हैजी महाराजजी साहेब ? ☜

प्रतिक्रमण सूत्र विधी युक्त.

☞ विधीः—अहो देवानु पियजी " प्रकरण—चौ-
था " में " सामायिक चौविसत्थो " की विशेष
खुलासें सहित विधी कहीहै ! सो वोही विधी इहा स-
मजलेना, तथा प्रथम ' चौविसत्था ' करके परम आ-
नंदके सात विनय=नम्रता सहित ' पूंजणी ' लेकर
' बेटका '=आसन परसें जयनासें नीचा होके 'पूर्व'
तथा ' उत्तर ' दिशाके बीच ' इशाण ' कुण (दिशा)
सन्मुख नम्रपणें खडा होकर श्री " सिमंधर " स्वामी
जीको तीन वक्त सविनय पांचु अंग नमायके " ति-
ख्खुतो " के पाठसें वदना=नमस्कार करके सुखसाता

पुछके * " देवसी प्रतिक्रमण ठायवाकी (स्थाप. नाकी.) आज्ञा " मागना, और-इसी तरहसें वहां पर जो कोई ' संयती '=मुनीराज आगर महासतीया जी विराजमान होवे उन्को भी तीन२ वक्त सविनय पाचु आग नमायके " तिख्खुतो " के पाठसें वंदना= नमस्कार करके सुखसाता पुछके " देवसी प्रतिक्रमण ठायवाकी आज्ञा " लेना, और-सविनय=नम्रता सहित दोनु हात जोडके वहापर जो आपने बडे साहा धर्मी भाई होवेतो उन्की भी आज्ञा लेके फिर-' बेटका ' पर खडा रहके—

☞ सूचना-अब ' प्रतिक्रमण ' की स्थापना सुरु होतीहै।

फिर-इच्छामिणं भंतेका पाठ कहना.

इच्छामिणं भंते, तुब्भेहिं, अभणुं, नाय समाणे,*

* " पांच प्रतिक्रमण " मेसें जो- काळमें जो " प्रतिक्रमण " करनेका होवे वो " प्रतिक्रमण. ठायवाकी आज्ञा लेना " चाहिये !

* जिहा२ ' देवसी ' शब्द आताहै, वहा२ जो जो शब्द बोलना पडताहै, सो इत्यादिक सर्व खुलासा ' प्रकरण-चौथा ' मे "पांच प्रतिक्रमणकी विधी" में, वहा देखियेगाजी !

देवसि, पडिकमणुं, ठाएमि, देवसि-नाण, दंसण, चरिताचरित, तप आतिचार चिंतवणार्थ, करेमि काउस्सग ॥इति ॥२॥

☞ सुचना-अब "प्रतिक्रमण" की 'स्थापना' सपूर्ण हुइ, अब आगे "पहिला सामायिक आवश्यक" सुरू होताहै.

प्रथम सामायिक आवश्यक.

☞ विधी- अब 'बेटका' परसें उतरके * यथाविधी विनय=नम्रता सहित "तिख्खुत्तो" के पाठसें पांचु अंग नमायके वंदना=नमस्कार करके सुख साता पुछके ऐसा कहनाकि-अहो तरण तारण महाराज 'प्रतिक्रमण की स्थापना सपूर्ण हुइ,' अब 'पहिला सामायिक आवश्यक' की आज्ञा दिजीये, और-कृपा दृष्टीकी वृष्टी किजीयेजी" इत्यादि इसी तरह मिष्ट वचनोंसें धर्म प्रेम पूर्वक आज्ञा लेके, आपने 'बेटका' पर दोनु हात जोडके नम्रपणे खडा रहके

* अत्र-छेःही आवश्यकमें जिहा२ आज्ञा लेना पडताहै, सो वहापर जो कोइ सयती=मुनी महाराज विराजमान नही होवेतो यथा विनय विधी सहित पाचु अंग नमायके "तिख्खुत्तो" के पाठसें श्री "सिमंधर" स्वामिजीकी आज्ञा लेते आनाजी!

फिर-नवकार महा मंत्र कहना.

१ णमो अरिहंताणं, २ णमो सिद्धाणं, ३ णमो आयरियाणं, ४ णमो उवज्झायाणं, ५ णमो लोए, सव्वसाहूणं ॥६ एसो पंच णमुक्कारो, ७ सव्व पावप्पणासणो, ८ मंगलाणं च सव्वेसिं, ९ पढमं हवइ मंगलं ॥३॥

फिर-करेमि भंतेका पाठ कहना.

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं, जोगं पच्चक्खामि, जाव नियम, 'पडिक्कमणो' पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा वयसा, कायसा, तस्स भंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ४ ॥

फिर-इच्छामि ठामिका पाठ कहना.

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ, अइयारो, कओ काईओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो, दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ, अणायारो, अणिच्छियव्वो, असावग पाउग्गो, नाणे तह दंसणे, चरित्ताच-

रित्ते, सुए सामाइए, तिन्हं गुत्तीण, चउन्हं कसायाणं, पचन्हं मणुव्वयाण, तिन्ह गुणव्वयाणं, चउन्हं सिख्खावयाणं, बारस विहस्स सावग धम्मस्स, जं खंडियं, जं विराहियं, तस्स * मिच्छामि दुक्कडं. ॥ इति ॥ ५ ॥

फिर–तस्सउत्तरीका पाठ कहना.

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्त करणेण, विसोहि करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाण, कम्माणं, निग्घाय, णठाए, ठामि काउस्सग्गं, अन्नथ्थ उससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएण, जं भाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्त मुच्छाए, सुहुमेहिं अग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल

* "मिच्छामि दुक्कडं" का शब्दार्थ–'मि'=मैने बिन उपयोगसें, 'च्छा'=इच्छा बिना जो पाप लगा, सो, वो 'मि'=में मेरी आत्माको, 'दु'=दुर्गछता हूकि–'क'=किया हुवा पाप, 'डं'=नाश होवो। अर्थात्–पश्चाताप युक्त कहताहुकि–यह पाप मेरी इच्छा विना हुवा, सो वो भी खोटा हुवा, अर्थात्–मन बिना किया हुवा पाप 'पश्चात्तापे शुद्धती' ऐसाही पापका पश्चाताप करनेसें आत्मा शुद्ध होतीहै!

संचालेहिं, सुहुमेहिं दिठि संचालेहिं, एव माइ
आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्जमे,
उस्सग्गो, जाव अरिहंताणं, भगवताणं, नमु
रेणं, न पारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं,
णेण, अप्पाण वोसिरामि ॥इति॥ ४ ॥

☞ सुचनाः—अब खडा होके " काउस्सग
करना चाहिये, कदाच शरीरमें व्याधी (आसात
के कारणसें खडा रहके " काउस्सग्ग " कर
शक्ति नही होवेतो, ' बेटका ' (आसन.) पर
कर शात चित्त एकाग्रतासें " काउसग्ग " करण

☞ विधी—आब ' ठाणेणं ' शब्द बोल
सात् खडा रहकर ' १९ दोप ' रहित शुद्ध म
" काउसग्ग " करना चाहिये, " काउसग्ग
'तस्स मिच्छामि दुक्कड.' फक्त इतनाही शब्दकी
तवणा (याद) नही करना, फिर—शांत (स्थी
चित्तसें एकाग्रता पूर्वक आप आपने मनमें ज्ञान=
का १४ अतिचार, समकितका ५ अतिचार, बा
तका ६० अतिचार, तथा कर्मादानका १५ अ
चार, एव ९९ अतिचार, और—" १८ पाप स्
नक " " इच्छामि ठामि " का पाठ ' जं वि

हिय "-तक और-" १ नवकार महा मंत्र "; की चिंतवणा " काउस्सग्ग " में करके, फिर-" काउस्सग्ग " पारके (छोडके) प्रगट ' णमो अरिहंताण '-ऐसा कहना ! अब-" काउस्सग्ग " में चिंतवण करणेके प्रत्येक अनुकर्मे सर्व पाठ आगे कहताहु

(ज्ञान=ग्यान का १४ अतिचार.)

आगमे तिविहे पण्णत्ते तं जहा, सुत्तागमे, अथ्थागमे, तदुभयागमे, एहवा श्री ज्ञानके विषे जे कोई अतिचार=दोष लागो होय ते आलेऊ,-१ जं वाइद्धं=आगा पाछा सूत्र (शास्त्र.) भण्या (पढ्या.) होय, २ वच्चामेलिय=उपयोग रहित (ध्यान विना.) सूत्र भण्या होय, ३हीणख्खरं=ओछो अक्षर भण्यो होय, ४ अच्चख्खरं=अधिक अक्षर भण्यो होय, ५ पयहीण=ओछो पद भण्यो होय, ६ विणय हीण=विनय=नम्रता रहित भण्यो होय,७ जोगहीण =मन वचन कायाका जोग ठाम (स्थीर.) राख्या विना भण्यो होय, ८ घोस हीणं=शुद्ध उच्चार रहित भण्यो होय, ९ सुठु दिन्न=विनयवतको रूडो ज्ञान नही दीयो होय, तथा अविनीतकु ज्ञान दियो होय, १० दुठु पडिच्छिय=अविनीतपणे ज्ञान लीयो होय, ११ अकाले कउ सज्झाय=

संध्याकाळ ते वखत सज्झाय करी होय, १२ काले, न कउ सज्झाय=सज्झायके वक्त सज्झाय नहीं करी होय, १३ असज्झाय सज्झायं=लो ही पीप (पु.) आदि अपवित्र जागा पर सज्झा य करी होय, १४ सज्झाय, न सज्झायं=सज्झाय करणेके योग्य जागा (स्थान) होयके तिहां स ज्झाय नही करी होय, भणतां, गुणतां, चिंतवतां ज्ञान अने ज्ञानवंतकी आशातना करी होयतो,

(समकितका ५ अतिचार.) दंसण समकित परमथ्थ संथवोवा, सुदिठ परमत्थ सेवणा वावि; वावण कु दसण वज्जणा, एवी सम्मत्त स, इहणा ॥ एहवा समकितरा समणो वासयाणं सम्मत्तस्स, पच अइयारा, पयाला, जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोऊं १ श्रीजिनवचन साचा करके सर्पा श्रध्या नही होय, प्रतीत्यां नहीं होय, रूच्या नही होय,२ पर दरसणकी वाछचा करी होय, ३ धर्म-करणी का फल प्रते संदेह आण्यो होय, तथा साधु साधवीका मलीन वस्त्र देखने दुर्गच्छा तथा दुर्वाछनादिक करी होय, ४ परपाखंडीकी प्रसंसा करी होय, ५ परपाखंडीसु संस्तव परिचय करयो होय,

10

हायय दीयो होय, ३राज्य विरूद्ध काम कियो होय, ४कुडा तोला,कुडा मापा करया होय, ५वस्तु मांहे भेळ संभेळ करयो होय, तथा सरस वस्तु बतायके निरस (हालकी.) वस्तु दीई होयतो,

चउथो थूल मेहुणाउ, विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार= दोष लागो होय ते आलोऊ-१ थोडा काळका स्त्री +[पुरुष] सु गमन करयो होय, २ अपरिग्रहिसु गमन कऱ्यो होय, ३ अनग क्रीडा करी होय, ४ परायाका व्याव नातरा जोड्या होय, ५ काम भोगकी तीव्र अभिलाषा करी होयतो,

पांचमो थूल परिग्रह परिमाण, विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार= दोष लागो होय ते आ-ळोऊं-१उघाडी तथा ढाकी जमीन खेत, घर, म-र्यादा उपरांत वढाया होय, २ चांदी सोनो म-र्यादा उपरांत राख्यो होय, ३ धन धान्य मर्यादा उपरांत राख्यो होय, ४ दोपग. चारपग का जी-वकी मर्यादा तोडी होय, ५ घर विखेराकी कोइभी वस्तु मर्यादा उपरांत आधीक राखी होयतो,

छट्टो थूल दिशि विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार= दोष लागो होय ते आलोउ,-१ उची

२ नीची, ३ तीर्छी दिशाका परिमाण अतिक्रम्या होय, ४ मर्यादा उपरात क्षेत्र वढाया होय, तथा एक दिशा घटायके दुसरी दिशा वढाई होय, ५ पंथमें संदेह पड्या छता आगे चाल्यो होयतो,

' सातमो थूल उपभोग परिभोग, दुविहे पन्नत्ते, विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोउ,–१ पचक्खाण उपरांत सचित वस्तुको आहार कर्यो (जीम्यो) होय, २ सचितसु खर्डेली (लाग्याकी) वस्तुको आहार कर्यो होय, ३ अपकी (पुरी पकी नही.) ऐसी मिश्र वस्तुको आहार कर्यो होय, ४ बहुत पकी तथा बीगडगइ ऐसी वस्तुको आहार कर्यो होय, ५ थोडो खावे अने घणो न्हाके ऐसी तुच्छ वस्तुको आहार कर्यो होयतो,

(एतो भोजनथकी कह्या, अब–व्यापार संबंधी कहेछे)

पंधरा कर्मादान श्रावकजीने जाणवा जोगछे, पण आदरवा जोग नही, ते कहेछे—१. इंगालकम्मे=अग्निसु कोलसा प्रमुख वस्तु निपजायके (बनायके) वेचनेको धंदो कर्यो होय, २ वण कम्मे =जंगल (वन)मेंका लिका झाड कटायके (तुदा-

हाय्य दीयो होय, ३राज्य विरूद्ध काम कियो होय, ४ कुडा तोळा, कुडा मापा करया होय, ५ वस्तु मांहे भेळ संभेळ कर्यो होय, तथा सरस वस्तु बतायके निरस (हालकी.) वस्तु दीई होयतो,

चउथो थूल मेहुणाउ, विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार= दोष लागो होय ते आलोऊ-१ थोडा काळका स्त्री +[पुरुष] सु गमन कर्यो होय, २ अपरिग्रहिसु गमन कर्यो होय, ३ अनग क्रीडा करी होय, ४ परायाका व्याव नातरा जोड्या होय, ५ काम भोगकी तीव्र अभिलाषा करी होयतो,

पांचमो थूल परिग्रह परिमाण, विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार= दोष लागो होय ते आलोऊं-१उघाडी तथा ढाकी जमीन खेत, घर, मर्यादा उपरांत वधाया होय, २ चांदी सोनो मर्यादा उपरांत राख्यो होय, ३ धन धान्य मर्यादा उपरांत राख्यो होय, ४ दोपग. चारपग का जीवकी मर्यादा तोडी होय, ५ घर विखेराकी कोइभी वस्तु मर्यादा उपरांत आधीक राखी होयतो,

छट्टो थूल दिशि विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार= दोष लागो होय ते आलोउ,-१ उंची

निछुंछण कम्मे=बैल, घोडा, उंट, पाडा इत्यादिक जीवकुं खसी करनेको तथा कान नाक टोचणेको धंदो कर्यो होय, १३ दवग्गिदावणया कम्मे=जंगलमें तथा कोई पण ठिकाणे आग लगानेको धंदो कर्यो होय, १४सरदह तळाय परिसोसणया कम्मे=सरोवर, द्रह, कुंड, तलाव, नदी, कुवा, वावडी, झरा, प्रमुखको पाणी सोसानेको धंदो कर्यो होय,१५ असईजण पोपणयाकम्मे=कुकडा, कुत्ता, बिल्ली, इत्यादिक हिंसक जीवकुं पाळ=पोपके वेचनेको धंदो कर्यो होय, तथा दुराचारी वेश्या=कसबन की भाड खाणेको (पैसो लेनेको,) धंदो कर्यो होयतो,

☞ करूणा=दया, अनुकंपा निमित्त यथा शक्ति, अवसर उचित साता उपजाउं.)

आठमो थूळ, अनर्थ दंड, विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोउं–१ काम=विषय विकार उत्पन्न होवे, ऐसी कथा=वार्ता करी होय, २ भाड सरिखी कुचेष्टा करी होय, ३मुंढासु वाचाळ पणो करके जेम तेम बोल्यो होय, तथा गाळ दीवी होय, ४ कुदाळी, पावडा, बंदुक, तरवार, छुरी, उखळ, मुसळ, घट्टी, इत्यादिक । ६०

यके) वेचनेको धंदो करयो होय, ३ साडीकम्मे=दारू, गुळी, खात, प्रमुख कोइभी वस्तु सडायके वेचनेको धंदो करयो होय, ४ भाडीकम्मे=गाडी, घर, उंट, घोडा, बैल, प्रमुख भाडासु देनेको धंदो करयो होय, ५ फोडीकम्मे=जमीन, पाहाड, टेकडी, फोडके माटी, भाटा, (मट्टी, फत्तर,) कुवा, वावडी, प्रमुख करके वेचनेको धंदो करयो होय, ६ दंत वणिज्जे=हाथीका दांत तथा कोईभी जीवको हाड, चामडो प्रमुख वेचनेको धंदो करयो होय, ७ लक्ख वणिज्जे=लाख तथा लाखकी जीनसा वेचनेको धंदो करयो होय, ८ रस वणिज्जे=मदिरादिक रसको धंदो करयो होय, ९ विष वणिज्जे =आफिम सोमल. इत्यादिक विषकी जीनसा (वस्तु) तथा हातीयार प्रमुख जीव घातक वस्तु वेचनेको धंदो करयो होय, १० केसवणिज्जे=चमरी गायका तथा कोइभी जीवका केस कढायके वेचनेको धंदो करयो होय, ११ जंत्रपिल्लण कम्मे=करडी, तील, ऊस, कपास प्रमुख घाणीमें आगर चरकमें घालके पीलनेको तथा गीरणीको धंदो करयो होय, और–घानी उखळ, मुसळ. घट्टी, प्रमुख यंत्र वेचनेको धंदो करयो होय, १२

निछंछण कम्मे=वैल, घोडा, उंट, पाडा इत्यादिक जीवकुं खसी करनेको तथा कान नाक टोचणेको धंदो करयो होय, १३ दवग्गिदावणया कम्मे=जंगलमें तथा कोई पण ठिकाणे आग लगानेको धदो करयो होय, १४सरदह तलाय परिसोसणया कम्मे=सरोवर, द्रह, कुंड, तलाव, नदी, कुवा, वावडी, झरा, प्रमुखको पाणी सोसानेको धंदो करयो होय,१५ असइजण पोपणयाकम्मे=कुकडा, कुत्ता, बिल्ली, इत्यादिक हिंसक जीवकुं पाळ=पोपके वेचनेको धदो करयो होय, तथा दुराचारी वेश्या=कसवन की भाड खाणेको (पैसो लेनेको,) धदो करयो होयतो,

☞ करूणा=दया, अनुकंपा निमित्त यथा शक्ति, आवसर उचित साता उपजाउ.)

आठमो थूल, अनर्थ दंड, विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोउं-१ काम=विषय विकार उत्पन्न होवे, ऐसी कथा=वार्ता करी होय, २ भांड सरिखी कुचेष्टा करी होय, ३मुंडासु वाचाळ पणो करके जेम तेम बोल्यो होय, तथा गाळ दीधी होय, ४ कुदाळी, पावडा, बंदुक, तरवार, छुरी, उखल, मुसळ, घट्टी, इत्यादिक हिंस-

साकारी शस्त्र वढाया होय, तथा दही, दुध, घी, मध (सेत,) इत्यादिक वस्तु उघाडी राखी होय, ५ उपभोग परिभोग में अति रक्त रहके भोग विलासमें वहुत लयलीन रह्यो होयतो,

नवमो थूल, सामायिक विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोऊं, १ सामायिकमें खोटी तरह मन प्रवर्ताव्यो होय, २ खोटी तरह वचन प्रवर्ताव्यो होय, ३ खोटी तरह काया प्रवर्तावी होय, ४ सामायिकमें समतां नही करी होय, तथा उपयोग रहित करी होय, ५ अ: णपुगी पाडी होयतो,

दशमो थूल दिशावगाशिक विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोप लागो होय ते आलोउं,– १ नेमी भूमिका उपरांत बाहेर थकी वस्तु आणावी होय, २ आथवा मोकलावी होय, ३ शब्द करके जणाव्यो होय, ४ रूप करके देखाड्यो होय, ५ दुसरापर काकरो प्रमुख न्हाकके बुलायो होय, तथा दुसरा कनासु काम करायो होयतो,

इग्यारमो थूल, पडिपुन्न पोषध व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोप लागो होय ते आलोउं,–१ पोसा करनेको सेज्या संथारा (जागा, पाट,

पथारी=बिछानो, वस्त्र, प्रमुख.) नही जोयो (देख्यो,) होय, तथा माठीतरे जोयो होय, २ नही पुंज्यो होय, तथा माठीतरे पुंज्यो होय, ३ दिसा, मात्रा, थुक, खेंकार, आदि परठावणकी जागा. नही देखी होय, तथा माठीतरे देखी होय, ४ नही पुंजी होय, तथा माठीतरे पुंजी होय, ५ पोसामांहे समता नही करी होय, तथा निद्रा विकथादिक प्रमाद करयो होय, ॥ पोसामांहे * परठावणकु जावता तीन वखत प्रगट 'आवस्सही'–'आवस्सही' नही कह्यो होय, परठावणका ठिकाणेकी सर्केंद्र महाराजकी आज्ञा नही मांगी होय, घणी जागामें आयत्ना सहित परठायो होय, तथा परठाया पछे तीन वखत 'मोहसरे'–'मोहसरे' नही कह्यो होय, स्थानक माहे पाछो आवता तीन वखत प्रगट 'निस्सही'–'निस्सही' नही कह्यो होय, तथा शात चित्तसु "चोविसत्थो" प्रमुख नही करयो होयतो,

* अहो देवानु प्रीयजी-येही "प्रकरण-तीसरा" में १८ दोष रहित पोषध व्रतकी विधी तथा क्रियादिक विशेष विस्तार सहित लिखी है, सो देख लेनाजी !

सुए सामाइए, तिन्हं गुत्तीण, चउन्हं कसायाणं, पंचन्हं मणुव्वयाणं, तिन्हं गुणव्वयाण, चउन्हं सिख्खावयाणं, वारस विहस्स सावग धम्मस्स, जं खंडियं, ज विराहिय,

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाण, णमो आयरियाण, णमो उवज्झायाण, णमो लोए-सव्व साहूण, एसो पच णमुकारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसि, पढम-हवइ मंगळ, ॥ इति ॥

(अब ' काउस्सग्ग ' सपूर्ण हुवा)

☞ सूचना:-आब " काउस्सग्ग " पाडके (छोडके.) दोनु हाथ जोडके, प्रगट एक " नवकार महा मंत्र " कहके, किया हुवा हुवा "काउस्सग्ग " की आलेवणाके लिये ' च्यार ध्यानका पाठ ' कहना, फिर ' पहिलासामायिक आवशक सपूर्ण करणेका पाठ कहना ! सो अनुकर्मे यह दो पाठ भी नीचे लिखे प्रमाने ॥

फिर—च्यार ध्यानका पाठ कहना.

काउस्सग्ग मांहे मन चळ्यो होय, वचन चळ्यो होय, काया चळी होय, आर्त ध्यान, रुद्र ध्यान, धायो होय, धरम ध्यान, शुक्ल ध्यान नही

घायो होयतो, * देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकड, ॥ इति ॥

फिर-पहिलो सामायिक आवशक संपूर्ण करणेका पाठ कहना.

पहिलो सामायिक, दुजो चौविसत्थो, तीजो वंदना, चौथो पडिक्कमणो, पांचमो काउस्सग्ग, छट्टा पच्चख्खाण, यह छे आवशक माहेसु पहिलो सामायिक आवशक संपूर्ण हुवो, पहिला सामायिक आवशकमें अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जाणतां, अजाणतां, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकडं. ॥ इति ॥

☞ इति प्रथम सामायिक आवशक सपूर्ण. ☜

☞ विधी —अब ' पुजणी ' सें जागा पुजके धीरेसें ' बेटका ' के नीचे होके, विनय विधी

*अहो देवानु प्रीय-अब प्रत्येक पाठके अतमें जिहार ' देवसी ' शब्दके सात् ' तस्स मिच्छामि दुकडं. ' लिखाहै, सो आपकु जिस काळमें जो ' प्रतिक्रमण ' करना होवे उसी शब्दके सात ' मिच्छामि दुकडं ' देना चाहिये, विशेष खुलासा इस ग्रन्थके ' प्रकरण-पाचवा ' में "पाच प्रतिक्रमणकी विधी" में लिखाहै ! सो देख लेनाजी !

सहित " तिख्खुत्तो " के पाठसें वंदना–नमस्कार करके सुख साता पुछके ऐसा कहनाकि–" अहो परम कृपालु महाराज ' पहिलो सामायिक अव-शक ' संपूर्ण हुवा ! अब–दुसरा आवशककी आज्ञा दिजीये' और–कृपा दृष्टिकी दृष्टि किजीये !' इत्यादि इसी तरह आज्ञा लेके, फिर–बेटकेपर खडा होके–

फिर–लोगस्सका पाठ कहना.

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तिथ्थयरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभ मजियं च वंदे, संभव मभिण दणं च, सुमइ च, पउ-मप्पहं, सुपासं, जिणं च चंद, प्पहं वंदे,॥२॥ सुवि-हिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस, वासुपुज्जं च ॥ विमल मण–तं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि सुव्वयं, नमि जिणं च वंदामि, रिठ्ठनेमिं पासं, तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला, पहीण जर मरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा, तिथ्थ-यरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहि-लाभं, समाहिवर मुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निं-

म्मलयरा, आइचेसु अहियं, पया सयरा ॥ साग-
रवर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं, मम दिसंतु॥७॥इति॥

फिर–दुसरा चौविसत्था आवशक संपूर्ण करणेका पाठ कहना.

छे आवशक मांहेसु–पहिलो सामायिक, दुजो चौविसत्थो, यह दो आवशक संपूर्ण हुवा, यह दो आवशकमें, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार; जाणतां, अजाणतां, देवसी सम्बन्धी, पाप=दोप लागो होय तो,तस्स मिच्छामि दुक्कड, ॥

☛ इति दुसरा चौविसत्था आवशक सपूर्ण ※

☞ विधी–प्रथम ' पुंजणी ' सें जागा पुजके जीवकी जतना (दया) सहित ' बेटका ' परसें नीचे होके यथा विनय विधी सहित " तिख्खुत्तो " का पाठसें पाचु अंग नमायकर वंदना=नमस्कार करके सुख साता पुछके, ऐसा कहनाकि–' अहो बापजी पहिलो सामायिक, ' ' दुसरो चौविसत्थो ' यह दो आवश्क सपूर्ण हुवा । अब–' तिसरा आवशक ' की आज्ञा दिजीये, और–कृपा दृष्टीकी वृष्टी किजीयेजी, इत्यादि इसी तरह धर्म प्रेम पूर्वक दोय वखत (दोय वखत) " खमासमणा " का पाठ कहना,—

अथ खमासमणाका पाठ कहनेकि-विधी.

अहो देवानुप्रीयजी–प्रथम हातमें 'पुजणी' लेके विनय=नम्रता सहित आपने आसनके नीचे उतरके गुरुदेवके सन्मुख मर्यादा सहित, गुरुमहाराज के आसन सें साडेतीन हात दूर रहेके, फिर–अपने शरीर को धनुपाकार सरिखा नमायकर (झुकायकर=लुळायकर.) शात चित्तसें दोनो हात जोडकर "खमासमणा का पाठ" कहनेको प्रारंभ करना, अनुक्रमें 'मे, मिउग्गहं' यह शब्द बोलतेके सात आप स्वता को नीचे बैठनेके अदाजसें जागा पुजके 'निसीही' 'निसीही' यह शब्द बोलतेके साथ औरभी आप नम्रतासें प्रगट ऐसा कहना कि–"गुरु वंदना विना अन्य काम करना निषेधहै," यह इत्ने शब्द कहके, फिर–उत्कृष्ट आसन, अर्थात्–गाय दुहनेके आसन सरिखा, दोनो गोढे उचे करके बैठे, फिर–'पुंजणी' आपने सन्मुख= नजीक रखके, दोनु हात जोडके दो साथलोके (दोनु मांडीके.) बीचसें जरा हात लंबे करके, दोनु हातकी दशही अगुली सन्मुख के 'पुंजणी' पर आगर भूमि पर लगाकर, [अ] अक्षर जरा मद स्वरसें कहे, फिर–दशही अगुली अपने शिरको लगाते वक्त [हो] अक्षर जरा उचे स्वरसें कहे, यह दोनो अक्षर द्विविध

स्वरसें उच्चारता, (१) पहिला आवर्त हुवा ! इसी तरह (इण हीज रीतिसें) [का] [य] यह दो अक्षर द्विविध स्वरसें उच्चारता दुसरा आवर्त हुवा ! और– [का] [य] यह दो अक्षर द्विविध स्वरसें उच्चारता तिसरा आवर्त हुवा ! अब उप्रोक्त ओही उत्कृष्ट आसनसें वैसेही दोनु हात जोडके ' सफास ' शब्दसें लगाके अनुक्रमें ' वइक्कंता ' यह शब्द तक् पढकर, फिर– दोनु हातकी दश अगुली सन्मुख ' पुंजणी ' पर अगर जमीन पर लगाकर, [ज] अक्षर जरा मंद स्वरसें कहे तथा 'पुंजणी' परसें आगर जमीन परसें दोनु हात उठाते वक्त [त्ता] अक्षर जरा मध्य स्वरसें कहे, अब दोनो हात मस्तक को लगाते वक्तमें [भे] अक्षर जरा उच्च स्वरसें कहे ! उप्रोक्त इसी तरह (.उपरली इणहीज रीतिसू) यह तीन अक्षर त्रिविध स्वरसें उच्चारता प्रथम आवर्त हुवा ! तथा [ज] [व] [णि] यहभी तीन अक्षर त्रिविध स्वर सहित उपरके प्रथम आवर्तके मुजब उच्चारता दुसरा आवर्त हुवा ! और–(ज) [चं] (भे) यहभी तीन अक्षर त्रिविध स्वर सहित उपरके प्रथम आवर्तके मुजब उच्चारता तिसरा आवर्त हुवा ! अब–उप्रोक्त ओही उत्कृष्ट आसनसें वैसेही दोनु हात जोडके ' खामेमि ' शब्दसे लगाके

अनुक्रमें ' तेत्तीस न्नयराए ' यह शब्द पढतेके साथ दोनो हातके बिच ' पुजणी ' रखके, दो हात जोडके उठके उभा रहे, फिर–' जंकिंच मिच्छाए ' शब्दसें लगाके अनुक्रमें ' अप्पाणं वोसिरामी,' तक् संपूर्ण पाठ प्रढना । एक " खमासमणा " का पाठमें छे आवर्त होते है, ऐसेही उप्रोक्त यथा विनय विधी सहित दोय वार " खमासमणा " का पाठ पढनेसें बारा आवर्त होते है ।

☞ सुचना—अब उप्रोक्त विनय विधी सहित दोय वक्त " खमासमणा " का पाठ कहना चाहिये ते नीचे प्रमाणें.

फिर–दो वक्त खमासमणाका पाठ कहना.

इन्छामि, खमासमणो, वदिउं, जावणि ज्जाए, निसीहियाए, अणुजाणह, मे, मिउग्गहं, निसीही, अहो, कायं, काय, संफासं, खमणिज्जो भे, किलामो, अप्पाकिलंताणं, वहुसुभेण भे, देवसी, वइकंतो, * ज त्ता भे, ज व णि, ज्ज त्तं भे, खामेमी, खमासमणो, देवसिय, वइकमं, आवसियाए, पडिक्कमामि,

* ' ज त्ता भे,' यह शब्दका अर्थ ऐसा हैकि,–तप सयम रूप यात्रा, और–इन्द्रि दमन रूप यज्ञ,॥ यह श्री वितराग सर्वज्ञ प्रभुजीने फरमायाहै ! ऐसें सद् वोधक के उपदेशको उलघन करके ढोंगमें नही फसना चाहिये !

खमासमणाणं, देवसियाए, आसायणाए, तेत्तीस न्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मण दुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयराए, सव्व धम्माइ क्कमणाए,आसायणाए,जो मे,देवसिओ, अइयारो,कओ तस्स खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामी, अप्पाणं वोसिरामि, ॥ इति ॥

फिर—तिसरा वंदना आवशक संपूर्ण करणेका पाठ कहना.

छे आवशक मांहेसु—पहिलो सामायिक, दुजो चौविसत्थो, तीजो वंदना, यह तीन आवशक सपूर्ण हुवा ! यह तीन आवशकमें, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जाणता, अजाणतां, देवसी सम्बन्धी, पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कड. ॥ इति ॥

☞ विधीः—अहो देमानुप्रीयजी —अब यथा विनय विधी सहित ' तिख्खुत्ता ' का पाठमें पांचु अग नमायके वदना=नमस्कार करके सुखसाता पुछके प्रगट ऐसा कहनाकि—" आहो स्वामीनाथ—पहिलो सामायिक, दुजो चौवीसत्थो, तीजो वदना, यह

तीन आवशक संपूर्ण हुवा ! अब–चौथा आवश-क, की अज्ञा दिजीयेजी, कृपा दृष्टीकी दृष्टी कि-जीयेजी, " इत्यादि इसी तरह धर्म प्रेम पूर्वक अज्ञा लेके आपने " बेटका " पर खडा रहके प्रथम ' का-उस्सग्ग ' माहे जे ९९ अतिचार कह्या ते अब प्रगट पणे ज्ञान=ध्यानका १४ अतिचार, समकितका ५ अ-तिचार, बाराव्रतका ६० तथा कर्मादानका १५ अति-चार, एव ९९ अतिचार, और–' १८ पापस्थानक ' ' इच्छामि ठामि " का पाठ सपूर्ण कहना; तथा प्रते-क पाठ तथा थूल के अतमे (छेहडे=सेवटको, " दे-वसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकडं. " ऐसा कहना

फिर–तस्स सव्वस्सका पाठ कहना.

तस्स सव्वस्स, देवसियस्स, अइयारस्स, दुभ्भासियं, दुचिंतियं, आलोयंते, पडि-कमामि. ॥

☞ विधीः—अब–'पुंजणी' से जागा पुजके जिवकी जतना सहित ' बेटका ' परसे नीचे होके यथा विनय विधी सहित " तिक्खुत्ता " के पाठसे पाचु अग न-मायके वदना=नमस्कार करके सुख साता पुछके, ऐसा कहनाकि–" अहो पूर्ण कृपालु दिनानाथ–श्रावक,

मूत्र भणवाकी अज्ञा दिजीये, कृपा दृष्टीकी दृष्टी किजीये, " इत्यादि इसी तरह धर्म प्रेम पूर्वक अज्ञा लेके अपने 'बेटका' पर बैठके - १ जिमणा गोढा उभा रखले, और - उसी गोढे पर दोनु हाथ जोडकर, १ "नवकार महा मंत्र" कहके फिर - "करेमि भंते" का पाठ कहना —

फिर—चत्तारी मंगलं का पाठ कहना.

चत्तारि मंगल, अरिहता मगलं, सिद्धा मंगल, साहू मंगलं, केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्यत्तो धम्मो लोगुत्तमा, चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहता सरणं पवज्जामि, सिद्धा सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलि पण्णत्तो धम्म सरणं पवज्जामि, अरिहंताजीको सरणो, सिद्धाजीको सरणो, साधुजीको सरणो, केवलि परूप्या दया धरमको सरणो, ॥ दुहा, ॥ यह चार सरणा, दुःखहरणा, ओर नही दूसरो कोय ॥ जे भवि प्राणी आदरे तो अक्षय अचल गति होह ॥ इति ॥

☞ विधी—अब "इच्छामि ठामि" का पाठ कहना.

काले न कउसज्झाय=सज्झायके वक्त सज्झाय नही करी होय, १३ असज्झाय सज्झायं=छोदी, पीप. (पु.) आदि अपवित्र जगापर सज्झाय करी होय, १४ सज्झाय, न सज्झाय=सज्झाय क रनेके योग्य जागा होयके तीहां सज्झाय नही करी होय, भणतां, गुणता अने विचारतां, ज्ञान अने ज्ञानवंतकी आशातना करी होयतो, देवसी सम न्धी पाप=दोप लागो होयतो तस्स मिच्छामि दुक्

फिर–समकितका पांच अतिचारका पाठ कहना.

दंसण समकित, परमथ्थ, संथवोवा, सुदि परमत्थ सेवणावावि, वावण कुदंसण-वज्जणा एवी सम्मत्त सद्दहणा ॥ यहवा समकितका समणो वा सयाणं, सम्मत्तस्स, पंच अइयारा, पयाला, जा णियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा, ते आलोउं १ श्री जिन वचन साचा करके समां श्रध्या नहीं होय, प्रतीत्यां नही होय, रूच्या नही होय, २ प दरसणकी वांछया करी होय, ३ धर्म=करणीक फंळ प्रते संदेह आण्यो होय, तथा साधु साधवीक मळीन वस्त्र देखके, दुर्गच्छा तथा दुर्गछनादि

री होय, ४ परपाखंडीकी प्रसंसा करी होय, ५ रपाखंडीसु संस्तव परिचय करयो होयतो महारा मकित रूप रत्न पदार्थके विषे मिथ्यात्व रूप ज मेला खेह लागो होयतो, देवसी सम्बन्धी ाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

फिर—पहिला अणुव्रत कहना.

पहिलो अणुव्रत थूलाओ पाणाइ वायाओ वेरमणं, त्रसजीव बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, पचेंद्रिय, जाणी प्रीच्छी; विण अपराधी, आकुटी संकल्पी सलेसी हणवानिमित्तें हणवाका पच्चक्खाण; जावजीवाए दुविहं, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा कायसा, एहवा, पहिलो थूल प्राणातिपात विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोउ,—१ रिष वषे गाढो बंधन बांध्यो होय, २ गाढो घाव घाल्यो होय, ३ शरीरका चामडीने छेद करया होय, ४ अतिभार घाल्या होय, ५ भात पाणीको विछेद करयो होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥ इति ॥

फिर-दुसरा अणुव्रत कहना.

दूजो अणुव्रत थूलाओ मोसा वायाओ वेरमणं, कन्नालिए, गोवालिए, भोमालिए, थापण मोसो, मोटकी कुडी साख, इत्यादिक 'मोटका झुट बोलणका पच्चख्खाण, जावजीवाए, दुविहं, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा, दूजो थूल मृषावाद विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होयते, आलोउ- १ सह सात्कारे कोई प्रतें कुडो आळ दियो होय, २ रहस्य कोइकी छानी वात प्रगट करी होय, ३ स्त्री पुरूषका मर्म मोसा प्रकाश्या होय, ४ कोई प्रते अपाय पाडवाके वास्ते मृषा (खोटो.) उपदेश दीयो होय, ५ कुडा (झुटा.) लेख लिख्या होय तो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

फिर-तीसरा अणुव्रत कहना.

तीजो अणुव्रत थूलाओ आदिन्ना दाणाओ वेरमणं, खातर खणी, गाठडी छोडी, ताळापर कुचिये करी, पडी वस्तु धणीयाती जाणी लेवी होय, इत्यादिक मोटका अदत्तादान लेवणका पच्चक्खाण,

तेमांहे सगा सम्बन्धी, व्यापार सम्बन्धी, निभ्रमी वस्तु उपरांत आदत्तादान लेवणका, पच्चक्खाण, जावजीवाए, दुविहं, तिविहेणं, न करमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवो तीजो थूल, अदत्तादान विरमण, व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोउं. १ चोरकी चोराइ वस्तु लीई होय, २ चोरने सहाय्य दियो होय, ३ राज्य विरूद्ध काम कियो होय, ४ कुडा तोला कुडा मापा कीया होय, ५ वस्तु मांहि भेळ संभेळ करी होय, तथा सरस वस्तु बतायके, निरस (हालकी.) वस्तु दीई होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकडं.

फिर—* च्यार प्रकारका चौथा अणुव्रतमेंसे आपनेको जो अणुव्रत कहनेका होवे, वो अणुव्रत कहना.

अब श्रावकका चौथा अणुव्रत.

चौथा अणुव्रत थूलाओ, मेहुणाओ, वेरमणं, सदारा संतोसिए, अवसेसं, मेहुण विहं पच्चक्खाण,

* यह उक्त ४ प्रकारका चौथा अणुव्रतमेंसे अपनेको जो अणुव्रत सिखनेका होवे, वो अणुव्रत बहोत साकल हुशारीसें विवेकता सहित सिखना चाहियेजी।

जावजीवाए, देवता देवांगना सम्बन्धी, दुवि तिविहेणं, नकरेमि, न कारवेमि, मणसा, वय कायसा, तथा मनुष्य–मनुष्यणी, तथा तिर्यच सम्बन्धी, एगविहं, एगविहेण, न करेमि–काय एहवा —

अब–श्राविका का चौथा अणुव्रत

चौथा अणुव्रत थूलाओ, मेहुणाओ, वेरम समतार संतोसिए, अवसेसं मेहुण सेवनका प रूखाण, जाव जीवाए, देवता सम्बन्धी, दुवि तिविहेणं. न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वय कायसा, तथा मनुष्य, तिर्यच, सम्बन्धी एगवि एगविहेणं, न करेमि कायसा, एहवा—

अब–जिस् श्रावकको सर्वथा प्रकारे ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया होवे, उनको

चौथा अणुव्रत थूलाओ, मेहुणाओ, वेरम मूळथकी कायाए करी सर्वथा प्रकारे मैथुन से नका पचरूखाण, देवताकी देवांगना, तथा म ष्यणी, तिर्यचणी, सम्बन्धी मैथुन सेवनका रूखाण, जाव जीवाए, दुवि[illegible] हे, न करे न कारवेमि, मणसा, व[illegible] एहवा—

अब—जिस् श्राविकाको सर्वथा प्रकारे ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया होवे, उनको.

चौथा अणुव्रत थूलाओ, मेहुणाओ, वेरमणं, मुळथकी कायाए करी, सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवनका पच्चख्खाण, देवता, मनुष्य, तिर्यंच, सम्बन्धी मैथुन सेवनका पच्चख्खाण, जाव जीवाए, दुविहं, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवा—

☞ चउथा थूल मेहुणाओ, विरमणं, व्रत के विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोऊं—१ थोडा काळकी स्त्री + [पुरुष] सु गमन कर्यो होय, २ अपरिग्रहिसु गमन कर्यो होय, ३ अनंग क्रीडा करी होय, ४ परायाका व्याव नातरा जोड्या होय, ५ काम भोगकी तीव्र अभिलाषा करी होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं.॥इति॥

फिर—पांचवां अणुव्रत कहना.

पाचवा अणुव्रत परिग्रहाओ, वेरमणं, खित, वथ्थु, को यथा परिमाण, हिरंण, सोवंण, को यथा

२४ सयणविहं, २५ सचितविहं, २६ दव्ववि
इत्यादिकको यथा परिमाण कीधोछे, ते उपरां
उपभोग परिभोग, भोगनिमित्ते भोगवाका पच्च
खखाण,जावजीवाए, एगविहं, तिविहेणं, न करो
मनसा, वयसा, कायसा, एहवो सातमों थूल,उ
भोग परिभोग, दुविहे पन्नत्ते, विरमण व्रतके वि
जे कोइ आतिचार=दोष लागो होय ते अ
कोउं,— १ पच्चख्खाण उपरांत सचित वस्तुप
आहार कर्यो (जीम्यो.) होय, २ सचित
खडेली (लाग्याकी.) वस्तुको आहार कर्य
होय, ३ अणपकी (पुरी पकी नहीं.) ऐसी मि
वस्तुको आहार कर्यो होय, ४ बहुत पकी, त
विगडगई ऐसी अभक्ष वस्तुको आहार कर्यो हो
५ थोडो खावे अने घणों न्हाके, ऐसी तुच्छ वस्तु
आहार कर्यो होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दो
लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकडं. ॥ ॥ इति,
(एतो भोजन थकी कह्या, आव व्यापार सम्बन्धी कहेछे.

फिर—पंदरा कर्मादान कहना.

पंदरा कर्मादान श्रावकजीने जाणवा जोगछे
पण आदरवा जोग नही ते कहेछे,–१, इंगाल

कम्मे=अग्निसु कोळसा प्रमुख वस्तु निपजायके(वनायके,) वेचनेको धंदो (व्यापार.) करयो होय, २ वणकम्मे=जगल (वन.) मेका लिला झाड कटायके (तुडायके.) वेचनेको धंदो करयो होय, ३ साडीकम्मे=दारु, गुळी, खात, प्रमुख कोइभी वस्तु सडायके वेचनेको धदो करयो होय, ४ भाडीकम्मे=गाडी, घर, उट, घोडा, वैल, प्रमुख भाडासु देनेको धदो करयो होय, ५ फोडीकम्मे=जमीन, पहाड, टेकडा, फोडके माटी, भाटा, (मट्टी, फत्तर.) कुवा, वावडी, प्रमुख करके वेचनेको धंदो करयो होय, ६ दतवणिज्जे=हाथीकादात तथा कोइभी जीवको हाड चामडो प्रमुख वेचनेको धदो करयो होय, ७ लक्खवणिज्जे=लाख तथा लाखकी जीनसा वेचनेको धदो करयो होय, ८ रसवणिज्जे=मदिरादिक रसको धंदो करयो होय, ९ विषवणिज्जे=आफिम, सोमल, इत्यादिक विषकी जीनसा, (वस्तु) तथा हातीयार प्रमुख जीवघातक वस्तु वेचनेको धंदो करयो होय, १० केसवणिज्जे=चमरी गायका, तथा कोइभी जीवका केस कटायके वेचनेको धदो करयो होय, ११ जन पिल्लणकम्मे=करडी, तील, दुस, कपास प्रमुख

हेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवी म्हारी साची श्रद्धना, परुपणा, फरसना, करूं तेवारे (ते वखत) शुद्ध, एहवो नवमो थूल, सामायिक विरमण व्रतके विषे, जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोवं,-१ सामायिकमे खोटी तरह मन प्रवर्ताव्यो होय, २ खोटी तरह वचन प्रवर्ताव्यो होय, ३खोटी तरह काया प्रवर्तावी होय, ४सामायिकमे समतां नही करी होय, तथा उपयोग रहित करी होय, ५ अणपुगी पाडी होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप= दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकड ॥इति॥

फिर–दशमो अणुव्रत कहना.

दशमो दिशा वगाशिक व्रत, दिन प्रतें प्रभात थकी प्रारंभीने पूर्वादिक छ दिशामे जितनी भूमिका मोकली राखीछे, ते उपरांत, पोताकी स्वइच्छायें, कायासु जायने, पाच आश्रव सेवनका पचख्खाण, जाव अहोरत्तं, दुविहं, तिविहेण, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तथा जितनी भूमिका मोकली राखीछे, ते मांहे, जे द्रव्यादिककी मर्यादा करीछे, ते उपरांत उपभोग, परिभोग, भोग निमित्ते, भोगव

वाका पच्चख्खाण, जाव अहोरत्त, एगविह, तिवि-हेणं, न करेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवी म्हारी साची श्रद्धना, परूपणा, फरसना करूं तेवारे (ते वखत.) शुद्ध, एहवा दशमो थूळ, दिशा वगाशिक, विरमण, व्रतके विषे, जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोउं,—१ नेमी भूमिका उपरात बाहेर थकी वस्तु आणावी होय, २ आथवा-मोकलावी होय, ३ शब्द करके जणाव्यो होय, ४ रूप करके देखाड्यो होय, ५ दुसरापर काकरो प्रमुख न्हाकके बुलायो होय, तथा दुसरा कनासु काम करायो होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कड. ॥ इति ॥

फिर—इग्यारमा अणुव्रत कहना.

इग्यारमो पडिपुन्न पोषध व्रत, असण, पाणं, खाइमं, साइम का पच्चख्खाण, अबभ सेवणका पच्चख्खाण, अमुक मणि, सुवर्णका पच्चख्खाण, माला वन्नग, विलेपणाका पच्चख्खाण, शस्त्र मुसलादिक सावज्ज जोगका पच्चख्खाण, जाव अहोरत्त, पज्जुवासामि, दुविह, तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा, एहवी

म्हारी साची श्रद्धना, परूपणा, फरसना, करू तेवारे (ते वखत.) शुद्ध, एहवा इग्यारमा धूल पडिपुन्न पोपध व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोउं, १ पोसा करनेको सेज्या संथारा (जागा, पाट, पथारी=बिछानो; वस्त्र, मुखवस्त्र.) नही जोयो (देख्यो.) होय, तथा माठी तरे जोयो होय, २ नही पुंज्यो होय, तथा माठीतरे पुंज्यो होय, ३ दिसा, मात्रा, थुक, खेंकार, आदि परठाणकी जागा, नही देखी होय, तथा माठीतरे देखी होय, ४ नही पुंजी होय, तथा माठी तरे पुंजी होय, ५ पोसा मांहे समतां नही करी होय, तथा निद्रा विकथादिक प्रमाद कर्यो होय, तथा पोसा माहे परठावणकु जावता तीन वखत प्रगट 'आवस्सही'—'आवस्सही.' नही कह्यो होय, परठावणका ठीकाणेकी सक्रेंद्र महाराजकी आज्ञा नही मागी होय, परठावणकी थोडी जागा देखी होय, घणी जागामें आयत्ना सहित परठायो होय, तथा परठाया पछे तीन वखत, 'मोहसरे'—'मोहसरे' नही कह्यो होय, स्थानक मांहे पाछो आवतां तीन वखत प्रगट 'निस्सही'—'निस्सही' नही कह्यो होय, तथा शांत चित्तसु

" चौविसत्थो ", प्रमुख नही करयो होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोप लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥ इति ॥

फिर—बारमा अणुव्रत कहना.

बारमो अतिथि संविभाग व्रत, समणे निग्रंथे फासु एपणिज्जेणं,—१ असण, २ पाणं, ३ खाइमं, ४ साइमं, ५ वथ्थ, ६ पडिग्गह, ७ कंवल,८ पाय पुच्छणेण, पडिहारिय, —९ पीढ, १० फलग, ११ सेज्झा, १२ संथारो, १३ ओषध, १४ भेमज्जेणं, पडिलाभे माणे,विहरामि, एहवी म्हारी साची श्रद्धना, परूपणा, फरसना,करूं तेवारे (ते वखत.) शुद्ध, एहवा बारमा थूल, अतिथि सविभाग, विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोप लागो होय ते आलोउं,—१सुजती (शुद्ध=दोप रहित.) वस्तु सचित उपर रखी होय, २ सचितसु ढाकी होय; ३ गौचरीके वेला साधु साधवीकी भावना नही भाई होय, तथा आप सुजतो हुयने दुसरा कनासु दान दीरायो होय, और—साधु साधवीका मलीन वस्त्र देखने दुर्गच्छा, तथा दुर्वांछनादिक करी होय, ४ आपनी वस्तु पराई करी होय, ५ अदे-

सारी साची श्रद्धना, परूपणा, फरसना, करू तेवारे (ते वखत.) शुद्ध, एहवा इग्यारमा थूल, पडिपुन्न पोपध व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोष लागो होय ते आलोउं, १ पोसा करनेको सेज्या सथारा (जागा, पाट, पथारी=बिछानो, वस्त्र, प्रमुख.) नही जोयो (देख्यो.) होय, तथा माठीतरे जोयो होय, २ नही पुंज्यो होय, तथा माठीतरे पुंज्यो होय, ३ दिसा, मात्रा, थुक, खेंकार, आदि परठाणकी जागा, नही देखी होय, तथा माठीतरे देखी होय, ४ नही पुंजी होय, तथा माठी तरे पुंजी होय, ५ पोसा मांहे समतां नही करी होय, तथा निद्रा विकथादिक प्रमाद करयो होय, तथा पोसा मांहे परठावणकु जावता तीन वखत प्रगट 'आवस्सही'—'आवस्सही.' नही कह्यो होय, परठावणका ठीकाणेकी सक्रेंद्र महाराजकी आज्ञा नही मांगी होय, परठावणकी थोडी जागा देखी होय, घणी जागामें आयत्ना सहित परठायो होय, तथा परठाया पछे तीन वखत, 'मोहसरे'—'मोहसरे' नही कह्यो होय, स्थानक मांहे पाछो आवता तीन वखत प्रगट 'निस्सही'—'निस्सही' नही कह्यो होय, तथा शांत चित्तसु

"चौविसत्थो" प्रमुख नहीं करयो होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोप लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥ इति ॥

फिर—बारमा अणुव्रत कहना.

बारमो अतिथि संविभाग व्रत, समणे निग्रंथे फासु एपणिज्जेणं,—१ असणं, २ पाणं, ३ खाइमं, ४ साइमं, ५ वथ्थ, ६ पडिग्गह, ७ कंवल,८ पाय पुंच्छणेण, पडिहारिय, —९ पीढ, १० फलग, ११ सेज्झा, १२ संथारो, १३ ओषध, १४ भेसज्जेणं, पडिलाभे माणे,विहरामि, एहवी म्हारी साची श्रद्धना, परूपणा, फरसना,करूं तेवारे (ते वखत.) शुद्ध, एहवा बारमा थूल, अतिथि संविभाग, विरमण व्रतके विषे जे कोइ अतिचार=दोप लागो होय ते आलोउं,—१सुजती (शुद्ध=दोप रहित.) वस्तु सचित उपर रखी होय, २ सचितसु ढाकी होय, ३ गौचरीके वेळा साधु साधवीको भावना नहीं भाई होय, तथा आप सुजतो हुयने दुसरा कनासु दान दीरायो होय, और—साधु साधवीका मलीन वस्त्र देखने दुर्गंच्छा, तथा दुर्वांछनादिक करी होय, ४ आपनी वस्तु पराई करी होय, ५ अह-

स्सास निस्सासेहिं, वोसिरामि, त्ति कट्टु, ए
शरीर वोसिरावीने, कालं अणव कंख मांर्णं, वि
हरामि, एहवी म्हारी साची श्रद्धना, परूपण
फरसना, करूं तेवारे (ते बखत.) शुद्ध, एह
अपच्छिम मरणांतिय, सलेहणा, झसणा, अरा
णाका पच अइयारा, पयाला जाणियव्वा,
समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं,-यह लो
मांहे राजाकी पदवी वांछी होय, २ परलो
मांहे इंद्रकी, तथा देवताकी, पदवी वांछी हो
३ सुख मांहे जीवणेकी वांछ्या करी होय,
दुःख मांहे मरणेकी वांछया करी होय, ५-य
लोक तथा पर लोकका काम भोगकी वांछ्या क
होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोप लागो होयत
तस्स मिच्छामि दुक्कड. ॥ इति ॥

फिर—समकित पूर्वक बाराव्रतकी आलोयणाका पाठ कहना.

इम समकित पूर्वक बाराव्रत सलेखणा सहि
एहने विषे जे कोइ अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचा
अणाचार, जाणतां, अजाणतां, मन, वचन, क
यायेंकरी, सेव्यो होय, सेवराव्यो होय, सेव

प्रत्यें भलो जाण्यो होयतो, अनंता सिद्ध प्रभुका साखे देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकड. ॥ इति ॥

विधीः—अब " १८ पापस्थानक " तथा " इच्छामिठामि " का पाठ, यह दो पाठ कहे-कर, फिर–'बेटका' पर खडा होके, दोनु हाथ जोडके

फिर–तस्स धमस्सका पाठ कहना.

तस्स धम्मस्स केवलि पण्णत्तस्स अभ्भुठिउमि, आराहणाए, विरउमि, विराहणाए, तिविहेण पडिकंतो, वदामि, जिणे चउव्वीस, (खमासमणो.)

विधीः—अब यथा विनय विधी सहित दोय वक्त "खमासमणा" का पाठ कहना, फिर–विनय विधी सहित " तिख्खुत्ता " का पाठसें पाचु अग नमायके वदना=नमस्कार करके सुख साता पुछके, ऐसा कहनाकि–" अहो परम कृपालु स्वामीनाथ " "पंच प्रमेष्टीजी" को वंदणा करनेकी आज्ञा दिजीये-गाजी" और कृपा दृष्टिकी वृष्टि किजीयेजी, इत्यादि इसी तरह धर्म प्रेम पूर्वक आज्ञा लेके फिर-उकडो आसण करके गोडेके बिच दोनु हाथ जोड जरा ऊंचे हाथ करके धरतीयें मस्तक लगायकर" पांचपदोंकु वदणा " करना —

फिर—अरिहंतप्रभुकु वंदणा करना.

इहा प्रथम एक नवकार माहा मंत्र कहके—फिर—पहिले पदें श्री अरिहंतजी, ते जघन्य वीश तिर्थकरजी, उत्कृष्टा एकसो साठ, तथा एकसो सित्तर देवाधिदेवजी, ते मांहि वर्त्तमान कालें वीश वेहरमानजी, ते माहाविदेह क्षेत्र मांहि विचरे छे. १ अनत ज्ञान, २ अनत दर्शण, ३ अनत चारित्र, ४ अनत तप, ५ * अनंत वल वीर्य, ६ अनत क्षायिक समकित, ७ वज्र ऋषभ नाराच संघयण, ८ सम् चौरस सठाण, * ९ चौतीस अतिशय, * १० पैतीस वाणी गुण, ११ एक हजार आठ उत्तम लक्षणका धरणहार, १२ चौसठ इद्रका वंदनिक पूज्यनिक ॥ * अनंत चतुष्टय, * अष्ट प्रतिहार्य, यह * १२ गुण करके सहित, तथा * अष्टरा दोप थकी रहित, अनंत सुख, दिव्यध्वनि * 'भा मडल'

* * * * * * * * अहो देवानु प्रियजी—' अरिहंत प्रभूके चिट्टी अगुलीका वल. ' '.२४ अतिशय, ' और—' ३५ वाणीके गुण ' तथा 'प्रभुके १२ गुण' 'अनत चतुष्टय' 'अष्ट प्रतिहार्य' और—' अरिहंत प्रभू १८ दोप रहितहै ' और—' भा मंडल 'के बारेमें टीप, यह आठ विषय इम् ग्रन्थके ' प्रकरण—पहिला' में अर्थ सहित, विशेष खुलासेके सात् लिखे है ' सो आवश्य पढणा (वाचना), चाहियेजी ।-

स्फटिक सिंहासन, अशोकवृक्ष, अचित पुष्प वृष्टि, देव दुंदुभि, छत्र धरे, चामर विंझे, पुरुषाकार पराक्रमका धरणहार, अढाइद्वीप पंदरा क्षेत्र मांहे विचरे, जघन्य दोय क्रोड केवली, उत्कृष्टा नव क्रोड केवली, केवल ज्ञान केवल दर्शनका धरणहार, सर्व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, का जाणणहार; ॥ सवैय्या ॥ नमुं सिरि अरिहंत, करमांको कियो अंत, हुवा सो केवलवंत, करुणा भंडारीहै ॥ अतिसे चौतीस धार, पैंतिस वाणी उच्चार, समजावे नरनार, पर उपगारी है ॥ शरीर सुंदराकार, सूरज सो झलकार, गुण है अनंत सार, दोष परिहारी है ॥ केतहे तिलोक रिख, मन वच काया करी, लुळी लुळी वारंवार, वंदणा हमारीहे ॥ १ ॥ ऐसा अरिहंत भगवंत, दीन दयाल महाराज आपकी, देवसी सम्बन्धी, अविनय, आशातना, करी होयतो, हाथ जोडी, मानमोडी, काया सकोडी, वारवार खमावु छु, मथ्थएणं वंदामि १००८ वार नमस्कार करु छु, "तिक्खुत्तो, आयाहिण, पयाहिण, करेमि, वंदामि, नमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाण, मंगलं, देवयं, चइयं, पज्जुवा सामि, मथ्थएण वंदामि."

आप मंगलीक छो, उत्तम छो, अहो स्वामिनाथ! आपको इणभवें, परभवें, भवोभवें, सदाकाळ सरणो होजो. ॥ इति ॥

फिर—सिद्ध प्रभूजीकुं वंदना करना.

दूजे पदें श्री सिद्धभगवत महाराज, ते आठ कर्म खपावीने मोक्ष पहुंता छे, १ तीर्थ सिद्धा, २ अतिर्थ सिद्धा, ३ तीर्थकर सिद्धा, ४ अतीर्थंकर सिद्धा, स्वयं बुद्ध सिद्धा, ६ प्रत्येक बुद्ध सिद्धा, ७ बुद्धबोधित सिद्धा, ८ स्त्रिलिंग सिद्धा, ९ पुरुषलिंग सिद्धा, १० नपुंसक लिंग सिद्धा, ११ स्वलिंग सिद्धा, १२ अन्यलिंग सिद्धा, १३ गृहस्थ लिंग सिद्धा, १४ एक सिद्धा, १५ अनेक सिद्धा, जिहां जन्म नही, जरा नही, मरण नही, भय नही, रोग नही, सोग नही, दुःख नही, दारिद्र नही, कर्म नही, काया नही, मोह नही, माया नही, चाकर नही, ठाकर नही, भूख नही, तृषा नही, ज्योतिमें ज्योत विराजमान, सकल कार्य सिद्ध करीके, चउदे प्रकारें, पदरे भेदें, अनंता सिद्ध भगवंत हुवा, अनंत सुख माहे लीन, १ अनंत ज्ञान, २ अनंत दर्शन, ३ अनंत सुख, निरा-

वाध, ४ क्षायिक समकित, अगुरू लघु, ५ अजरामर, ६ अमूर्त्ति (निराकार.) ७ अटल अवगहना, ८ अनंत बल वीर्य, ॥ ए आठ गुण करके सहित, ॥ सवैय्या ॥ सकल करम टाल, वशकर लियो काल, मुगतिमें रह्या माल, आतमाका तारी है ॥ देखत सकल भाव, हुवा है जगत राव, सदाही क्षायिक भाव, भय अविकारी है ॥ अचल अटल रूप, आवे नही भव कूप, अनुप सरूप ऊप, ऐसें सिद्ध धारी हे ॥ केतहे तिलोकरिख. बतावो ते वास प्रभु, सदाही उगत सूर, वंदणा हमारी है ॥२॥ऐसा सिद्ध भगवंत दीन दयाल महाराज आपकी, देवसी सम्बन्धी, अविनय आशातना करी होयतो, हाथ जोडी, मान मोडी, काया सकोडी, वारंवार खमावु छु, मथ्थएण वंदामि, १००८ वार नमस्कार करुं छु, " तिख्खुत्तो, आयाहिणं, पयाहिणं, करेमी, वंदामि, नमसामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाण, मंगलं, देवयं, चइयं, पज्जुवा सामि, मथ्थएण, वंदामि." आप मंगलीक छो, उत्तमछो, अहो स्वामिनाथ! आपको इणभवें, परभवें, भवोभवें, सदाकाळ सरणो होजो ॥ इति ॥

१ उत्तरा ध्ययन, २ दशवैकालिक, ३ नंदीसूत्र, ४ अनुयोग द्वार, [४ छेद ग्रथ.] १ दशाश्रुत स्कंध, २ बृहत् कल्प, ३ व्यवहार, ४ निशीथ, अने (३२) वत्तीसमो आवश्यक सूत्र ॥ आदि दे अनेक ग्रंथका जाणणहार, सात नय निश्चय व्यवहार, चार प्रमाणादिकें करी स्वमत, तथा अन्य मतका जाण, मनुष्य अथवा देवता कोइ पण जे हने विवादमां छलवाने समर्थ नही, जिन नही पण जिन सरिखा, केवली नही, पण केवली सरिखा ॥ सवैय्या ॥ पढत इग्यारा अंग, कर मासूं करे जग, पाखंडीको मान भंग, करूणा हुस्यारी है ॥ चऊदे पूरव धार, जानत आगमसार, भवियनके सुखकार, भ्रमता निवारी हे ॥ पढावे भविक जन, थिर करी देत मन, तप करी तावे तन, ममता निवारी है ॥ केतहे तिलोकारिख, ज्ञान भानु परतिख, ऐसे उपाध्याय ताकुं, वन्दणा हमारी है ॥ ४ ॥ ऐसा श्री उपाध्यायजी माहाराज, मिथ्यात्वरूप अधकारका मेटणहार, समकितरूप उद्योतका करणहार, धर्मथकी डीगता प्राणीने थिर करे, सारए, वारए, धारए, इत्यादिक अनेक गुण सहित, एहवा श्री उपाध्यायजी

दीन दयाल महाराज आपकी, देवसी सम्बन्धी, अविनय. आशातना करी होयतो, हाथ जोडी, मान मोडी, काया संकोडी, वारंवार खमावुं छुं, मथ्थएण वदामि, १००८ वार, नमस्कार करूं छुं, " तिख्खुत्तो, आयाहिणं पयाहिणं, करेमि, वदामि, नमं सामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं मंगलं, देवयं, चइयं, पज्जुवा सामि, मथ्थएण वदामि " आप मंगलीकछो, उत्तमछो, अहो स्वामिनाथ! आपको इणभवें, परभवें, भवो भवें, सदाकाल सरणो होजो ॥ इति ॥

फिर–सर्व साधुजी महासतीजी को वंदणा करना.

पाचमे पदें सर्व साधुजी माहासतीजी महाराज, पोताका धर्माचार्यजीश्री———————

महाराज, तथा ज्ञानका दातार श्री दगडु ऋषिजी महाराज, आद देइने जघन्य दोय हजार क्रोड साधु साधवी, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधु साधवी, अढाइद्वीप पंदरा क्षेत्रमें जयवंता विचरे छे, ते साधुजी महासतीयाजी केहवा छे? पाच महाव्रतका पालणहार, पांच इंद्रियका जितणहार, चार कषायका

टालणहार, भाव सच्चे, करण सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत, मन समा धारणीया, वचन समा धारणीया, काया समा धारणीया, ज्ञान संपन्न, दर्शण संपन्न, चारित्र संपन्न, वेदणी समा अहियासनिया, मरणांति समा अहियासनिया, यहवा सत्तावीस गुण करके सहित, बारे भेदें तपशाका करणहार, सत्तरे भेदें संयमका पालण हार, तेत्तीस आशातनाका टालण हार, बैंयालीस दोष टालके आहार पाणीका लेवण हार, सत्ते-तालीस दोष टालके भोगवण हार, बावन अणा-चारका टालण हार, तेड्या आवे नही, नेथ्या जिमे नही, सचित्तका त्यागी, आचित्तका भोगी, बावीस परिसहका जितणहार, अनेक लब्धिका धरणहार, लोचको करणो, अणवाणे पगे चालणो, इत्यादिक काया क्लेशका करण हार, मोह ममता रहित ॥ सवैय्या ॥ आदरी सजम भार, कराणि करे आपार, सुमति गुपति धार, त्रिकथा निवा-रीहे ॥ जयणा करे छ काय, सावद्य न बोले वाय, बुझाइ कषाय लाय, किरिया भडारी हैं ॥ ज्ञान भणे आठो जाम, लेवे भगवत नाम, धरमको करे काम, ममताकुं मारीहे ॥ केतहे तिलोकरिख,

करमांको टाळे विघ्न, ऐसें मुनिराज ताकु, वंदणा हमारी है॥५॥ऐसें मुनिराज, गुरुदेव दीन दयाल महाराज आपकी, देवसी सम्बन्धी, अविनय आशातना करी होयतो, हाथ जोडी, मान मोडी, काया सकोडी, वारंवार खमाउं छु, मथ्थएण वंदामि, १००८ वार नमस्कार करु छु, "तिख्खुत्तो, आयाहिणं पयाहिणं, करेमी, वंदामि, नमं सामि, सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मगलं, देवयं चइयं, पज्जुवा सामि, मथ्थएण, वंदामि." आप मंगलीक छो, उत्तमछो, अहो स्वामिनाथ! आपको इणभवं, परभवं, भवोभवं, सदाकाळ सरणो होजो ॥ इति ॥

सवैय्या एकतीसा.

जगमें सर जीवन जडी, पच नवकार मंतर, वारं वार जपीयेजी, खीण न भुलाइये ॥ सोवत उठत सुख, जावत प्रदेश माहि, रणमें भुजंग सिंघ देख न डराइये ॥ संकट न पडे कोय, भुत व्यंतर नहीं छले, जले नहीं अगनमें, भव दधि तर जाइए॥ ताकु कहां दुर सुरलोक, कहत विनोदीलाल, जपो 'नवकार' मतर, मन वच ध्याईए ॥ १॥

सिरि अरिहत भगवंत, बारे गुण सुशोभंत, श्री सिद्ध महाराज मूल, आठ गुण धारी हे आचारज सो तो गुण, छत्तीस विराजमान, पच्चीस गुण उवज्झाय, ज्ञानके भंडारीहे ॥ साधु साधे आतमा सो, सत्तावीस गुण युक्त, सब मीली एक सत, आठ गुण विसतारीहे ॥ केतहे तिलोकरिख, मन वच काया करी, सदाही उगत सूर, वंदणा हमारीहे ॥२॥ हिंसाके करईया, मुख झुटके बोलईया, परधनके हरईया, करूणा न ज्याके अंगहे ॥ रातको खावईया, मधु पानके पिवईया, कुडी साखके भरेया, कठोर अति हीयाहे ॥ नरकके जवईया, परनारके रमईया, कंद मुलके भखईया ज्याने ओर पाप कियाहे ॥ तेही तर जात एक, छिनमे विनोदिलाल, जपो 'नवकार' मंतर, मन वच ध्याइए ॥३॥ कोइके वल देवताको, भूत प्रेत इष्टजीको, कोईके वल चंडि मंडी, देव खेतर पालको ॥ कोइके वल गायवेको, ... वजायवेको, कोइके वल नाचवेको, ... ॥ कोई ...

नवकारको ॥४॥ कोइकेतो धनहेजी, रूपैयाने महोर घणी, कोइकेतो देखीयेजी, कंचन भंडारहै ॥ कोइके रतन माल, कोइ हिरा मोती लाल, कोइके वसतु सार, दरब अपारहै ॥ कहत विनोदीलाल, जपो नवकार माळ, मेरेतो अखुट धन, मंत्र नवकारको ॥ ५ ॥ अरिहंतजीको जप्या, अष्ट कर्मको विनास होत, सिद्धजीको जप्या सेति, सिद्ध पद पाइये ॥ आचारज जप्या सेति, आतमा स्वरूप सुझे, उपाध्याय जप्या सेति, उंच पद पाइये ॥ साधुजीको जप्या, सिव मारग बताय देत, इहलोक परलोक, अतिसुख पाइए ॥ कहत विनोदीलाल, जपो नवकार माळ, ज्याका जाप जप्या सेति, सदा सुख पाइये ॥ ६ ॥

इति श्री पाच पदोंकी वदणा सपूर्ण

विधीः-अब जयना सहित उठके 'बेटका' पर खडा होके, दोनु हाथ जोडके, परम आनदके साथ.-

❀ फिर-दोहा कहना. ❀

" अनत चोवीसी जिन नमु । सिद्ध अनंता क्रोड॥
केवळ ज्ञानी थेवर सहुं । वदु बेकर जोड ॥ १ ॥
दोय क्रोड केवळ धरा । विहरमाण जिन वीस ॥

सहस युगल कोडी नमुं। साधु नमुं निश दिश ॥२॥ अरिहंत सिद्ध समरूं सदा। आचारज उन-झाय॥ साधु सकलके चरणकुं,। वंदुं सीस नमाय ॥३॥ गुरू दिपक गुरू चांदणो। गुरू विना घोर अंधार॥ पलक न विसरु तुम भणी। गुरु मुज प्राण आधार॥४॥ जय जय सिरि परमेष्टीने। जय जय सिरि जिणवेण॥ जय जय सिरि गुरूकी रहो। दीयो सुमारग जैन॥५॥ अगुष्ट अमृत वसें। लब्धितणा भंडार॥ श्री गुरू गौतम समरिये। वंछित फल दातार॥६॥ धन साधु धन सा-धवी। धन यो जैन धरम॥ इण समरचा संकट टले। तुटे अठुही करम॥७॥ निज आतमकु द-मन कर। पर आतमकु चिन॥ परमातमको भजन कर। जो तुं हे परविन॥८॥ जीवदया पाळी नही। नही जाणी छेःकाय॥ सुना घरको पाहूणो। जीम आयो तीम जाय॥९॥ जीव दया पाळी सही। जाणी हे छेःकाय॥ वस्ता घरको पाहुणो। मिठा भोजन खाय॥१०॥ धर्म नही वाडी नि-पजे। धर्म नही हाट विकाय॥ धर्म विवेका निपजे। जिम करो तीम थाय॥११॥ करो दलाली ध-रमकी। दीपे अधिकी जोत। कृष्ण माहावली

जानजो । बांध्यो तिर्थंकर गोत ॥ १२ ॥ चेतोजी भवी प्राणीया। यो संसार आसार ॥ थीरता कोइ दिसे नही । धन जोवन परवार ॥ १३ ॥ ढील नही कीजे धरमकी । तप जप लिजो लुट ॥ जैसी सिसी काचकी । जाय पलकमें फुट ॥ १४ ॥ दया रण सिंगो वाजीयो । जागो जागो नर नार ॥ मुगत पुरीमें चालणो । वेगा हुइजो तैयार ॥१५॥ इति ॥

फिर-आयरिय उवज्झायका पाठ कहना.

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ ॥ जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामे‌मि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स, भगवओ अंजली करिय सीसे ॥ सव्व खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीव रासिस्स, भावओ धम्म निहिय नियचित्तो ॥ सव्व खमावइत्ता, खमामि, सव्वस्स अहयपि ॥ ३ ॥ इति ॥

फिर-अडाइद्धिप पंदरा क्षेत्रका पाठ कहना.

अडाइद्विप तथा पंदरा क्षेत्र माहि, तथा बाहेर श्रावक श्राविका दान देवे. शील पाळे, तपश्या करे, भली भावना भावे, सम्वर करे, सामायिक करे, पोषध व्रत करे, प्रतिक्रमण करे, तीन मनोरथ,

चउदे नियम चिंतवे, एक व्रत धारी, जाव बारा व्रत धारी, जिनराजको धरम साचो सरधे, भगवंतकी आज्ञा मांहे विचरे, तेहने माहाराथकी मोटाने हात जोड, मान मोड, पगे लागने, खमाउं छुं, छोटाने वारवार खमावु छुं ॥ इति ॥

फिर—चौरयांशी लक्ष जीवा योनीका पाठ कहना.

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अपकाय, सात लाख तेउ काय, सात लाख वायु काय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चउदे लाख साधारण वनस्पति काय, दोय लाख बेइंद्रिय, दोय लाख तेइंद्रिय, दोय लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चउदे लाख मनुष्य, एवं चार गती, चौरयाशी लाख, जीवा योनिमाहेसु महारे जीवे मने करी, वचने करी, कायाए करी, जे कोइ जीव हाण्यो होय, हाणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सर्वे मने, वचने, कायायें करी [१८,२४,१२०] आठरा लाख, चौवीस हजार, एकसो वीश प्रकारें देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥इति॥

फिर—खामेमि सव्वे जीवा का पाठ कहना.

खामेमि सव्व जीवा, सव्वे जीवा, खमं तुमे ॥ मित्ती मे सव्व भूएसु, वेर मुझं न कणइ ॥१॥ एवं मयं आलोयं निंदियं, ग्रहिय, दुगछिय, सम्मं ॥ तिविहेणं पडिक्कतो, वंदामि,जिणे चउव्वीसं ॥इति॥

☞ सूचनाः—अब इहा " अठरा पाप स्थानक " कहके.—

फिर—चउथा प्रतिक्रमण आवशक संपूर्ण करणेका पाठ कहना.

छे आवशक मांहेसु—पहिलो सामायिक, दुजो चौविसत्थो, तीजो वंदना, चौथो पडिकमणो, यह चार आवशक सपूर्ण हुवा! यह चार आवशक-में, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जाणतां, अजाणतां, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकड. ॥ इति ॥

* इति चौथा प्रतिक्रमण आवशक सपूर्ण *

☞ विधीः—अब प्रथम ' पुंजणी ' से जागा पुजके जीवकी जतना (दया) सहित ' बेठका ' परसें नीचे होके, यथा विनय विधी सहित, " तिख्खुत्ता " का पाठसें पाचु अंग नमायके, वंदणा=नमस्कार करके

सुख साता पुछके, ऐसा कहनाकि–" अहो ज्ञान रूपी नेत्रके दातार, ' पहिलो सामायिक ' 'दुजो चौविसत्थो, ' 'तीजो वंदना' चौथो पडिक्कमणो' यह चार आवशक सपूर्ण हूवा! अब 'पांचमा आवशक' की आज्ञा दिजीये, और–कृपा दृष्टीकी वृष्टी किजीयेजी " इत्यादिक इसी तरह धर्म प्रेम पूर्वक आज्ञा लेके फिर–आपने ' बेटका ' पर नम्रपणे खडा होके.–

फिर–दैवसिक प्रायश्चित का पाठ कहना.

दैवसिक प्रायश्चित्त विशुद्धनार्थं, करेमि काउस्सग्गं ॥ इति ॥

☞ विधी.–अब एक "नवकार महा मंत्र" कहके " करेमि भंते " का पाठ कहना, फिर–" इच्छामि ठामि " का पाठ कहके "तस्स उत्तरी का पाठ सुरूसे अनुक्रमें बोलतेर ' ठाणेण ' शब्द बोलते के सात खडा रहकर '१९ दोष' रहित शुद्ध भावसे " काउस्सग्ग " करना, फिर–शात (स्थीर.) चित्त एकाग्रता पूर्वक आप आपने मनमें संपूर्ण च्यार वक्त " लोगस्स " का पाठ, और–एक " नवकार महा मंत्र " की चिंतवणा " काउस्सग्ग " में करके

फिर–" काउसग्ग " पारके (छोडके) प्रगट एक " नवकार महा मंत्र " कहके, किया हुवा " काउस्सग्ग " की आलोयणाके लिये —

फिर–च्यार ध्यानका पाठ कहना.

काउस्सग्ग मांहे मन चळ्यो होय, वचन चळ्यो होय, काया चळी होय, अर्तध्यान, रुद्रध्यान, धायो होय, धरम ध्यान, शुक्ल ध्यान नहीं धायो होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥

☞ विधीः–अब प्रगट एक " लोगस्स " का पाठ कहना, फिर–अव्वल 'तिसरा आवशक' में जैसें दोय वक्त यथा विनय विधी सहित " खमासमणा " का पाठ कहनेका कहा (लीखा.) है, उसी तरहसें यथा विनय विधी सहित दोय वक्त " खमासमणा " का पाठ कहके –

फिर–पांचवा काउस्सग्ग आवशक संपूर्ण करणेका पाठ कहना.

छे आवशक मांहेसु-पहिलो सामायिक, दुजो चौविसस्थो, तीजो वन्दना, चौथो पडिकमणो, पांचमो काउस्सग्ग, यह पांच आवशक संपूर्ण हुवा,

सुख साता पुछके, ऐसा कहनाकि-" अहो ज्ञान रूपी नेत्रके दातार, ' पहिलो सामायिक ' 'दुजो चौविसत्थो, ' 'तीजो वंदना' चौथो पडिक्कमणो' यह चार आवशक सपूर्ण हुवा! अब 'पांचमा आवशक' की आज्ञा दिजीये, और-कृपा दृष्टीकी वृष्टी किजीयेजी " इत्यादिक इसी तरह धर्म प्रेम पूर्वक आज्ञा लेके फिर-आपने ' बेटका ' पर नम्रपणे खडा होकेः-

फिर-दैवसिक प्रायश्चित्त का पाठ कहना.

दैवसिक प्रायश्चित्त विशुद्धनार्थे, करेमि काउस्सग्गं ॥ इति ॥

☞ विधी.-अब एक " नवकार महा मंत्र" कहके " करेमि भंते " का पाठ कहना, फिर-" इच्छामि ठामि " का पाठ कहके "तस्स उत्तरी का पाठ सुरूसे अनुक्रमें बोलतेर ' ठाणेण ' शब्द बोलते के साथ खडा रहकर '१९ दोष' रहित शुद्ध भावसे " काउस्सग्ग " करना, फिर-शात (स्थीर.) चित्त एकाग्रता पूर्वक आप आपने मनमें संपूर्ण च्यार वक्त " लोगस्स " का पाठ, और-एक " नवकार महा मंत्र " की चिंतवणा " काउस्सग्ग " में करके

फिर—" काउसग्ग " पारके (छोडके) प्रगट एक " नवकार महा मंत्र " कहके, किया हुवा " काउस्सग्ग " की आलोयणाके लिये —

फिर—च्यार ध्यानका पाठ कहना.

काउस्सग्ग मांहे मन चळ्यो होय, वचन चळ्यो होय, काया चळी होय, अर्तध्यान, रुद्रध्यान, धायो होय, धरम ध्यान, शुक्र ध्यान नहीं धायो होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकड ॥ इति ॥

☞ विधीः—अब प्रगट एक " लोगस्स " का पाठ कहना, फिर—आव्वल 'तिसरा आवशक' में जैसें दोय वक्त यथा विनय विधी सहित " खमासमणा " का पाठ कहनेका कहा (लीखा) हैं, उसी तरहसें यथा विनय विधी सहित दोय वक्त " खमासमणा " का पाठ कहके—

फिर—पांचवा काउस्सग्ग आवशक संपूर्ण करणेका पाठ कहना.

छे आवशक मांहेसु-पहिलो सामायिक, दुजो चौविसत्यो, तीजो वंदना, चौथो पडिकमणो, पांचमो काउस्सग्ग, यह पांच आवशक सपूर्ण हुवा,

यह पांच आवशकमें, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जाणतां, अजाणतां, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥ इति ॥

इति पांचवा काउस्सग्ग आवशक सपूर्ण.

विधीः—अब यथा विनय विधी सहित " तिक्खुत्ता " का पाठसें पाचु अंग नमायके, वंदना=नमस्कार करके सुख साता पुछके, ऐसा कहना कि—" आहो तरण तारण समकित रूप रत्नके दातार—पहिलो सामायिक,दुजो चौविसत्थो, तीजो वंदना, चौथो पडिकमणो पांचमो काउस्सग्ग, यह पाच आवशक सपूण हुवा! आव् छट्टा पच्चक्खाण आवशकका कामी, जय बोलो धन्य श्री महावीर स्वामी " इसी तरह धर्मप्रेम पूर्वक कहके, फिर—वहांपर जितने स्वधर्मी श्रावक होवे, उन्ने सब जने परम आनंद सहित, ओही आसनपर खडेहोके, दोनु हाथ जोडके,आप आपने मन्में यथा शक्ति अनुसार " पच्चक्खाण " लेनेकी धारणा करना, और—सयती मुनीराज महासतीयाजी के मुखसें, समुच्चय धारणा " पच्चक्खाण आदर " करणा.

सूचनाः–वहा पर कोई सयती=मुनीराज तथा महासतीयाजी नही होवेतो 'पूर्व' तथा 'उत्तर' दिशाके बच् 'इशाण' कुण सन्मुख खडा होके यह उपरकी विधी लीखी उसी प्रमाणें यथा विनय विधी सहित "तिख्खुत्ता" के पाठसें वदना आदि करके, ऐसा कहनाकि–छट्टा पच्चख्खाण आवशकका कामी, जय बोलो धन्य श्री महावीर स्वामी, इसी तरह विशेष धर्मप्रेम पूर्वक आज्ञा लेके, वहापर जो सबसें वयमें बडे श्रावक होवे उन्कीभी आज्ञा लेके, फिर–सब् जने खडे होके–'समुच्चय धारणा प्रमाणें पच्चख्खाण' निचे लिखे मुजब पाठ उच्चारनाजी ।

फिर–छट्टा समुच्चय धारणा प्रमाणें पच्चख्खाणका पाठ कहना.

गठी, मुठी, नवकारसी, अध पोरसी, पोरसी, आप आप के धारणा प्रमाणें, तिविह पिआहारं, चउविह पिआहार, असण, पाण, खाइम, साइमं, अन्नथ्थणा भोगेण, सहसा गारेण महत्तरा गारेण, सव्व समाहि वतिआ गारेण, तस्स भत्ते, पडिक्कमामि, निंदामि,गरिहामि,अप्पाण वोसिरामि. ॥इति॥

यह पांच आवशकमें, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जाणतां, अजाणतां, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥ इति ॥

इति पाचवा काउस्सग्ग आवशक सपूर्ण.

विधीः—अब यथा विनय विधी सहित " तिख्खुत्ता " का पाठसें पाचु अग नमायके, वदना=नमस्कार करके सुख साता पुछके, ऐसा कहना कि—" आहो तरण तारण समकित रूप रत्नके दातार—पहिलो सामायिक, दुजो चौविसत्थो, तीजो वंदना, चौथो पडिकमणो पांचमो काउस्सग्ग, यह पाच आवशक संपूण हुवा! आव् छट्टा पच्चख्खाण आवशकका कामी, जय बोलो धन्य श्री महावीर स्वामी " इसी तरह धर्मप्रेम पूर्वक कहके, फिर—वहांपर जितने स्वधर्मी श्रावक होवे, उतने सब जने परम आनद सहित, ओही आसनपर खडेहोके, दोनु हाथ जोडके, आप आपने मन्में यथा शक्ति अनुसार " पच्चख्खाण ". लेनेकी धारणा करना, और—सयती =मुनीराज महासतीयाजी के मुखसें, समुच्चय धारणा पच्चख्खाण आदरना=ग्रहण करणा=लेना!

निर्वेग कहतां आरंभ परिग्रह थकी निवर्तवो वाछनो, अनुकपा कहता परजीवकुं दुःखी देखने करूणा करनी, साता उपजावनी, आस्ता कहतां जीवादिक सुक्षम भाव सांभळीने मुरझावनो नही, तथा केवळी=सर्वज्ञ, परूपीत निर्पक्ष सत्य दया धरमकी आस्ता राखनी, साचाकी श्रद्धा, झुठाको देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुकड ॥ इति ॥

गया काळको पडिकमणो, वर्तमान काळको सम्वर-सामायिक, आवता काळका पच्चख्खाण, यह तिन्ही काळ करे, करावे, करतां मत्ये भलो जाणे, जिण पुरुपाने धन्य छे ॥ तथा यह (३) तिन्ही काळ सम्बन्धी कोइ पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥ इति ॥

देव अरिहत, गुरु निर्ग्रंथ, केवळी भाख्यो दयामें धरम, हिंसामें पाप, यह तीन तत्व सार, संसार असार, प्रभु तुमारो मारग सच्च, सच्चं, सच्चं, थाइ शुइ मंगलं ॥ इति ॥

विधीः –अब 'बेटका' पर बैठके डावा गोडा उभा रखके उसपर दोनु हाथ खुणीतक जोडके, दो वक्त "नमुथुणं" का पाठ कहना चाहिये ।

फिर–छट्टा पच्चरव्खाण आवशक संपूर्ण करणेका पाठ कहना.

पहिलो सामायिक, दुजो चौविसत्थो, तीजो वंदना, चौथो पडिकमणो, पांचमो काउस्सग्ग, छट्टा पच्चक्खाण, यह छे आवशक संपूर्ण हुवा! यह छे आवशकमें, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जाणतां, अजाणतां, तथा पाठ उच्चरता, पद, अक्षर, काना, मात्र, मींडी=अनुस्वार, अधिको ओछो हलको भारी आघो पाछो कह्यो होय, कहवायो होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥ इति ॥

फिर–नीचे लिखे प्रमाणें पाठ कहना.

मिथ्यात्वको पडिकमणो, अव्रतको पडिकमणो, कषायको पडिकमणो, प्रमादको पडिकमणो, अशुभ जोगको पडिकमणो, यह पांच पडिकमणा मांहेलो पडिकमणो नही करयो होयतो, देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

सम्म कहतां शत्रु तथा मित्र=सज्जन उपर सम भाव राखनो, सवेग कहतां वैराग्य भाव राखनो,

निर्वेग कहतां आरंभ परिग्रह थकी निवर्तवो वाछनो, अनुकपा कहतां परजीवकुं दुःखी देखने करूणा करनी, साता उपजावनी, आस्ता कहतां जीवादिक सुक्षम भाव सांभळीने मुरझावनो नही, तथा केवली=सर्वज्ञ, परूपीत निर्पक्ष सत्य दया धरमकी आस्ता राखनी, साचाकी श्रद्धा, झुठाको देवसी सम्बन्धी पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥

गया काळको पडिक्कमणो, वर्तमान काळको सम्बर–सामायिक, आवता काळका पच्चख्खाण, यह तिन्ही काळ करे, करावे, करतां प्रत्ये भलो जाणे, जिण पुरुषाने धन्य छे ॥ तथा यह (३) तिन्ही काळ सम्बन्धी कोइ पाप=दोष लागो होयतो, तस्स मिच्छामि दुक्कडं. ॥ इति ॥

देव अरिहत, गुरू निग्रथ, केवळी भाख्यो दयामें धरम, हिसामें पाप, यह तीन तत्व सार, संसार असार, प्रभु तुह्मारो मारग सच्च, सच्चं, सच्चं, थाइ शुइ मंगळ ॥ इति ॥

☞ विधीः —अब 'चेटका' पर बैठके डावा गोडा उमा रखके उसपर दोनु हाथ खुगीतक् जोडके, दो वक्त "नमुथ्थुणं" का पाठ कहना चाहिये!

पहिले वक्तो नीचे लीखे मुजब "नमुथ्थुण" का पाठ सपूर्ण कहना, तथा दुसरी वक्तमें वैसाही "नमुथ्थुणं" का पाठ प्रथम=सुरूसे अनुक्रमें कहते कहते 'सिद्धिगइ नामधेयं' तक कहके फिर—'ठाण संपत्ताण' शब्दके ठाकाणेपर 'ठाण संपाविउ कामस्स, नमो जिणाण,' ऐसा कहना —

फिर—नमुथ्थुणं का पाठ कहना.

नमुथ्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तिथ्थयराण, सयसंबुद्धाण, पुरिसुत्तमाण, पुरिस सीहाणं, पुरिसवर पुडरीयाण, पुरिसवर गंधहथ्थीण, लोगुत्तमाण, लोग नाहाण,लोगहियाण, लोग पईवाण,लोगपज्जोयगराण, अभय दयाण, चख्खु दयाणं, मग्ग दयाणं, सरण दयाण, जीव दयाण, बोही दयाणं, धम्म दयाण, धम्म देसियाण, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्म वर चाउरंत चक्कवट्टीण, दिवोत्ताण, सरणगइ पइठाण, अप्पडिहय वरनाणं, दसण धराणं, विअट्ट छउमाणं, जिणाण , जावयाण, तिन्नाण, तारयाण, बुद्धाणं, बोहियाण, मुत्ताणं, मोयगाण, सव्वन्नूणं सव्व दरिसिण, सिव–मयल–मरुअ–मणत–म-

रूखय, मव्वाबाह मपुणराविति, सिद्धिगइ नामधेयं ठाण संपत्ताणं, नमो जिणाण, जियभयाणं ॥इति॥

☞ विधी—और—सुचनाः—अब वहा पर जितने श्रावक श्राविका सम्वर—सामायिक आदि व्रतमें बिराज़ते होवे, उनमें सबसें जो वयमें (उमरमें) बडे होवे, वो श्रावक श्राविकाजीने प्रथम थोडी जगा ' पुंजणी ' सें पुजके, जीवकी जतना सहित, ' वेटका ' परसें नीचे ' पूर्व ' तथा ' उत्तर ' दिशाके बीच ' इशाण ' कुण सन्मुख, नम्रपणे खडा होके, फिर— अपने शरीरको धनुष्याकार सरीखा नमायकर (झुकायकर) ' श्रीसिमधर स्वामीजीकुं ' यथा विनय विधी सहित " तिख्खुत्ता " के पाठसें पाच अग नमायके वदना=नमस्कार करके, सुख साता पुछना ! और—इसी तरहसें वहा पर जो अपने सयती=मुनिराज महाराज अगर महासतीयाजी महाराज, जितने बिराजमान होवे उतने सब प्रत्येक सयतीजीको, उप्रोक्त यथा विनय विधी सहित अलग अलग तीन तीन वक्त, ' तिख्खुत्ता ' का पाठसें पाचु अंग नमायकर वदना नमस्कार करके, अति धर्म प्रेम पुर्वक सुख साता पुछके, फिर—वहा पर जो अपने जितने श्रावक अगर श्राविका सम्वर सामायिक वगेरा व्रतमें बिराज़ते होवे, उन सबको कुड, कपट, वैरभाव रहित, साफ दिलसें

सीसरे प्राणी ॥ साधूजीने वंदणा० ॥ ५ ॥ झाझ समान ते संत ऋषीश्वर । भवीजीव वेठा आयरे प्राणी ॥ पर उपगारी मुनी दाम न मांगे । देवेते मुक्ती पोंहोचायरे प्राणी ॥ साधूजीने वंदणा० ॥ ६ ॥ ए सरणे प्राणी साता पावे ।,पावेते लील-विलासरे प्राणी ॥ जन्म जरा ने मरण मीटावे । फीर नहीं आवे गर्भावासरे प्राणी ॥ साधूजीने वंदणा० ॥ ७ ॥ एक वचन जो संदगुरु केरा । जो राखे मन माहेरे प्राणी ॥ नर्क निगोदमें ते नहीं जावे । इम कहे जीनराजरे प्राणी ॥ साधूजीने वंदणा० ॥ ८ ॥ प्रभाते उठी उत्तम प्राणी । सुणे साधूरो वखाणरे प्राणी ॥ इण पुरुषांकी सेवा करतां । पावेते अमर वीमाणरे प्राणी ॥ साधूजीने वंदणा० ॥ ९ ॥ सम्मत आठारे ने वर्ष आठावीस । बूसी गांम चोमासरे प्राणी ॥ मुनि आशकरणजी इणी पर बोले । ई उत्तम साधाको दासरे प्राणी ॥ साधूजीने वंदणा० ॥ १० ॥ इति ॥

बडी साधु वंदणा.

नमुं अनंत चोवीसी । ऋषभादिक महावीर ॥ ५ क्षेत्रमा । घाली धरमकी सीर ॥ १ ॥ महा

अतुल्य बळि नर। सुरवीरने धीर॥तीरथ प्रवर्तावी। पहुता भवजल तीर ॥ २ ॥ श्री सीमंधर प्रमुख । जघन्य तीर्थंकर वीश ॥ छे अढीद्वीपमां । जयवंता जगदीश ॥ ३ ॥ एकसोने सित्तर । उत्कृष्टा पदे जगीश ॥ धन्य मोहटा प्रभुजी । ज्यांने नमाउं म्हारो शीश ॥ ४ ॥ केवळी दोयक्रोडी । उत्कृष्टा नव सहस्र क्रोड ॥ मुनि दोय सहस्र क्रोडी । उत्कृष्टा नव सहस्र क्रोड ॥ ५ ॥ विचरे विदेहमे । मोटा तपसी घोर ॥ भावे करि वंदू । टाळे भवकी कोड ॥ ६ ॥ चोवीसे जिनना । सघळा गणधार ॥ चौदेसे बावन । ते प्रणमुं सुखकार ॥ ७ ॥ जिनसासन नायक । धन्य श्री वीर जिणंद ॥ गौतमादिक गणधर । वर्ताव्यो आणंद ॥ ८ ॥ श्रीऋषभ देवका । भरतादिक सो पूत ॥ वैराग्य मन आणी । संजम लीयो अद्भूत ॥ ९ ॥ केवळ उपराज्युं । करी करणी करतूत ॥ जिनमत दिपावी । सघळा मोक्ष पहुंत ॥ १० ॥ श्री भरतेश्वरका । हुवा पटोधर आठ ॥ आदित्य जसादिक । पहुच्या शिवपुर वाट ॥ ११ श्रीजिन अतरका । हुवा पाट असंख्य ॥ मुनि मुगते पहोत्या । टाळी कर्मकी वंक ॥ १२ ॥ धन्य कपील मुनीश्वर ॥ नमि नमु अणगार ॥ जेणे

ततक्षिण त्याग्यो । सहस्र रमणि परिवार ॥ १३ ॥
मुनीवर हरकेशी । चित्तमुनीश्वर सार ॥ शुद्ध
संयम पाळी । पाम्या भवनो पार ॥ १४ ॥
वळी इखुकार राजा । घर कमळावति नार ॥
भगु ने जसा । तेहना दोय कुमार ॥ १५ ॥ छति-
रिद्ध छांडीने । लीधो संयम भार ॥ इण अल्प
काळमां । पाम्या मोक्ष दुवार ॥ १६ ॥ वळि
संयति राजा । हरण आहिडे जाय ॥ मुनिवर
गर्दभाळी । आण्यो मारग ठाय ॥ १७ ॥ चा-
रित्र लेईने । भेट्या गुरुका पाय ॥ क्षत्रीराज
ऋषीश्वर । चर्चा करी चित्त लाय ॥ १८ ॥
वळी दश चक्रवर्ति । राज्य रमणी रिद्धी छोड ॥
दशे मुगते पहोतां । कुळने शोभा चहोड ॥१९॥
इण अवसर्पिणी माहे । आठ राम गया मोक्ष ॥
बळभद्र मुनीश्वर । गया पांचमें देवलोक ॥ २०
दशारण भद्र राजा । वीर वंद्या धरि मान ॥
पछी इद्र हटाया । दियो छकायाने अभेदान
॥२१॥ करकंडु प्रमुख । चारे प्रत्येक बुद्ध ॥ मुनि
मुगते पहुता । जीत्या कर्म महा जोध ॥ २२ ॥
धन्य मोटा मुनिवर । मृगा पुत्र जगीश ॥ मुनि-
१ अनाथी । जीत्या रागने रीश ॥ २३ ॥

वळी समुद्रपाळ मुनी । राजमति रहनेम ॥ केशीने गौतम । पाम्या शिवपुर क्षेम ॥ २४ ॥ धन्य विजय घोष मुनि । जयघोष वळिजाण ॥ श्रीगर्गाचारज । पहोत्या छे निरवाण ॥२५॥ श्रीउत्तराध्ययनमां । जिनवर कर्या वखाण ॥ शुद्ध मनथी ध्यावो । मनमां धीरज आण ॥२६॥ वळी खधक सन्यासी । राख्यो गौतमसु स्नेह ॥ महावीर समीपे । पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥ तप कठण करीने । झोंसी आपणी देह ॥ गया अच्युत देवलोके । च्यवि लेशे भव छेह ॥ २८ ॥ वळि ऋषभदत्त मुनि । सेठ सुदर्शण सार ॥ शीवराज ऋषीश्वर । धन्य गांगेय अणगार ॥ २९ ॥ शुद्ध संजम पाळी । पाम्या केवळ सार ॥ यह चारे मुनिवर । पहोता मोक्ष मझार ॥३०॥ भगवंतकी माता । धन्य सती देवानंद ॥ वळी सती जयंति । छोड दिया घर फंद ॥ ३१ ॥ सति सुगते पहोत्या । वळी वीरकी नंदा ॥ महासती सुदर्शना । घणी सतियोना वृंदा ॥३२॥ वळी कार्तिक सेठे । पडिमा वहि शूरवीर ॥ जिम्यो मोरा उपर । तापस वळती खीर ॥ ३३ ॥ पछी चारित्र लीधो ॥ मंत्री सहस्र आठ वीर। मरी

हुवा सक्रेंद्र । चवी लेशे भवतीर ॥ ३४ ॥ व-
लिराय उदाइ । दीयो भाणेजाने राज ॥ पछे
चारित्र लेइने । सार्या आतम काज ॥ ३५ ॥
गंगदत्त मुनि आनंद । तरण तारणकी जहाज ॥
कुशल मुनि रुडो । दियो घणाने साज ॥ ३६ ॥
धन्य सुनक्षत्र मुनिवर । सर्वानु भुति अणगार ॥
आराधिक हुइने । गया देवलोक मझार ॥३७॥
च्यवि मुगते जाशे । सिंह मुनिश्वर सार ॥ बिजा
पण मुनिश्वर । भगवतीमां अधिकार ॥ ३८ ॥
श्रेणीकका बेटा । छोटा मुनिवर मेघ ॥ तजी आठ
अंतेउरी । आण्यो मन संवेग ॥ ३९ ॥ वीरपे व्रत
लेइने । बांधी तपकी तेग । गया विजय विमाने ॥
च्यवि लेशे शिव वेग ॥ ४० ॥ धन्य थावर्चा
पुत्र । तजी बत्तिसे नार । जेनी साथे निकल्या ॥
पुरुष एक हजार ॥ ४१ ॥ शुकदेव सन्यासी ।
एक सहस्र शिष्य लार ॥ पंचशयशुं सेलक ।
लिधो सजमभार ॥ ४२ ॥ सवी सहस्र अढाइ ।
घणा जीवोने तार । पुंडरगिरी उपर ॥ कियो
पादोगमण संथार ॥ ४३ ॥ आराधिक हुइने ।
कीनो खेवोपार ॥ हुवा मोटा मुनिवर । नाम-
लिया निस्तार ॥४४॥ धन्य जिनपाळ मुनिवर ।

ये धन्ना हुवा साध ॥ गया प्रथम देवलोके । क्ष जाशे आराध ॥४५॥ श्रीमल्लिनाथका मीत्र । हाबल प्रमुख मुनिराय ॥ छेइ मुगते सिधाया । टी पदवी पाय ॥ ४६ ॥ वळि जितशत्रु राजा। सुबुद्धि नामे परधान ॥ पोते चारित्र लेइने । पाम्या मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥ धन्य तेतली मुनि- र । दियो छ कायाने अभेदान ॥ पोटिला प्रति बोध्या । पाम्या केवळ ज्ञान ॥ ४८ ॥ धन्य पांचे पांडव । तजी द्रौपदी नार ॥ स्थिवरकी पासे । लियो संयम भार ॥ ४९ ॥ श्री नेम वंदनको । यह्यो अभिग्रह कीध ॥ मास मास खमण तप। शेत्रुंजय जाइ सिद्ध ॥५०॥ धर्म घोष तणा शिष्य । धर्मरुचि अणगार ॥ कीडीयोकी करूणा । आणी दया अपार ॥ ५१ ॥ कडवा तुंबाको । कीधो सघलो आहार ॥ सर्वार्थसिद्ध पहोता । च्यवि- लेशे भवपार ॥ ५२ ॥ वळि पुंडरीक राजा। कुंडरीक डिगीयो जाण ॥ पोते चारित्र लेइने । नहीं घाली धर्ममां हाण ॥५३॥ सर्वार्थ सीद्ध पहुता । चविलेशे निर्वाण । श्री गीन्याता सुत्रमे । जिन- वर करया वखाण ॥ ५४ ॥ गौतमादिक कुमर । सगा आठाई भ्रात ॥ अधक विष्णु सुत । धारणी

ज्याकी मात ॥ ५५ ॥ तजी आठ अंतेउरी । काढी दिक्षाकी वात ॥ चारित्र लेइने । कीधो मुक्तिको साथ ॥ ५६ ॥ श्री अणिक सेनादिक । छये सहोदर भ्रात ॥ वसुदेवका नंदन । देवकी ज्याकी मात ॥५७॥ भदिलपुर नगरी । नाग गाथा पती जाण ॥ सुलसा घर वधीया । सांभळी नेमकी वाण ॥ ५८ ॥ तजी वत्रीस २ अंतेउरी । निकळीया छिटकाय ॥ नळ कुबेर सरीखा । भेव्या नेमका पाय ॥५९॥ करी छट छट पारणा । मनमें वैराग्य लाय ॥ एक मास संथारो । मुक्ति विराज्या जाय ॥ ६० ॥ वळि दारुन सारण । सुमुख दुमुख मुनिराय ॥ वळि कुमर अनादृष्टी । गया मुक्ति गढ मांय ॥ ६१ ॥ वसुदेवका नंदन । धन्य धन्य गजसुखमाळ ॥ रुपे अति सुंदर । कळावंत वय वाळ ॥६२॥ श्री नेम समीपे । छोड्यो मोहो जजाळ ॥ भीक्षुकी पाडिमा । गया मशाण महाकाळ ॥६३॥ देखी सोमील कोप्यो । मस्तक वांधी पाळ ॥ खैरका खीरा । शिर धरीया असराळ ॥६४॥ मुनि नजर न खडी । मेटी मनकी झाळ ॥ परिसह सहिने । मुक्ति गया तत्काळ ॥ ६५ ॥ धन्य जाळी मयाळी । उवयाळादिक साध ॥ सांब ने

प्रद्युम्न । अनिरुद्ध साधु अगाध ॥६६॥ वलि सत्य-नेमि दृढनेमि । करणी कीधी वाद । दशे मुगते पहोंता । जिनवर वचन आराध ॥६७॥ धन्य अर्जुनमाली । कियो कदाग्रह दूर ॥ वीरपें व्रत्त लेइने । सत्यवादि हुवा शूर ॥६८॥ करी छट छट पारणा। क्षमा करी भरपूर ॥ छ मासामांही । कर्म किया चकचूर ॥६९॥ कुमर काइमंतो । दीठा गोतम स्वाम ॥ सुणि वीरजीकी वाणी । कीधो उत्तम काम ॥७०॥ चारित्र लेइने । पहोंन्त्या शिवपुर ठाम ॥ धुर आदि मकाइ । अंत अलक्ष मुनि नाम ॥७१॥ वली कृष्णरायकी । अग्रह महिषी आठ ॥ पुत्र बहु दोये । सच्या पुण्यका थाठ ॥७२॥ यादव कुल सतीयां । टाल्यो दुःख उचाट ॥ पहोंतां शिवपुरमें । यह छे सुत्रको पाट ॥७३॥ श्रेणी कर्की राण्या । कालीआदिक दश जाण ॥ दशे पुत्र वियोगे । सांभली वीरकी वाण ॥७४॥ चंदनबालापे । संजम लेइ हुवा जाण ॥ तपकरी देह झोंशी । पहुता छे निरवाण ॥ ७५ ॥ नंदादिक तेरे । श्रेणिक नृपकी नार ॥ सघली चंदन बालापे । लीयो संजम भार ॥७६॥ एक मास संथारो । पहोंच्या मुक्ति मझार ॥ ए नेवू जणाको । अंतगडमां

अधिकार ॥ ७७ ॥ श्रेणीकका बेटा । जालीयादिक तेवीस ॥ वीरपे व्रत लेइने । पाळ्यो विश्वावीश ॥७८॥ तप कठीन करीने । पूरी मन जगीश॥ देवलोके पहोच्या । मोक्ष जासे तजी रीस ॥७९॥ काकंदिको धन्नो । तजी बत्तीस नार ॥ महावीर समीपे । लीधो संजमभार ॥८०॥ करी छट छट पारणा । आयंबिल उछीत्त अहार ॥ श्री वीर वखाण्या । धन्य धन्नो अणगार ॥८१॥ एक मास संथारो । सर्वार्थसिद्ध पहोंत ॥ महाविदेह क्षेत्रमां । करशे भवको अंत ॥८२॥धन्नाकी रीते हुवा नवोइ संत । अनुत्तरववाइमां । भाख गया भगवंत ॥८३॥ सुबाहु प्रमुख । पांच पांचसें नार॥ तजी वीरपे लीधां । पंच महाव्रत सार ॥८४॥ चारित्र लेइने । पाळ्यो निरतिचार । देवलोके पहोच्या । सुखविपाके अधिकार ॥८५॥ श्रेणीकका पौत्रा । पौमादिक हुवा दश । वीरपे व्रत लेइने ॥ काढ्यो देहको कस ॥८६॥ संयम आराधी । देवलोकमां जाइ वस ॥ महाविदेह क्षेत्रमां । मोक्ष जाशे लेइ जस ॥८७॥ वळभद्रका नंदन । निषधादिक हुवा बार । तजी पचास अंतेउरी । त्यागदियो संसार ॥८८॥ सहु नेम समीपे । चार

महाव्रत लीध । सर्वार्थसिद्ध पहोंता । होशे विदेहमां सिद्ध ॥८९॥ धन्नोने शालीभद्र । मुनिश्वराकी जोड ॥ नारीका बंधन । ततक्षीण न्हाख्यां तोड ॥९०॥ घर कुटंब कबीलो । धन कंचनकी कोड ॥ मास मास खमण तप । टाळशे भवकी खोड ॥९१॥ श्री सुधर्मा स्वामीका शिष्य । धन्य धन्य जंबुशाम ॥ तजी आठ अंतेउरी । मात पिता धन धाम ॥९२॥ प्रभवादिक तारी । पहोंता शिवपुर ठाम ॥ सूत्र प्रवर्तावी । जगमां राख्यो नाम ॥९३॥ धन्य ढंढण मुनिवर । कृष्णरायका नंद ॥ शुद्ध अभिग्रह पाळी । टाळदीयो भवफंद ॥९४॥ वळी खंधक ऋषिकी । देह उतारी खाल ॥ परिसह सहिने । भव फेरा दिया टाळ ॥९५॥ वळी खधक ऋषिका । हुवा पांचसे शिष्य ॥ घाणीमां पिल्या । मुक्ति गया तजी रीस ॥९६॥ सभुति विजय शिष्य । भद्र बाहु मुनिराय ॥ चउदे पुरवधारी । चंद्रगुप्त आण्यो ठाय ॥९७॥ वळी अद्रकुमार मुनि । स्थूलीभद्र नंदीषेण ॥ अरणीक अइमंतो । मुनिश्वरोकी श्रेण ॥९८॥ चोवीसे जिनना मुनिवर । मख्या अट्ठावीस लाख ॥ उपर सहस्र अडतालीस । सूत्र परंपरा भांख ॥९९॥ कोड्

उत्तम वांचो । मोंढे जयणा राख ॥ उघाडे मुख बोल्या । पाप लागे इम भाख ॥१००॥ धन्य मरु देवी मातां । ध्यायो निर्मळ ध्यान ॥ गजहोदे पायो । निर्मळ केवळ ज्ञान ॥१०१॥ धन्य आदि-श्वरकी पुत्री । ब्राह्मी सुंदरी दोय ॥ चारित्र लेइने । मुक्ति गयां सिद्ध होय ॥१०२॥ चोवीसे जिनकी। वडी शिष्यनी चोवीश ॥ सती मुगते पहोती । पूरी मन जगीश ॥१०३॥ चोवीशे जिननी । सर्व साधवी सार ॥ अडतालीस लाखने । आठसें सित्तर हजार ॥१०४॥ चेडाकी पुत्री । राखी ध-र्मसुं प्रीत । राजमती विजया । मृगावती सु वि-नित ॥१०५॥ पद्मावती मयणरेहा । द्रौपदी दम-यंती सीत ॥ इत्यादिक सतीया । गइ जमारो जीत ॥१०६॥ चोवीसे जिनना । साधु साधवी सार । गया मोक्ष देवलोके । हीरदे राखो धार ॥१०७॥ इण अढी द्वीपमां । घरडा तपशी बाळ ॥ शुद्ध पचमहाव्रत धारी । नमो नमो त्रीकाळ ॥१०८ ए जतियो सतीयोकां । लीजो नित्य मत्ये नाम॥ शुद्ध मनसें ध्यावो । एही तरणको ठाम ॥१०९॥ ए जती सतीसुं । राखो उज्वल भाव । एम कहे ऋषी जेमलजी । एही तरवाको दाव ॥११०॥

संवत अढारेने । वर्ष सातो मन धार ॥ शहर झालोर माही । एह कह्यो अधिकार ॥१११॥इति॥

विषा पाहार स्तोत्र.

विस्वनाथ विमल गुणईश । विहरमान वंदु जिन विश ॥ ब्रह्मा विष्णु गणपत सुंदरी । वर दीजो मोहे वागेश्वरी ॥१॥ सिद्ध साधक सद्गुरू आधार । करू कवित आतम उपगार ॥ विषा पाहार स्तवन उधार । सर्वे औषधीमें अमृत सार ॥२॥ मेरेमन मंत्र तुह्मारो नाम । तुमही गारुडी गुरु समान ॥ तुम सम देव नही कोइ संसार । तुम स्वामी त्रिहु लोक मझार ॥३॥ तुम विष हरण करण जगदीश । ॐनमो नमो अरिहंत चौवीस ॥ तुम गुण महीमा आगम अपार । सुर गुरू सेहेस लहे नही पार ॥४॥ तुम परमातम परमानंद । कल्पवृक्ष माहा सुखके कंद ॥ तुमही मेरु मही मंडन धीर । विद्यासागर गहेर गंभीर ॥ ५ ॥ तुम दधी मथन महाबड वीर । संकट विकट भय भंजण भीर । ॥ तुम जग तारण तुम जग इस । वेग उधारण वीश्वावीस ॥६॥ तुम गुण रत्न चिंतामणीरास । चिंतावेळा चित्त हरण विलास ॥ उपसर्ग हरण

तुम नाम अमूल । मत्र तत्र तुमही मन मुल ॥७॥ जैसे वज्र परवत परिहार । त्यों तुमनाम विषा पाहार ॥ नाग दमन तुम नाम सहाय । विषहार विख छिनमे मिट जाय ॥ ८ ॥ तुम समरण चिंते मन माय । विष पिवत अमृत हो जाय ॥ नाम सुधारस वरसे जिहां । पाप पंक मल रहे नही तीहां ॥९॥ ज्यो पारसके प्रसंगे लोहे । निज गुण तजी कंचन सम होए ॥ तूम समरण साधे नर भूच । तुम सम पदवी पावे उच ॥ १० ॥ तुह्मारो नाम औषध अनकुल । महा मंत्र सजीवन मूल ॥ मुरख मर्म न जाणे भेव । करम कलक हरण तुम देव ॥११॥ तुह्मारो नाम गारुडी गहे गहे । काल भुजंगम कैसे रहे ॥ तुम वनंत्तर जिहां जिनराय । मरण न पावे कोइ तीन ठाय ॥ १२ ॥ तुम सुरज उदेछे जास । ससे सित न व्यापे तास ॥ जीवे दादुर वर्षत तोय । सुनत वाणी सजीवन होय ॥ १३ ॥ तुमविन कोन करे मुज सार । तुम विन कोन उत्तारे पार ॥ दयावत तुम दीन दयाल । करता हरताके रक्षपाल ॥ १४ ॥ सरणे आयो हुं गन न । अब मुझ काज सुधारो आय ॥ मेरे एक धन पुत । साहा कहे राखो घर सुत ॥१५॥

करू विनती वारंवार । तुम विन कौन करे उप-गार ॥ तूमही पैगम्बर तूमही पीर । तूम बिन कौन मेटे सब पीर ॥१६॥ विग्रह गेह दुःख विपत वियोग । और जो घर जलधर रोग ॥ चरण कमल रज जे तन लगाय । दुष्ट व्याधी दुरगंध मिट जाय ॥१७॥ मै अनाथ तुम त्रीभवन नाथ । मात पीता तुम सज्जन संघात ॥ तुम सम दाता कोइ नहीं दान । और कहां जाउं भगवान् ॥१८॥ प्रभूजी पतित उधारन आय । वाह ग्रहेकी लाज निभाय ॥ जिहा देखु तिहां तुमही आय । घट घट ज्योत रहि ठहराय ॥१९॥ वाट घाट विषम भय जिहां । तुम विन कौन सहाय तिहां ॥ विकट व्याधी व्येंतर भय जाय । नाम लेत छिन्न-माही पलाय ॥२०॥ आचारज मानतुंग उसान । संकटे समरयो नाम निधान ॥ भक्ताम्बर तूम भक्त सहाय । टेक राखी प्रगट तीनमाय ॥२१॥ जुगल एक तिन विग्रह ठयो । चंदि राय नृप देखण गयो ॥ एकी भाव कीयो नीःसंदेह । गयो कुष्ट कंचन हुइ देह ॥२२॥ कल्याण मंदिर कौमचद्र कहो । राजा विक्रम विस्मय भयो ॥ सेवक जान तुम कीयो सहाय । श्री पार्श्वनाथ प्रगटे तिहा आय

॥२३॥ भस्म व्याधी ते सुमत भइ । स्तव्य स्तोत्र तिन स्तुति ठइ ॥ गई व्याधी विमल मति भइ । तेपर कृपा तुह्मारी हुइ ॥२४॥ भव्य जीव श्रीपाळ नरेस । सायर जल संकटे समरचो सुविशेष ॥ तिहां फुनि तुम भये सहाय । आनंदसु घर पहुंच्यो आय ॥२५॥ सभा दुसासण पकड्यो चीर । द्रोपती पण राख्यो कर भीर ॥ सीता लक्षुमण दीनो साज । रावण जीत भभीक्षणराज ॥ २६ ॥ सेठ सुदर्शण सुलि दीयो । सुली फीट सिंव्हासण थयो ॥ वारिपेण तव धरीयो ध्यान । तत्क्षीण उपन्यो केवल ज्ञान ॥ २७ ॥ सिंह सर्पादीक जीव अनेक। जिन समरे तीनकी राखी टेक ॥ ऐसी केत्नी एक जणाउ साख । सहा कहे सरणागत राख ॥ २८ ॥ इन अवसर जो जीवे बाल । मेरो संदेह मीटे तत्काळ ॥ वंदी छोड वीरद महाराज । अब आपनों विरद निभावो लाज ॥ २९ ॥ और आलम्बन मेरे नाय। मै निश्चैय कीधो मन माय ॥ चरण कमल छांडु नही सेव । तुम मेरे सच्चे गुरुदेव ॥३०॥ तूमही ..ज तूमही चंद । मिथ्या मोह निकंद निकद ॥ .. चक्र तूम धारण धीर । विरह चक्र विडा-

रण वीर ॥३१॥ चोर अग्नि जल भूत पिसाच । जल जगल अटवी उदीयाच ॥ दुरजन दुशमन राजा वश होय । तुम परसाद गजे नही कोय ॥३२॥ ह्य गय जोध सवल सामंत । सिंह सार्दुल महा मय मत ॥ द्रढ बंधन विग्रे विकराल । तुम समरे छुटे तत्काळ ॥३३॥ पाय पनैही नही मुख-को नाज । तीनकु तूम बकसो गजराज ॥ एक उथापो थापो फुनीराज । प्रभुजी बडे गरीब नि-वाज ॥३४॥ पानीसे पयदायस करो । भरचा डाल फुली रीता भरो ॥ तुम करता हरताके कीरतार । कीडी कुंजर करत नवार ॥३५॥ तुम गुण अनंत आलप मुज ग्यान । कहां लग प्रभूका करत ब-खाण ॥ आगम पथ सुजे नही मोय । तुह्मारो चरित्र बन आवे नही मोय ॥३६॥ भइ सुप्रसन्न साहय्य दीयो । दयावत तुम दर्शन दीयो ॥ साहा पुत सचेतन भयो । हसतो २ घर तिन गयो ॥३७॥ धन दर्शण देह्यो भगवत । आज अग सुख न-यण पवित ॥ प्रभुके चरण कमल हुं लह्यो । जन्म सफल तव मेरो भयो ॥३८॥ कर पंकज करी नमाउ सीस । मुज अपराध खमो जगदीस ॥ सत्त-रेसे पदरे सुभ थान । नारायण वली तीथ चउदश

जान ॥ ३० ॥ पढे सुणे जिहां परम आनंद। कल्प वृक्ष महा सुखके कद ॥ अष्ट सिद्धि नव निद्धि सो कहे। अचल किर्ति आचार्य कहे॥४०॥ दुहाः—भय भंजन गंजन दुःख। विषा पाहार अभिराम ॥ शुद्ध मन समरो सदा।-सत्यजिनेश्वर नाम ॥४१॥ इति ॥ विषा पाहार स्त्रोत सपूर्ण.॥

अरिहंतके १२ गुण स्तवन.

(पच तीर्थका स्तवनकी—देशी.)

श्री गुरु देवके चर्णार विंद। अनंतवार प्रणाम करूं ॥ जिनदेव बुद्धि विवेक मम जीव। तुम प्रसाद नमो गुरुं ॥१॥ सिन्धुतणा रंक महा वल। मेरु बाथमे कैसे धरं ॥ तुम गुण गंभीर मै आल्प बुद्धि। विनति प्रभु कहा करं ॥२॥ तंत्र जगमे मंत्र एही। भेषज निश्चे उर धरों ॥ दीर्घ बनज्यो देह पावन। तुम भज आतम शुद्ध करों ॥३॥ सर्व आगम सार श्री नवकार। निश्चे उर धरों ॥ दश बोल दुर्लभ पायके। निज आतमकुं सफल करो ॥४॥ जैसे आद श्री अरिहत पदकी। जनम रचना गाइयं ॥ गुण ग्राम कर निज वदनसे। सीव धाम मारग पाइय ॥५॥ अनत ज्ञानं, अनंत दर्शण,

अनंत चारित्र, वखाणीत ॥ अनत तप, अनंत वलं-वीर्य । अनंत क्षायिक समकित ॥६॥ वज्र ऋपभ नाराच सघेणं । सम् चौरस सठाणीयं ॥ चौतीस अतिशय पैतिसं वाणी । निरख मोमन लोभीय ॥७॥ एक हाजार आष्ट लंक्षण । महा उत्तम शोभीयं ॥ इद्र चौसट * करे सेवा । सो देव-अरिहत वदीयं ॥८॥ इति ॥

अरिहंतके ३४ अतिशय स्तवन.

(पच तीर्थका स्तवनकी—देशी)

प्रथम नख अरु केश शोभा । वर्ण कहतां नही वनें ॥ नहीं लघु नही दीर्घ ॥ सासतेही वने ठने ॥ १ ॥ द्वतिय रोग न होत कवहु । पुष्ट त्वचा वखाणीयं ॥ त्रतीय तनमें रुद्र उज्जल । धेनु पय सम जानीयं ॥ २ ॥ लेत सास उसास चौथे । गध आवत पदमकी ॥ त्रास सवही जाय करतां । वदणा जिन कदमकी ॥ ३॥ पंचमी निहार भोजन । चर्मचक्षु नही द्रग धरे ॥ चले चक्र गरणाट छट्टे । विन्न भय मद परहरे ॥ ४ ॥ सातमे सिर छत्र

* और-किननेक अनत चतुष्टय ओर-अष्ट प्रतिहार्य यह मीलके १२ गुण कहते है।

राजे। जडे नग वहु झीगमीगे ॥ आठमे सिर चम
चहुंदीस । नीरख पातक सव भगे ॥ ५ ॥ नवं
फीटक मइ सिन्हासण। प्रकाश होत वहु शोभीत
दसमें ध्वजा अति उची । नीरख आनंद उपज
॥ ६ ॥ ग्यारमे सिर करत छाया । आशोक वृ
सितलं ॥ वारमे सिर भामंडल । रवि कर्ण व
झीगमीग ॥ ७ ॥ तेरमे एक २ जोजन । चहू दि
शोभाघणी ॥ चउदमें अति कठीन कंटक । होत
उंधी आणी ॥ ८ ॥ पदरमे वहु हेत उपजे । हो
षट ऋतु आगळे ॥ सोळमे जोजन एक पुजीत
मधुर सुगंधी वायु चले ॥९॥ सत्तरमे जोजन ए
छीडकत । सुगध पाणी धरणीकं ॥ अट्ठारमे अ
चेत वीरखा । पुष्प गध सुवर्णकं ॥१०॥ उगणीस
सव अशुभ पुद्गल। उपसमके महीमा घणी ॥ विस
सव शुभ पुद्गल। प्रगट सुख आगे सुनी ॥ ११
एक्वीसमें जोजन एक ताइ । नाद वल्लभ पाइ
॥ दो वीस भाषा अर्ध मागधी । प्रभु आप सु
सुनाइयं ॥१२॥ तेविसमे नर देव पशुटिक । स
समझे आप आपमें ॥ च्योवीशमें सुख हेत उपजे
वैर भाव नही तासमें ॥१३॥ पचीसमे मिथ्य
वादी । नीरख प्रभुके पग पडे ॥ पद विस

अभिमान धारी । उलजके फिटे पडे ॥१४॥ सत्तावीसमे सो गाउं ताड । इत भय नही झपीय ॥ अट्ठावीशमे सो गाउ ताइ । मरण मारण कंपीयं ॥१५॥ गुणतीसमे सो होय प्रभुके । स्वचक्री नही सचरे ॥ तीसमे जीन जान अतसें । परचक्री देखत डरे ॥१६॥ एक्तीसमे जीन निकट करहु । मही लघु वर्षा करे ॥ बत्तीसमे नही झरे आवर । कोप जळ धारा नही धरे ॥१७॥ तेतीसमे दुर भीक्ष वर्जत । सासते नवनिध लहे ॥ चौतीसमे न रहे रोग विघ्न । सर्व जीव आनद करे ॥१८॥ रूप ऐसो देव अरिहत । जान नीज उरमे धरे ॥ जन्म जरा मरण से छुटे । फेर कवहु न सचरे ॥ १९ ॥ इति ॥

पंच परमेष्टि परमानंद स्तवन छंद.

॥ छद–त्रिभंगी ॥

प्रणमुं सरस्वती, होय वरमति, चित्त हुलसे अति, गुण थुणवा ॥ शुद्ध भावें ध्यावें, सो सुख पावे, एक चित्त चावे, यश सुणवा ॥ जय जय परमेष्टि, जगमें श्रेष्टी, दे पद ज्येष्टी जग धार ॥ श्रीजग मझारं,नाम उधारं,जयसुखकारं॥१॥

यह–टेर॥वारे गुणवंता, श्रीअरिहंता, लोक महंता गुणगहेरा ॥ घनघातिक कर्म, मिथ्याभर्म, त्याग अधर्म, विष लहेरा ॥ शुकल मन ध्याया, केवल पाया, इदर आया, तिण वारं ॥ त्रि० ॥२॥ वर प्रपदा वारे, हर्ष अपारे, सुणि अवधारे, जिन-बाणी ॥अमृतसूं प्यारी,जगहितकारी,सुरनर नारी, पहेचाणी ॥ केइ सजम धारे, केइव्रत वारे कर्म विदारे, शिवत्यारी ॥त्रि०॥३॥ द्वातिय पद ध्यावो, सिद्ध गुण गावो, फिर नहीं आवो, जिहां जाइ॥ जे अलख निरंजन, भविमन रंजन, कर्मके भजन, शिवसाइ ।पुद्गलका फंदा, दूर निकंदा, परमानंदा अविकारं ॥ त्रि० ॥४॥ आठ गुणके धारे, जगत निहारे, काल न मारे, उनतांइ ॥ जिहां सुख अनंता, केवलवंता, गुण उचरंता, छे नाई ॥ निज वास बताइ, द्यो मुझताइ, तुमसा नाइ, दातारं ॥ त्रि० ॥५॥ गणिवर पद त्रीजे, नित्य नमीजें, सेवाकीजें हर्ष धरी ॥ पंच महाव्रत पाले, दूषण टाले, गज जिमहाले, शूर हरी ॥ पाचुं वश करते, पच उच्चरते, पाचुंई हरते, दुःखकारं ॥त्रि० ॥६॥ शीतळ जिम चंदा, अचळ गिरिंदा गणपती इंदा, शिरदारं ॥ सागर जिम गहेरा, ज्ञान

लहेरा, मिथ्या अवेरा, परिहारं ॥ संपद वसु पावे, न्याय वढावे, पाले पलावे, आचारं ॥ त्रि०॥ ७॥ गुरु सेवा साधी, विनय आराधी, चित्त समाधि, ज्ञान भणे ॥ वारे अंग वाणी, पेटी समाणी, पुरव ज्ञाणी, सशेयहणे ॥ निरवद्य सत भाखे, शास्त्र साखे, गुण अभिलाखे, निजसार ॥ त्रि० ॥ ८ ॥ उवज्झाया स्वामी, अतर जामी, शिव गतिगामी, हितकारी ॥ शीखणने आवे, जोग शिखावे, न्याय वतावे, उपगारी ॥ दुर्गतिमां पडतो, कादव गडतो, चित्त करे चडतो, तिणवार ॥ त्रि० ॥९॥ कंचुक अहि त्यागे, दूरे भागे, तिम वैरागे, पाप एगे ॥ शुद्धा पर छंदा, मोहनी फंदा, मञ्जुका वंदा, जोगवरे ॥ सव माल खजीनो, त्यागन कीना, महाव्रत लीना, अणगारं ॥ त्रि० ॥ १० ॥ पाले शुद्ध करणी, भवजल तरणी, आपद हरणी, दृष्टी रखे ॥ बोले सत वाणी, गुप्ति ठाणी, जगका प्राणी, मम्म लखे ॥ शिव मारग ध्यावे, पाप हटावे, धर्म वढावे, सत सारं ॥ त्रि० ॥ ११ ॥ यह भणमे भावे, विघन हटावे, अरि हरि जावे, दूर सही ॥ जे तप तेजारी, दुःख निवारी, सोग सवारी, आत नही ॥ ग्रह पीडा भागे, दृष्टी न लागे,

शत्रु न जागे, लीगारं ॥ त्रि० ॥ १२ ॥ यह मंत्र है निको, तारक जीवको, त्रिजग टीको, सुख दाता ॥ यह मंत्र करारी, महिमा भारी, लहे नर नारी, सुख साता ॥ सर जीवन वेली, दे धन ढेली, भव भव केली, यह सारं ॥ त्रि० ॥ १३ ॥ पद्मासन वाली, रंग निहाली, आरत टाली, ध्यान धरे ॥ तिलोक पयंपे, भावसुं जंपे, रिध सिद्ध संपे, जेह धरे ॥ यह छंद त्रिभंगी, गावे उमंगी, भव भव संगी, जयकार ॥ त्रि० ॥ १४ ॥ इति. ॥

भय भंजण अरिहंत स्तोत्र.

चोपाईः—जै जै विश्वनाथ जसवंत। प्रणमुं श्री अरिहंत महंत ॥ कुशल वेलि जल पुष्कर धार। दुरित तिमिर भानु संसार ॥१॥ चित्र वेल चिंता मणी पास। कल्पवृक्ष जिम पूरण आश ॥ आरत हरण करण सुखसंत। चरण सरण धारो मन-खंत ॥२॥ क्रोध मान छल लोभ निवार। भए केवल पद तुम संसार ॥ इंद्र नरिंद्र सुरासुर देव। मन वच काय करे तुम सेव ॥३॥ लिपटे सर्प चंदन तरु भाल। गरुड शब्द सुणि नासत व्याल ॥ जंतु वृक्ष कर्म अहि जाण। तुम समरणतें होत म-

याण ॥४॥ कोटिद्द नारी जणे पुत। तुमसम अवर न प्रसवे सुत ॥ उगे नक्षत्र चउ दिशि मांय। दिनकर पूरव दिशि प्रगटाय ॥ ५ ॥ तुम निर्मळ गुण आगर देव। क्षमा सागर आप अछेव ॥ धर्म धुरंधर सारथ वाह। धर्म चक्री प्रभु त्रिजगनाह ॥६॥ अविनाशी अविकारी अरूप। निर्भय करण परम सुख भूप ॥ जग गुरू जग बंधव जगईश। त्रिकरण शुद्ध नमाउं शीश ॥७॥ जनम जरा मरण दुःख रोग। यह अनादी लग्यो भव रोग ॥ तुम सुमरण औषध जो लेत। भव भय व्याधिरंच न रेत ॥ ८ ॥ तुम जग वच्छल करुणावंत। शांतिकारक श्री भगवंत ॥ म्हे मतिहीण अलप मोय बोध। तुम गुण कैसें वरणवु शोध ॥९॥ केइक हरिहर जपत महेश। केइक सरस्वति गौरी गणेश ॥ केइक रवि शशि नवग्रह देव। केइक जळ थळ अगनी सेव ॥१०॥ केइक ईसा पैगंवर पीर। केइक देवी भैरव वीर ॥ मैं मन निश्चै कियो निरधार। तुम सम और न कोइ संसार ॥११॥ किहां सरसव किहां मेरू उत्तंग। किहां केशरी बलवंत कुरंग ॥ राधामणि वैडूर्य फेर। जेसें अमृत अंतर जहेर ॥१२॥ जेसें वस्तर कंचक हीर। निशिदीन

अतर कायर वीर ॥ आक दूध किहा धेनु खीर। खीर सागर कहां खारु नीर ॥ १३ ॥ पुण्य पाप फल रंक ने राय । परगट द्रव्य सुपनकी माय ॥ सत्य झूठ तस्कर साहुकार। आगिया तेज रवि प्रकार ॥१४॥ जैसें कर्म घाती कर्मवंत। प्रतक्ष अंतर भासे अनंत ॥ विश्व विख्यात सदा सुखकार। ज्यु उदधिमें द्वीप आधार ॥ १५॥ भूख्या भोजन प्यासा नीर। रोगी औषधाथि मन धीर ॥ पंखी नभ नट वश विचार । तिम तुम नाम तणो आधार ॥१६॥ बालक जननी गउ वच्छ हेत। हंस सरोवर आशरे रेत ॥ ज्यों हस्ती कज्यली वन प्रीत। अंब कोयल चकवी आदीत ॥१७॥ सति भरतार पपैयो मेह । मधुकर मालति अधिक सनेह ॥ लोभी सनमें धनको जाप। तैसें हु समरुं प्रभु आप ॥१८॥ हिंसा झूट चोरी उन्माद । सेव्यो, परिग्रह क्रोध अनाद ॥ मान माया त्रसना अति कीध । राग द्वेषने क्लेश प्रसिद्ध ॥१९॥ आल दीयां करि चाडी कूड । पर अपवाद किया भरपूर ॥ विषय कषाय रसारस आण। बांध्यां निकाचित कर्म अजाण ॥२०॥ कपट सहित कही मृषावाद। मिथ्यामत करणी आन्हाद ॥ करण करावण करी

सें मोट । पाप अढारे धर्म विरोध ॥ २१ ॥ इण-
विध करियां करम करूर । पहुंतो नरक सह्यां
दुःख पूर ॥ परमा धामी दीनी त्रास । नही मानी
किंचित अरदास ॥२२॥ तिरियंच वेदना सागर
रूप । जगम थावर पडियो कूप ॥ छेदन भेदन
कष्ट महंत । जनम मरण दुःख सह्या अनंत ॥२३॥
नरभव नीच जाति कुल कीन । दुःखी दारिद्रि
भणे अति दीन ॥ जन जन आगें जोड्या हाथ ।
पुरण नहि मिलियो जल भात ॥२४॥ पाप उदय
नाटकियो देव । भयो हुं करी सुरनी सेव ॥
पाड्यां नाटक तोडी तान । करम उदय हुं हुयो
हैरान ॥२५॥ चउगति भ्रमण महा दुःख लीन ।
तुम शरणा विण भव भव दीन ॥ कीधा हुं अपराध
अपार । भरियो हु अवगुण भंडार ॥ २६ ॥ खोय
दियो हुं निर्थक काल । मोहनी कर्म भर्म जजाल ॥
सर्प अधारे जेवडी जेम । छीप खट रूपु ग्रहे तेम
॥२७॥ मृग मरीचिका जाणत तोय । प्यास बुझा-
नण हिरणा सोय ॥ धावत धावत छोडे प्राण ।
तैसे हुं भमियो अजाण ॥ २८ ॥ जैसें ज्वर तन
प्रजलता होय । अनरुचि नहिं व्यापे सोय ॥ तैसें
कुकर्म उदयगत जीव । धर्म रुचि नहि आवत ईव

॥२९॥ जब तन ज्वरको मिटत विकार। तब सोइ वंछया करत आहार ॥ अशुभ कर्म जब हात प्रयाण। तब तुम शरण ग्रहे भवियाण ॥३०॥ जाणी हूँ आगम अनुसार। किंचित तुम मारगकी कार ॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र। पले नही मुज शुद्ध पवित्र ॥ ३१ ॥ पण एक चरण शरणकी आश। धारी हूँ अब हीये विमास ॥ आश निरास करण नही रीत। तुमसू लागी पूरण प्रीत ॥३२॥ तुम सम और नही कोइ कृपाल। अधम उद्धारण दीन दयाल ॥ तुम विन कोन मुज्ञ होत सहाय। तुम विन कोन भविक सुखदाय ॥३३॥ गज मदवत माहा विकराल। सन्मुख आवे नरकूं भाल ॥ मारण आवे भरतो फाल। तुम जपतां हरि होवे शियाल ॥३४॥ कलपत काल समीर अदड। जले दावानल धूम्र प्रचड ॥ ऐसे कष्ट भजे जन कोय। तुम कीरत जल-शीतल सोय ॥ ३५ ॥ श्याम रग द्रगलाल कराल। क्रोध उद्धत ध्यावे विकराल ॥ नाग दमण तुम नाम विशाल, रटतां विघन करे व्याल ॥३६॥ भूपसु भूप करे संग्राम। रक्त वहेतिण ठाम ॥ ऐसें सकट ध्यावे आप। रण विजय टले संताप ॥ ३७ ॥ अथाग जळ

वहे वाय कुवाय। उठे किल्लोल वाहण कंपाय॥ ऐसी विपत ध्यान करनार। सो सहि पावे सागर पार॥ ३८॥ स्वास खास ज्वर गुंवड दाह। कुष्ट भगंदर रोग अगाह॥ जो तुम मणमे भाव निःशंक। तत्क्षण प्रलय होत आतंक॥ ३९॥ पावन बेडी हाथकडी हात। रोके भाखसी रुंधे भात॥ ऐसी आपदा समरे आप। वंधण छूटे टले संताप॥४०॥ तुम रणमोचन गरिव निवाज। वंधण छोडे श्रीजिनराज॥ तुम त्रिहुं लोकमें तिलक समान, तुम नामें दिन दिन कल्यान॥४१॥ ॐ ऱ्हीं श्रीं नमो नमो अरिहंत। ऋद्धि सिद्धि वृद्धि सुख संत॥ दिजो दीन दयाल निधि मोय। भव भव सरणो वांछु तोय॥४२॥ हय गय रथ दल मवलता पूर। वैरी दुशमन नासे दूर॥ पूत सपूत कलत्र गुणवंत। मिले सजोग रहे सुख जंत॥४३॥ दुशमन घल नहिं लागे दाव। वैर मीटके होय सज्यन भाव॥ जिहां जावे तिहां आदर होय। मोहनी मंत्र नाम तुम जोय॥४४॥ जड मूरख नर जे मतिहीण। पण तुम समरणमें रहे लीण॥ बुद्धि प्रवल सो पंडित थाय। जगमें पूजा होतसवाय॥ ४५॥ आभको कागद मषी सब नीर। लेखणी केवे

॥२९॥ जब तन ज्वरको मिटत विकार। तब सोइ वंछया करत आहार ॥ अशुभ कर्म जब हात प्रयाण। तब तुम शरण ग्रहे भवियाण ॥३०॥ जाणी हमें आगम अनुसार। किंचित तुम मारगकी कार ॥ ज्ञान दर्शन पूरण चारित्र। पले नही मुज शुद्ध पवित्र ॥ ३१ ॥ पण एक चरण शरणकी आश। धारी हमें अब हीये विमास ॥ आश-निरास करण नही रीत। तुमसू लागी पूरण प्रीत ॥३२॥ तुम सम और नही कोइ कृपाल। अधम उद्धारण दीन दयाल ॥ तुम विन कोन मुझ होत सहाय। तुम विन कोन भविक सुखदाय ॥३३॥ गज मदवत माहा विकराल। सन्मुख आवे नरकूं भाळ ॥ मारण आवे भरतो फाल। तुम जपतां हरि होवे शियाल ॥३४॥ कलपत काल समीर अदड। जले दावानल धूम्र प्रचड ॥ ऐसे कष्ट भजे जन कोय। तुम कीरत जळ-शीतल सोय ॥ ३५ ॥ श्याम रग द्रगलाल कराल। क्रोध उद्धत ध्यावे विकराळ ॥ नाग दमण तुम नाम विशाळ, रटतां विघन करे नही व्याल ॥३६॥ भूपसु भूप करे संग्राम। रक्त खाल वहेतिण ठाम ॥ ऐसें संकट ध्यावे आप। कहे रण विजय टले संताप ॥ ३७ ॥ अथाग जळ

जीने दीनो दान । लाभ लीयो चदन असमान ॥ देवतां किया ज्यारा सफल मिणगार ॥ स० ॥३॥ सेस छात्तिसारी गुरणी थइ । केवळ ले सती मुगते गइ ॥ आवागमण दीया दुःख निवार ॥स० ॥४॥ राजुलगइ जमारो जीत । नेमीसरजीसुं पाळी पीत । मनकर करयो नहीं और भरतार ॥ स० ॥५॥ पाच पाडवकी द्रौपदा नार। शीळतणी नहीं लोपी कार ॥ गीन्याता सुतरमे विस्तार ॥स०॥६॥ सीता लहु अकुसकी माय । सीळसु देवता करी सहाय ॥ अग्नि कीधो पावक नीर ॥ स०॥७॥ काचेतातें काढयो नीर। सीळसु आयो देवता भीड ॥ सुभद्रा उघाडी चंपाद्वार ।स० ॥८॥ कौसल्या वदु प्रभावती । मृघावती सतवती सती ॥ पद्मावती दयीभायन नार ॥ स० ॥९ ॥ सेवा कुंता सुलसा जान। पुफचुला दमयती वखाण ॥ नळराजाकी गुणवती नार॥स०॥१०॥ ए सोळे सतीया सीळसु दग । सतीया मांड्यो करगासू जग ॥ ए सतीया हुइ गुणरत्नाकी खाण ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥

चार शरणाको स्तवन

प्रह उठीने समरीजे हो ॥ भवियण ॥ मंगलीक शरणा चार ॥ आपदा टळे सपदा मीळे हो ।

रता ॥ चउदे पुरवका भंडार ॥ वं० ॥७॥ मेतारजने श्रीप्रभास । मोक्ष नगरमें कीधो वास ॥ जप ताहोवे जयजयकार ॥ व० ॥ ८ ॥ ए इग्यारे ब्राह्मण जात । चम्मालीससे निकळ्या साथ ॥ ज्या करदीनो खेवोपार ॥ व० ॥ ९ ॥ इणनामे सहु आसा फळे । द्वेषी दुशमण दुराटळे ॥ ऋद्धि वृद्धि पामे सुखसार ॥ वं० ॥ १० ॥ इण नामे सहुं नासे पाप । नितको जपीये भवियण जाप ॥ चित्त चोखे हीरदामे धार ॥ व० ॥ ११ ॥ समत अटारे तयाळीससे जाण । पुज जयमलजीकी अमृत वाण ॥ चोमासे स्तवन कीयो पिपाड ॥ व० ॥१२॥ अपाड शुद्ध सातमरे दीन । गणधरजीकुं गायो एकमन ॥ आसकरणजी भणे अणगार ॥ नं० ॥ १३ ॥ इति ॥

सोळे सतीयाको स्तवन.

ब्राह्मी सुदरी दोनु वेन । नाम लियासु पावे चैन ॥ शिळवती रही आकन कुंवार । समरुं सती सोळे सिरदार ॥ यह–टेर ॥१॥ नेडो न आण्यो काम गोग । भर जोवनमें लीनो जोग ॥ आदिनाथ प्रभुजी दिनी तार ॥ समरुं० ॥२॥ महावीर

जीने दीनो दान । लाभ लीयां चदन असमान ॥ देवतां किया ज्यारा सफल सिणगार ॥ स० ॥३॥ सेस छासिसारी गुरणी थइ । केवळ ले सती मुगते गइ ॥ आवागमण दीया दुःख निवार ॥स० ॥४॥ राजुलगइ जमारो जीत । नेमीसरजीसुं पाळी प्रीत । मनकर करयो नहीं और भरतार ॥ स० ॥५॥ पाच पाडवकी द्रौपदा नार । शीळतणी नहीं लोपी कार ॥ गन्याता सुतरमे विस्तार ॥स०॥६॥ सीता लहु अकुसकी माय । सीळसु देवता करी सहाय ॥ अग्नि कीधो पावक नीर ॥ स०॥७॥ काचेताते काढ्यो नीर । सीळसु आयो देवता भीड ॥ सुभद्रा उघाडी चंपाद्वार ।।स० ॥८॥ कौसल्या वदु प्रभावती । मृगावती सतवती सती ॥ पद्मावती दधीभायन नार ॥ स० ॥९ ॥ सेवा कुंता सुलसा जान । पुफचुला दमयती बखाण ॥ नळराजाकी गुणवती नार ॥स०॥१०॥ए सोळे सतीया सीळसु दग । सतीया माड्यो करयासू जग ॥ ए सतीया हुइ गुणरत्नाकी खाण ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥

चार शरणाको स्तवन

प्रह उठीने समरीजे हो ॥ भवियण ॥ मंगळीक शरणा चार ॥ आपदा टळे सपदा मीळे हो ॥

भवियण ॥ दौलत तणा दातार,॥१॥ हीरदे राखी-
जे हो ॥ भवियण ॥ मंगलीक शरणा चार ॥
यह–टेर ॥ अरिहंत सिद्ध साधु तणाहो ॥ भ० ॥
केवली भाक्यो धरम ॥ ए शरणा नित ध्यावंताहो
भ० ॥ तुटे आठोइ करम ॥ ही० ॥ भ० ॥ मंग०
॥२॥ वाटे घाटे चालता हो ॥ भ० ॥ रात दिवस
मझार ॥ ग्राम नगर पूर विचरंता हो ॥भ०॥ वि-
घन निवारण हार ॥ ही० ॥ भ० ॥ मं० ॥ ३ ॥
ए चार सुख करीया हो ॥ भ० ॥ ए चारे जग
सार ॥ ए चारे उत्तम कहा हो ॥ भ० ॥ रहे ते
सघळा दूर ॥ ही० ॥ भ० ॥ मं० ॥ ५ ॥ राखो
शरणाकी आसता हो ॥ भ० ॥ नेडा नहीं आवे
रोग ॥ आनद वरते इण नामसुं हो ॥ भ० ॥ वा-
हाला तणो सजोग ॥ ही० ॥ भ० ॥ म० ॥ ६ ॥
सुख साता वरते घणी हो ॥ भ० ॥ जे ध्यावे नर-
नार ॥ परभवजाता इण जीवने हो ॥ भ० ॥ यह
तणो आधार ॥ ही० ॥ भ० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन-
चिंतित मनोरथ फले हो ॥ भ० ॥ वर्ते क्रोड क-
ल्याण ॥ शुद्ध मनसे ध्यावंता हो ॥ भ० ॥ निश्चय
पद निरवाण ॥ ही० ॥ भ० ॥ म० ॥ ८ ॥ इण
सरिखो शरणो नहीं हो ॥भ० ॥ इण सरिखो नहीं

नाम ॥ इण सरिखो मित्र नहीं हो ॥ भ० ॥ ग्राम नगर पुर ठाम ॥ ही० ॥ भ० ॥ मं० ॥ ९ ॥ दान शियल तप भावना हो ॥ भ० ॥ यह जगमे तंत सार ॥ करो आगधो भावसूं हो ॥ भ० ॥ पामो मोक्ष दुवार ॥ ही० ॥ भ० ॥ म० ॥ १० ॥ जोड करीहे जुगतसूं हो ॥भ०॥ पाली सेफेकाळ ॥ रिख चोथमलजी इम भणे हो ॥भ०॥ सुणजो बाळ गोपाळ ॥ ही० ॥ भ० ॥ मं० ॥ ११ ॥ इति ॥

श्री सीमंधर जिन स्तवन.

सुणो चदाजी, सीमंधर परमातम पासे जावजो । मुज विनतडी, प्रेमधरीने इणपरे तुमे संभळावजो ॥यह–टेर ॥ जे तीन भुवनका नायकछे । जस चौसठ इंदर पायक छे ॥ ज्ञान दर्शन जेहना क्षायक छे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेहनी कचन वरणी कायाछे । जस धोरी लछन पायाछे ॥ पुंडरगीरि नगरीको रायाछे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बारा पर्षदा मांहे बिराजेछे । जस चौतीस अतिशय छाजेछे ॥ गुण पेंतिस वाणी गाजेछे ॥ सुण० ॥ ३ ॥ भवि जनने ते प्रति बोधे छे । तुम अधिक शीतल गुण सोहे छे ॥ रूप देखी भविजन मोहे छे ॥ सुण०॥

॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीयोछु । पण हुं भरत क्षेत्रमां वसीयोछु ॥ महामोहराय कर फर्मायोछु॥ सुण० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमा धरीयोछे । तुम आण खडग कर ग्रहीयोछे ॥ पण कांइक मुजथी डरीयोछे ॥ सुण०॥६॥ जिन उत्तम पुठ हवे पूरो। कहे पद्मविजय होउं शूरो ॥ तो वाधे मुजमन अति नूरो ॥ सुण० ॥ ७ ॥ इति ॥

पांसठीया यंत्र युक्त छंद.

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

श्री नेमीश्वर संभव शाम। सुविधि धर्म शांति अ भीराम ॥ अनंत सुव्रत नमीनाथ सुजाण ॥ श्रीजिनवर मुज करो कल्याण ॥ यह-टेर ॥१॥ अजितनाथ चंद्र प्रभु धीर । आदीश्वर सुपार्श्व गंभीर॥ विमलनाथ विमल जगभाण ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ मल्लिनाथ जिन मंगलरूप । पंचविश धनुष सुंदर स्वरूप ॥ श्रीअरनाथ वर्द्धमान ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ सुमति पद्मप्रभु । वासुपुज्य शीतलश्रेयांस ॥ कुंथु पार्श्व

अभिनंदन भाण ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ इणीपरे जिनवर सभारीये । दुःख दारिद्र विघ्न निवारीये ॥ पंचवीशें पांसठ परिमाण ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ इम भणता दुःख न आवे कदा । नित पासे जो राखे सदा ॥ धरिये 'पंचतणु' मन ध्यान ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ श्री जिनवर नामे वंछित मीले । मनवंछित सहु आशा फळे ॥ धर्मसिंह मुनि नाम निधान ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥ इति ॥

जिनवाणि स्तवन छंद

(छंद-त्रिभंगी.)

जय जय जिनराया, सूत्र सुणाया, धर्म बताया हितकारी ॥ गण धरजी झेली, सधी सुमेली, नयरस केली, विस्तारी ॥ रचे द्वादश अंग, भंग तरंग, सूत्र अभंगं, अतिभारी ॥ धन धन प्रभुवाणी, सब सुखदानी, भवीजन प्राणी, उर धारी ॥ ध्रु–टेर ॥ १ ॥ यहां नहिं तीर्थंकर, केवल गणधर, अवधिमुनिवर, मनज्ञानी ॥ जंघा विद्याचारी, पूरवधारी, आहारक सारी, महाध्यानी ॥ नहि गगण गमणी, पद अनुसरणी, वैक्रिय करणी, परिहारी, ॥ ध० ॥२॥ देवाड्डि खमा श्रमण, तारण

भवियण, उद्यम लेखण, जिणकीनो ॥ इणहिज अधारें, पंचम आरे, धर्मज धारे, जिणजीनो ॥आ-लंबण महोटो, सूत्रको ओठो, रंच न खोटो, हि-तकारी ॥ ध० ॥ ३ ॥ शुद्ध सम्यक्तरुवर, अति दृढ पग्वर, वाणी सुधाकर, जलधारा ॥ या दया वधारण, हिंसा वारण, शिवसुख कारण, भव-पारी ॥ ए बुद्धि वढावे, भर्म कढावे, पाप छुडा-वे, शुभचारी ॥ ध० ॥ ४ ॥ जे चिंता उचाटण, मोहणी दाटण, त्रिशल्य काटण, कातर्णी

। निगुणा सेवकनी वात ॥ निचतणे मंदीरेजी । चन्द्र न टाळे ज्योतहो, जिनजी ॥ मुज० ॥ १४ ॥ निगुणो तो पण ताहरोजी । नाम धराव्यु दास ॥ कृपाकरी सम्भारजोजी । पुग्जो मुज मनकी आशहो, जिनजी ॥ मुज० ॥ १५ ॥ पापी जाणी मुज भणीजी । मत मुको विसार ॥ विष हळाहळ आदर्योजी । इश्वर नही तजे तासहो, जिनजी ॥मुज० ॥ १६ ॥ उत्तम गुणकारी हुवेजी । स्वार्थ विना सुजाण ॥ कृशाण सिंचे सर भरेजी । मेह न मांगे दानहो, जिनजी ॥ मुज० ॥१७॥ तु उपकारी गुण निलोजी । तूं सेवक प्रतिपाळ ॥ तू समरथ सुख पुरवाजी । कर म्हारी सम्भाळहो, जिनजी ॥ मुज० ॥१८॥ तुजने शुं कहीए घणुजी । तूं सब वातको जाण ॥ मुजने होजो साहीवाजी । भव भव थारी आणहो, जिनजी ॥ मुज० ॥१९॥ नाभीराया कुळचंदलोजी । मरुदेवीका नंद ॥कहे जीनहर्ष निवाजजोजी । दीजो परमानंदहो, जिनजी॥मुज०॥२०॥इति॥

श्री शांतिनाथ प्रभुको स्तवन.

(मनहर मळता, मे मन गमतु सर्व सुखद्रूमान्यु, यह देशी.)

अहो जिनवरजी, मानेनहीरे मन हस्ती जे यस्तीमां चढ्यो । अति मद झरतो, मणीधरसम डोले

॥मुज०॥ ५॥ छिद्र पराया अरो नीशेजी । देखतो रहुं जगनाथ॥ कुगती तणी करणी करीजी । जोड्या तेहसु साथहो, जिनजी ॥ मुज०॥६॥ कुमती कुटील कदाग्रहीजी । वाकी गती मति मुज ॥ वाकी करणी माहारीजी । शुं संभलाउं तुजहो, जिनजी ॥ मुज० ॥७॥ पुन्य वीना प्राणियांजी । जाणे मेलुं आथ ॥ उचा तरुवर मोरीयोजी । त्याही पसारे हाथहो, जिनजी ॥ मुज० ॥ ८ ॥ विन खाधा विन भोगव्याजी। फोगट कर्म बंधाय ॥ अर्तध्यान मीटे नहीजी । किजे कौन उपायहो, जिनजी ॥मुज०॥ ॥ ९ ॥ काजळथी पण शामळाजी । म्हारा मन परिणाम ॥ सोना माही ताहेरूजी । सम्भारुं नहीं नामहो, जिनजी ॥ मुज० ॥१०॥ मुग्ध लोक ठगवा भणीजी । करू अनेक प्रपंच ॥ कुड कपट हु केळवीजी । पाप तणो करुं संचहो, जिनजी ॥मुज० ॥११॥ मन चंचळ न रहे किमेजी । राचे रमणीके रुप ॥ काम विटम्बना शी कहुंजी । पडिस हुं दुर्गती कुपहो, जिनजी ॥ मुज० ॥१२॥ किसा कहुं औगुण माहाराजी । किमा करुं अपवाद ॥ जेम जेम सम्भारुं हीयेजी । तेम तेम वाधे विखवादहो जिनजी ॥ मुज० ॥१३॥ गिरना ते नवी लेखवेजी

। निगुणा सेवकनी वात ॥ निचतणे मंदीरेजी । चन्द्र न टाळे ज्योतहो, जिनजी ॥ मुज० ॥ १४ ॥ निगुणो तो पण ताहरोजी । नाम धराव्यु दास ॥ कृपाकरी सम्भारजोजी । पुग्जो मुज मनकी आशहो, जिनजी ॥ मुज० ॥ १५ ॥ पापी जाणी मुज भणीजी । मत मुको विसार ॥ विष हळाहळ आदर्योजी । इश्वर नहीं तजे तासहो, जिनजी ॥मुज० ॥ १६ ॥ उत्तम गुणकारी हुवेजी । स्वार्थ विना सुजाण ॥ कृशाण सिंचे सर भरेजी । मेह न मांगे दानहो, जिनजी ॥ मुज० ॥१७॥ तु उपकारी गुण निलोजी । तु सेवक प्रतिपाळ ॥ तू समरथ सुख पुरवाजी । कर म्हारी सम्भालहो, जिनजी ॥ मुज० ॥१८॥ तुजने शुं कहीए घणुजी । तूं सब वातको जाण ॥ मुजने होजो साहीवाजी । भव भव थारी आणहो, जिनजी ॥ मुज० ॥१९॥ नाभीराया कुलचंदलोजी । मरुदेवीका नंद ॥कहे जीनहर्ष निवाजजोजी । दीजो परमानदहो, जिनजी॥मुज०॥२०॥इति॥

श्री शांतिनाथ प्रभुको स्तवन.

(मनहर मळता, मे मन गमतु सर्वे सुखड्मान्यु, यह देशी.)

अहो जिनवरजी, मानेनहीरे मन हस्ती जे मस्तीमां चढ्यो । अति मद झरतो, मणीधरसम डोले

ते अहंकारे ,चढ्यो ॥ यह–टेर ॥ तसवागीवारी रासुछुं, अति परमका वचनो हु भाखुछुं, तो पण मानेनहीं सत्य दाग्युं हु ॥ अहो जिनवरजी, माने-नहींरे० ॥ अति मद झरतो, मणीधरसम० ॥ १ ॥ कोई नार स्वरुपा देखेछे, अति चचल नजरसुं निरखेछे, इम पाप करीने वहु हरखेछे ॥ अहो जिनवर्जी ॥ माने० ॥ अति मद झरतो, मणी०॥२॥परद्रव्य देखी ललचावेछे, जोइ सुख परायु तेहने सालेछे, पर निंदामा ते वहु चालेछे ॥ अहो जिन० ॥३॥ काम क्रोध लोभ जेहने प्याराछे, मोह मान लाडे करी पाळ्याछे, यहवी नीच मोवतका ए लालाछे ॥ अ० ॥४॥ कुमती कांता जेहने व्हालि खरी, सुमती शहाणी जेहने दूरकरी, यहवी कुनार जेहने प्यारी खरी ॥अ०॥ ५ ॥ गुणठाणे पहिले रमतोज रहे, कपी दारू पी जेम भमतोज वहे, एवा हाल बेहाल तेना ते सहे ॥ अ० ॥६॥ हवे विनती माहरी चीत्त धरो, समकित अंकुश मारि सिद्ध करो, शिव वधु वरवा उपकार करो ॥ अ०॥७॥ मनसुख मुनी मनन्ज कहे, शांतिनाथ मळ्या हवे शांत रहे, बाळ-मित्रको मन पण शांति चहे ॥ अहो जि०॥८॥ इति ॥

☞ सातवा प्रकरणं समाप्तं ☜

श्री वर्धमानाय नमोनम

प्रकरण—आठवा.

श्री ऋषभ जिन स्तवन.

आजतो वधाई राजा । नाभीके दरवाररे ॥ मरुदेवी बेटोजायो । ऋषभ कुमाररे ॥ आ०॥ यह —टेर ॥१॥ अयोध्यामें ओछव होवे । मुखबोले जय जय काररे ॥ घनन घनन घन-घटा बाजे । देवकरे थइकाररे ॥ आजतो० ॥ नाभीके० ॥ मरुदेवी०॥ ऋ-षभ० ॥ आज० ॥ २ ॥ इन्द्राणी मील मंगल गावे । लावे मोती मालरे ॥ चदन चरणी पाए लागे । प्रभू जीवो चिरकालरे ॥ आज० ॥३॥ नाभीराजा दानज देवे । वरसे अखड धाररे ॥ ग्राम नगर पुर पाटण देवे । देवे मणी भंडाररे ॥ आ० ॥ ४ ॥ हाथी देवे साथीदेवे । देवे रथ तुखाररे ॥ हीर चीर पितांग देवे । देवे सवि शिणगाररे ॥ आ०॥५॥ तीनलोकमें दिनकर प्रगट्यो । घर घर मंगल मा-लरे ॥ केवल कमला रूप निरंजन । आदीश्वर दयालरे ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥

श्री ऋषभ देवका हालरीयो.

(तूही तूही याद आवेरे दरदमें, यह—देशी.)

मां मोरादेवी गावेरे हालरीयो । झूले म्हारो

ऋषभजी पालणे पधरीयो ॥ यह–टेर ॥ रतन ज- डत लड लुंबा रणकत॥ इंद्रसुधरमा इण आगे धरी- यो ॥ मा मोरादेवी० ॥ १ ॥ झुलनें झुलावे माता मंगल गावे । नीरख नीरख नेणा हीरदोजी ठरी- यो ॥ मा मोरा० ॥ २ ॥ रीमझीम रीमझीम फीरत आंगणीये । झणण झणणकार बाजरे नेवरीयो ॥ मा मोरा० ॥ ३ ॥ एक सहस्र अष्ट लक्षण विराजे ॥ और नही कोइ ऐसोरे नानडियो ॥ मा मोरा० ॥ ४ ॥ नगरी अजोध्या वशीरे भरतमें । नाम वनी- ता माधवजी धरीयो ॥ मा मोरा० ॥ ५ ॥ रमत रमाई माता जगरीत बताई । तीन लोक मांहे जस विसतरीयो ॥ मा मोरा० ॥ ६ ॥ कहे हीरालाल जिनेंद्र पद मोटो । एक जिभ्यासुं गुण किम जाय करीयो ॥ मा मोरा० ॥ इति ॥

॥ शांति०॥ विघन०॥ सुख०॥ मन० ॥१॥ सुखसे-
ज्यामें सोवत सुंदर । चउदे सुपना उत्तम लह्या ॥
करजोडी राजासुं विनवे । राजाजी मन आनंद
भया ॥ शांति० ॥ २ ॥ सर्वार्थसिद्ध विमानथकी
प्रभु । चविने कुखे जन्मलिया ॥ सकल देशमें शां-
तिकरी प्रभु । रोगसोग सब दुरकिया ॥ शांति०॥
३ ॥ जेष्ठवद तेरसकी राते । हुवा तीन लोकमें
आणंदो ॥ जन्म महोछव करे देवतां । जय जय
धन्य सुख भाखंतो ॥ शांति० ॥ ४ ॥ चोसठ इंद्र
मील प्रभुको । मेरु शिखर जाइ न्हवरावे ॥ इंद्रा-
णी मील नृत्य करतहे । जिनगुण मधुर स्वर गावे
॥ शांति० ॥५ ॥ रिमझिम रिमझिम बाजे घुगरा ।
रणरणतो पाय रणके ॥ तत्ताथइ तान न चुके ।
झणण झणण झांझर झणके ॥ शांति० ॥६॥ ताल-
मृदंग वली विणा वाजतां । देवदुंदुभी आकाशे ॥
लेत वारणा जिनवर केरा । इंद्र इंद्राणी उल्हासें ॥
शांति०॥७॥ इणविध जन्म महोछव कियो । भाव
भक्तिकर उत्कृष्टी ॥ फिर-मुकया माताजी पासे
। कुसुम तणी करता वृष्टी ॥ शांति०॥८॥ राजाजी
पीन महोछव मांड्यो । दान दालिदर दुर कापे ॥
सकल देशमें शांतिकरी प्रभु ।गुणनिष्पन्न नाम

ते स्थापे ॥ शाति० ॥ ९ ॥ चालिस धनुष्य देहमाण । मृग लांछन सोवन वरणा ॥ रुप अनुपम अधिक विराजे । देखंता ए चित्त ठरणा ॥ शाति० ॥१०॥ पचीस सहस वर्ष लग प्रभुजी । रह्या कँवर आणंद पणे ॥ सहस पचीस मांडलिक राजा । सहस्र पचीस चक्रवर्ती पणे ॥ शाति० ॥११॥ छउ खंडमें हुकम चलाया । चउदे रत्न नउनीध धरे ॥ सोले सहस हुकमी चाकर । बचिस सहस्र राय सेवाकरे ॥ शाति० ॥१२॥ हयवर गयवर रथ दीपंता । लक्ष ज्यारेहै चौरचासि ॥ छीन्नुकोड पायदल शोभतो । सेवाकरे धर उल्हासी ॥ शाति० ॥ १३ ॥ एकलाग्न ब्यान्नुं सहस्र अंतेउरी । रूप ज्योबनमे अधिकाइ ॥ या रिद्धी सब जानी कारमी । छीनमें दिवी छीटकाई ॥ शाति० ॥ १४ ॥ वरसी दान देइ संजम लिनो । सहस जणाके परीवारा ॥ दिक्षा महोछव करे देवता । जिनजीमें अधिक प्यारा ॥ शाति० ॥ १५ ॥ एक मास प्रभु रहा छद्मस्थ । पछे ध्यायो आतिशुभध्यानो ॥ पोष शुरु नवमीके दिवसे । प्रभुपाम्या केवल ज्ञानो ॥ शाति० ॥१६॥ इंद्र इंद्राणी देवी देवता नर नारीका बहु वृंदा । देवे उपदेश श्री शातीजिनेश्वर ॥ भविक

जीवाके आनद॥शांति०॥१७॥सहस्र पचीस वर्षलग प्रभुजी । उत्तम केवल मनज्यां पाली ॥ कर्मखपावी मुगते पहुच्या । जिनसासनने उजवाली ॥ शांति०॥ ॥ १८ ॥ शांतिनाथजीको सुमरण करता । दुःखीयाका सब दुःख फटे ॥ मोक्ष महेलमें जाय विराज्या । शांतिनाथ जिन जेह रटे ॥ शांति०॥१९॥ डायण सायण भूत पिसाच । जित्या झोटिंग विकराले ॥ विकट घाट संकट ने बंधन । नामलेत दुरेटले ॥ शांति० ॥ २० ॥ चित्तचोखे मन सुमरण करता । मनवांछित आसा फळे ॥ सिंह सर्प ने आगन भए । रोग सोग दुराटाळे ॥ शांति० ॥ ॥ २१ ॥ सुखानदजीके शिष्ये हीरानदजी । नित समरण करे जिनवरका ॥ रामकृष्ण कर जोड विनवे । पापहरो प्रभु भव भवका ॥ शांति० ॥२२॥ समत आठागे वर्ष चौसठे । पौष शुक्र दशमी गुरुवारे ॥ शांतिनाथका गुण वरणव्या । शहर निमचके मझारे ॥ शांति० ॥ २३ ॥ इति ॥

श्रीशांतिनाथ प्रभुको हालरीयो.

शांति कुवर हुलरावे । अचलादेवी शांति कुवर हुलरावे ॥ यह-टेर ॥ सर्वार्थसिद्धथकी चवी-

आया । शांति शांति वरतावे ॥ जेष्टवद तेरसनि हो राते । आनद हारख वधावे ॥ अचला० ॥ १ ॥ चौसठ इंदर मिलकर प्रभुजीकु । मेरू सिखर न्हवरावे ॥ ताल मृदंग नेणापल वाजे । इद्रान्या मगल गावे ॥ अचला० ॥ २ ॥ आनंत वली त्रिभुवनके नायक । लेइ लेइ गोद खीलावे ॥ मस्तक मुगट कानाजुग कुंडल । इदरसे अधिको सुहावे ॥ अचला० ॥३॥ वदन अनोपम सोवन वरनव । सहस्र अष्ट लक्षण धरावे ॥ निरखत नयण चैण आति उपजे । विघन सहु टलजावे ॥ अचला० ॥ ४ ॥ कहे चोथमल गुरु परसादे । हीरदे हारख न मावे ॥ शातिकुवरजीको गावे हालरीयो । मनवंछित सुख पावे ॥ अचला० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्री शांतिनाथ प्रभुको स्तवन.

सिरी शांतिजिनेश्वर, सातावरतेजी आपका नामसे । मनमोहन गारा, जपता होवेछे मंगलाच्यारने ॥ यह–टेर ॥ आस्वसेन नृप अचलाजी अंगज, जन्म्या शांतिकुमार । साताकरी सवदेसमेजीकाइ मिरगी मार निवारहो ॥ सिरीशाति० ॥ साता० ॥ मन० ॥ जपता० ॥१॥ धु धु धप मप मादल वाजे,

नादकरे धुदकार । सुगुण सुज्यान सुगुण सु मही मा, वोलरह्या नरनारहो ॥ सिरी० ॥२॥ दामन दुमन तोडगासरे, स्वास खास खेगार । ताव तेजरो नेडोनही आवे, तुष्टेशांतिकुमार हो ॥ सिरी० ॥३॥ इखप्याला अमृत होजावे, अग्निहोवे छ्यार । वेरी दुस्मन चोरटासरे, नहीआवे घरद्वारहो ॥ सिरी०॥ ४ ॥ शांतिनामतो वसे हीयेवीच, भवदुख भजन हार । मगणशांति वरते निशदीन, शांतिउतारो पारहो ॥ सिरी० ॥ ५ ॥ दान शीयल तप भावना सरे, शिवपुर मारग च्यार । मानो म्हारी विनती जीकांई, वरते मंगलाच्यारहो ॥ सिरी०॥६॥ इति॥

श्री कुंथुनाथ प्रभुको स्तवन.

(चाल–रेखता)

कुंथुजिनराज तू ऐसो । नही कोइ देव तुज जैसो ॥ टेर–टेर ॥ त्रिलोकी नाथ तू कहीए । हमारी बाह दृढ गहीए ॥ कुंथु० ॥१॥ भवोदधि डूबतो तारो । कृपानिधी आशरो थारो ॥ भरोसो आपको भारी । विचारो विरुद उपगारी ॥ कुंथु० ॥ २॥ उमाहो मिलनको तोसें । न राखो आंतरो मोसें ॥ जैसी सिद्ध अवस्था तेरी । तैसी चेतनता मेरी

॥ कुंथु०॥३॥ करम भरम जालमें दपट्यो ।.विषय सुख ममतमें लपट्यो ॥ भ्रम्यो हु चिहु गतिके मांही । उदय कर्म भर्मकी छांही ॥ कुंथु ॥ ४ ॥ उदयको जोरहै जौलु । नही छुटे विर्षयसुख तौलु ॥ कृपा गुरुदेवकी पाई । निजातम भावना भाई ॥ कुंथु० ॥ ५ ॥ अजब अनुभुति उर जागी । सुरति निज रूपमें लागी ॥ तुमही हाम एकता जाणु । द्वेत भ्रम कल्पना मानू ॥ कुंथु० ॥ ६ ॥ श्रीदेवी सूर नृप नंदा । अहो सर्वज्ञ सुख कंदा ॥ विनयचद लीन तुम गुणमें । न व्यापे अविद्या उनमें ॥ कुंथु० ॥ ७ ॥ इति ॥

श्री मल्लिनाथ प्रभूकी लावणी

मल्ली जिन बाल ब्रह्मचारीहो। मल्लीजिन बाल ब्रह्मचारी ॥ कुम्भ पिता परभावति मैया। तिनकी कुमारी ॥यह—टेर॥ मा नी कुख कदरामाही । उपन्या अवतारी ॥ मालिनी कुसम मालनी वाछा । जननी उर धारी ॥ मल्लीजिन०॥१॥ तीणथी नाम मल्लीजिन थाप्यो । त्रिभूवन प्रियकारी ॥ अद्भूत चरित तुमारो प्रभुजी । वेद धरयो नारी ॥ मल्ली०॥२॥ परणन काज जानसज आये । भुपती

छय भारी ॥ महीलापुरी घेरी चौतरफे । सैन्या विस्तारी ॥ मल्ली०॥३॥ राजाकुभ प्रकाशी तुमपे । वितक विघस रा ॥ छउनृप जानकरी तुम परणन । आया अहकारी ॥ मल्ली० ॥ ४ ॥ श्रीमुख धीरप दीधी पिताने । राखो हुशियारी ॥ पुतळी एकरची जिनआकृत । पोथी ढकवाळी ॥ मल्ली०॥५॥ भोजन सरस भरी सा पुतळी । श्रीजिम सिणगारी ॥ भुपति छउ बुलाया मदिर । विच बहु दिन पारी ॥ मल्ली०॥६॥ पुतळीदेखी छउनृप मोह्या । अवसर विचारी ॥ ढाक उघाडलियो पुतळीको । भभक्यो अन्न भारी ॥ मल्ली०॥७॥ दुसह दुर्गन्ध सहिनही जावे । उठ्या नृप हारी ॥ तब उपदेश दियो श्रीमुखसु । मोहदसा टाळी ॥ मल्ली० ॥ ८ ॥ महा असार उदारक देही । पुतळी छव प्यारी ॥ सगक्रिया पटके भवदुःखमें । नाग नरक वारी ॥ मल्ली०॥९॥ नृप छउ प्रतिबोध मुनिहोइ । सिद्धगति संभारी ॥ विनयचद चाहत भवभवमें । भक्ति प्रभु थारी ॥ मल्ली०॥ १० ॥ इति ॥

श्रीमुनिसुव्रत स्वामीको स्तवन.

(सतीने शिरोमणी अजना, यह–देशी)

सिरी मुनिसुव्रत साहिबा । दीन दयाळ दे-

वातणा देवके ॥ तरण-तारण प्रभू तुम भणी । ऊज्वल चित्त समरूं नितमेवके ॥ सिरी मुनिसुव्रत साहिबा ॥ १ ॥ यह-टेर ॥ हुं अपराधी अनादिको । जनम जनम गुन्हा किया भरपूरके ॥ लुंटिया प्राण छे कायना । सेविया पाप अठार क्रुरके ॥ सिरी मुनि० ॥ २ ॥ पूरव अशुभ कर्तव्यता । तेहने प्रभु तुम न विचारके ॥ अधम उधारण बिरुद छे । शरण आयो अब किजीये सारके ॥सिरी० ॥ ३ ॥ किंचित पुन्य परभावथी । इणभव ओलख्यो जिनधर्मके ॥ निवर्तूं नरक निगोदथी । यहवो अनुग्रह करो परिब्रह्मके ॥ सिरी० ॥ ४ ॥ साधुपणो नहीं संग्रहो । श्रावक व्रत न किया अंगिकारके ॥ आदर्या तो न आराधियां । तेहथी रुलियो हुं अनंत संसारके ॥ सिरी० ॥ ५ ॥ अब समकित व्रत आदर्यां । तदापि आराधिक हो उतरु पारके ॥ जनम जिवित सफलो हुवे । इणपरे विनवुं वार हजारके सिरी० ॥ ६ ॥ सुमित नराधिप तुम पिता । धन धन श्री पद्मावत्ती मायके ॥ तस सुत त्रिभुवन तिलक तूं । वंदत विनयचंद सीस नमायके ॥ सिरी० ॥ ७ ॥ इति ॥

श्री नेमनाथजीकी जान.

नेमजीकी जान बनी भारी । देखनकु आवे नरनारी ॥ यह–टेर ॥ अनता घोडा और हाथी मनुष्यकी गीनती नही आती ॥ उटपर धजा जो फरराती । गमकसें फिरती फरराती ॥ दुहा ॥ समुद्रविजयजीका लाडला । नेम उनोका नाम ॥ राजुलदेकुं आये परणवा । उग्रसेन घर ठाम ॥ प्रसन्न हुई नगरी सब सारी ॥ नेमजीकी० ॥ नेमजीकी० ॥ देखनकु० ॥ १ ॥ कसुंबल वागा अतिभारी । कानमे कुडल छब न्यारी ॥ किलंगी तुर्रा सुखकारी । माल गले मोतीयनकी डारी ॥ दुहा ॥ काने कुडल झगमगे । सीस खुप झल्कार कोड भानुकी करू ओपमा । शोभा अधिक अपार ॥ नाजरता वाजा टक सागी ॥ नेम० ॥ २॥ छुटरही उनकी नरराई । व्यव्हनमें आये बडेभाई ॥ झरूख राजुल्दे आई । जानकुं देखी सुखपाई ॥ दुहा ॥ उग्रसेनजी देखके । मनमें करे विचार ॥ बहोत जीवकरी एकठा । वाडो भरयो तिणवार ॥ करीसब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरणपर आये । पशुजीव सबही

कुमलाये ॥ नेमजी वचन फरमाये । पशुजीव काहेकुं लाये ॥ दुहा ॥ याको भोजन होवसी । जान वामते एह ॥ यह वचन सुन नेमजी । थरहर कंपी देह ॥ भावसें चढगये गिरनारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीछेसुं राजुलदे आइ । हातजब पकड्यो छिनमांही ॥ काहा तुं जावे मोरी जाई । और-वर है तुज मोकलाई ॥ दुहा ॥ मेरे तो वर एकही । हो गया नेमकुमार ॥ और भुवनमें वर नही । क्रोड करो विचार । दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम०॥५॥ सहेल्या सबही समजावे । हिये राजुलके नही आवे ॥ जगत सब झुटो दरसावे । मेरे मन नेमकुमर भावे ॥ दुहा ॥ तोड्या कंकण डोरला । तोड्यो नवसर हार ॥ काजल टीकी पान सुपारी । त्याग्यो सब सिणगार ॥ सहेल्या सबही बीलखाणी ॥ नेम०॥६॥ तज्यासब सोलेसिणगारा । आभूषण रत्नजडीत सारा ॥ लगेमोहे सबही सुख खारा । छोडकर चली निरधारा ॥ दुहा ॥ मातपीता परीवारकु । तजता न लागी वार ॥ विजोग कर चली आपसु । जाय चढी गिरनार ॥ झुरती छोडी माँ प्यारी ॥ नेम०॥७॥ दया दील पशु-अनकी आई । त्याग जब कीनो छिनमांही ॥ नेमजिन गीरनारे

जाइ । पशुके बंधन छुडवाई ॥ दुहा ॥ नेम राजुल गिरनारपे । लीनो सजम जान ॥ नवलमल करी लावणी । उपज्यो केवल ज्ञान ॥ जीनोकी क्रिया शुद्धसारी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ इति ॥

श्रीपार्श्वनाथ प्रभूकी लावणी.

काजसिद्ध करदो मेरारे । सिरी तेवीसमा जिनराज, काजसिद्ध करदो मेरारे ॥ काजसिद्ध करदो, आच्छाजी मेरीजान काजसिद्ध करदो, भकाजी मेरे प्राण काजसिद्ध करदो मेरारे ॥ सिरी ॥ काज०॥ यह—टेर ॥ चाल—बदल ॥ काशी देश बणारसी नगरी । आश्वसेन तीहा राय ॥ वामाराणी है गुणखाणी । जिनके कुखे आय ॥ चाल—प्रथमकी ॥ लियाहो जन्म शुभ वेलारे ॥ सिरी० ॥१॥ चाल—बदल ॥ मातपिता मन हरखीया सरे । पाम्या सुख अथाग ॥ इंद्रादिकमिल महोछव कीनो । मेरू परवत जाय ॥ चाल—प्रथमकी ॥ गांवता गीत घने रारे ॥ सिरी० ॥२॥ चाल—बदल ॥ एकादिन गंगाजीपे आया । माताजीके लार ॥ नाग नागणी जलता देख्या । तापसके दरबार ॥ चाल—प्रथमकी ॥ लोकनहु होरह्या भेलारे ॥ सिरी० ॥ ३ ॥ चाल—बदल ॥ कौण नाग जलता लकडमें ॥ हामकुं आंख

दिखाय ॥ तव प्रभु लक्कड फोड वताया। देखे दुनीया आय ॥ चाल–प्रथमकी ॥ वृथा है तपना तेरारे ॥ सिरी० ॥ ४ ॥ चाल–बदल ॥ नाग नागणी बाहीर काढ्या। मेल्या स्वर्ग मझार ॥ धरणंदर पद्मावति हुवा। सुणीयो मंत्र नवकार ॥ चाल–प्रथमकी ॥ उठालिया तापस डेरारे ॥सिरी० ॥ ५ ॥ चाल–बदल ॥ कमठ मर हुआ मोघमाली प्रभुजी हुये अणगार ॥ मेह वरपायो प्रभुनही चलीया। रचीयो फंद अपार ॥चाल–प्रथमकी ॥ कमठ मन हुया अछेरारे सिरी० ॥६॥ चाल–बदल ॥ धरणंदर पदमावती आया। आसण अधर उठाय ॥ उपसर्ग टाल्यो प्रभुजीको। आया जिणदिस जाय ॥ चाल–प्रथमकी ॥ गावता गुण प्रभु केरारे ॥ सिरी० ॥७॥ चाल–बदल ॥ पार्श्व केवल पामीया सरे। तीरथ थाप्या च्यार ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका। इणमें फरक न सार ॥ चाल–प्रथमकी ॥ जगतमें किया उजालारे ॥ सिरी०॥८॥ चाल–बदल ॥ नाग नागणी जिम प्रभु तारया। तिम तुम हामकुं तार ॥ हीमत्तमल सुत कर्नारामकी। अरजी येही अवधार ॥ चाल प्रथमकी ॥ मिटादो भव फेरारे ॥ सिरी० ॥ ९ ॥ इति ॥

श्रीपार्श्वनाथ प्रभूको स्तवन.

वंदु पारस जीणंद । वंदु पारस जीणंद ॥ आश्वसेन राजा–वामादेवीका नंद ॥ यह–टेर ॥ दसमा स्वर्ग थकी चव्या जिनराज । जनमलियो सुखे काशीरे मांय ॥ वंदु० ॥ आश्वसेनराजा० ॥ १ ॥ जनम महोछव करताजी इंद । नामदीयो च्याको पारस जिणंद ॥ वंदु०॥२॥ कुमर पदेरामे पारस कुमार । मातपीता मन हरष अपार ॥ वंदु०॥३॥ मात तातकहे चालो जोगीके द्वार । देख जोगीको मान दीयो गार ॥ वंदु० ॥ ४ ॥ मान गळ्योने लज्या आइ अथाग । निकाल बताया नागनी नाग ॥ वंदु० ॥ ५ ॥ मत्र सुनायो हुवा महोटाजी सूर । आइने वंधा श्रीपारस हाजुर ॥ वंदु ॥ ६ ॥ तीस-वरसप्रभु रह्याघरवास । तज संसार लियो संजम [illegible]ल्हास ॥ वंदु ॥ ७ ॥ त्रियांसी दीवस प्रभु छद्मस्त जाण । प्रगटहुवो पिछे केवळ ज्ञान ॥ वंदु० ॥ [illegible] ॥ केवल महोछव करताजी देव । द्वादश प्रपदा [illegible]रे नीत सेव ॥ वंदु० ॥ ९ ॥ चोतीस अतिसे [illegible]ी शोभे जिनराज । वाणी पैतीस रह्या घन-[illegible] गाज ॥ वंदु ॥ १० ॥ मुखशोभे ज्याको पुनम [illegible] । नामलिया मन हरप आनंद ॥ वंदु० ॥ ११ ॥

निकले तलवार, सलुणा ॥ सुमती०॥८॥ पेलीजी मन चंचळ हूतो । पछे हुवो जाण, सलुणा ॥ टाकी हो लागी ग्यानकी । निकळी हीराकी खाण, सलुणा ॥ सुमती०॥९॥ वडो वडाइ नही करे। वडो नहीं बोले बोल, सलुणा ॥ हीरा मुखसें नहीं कहे । लाख हमारो मोल, सलुणा ॥ सुम०॥१०॥ कनक थाळ झणके नही । कासी बहु झणकाय, सलुणा ॥ उत्तम पुरुष बोले नही । निचे, भके जिमकाग, सलुणा ॥ सुम० ॥११॥ कुबुद्धि कपटी संसारमें । जैसो आफुका फूल, सलुणा ॥ उपर लाली चढ रही । मांहि विषको मूळ, सलुणा ॥सुम० ॥ १२ ॥ लखचोरयांसी ज्योनमें । पाम्यो मिनखा देह, सलुणा ॥ ऐसोजी सुपनो वहीगयो । फिर चैरयांसी मांहे सलुणा ॥ सुम० ॥ १३ ॥ दोरी गळीया संचरे । मेह आकाशे जाय, सलुणा ॥ वैरागी विरच्या पछे । न-रहे कोड उपाय, सलु णा ॥ सुम० ॥ १४ ॥ सो वाडी, सो मिरगला । सबे सरिखा नही होय. सलुणा ॥ कहोकीन ओ-ळंभा दीजीये । कह्यो कठालग जाय, सलुणा ॥ सुमती० ॥ १५ ॥ हंसाजी भुग्या भावका । हुकारे उडजाय, सलुणा ॥ निगुणो नपुतो कागलो । फिरफिर गुटा खाय, सलुणा ॥ सुमती०॥ १६॥

हंसा सरवर नहीछोडीये । जबलग खारो न होय; सलुणा ॥ डाबर डुबर डुंडता । भलोनही कहेसी कोय. सलुणा ॥ सुमती०॥ १७ ॥ सरवर हंस म नायलो । स्नेहथकी अबे होय, सलुणा ॥ जिहां बेठा तिहां उजला । अणउगो उजास, सलुणा ॥ सुमती०॥ १८ ॥ काइकरू मनायके । काइकरू आव होड, सलुणा ॥ सरवरमें जो जलहोसीं । आसीलाख कीरोड, सलुणा ॥ सुमती०॥ १९ ॥ हंसाने सरवर घणा । फुलघणा भमराय, सलुणा ॥ सुगुणाने सज्जन घणा । गया देश विदेश, सलुणा॥ सुमती०॥२०॥ हसा बुगलाके माहुणा । काइक दिनको फेर, सलुणा ॥ बुगलो तलाई गीररह्यो । रह्यो पाख पसार, सलुणा ॥ सुमती०॥२१॥ ओछी तलाइ बुगला घणा । आवे सरवर आया हस, सलुणा ॥ नगर तलाई गारवो । जिहां सरवर तिहां हस, सलुणा ॥ सुमती० ॥२२॥ चदोजी चदन सु मानसा । तिनुको एक स्वभाव, सलुणा ॥ जिहांर गलिया संचरे । तिहांर करे उजास, सलुणा ॥ सुम०॥२३॥ काग कुत्ता कुमानसा । तिनुको एक स्वभाव, सलुणा ॥ जिहांर गलिया संचरे । तिहार करे विनास, सलुणा ॥ सुम०॥२४॥ केशर दरपे

शाईसुं । कस्तुरी डरपे हिंग, सलुणा ॥ सुगुणी डरपे निगुणाधकी ॥ मतकरो कोइ कुसग, सलुणा ॥ सुम०॥ २५ ॥ करो दलाली धरमकी । दिपे अधिकी जोत, सलुणा ॥ कृष्ण महावल जाणजो । वांध्यो तीर्थंकर गोत, सलुणा ॥ सुम०॥२६॥ ज्याने गुरु पुरामिल्या । तिणने सुखसंपत होय, सलुणा ॥ वचनका वाऽ्या जे रह्या । जिम रणमें रचपुत, सलुणा ॥ सुम०॥२७॥ हीरा रतनाको पारखु । हुवो आनंती वार, सलुणा ॥ धरम रतनको पारखु । कोइक विरलो सूर, सलुणा ॥सुम०॥२८॥ धरम धरम सवकोइ कहे । पाप नही वांछे कोय, सलुणा ॥ जात नही जाने जीवकी । धरम किणविध होय, सलुणा ॥ सुम०॥२९॥ दलवादल पाछा फिरे । फिरे नद्याको नीर, सलुणा ॥ उत्तम वोल्या फिरे नही । जो पश्चिम उगेसूर, सलुणा ॥ सुमती०॥ ३० ॥ दान शिल तप भावना । धरमका च्यार प्रकार, सलुणा ॥ जे नरनारी आदरे । ते पामसें भवको पार, सलुणा ॥ सुम०॥३१॥ दयाधरम नीत किजीये । योही आरथ विचार, सलुणा ॥ इणलोके सुख भोगवे । परलोक सुखहोय, सलुणा ॥ सुमती० ॥ ३२ ॥ इति ॥

पंच तीर्थको स्तवन.

तुम तरण तारण, भव निवारण, भविक मन आनंदनं ॥ श्री नाभी नंदन, जगत वंदन, श्रीआदिनाथ-निरंजनं ॥१॥ श्रीआदिनाथ, अनाद सेवूं, भाव पद-पूजा करूं ॥ कैलास गिरपर, ऋषभ जिनवर, चरण कमल-हृदय धरूं ॥ २ ॥ ध्यान-धुपे, मन पुष्पे, आष्ट करम, विनासनं ॥ क्षमा जाप-सतोष सेवा, पूजुदेव-निरंजनं ॥३॥ तुम अजीतनाथ, अजीत जीत्या, अष्ट करम-महाबली ॥ प्रभु विरुद सुणकर-शरण आयो, कृपा कीजो तुम धणी ॥ ४ ॥ तुम चद्र पूरण, चद्र लंछन, चद्रपुरी-परमेश्वरं ॥ महासेन नदन, जगत वंदन, चंद्रनाथ-जिणेश्वर ॥ ५ ॥ तुम बालब्रह्मा, विवेक सागर, भवीक मन-आनदनं ॥ श्रीनेमीनाथ, पवित्र जिनवर, तीमर पाप-विनाशन ॥६॥ जिन तजीहे राजुल, राजकन्या, कामसेना-वशकरी ॥ चारित्र रथपर, चढे दुलहे, शाम सिव-सुंदर-वरी ॥७॥ कंदर्प दर्प, सुसर्प लछन, कमठ सठ-निरमल कीयो ॥ श्री पार्श्वनाथ, सुपुज्य जिनवर, सकल सिघ्र-मंगल कीयो ॥ ८ ॥ तुम कर्मघाता, मोक्षदाता, दीन जाण-दयाकरो ॥ श्री सिद्धार्थ नंदन,

जगत वदन, प्रभु महावीर–मयाकरो ॥९॥ इति ॥

गजसुखमाल मुनिको चोक.

सार धरम है प्रथम साधुको, दुकर खीम्या करणे को।जिनवर फुरमावे, जगतमें मारग है यो तीरणे को ॥यह–टेर॥ द्वारामती नगरीके अंदर, कृष्ण माहाराजा राजकरे । है पीता उनोके, वसुदेव देवकी मात सीरे ॥ तसनंदन गजसुखमाळ ब्याव क्रिन्याणु, अंतेउर आन धरे ॥ सोमी सोमल कन्या, रूपदेखी कृष्णजी महेलधरे ॥ चाल–बदल ॥ सोरट –दुहाकी ॥ तिणसमें नेम समोसरयां । नंदन वन्न मझारजी ॥ माधव वंदण चालीया । सगलियो गज कुमारजी ॥ १ ॥ वाणी सुणी श्रीनेमकी । गज लियो संजम भारजी ॥ महोछवकियो श्रीकृष्णजी । अंतगडमें आधिकारजी ॥ २ ॥ चाल-बदल, लावणी–छदकी ॥ पुछेजिनवरकुं, ऐसी जो दिलमें आई ॥ भला पुछे प्रभुजीकुं, ऐसी जो मनमें आई ॥ मने उपर वाडाकी सेरी देवो दिखलाई॥ मने० ॥ जिन भीक्षुपडिमा द्वादशमी फुरमाई ॥ भला जिन भीक्षुपडिमा द्वादशमी बतलाई ॥ चलगया मसाणाके मांय–ध्यान दीयो ठाई ॥ उठगया मसाणाके बीच–ध्यान दीयो ठाई ॥ चाल–दौड ॥ सो-

मल आयो तिणवार। देखी गज आणगार ॥ शुषे स्वान गज लार । जैसा कोप किया ॥ जैसा०॥१॥ बिन गुन्हे मेरीवाल । तु तो छोडी ततकाळ ॥ सीर बाधी माटी पाल। खीरा मेल दीया ॥ खीरा० ॥२॥ देखो-हुता सुसराने जमाई । सगपण गीन्यो नही काई ॥ मुनी खीम्या चित्तलाई । सम रसकुं पीया ॥ सम० ॥ ३ ॥ दोयघडीकेरे ध्यान । मुनी ध्यायो शुकल ध्यान ॥ पाया आमर विमाण । अंते ग्यानालिया ॥ अते०॥४॥ चाल-बहुल, आल्वलकी ॥ लाखा भवाका देना चुकाया । सोचकिया नही मरणेका ॥ जिनवर फुरमावे । जगतमें मारगहै यो तिरणेका ॥ सार०॥ दुकर०॥ जिनवर०॥ जगतमें० ॥ १ ॥ इति ॥

परदेशी राजाको चोक.

सार धरम है प्रथम साधुको । दुक्कर खिम्या करणे को ॥ जिनवर फुरमावे । जगतमें मारग है यो तिरणेको ॥ यह-टेर ॥ परदेशी परभव नही माने, मिथ्या मतिके संग लागो । एक केशीमुनिजी, गुरु मिलगये उनकु वड भागी ॥ प्रश्न इग्यारे पुछया लाळजी, जिन दर्शनके वैरागी । एक वेलतो वेले, करे पारणा राज-तणी तृष्णा

त्यागी ॥ चाल—बदल ॥ सोरट—दुहाकी ॥ राय तणी राणी हुती । सुरीकंता पटनारजी ॥ चित्त परधानथो सारथी । एक सुरीकंत कुमारजी ॥१॥ स्वारथकी तो है सगाई ॥ देखो इन संसारजी ॥ राणी राजाकु मारावाको । करतहै उपचारजी ॥२॥ चाल-बदल, लावणी—छदकी ॥ हुयो धरम गेलडो कंत राज तज दीनो । भला हुयो धरम गेलडो पती राज तज दीनो ॥ जब कव्वरकुं बुलवाय मारण मन कीनो ॥ जब०॥ यह वचन मातका, सुणीने मौन धरलिनो॥ भला यह वचन मातका, सुणीने मौन धरलिनो ॥ सुण आप गयो मुकाम, काम नही कीनो ॥ चाल—दौड ॥ जब राणीने विचारी। कुमर करेगो जहारी ॥ जाय राजापे पुकारु । राणी एम कह्यो ॥ राणी०॥१॥ थाको पारणो माहाराज । म्हारे मेहला करो आज ॥ राजा जाण्यो नही आकाज । आर्जे मानलीवी ॥ आर्जे०॥ २ ॥ राणी वनायाहे माल । मांहे जेहेर दीयो घाल ॥ राजा जाण्यो अण पहुंतो काल। जाण्यो भूप सही ॥ जाण्यो०॥३ ॥ छेहला कालके तो माय । राणी डुपो दीयो आय ॥ तोही राजा डिगीयो नाय ॥ खिम्या तीखी रही ॥ खिम्या०॥ ४ ॥ चाल बदल,

प्रथमकी ॥ सुरीयाभ भव करीने, मोक्ष जावेगा। काम नही भव फीरणे का ॥ जिनवर फुरमावे, जगतमें मारग है यो तिरणेका ॥ सार०॥ दुकर०॥ जिनवर० ॥ जगतमें० ॥ २ ॥ इति ॥

खंधक मुनिको चोक.

सार धरम है प्रथम साधुको, दुकर खिम्या करणे को। जिनवर फुरमावे, जगतमें मारग है यो तिरणे को ॥ यह-टेर ॥ नगरी सावथी कनक केतुकी, मृघावती है पटराणी । सुत खधक कवरजी, जिणोके फरजदहै उत्तम प्राणी ॥ जोवन वयमें परण्या लालजी, एक दिवसमें गुरु वाणी । सुण हुवा वैरागी, जिनोने संजम लियो मनशुद्ध आणी ॥ चाल-बदल ॥ सोरट-दुहाकी ॥ माइतो हाट्ट कीनो घणो । मन्यो नही लिगारजी ॥ सुभटदिया संग पाचसो । वे चाले छाने लारजी ॥१ ॥ बहेन तणे पुर आवीया । मुनी करत एकल विहारजी ॥ कुरसीयो राजा कुथी नगरी । आया शहर मझारजी ॥२॥ चाल-बदल, लावणी-छदकी ॥ राजाने राणी, रामत गोखे करता । भला राजाने राणी, रामत गोखे करता ॥ राणी देख्यो निजभ्रात, नैण जल ढलता ॥ राणी० ॥ राजा चिंते-इसका,

ज्यार पुरुष कोइ नरते ॥ उठ चल्यो सभाके विच, कोप दिल् धरते ॥ चाल–दौड ॥ जब नफ्फर कुं बुलवाय । मुनिराजकु मंगवाय ॥ समशाणकु भिजवाय । ऐसा हुकूम कीया ॥ ऐसा० ॥ १ ॥ तिखा पाछणाकी झाल । सब उतारीहे खाल ॥ मुनी नाकसल नही घाल । लोही वेह गया ॥ लोही०॥२॥ मुनी परिसा सहे । सगपण नही कहे ॥ खिम्या करी सीव लहे ॥ अंते ग्यान लिया ॥ अंते०॥३॥ जब काचराको विचार । राजा राणी खेवोपार॥ मरगये आणगार । वडा जुलूम कीया ॥ वडा०॥४॥ चाल–बदल, प्रथम–सुरुकी ॥ सुभट पाचसो दिक्षा लिवी । सोचाकिया नृप डरनेका ॥ जिनवर फुरमावे, जगतमें मारग है यो तिरणेका ॥ सार० ॥ दुक्कर०॥ जिनवर०॥ जगतमें० ॥ ३ ॥ इति ॥

धन्ना मुनिकी सज्झाय.

(कनकने कामणी जगमें फास हे, यह–देशी.)

काकंदी नगरी भलीसरे । जितशत्रु तिहां राय ॥ वाग वगीचा वावडी सरे । सुदर शोभा थाय ॥ देखंता मनमोहीले सरे । नैणाजाय लोभाय हो॥१॥ तू सुण म्हारी जननी । आज्ञा देवोतो संजम आदरू ॥ यह–टेर ॥ भगवंत आया वागमें सरे । ध

गामुनी परिवार ॥ खवरहुई जब शहरमें सरे ।
वंदणचल्या नरनार ॥ धन्नोजीभी आवीया सरे ।
कर बेठा नमस्कारहो ॥ तू सुण क्षारी जननी । आज्ञा०
॥२॥ भगवत दीधी देशना सरे । सवी जीवा हि-
तकार ॥ वाणीसुण वैरागीया सरे । योसंसार अ-
सार ॥ हाथजोडके धन्नोकहे सरे । क्षे लेस्युं संज-
मभारहो ॥ तू सुण क्षारी जननी । आज्ञा० ॥ ३ ॥
जिम सुख होवे तिमकरो सरे । भगवतदीयो फुर-
माय ॥ घरआइ धन्नोकहे सरे । आज्ञादेवो मोरी
माय ॥ वातसुणी पुत्तरतणी सरे । मातागई मुर-
छाय हो ॥ तू सुण क्षारी जननी । आज्ञा० ॥ ४ ॥
चेतनहुइ माताकहे सरे । सुणपुत्तर मेरीवात ॥ तूं
एकाएकी नानड्यो सरे । छोडीने किमजाय ॥ ने-
णाथी क्षरणा झरे सरे । रोतीवोले माय हो ॥ तूं सु-
ण नानडीया । दिक्षामतलीजो म्हाने छोडने ॥
यह–टेर ॥ बावीस परिसह जितना सरे । करनो
उग्रविहार ॥ दोषबंयालीस टाळने सरे । लेनो नि-
रदोप अहार ॥ घर घर फिरणो गौचरी सरे । स-
हेनो कष्ट अपार हो ॥ तू सुण नानडीया । दीक्षा०॥६॥
कोमल केश सुहामणा सरे । ज्याको करनो लोच ॥
पाय अणत्राणे चालणो सरे । यो क्षाने घणो सो-

च ॥ सीत कालमें शी पडे सरे । उष्णेउष्ण अलो-
च हो ॥ तू सुण नानडीया ॥७॥ क्रोडबत्तीससें सो-
नैया सरे । भरीयाछे भंडार ॥ सुन्दर रूप सुहाम-
णो सरे । शोभे बत्तीस नार ॥ हात जोडके विन-
वे सरे । मतछोडो निरधार हो ॥ थें सुणो प्रीतम-
जी । दिक्षामतलीजो ह्मांने छोडने ॥ यह—टेर ॥ मे-
हला मांहे कामणी सरे । उभीकरे पुकार ॥ मत-
छोडो थे साहिबा सरे । में छां अबला नार ॥ सा-
धूपणो दुकर घणो सरे । चलणो खांडा धार हो ॥
थें सुणो प्रीतमजी । दिक्षामत० ।९॥ धन्नोकहे सुणो
कामणी सरे । योसंसार असार ॥ लक्ष चौरचा-
सीमें भमीयो सरे । जीव अनंती वार ॥ अबके
अवसर आवीयो सरे । हो लेशा संजम भार हो ॥
थें सुणो गुणवंती । आज्ञा देवातो संजम आदरां
॥ यह—टेर ॥ १० ॥ स्त्रियानें समजायने सरे । माता
पासे आय ॥ जावे सो आवे नही सरे । भगवंत
दीयो फरमाय ॥ झट आज्ञादेवो मायडी सरे ।
खिण लाखीणी जाय हो ॥ तू सुण म्हारी जननी ।
आज्ञा० ॥ ११ ॥ आज्ञा लेइने चालीया सरे । कर
मोटो मंडाण ॥ जाय सुपीया जिनवर कने सरे ।
अब तारो श्रीभगवान॥यो पुत्तर वल्लभ घणो सरे।

सरे। सुण्यो थाने आणहो ॥ थें सुणो जिनवरजी । दिक्षा देवोनी म्हारा पूतने ॥ यह–टेर ॥ माला-मोती खोंलीया सरे । खोल्या सब शृंगार ॥ पंच-मुष्टी लोचन कर्यो सरे । माता झेल्यो खोळा मझार ॥ धन्नाजी संजम आदर्योसरे । छोड्योसब संसारहो ॥ वैरागी बनडा, मुक्ती जावाने हुवा तैयारजी ॥ यह–टेर ॥ १३ ॥ बेले बेले पारणा सरे । जाव जीवलग धार ॥ अतर तो पाडू नहींसरे । अयबिल लुखो अहार ॥ नवमहीनालग तपतप्या सरे । पहोता स्वार्थसिद्ध मझार हो ॥ वैरागी बनडा । मुक्ती० ॥१४॥ गीतार्थ ये गुरुभला सरे । रत्नचंदजी महाराज ॥ जव्हारलालजीकी जय-भणूसरे । सारो आतम काज ॥ हीरालाल इणपर कहेसरे । बनधन्नामुनीराजहो ॥ वैरागी बनडा । मुक्ती० ॥ १५ ॥ उगणीसें बत्तीसमें सरे । गढ चितोड मझार ॥ वद बारस वैशाखकी सरे । वार भलो दीतवार ॥ ढाळजोडी धन्नातणी सरे । सुत्त-रके अनुसारहो ॥ वैरागी बनडा, मुक्ती०॥१६॥ इति॥

श्री सिद्धपद स्तवन.

श्री गौतमस्वामी पूछाकरे । विनयकरी सीस नमाय, प्रभुजी ॥ अविचल स्थानक होसुन्यो ।

कृपाकरी मोय बतावो; प्रभुजी ॥ शिवपूर नगर सुं-हामणो ॥ यह–टेर ॥ १ ॥ आठकर्म अलगाकि-या । सार्‍या आतमकाज; प्रभुजी ॥ छुटा संसा-रका दुःखथकी । ज्याने रहेवाने कौनठाम ॥ प्र० ॥ शिव० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्ध लोकमा । सिद्ध-सिलातणो ठामहो, गौतम ॥ स्वर्गपुरीका ऊपरे । तेहना बारेनामहो ॥ गा० ॥ शिव० ॥ ३ ॥ लाख पैतालीस योजन । लाम्बी पोहली जाणहो ॥ गौ०॥ आठ योजन जाडी बीचे । छेहडे माखी पख ज्यूं जाणहो ॥ गौ० ॥ शिव० ॥ ४ ॥ उज्वल हार मो त्यातणो । गौदुग्ध शंख प्रमाणहो ॥ गौ०॥ ते थकी उजली अतिघणी । उल्टो छत्र संठाणहो ॥ गौ० ॥ शिव०॥५॥ अरजण स्वर्ण सम दीपती । घटारी मठारी जाणहो ॥ गौ०॥ स्फटिक रतनथकी निर-मली । सुंवाली अत्यन्त वखाणहो ॥ गौ०॥ शिव० ॥६ ॥ सिद्धशिला उल्लंघी गया । अधर रह्या सि-द्धराजहो ॥ गौ० ॥ अलोकसु जाई आड्या । सा रचा आतम काजहो ॥ गौ०॥ शिव०॥ ७ ॥ जनम नहीं, मरण नहीं । नहीं जरा, नही रोगहो ॥ गौ० ॥ वैरी नहीं, सज्जन नही । नहीं सजोग विजो-ग ॥ गौ० ॥ शिव० ॥ ८ ॥ भ्रख नहीं, तिरखा

नहीं । नहीं हरष, नहीं शोकहो ॥ गौ० ॥ करम नहीं, काया नहीं । विषय रस नहीं योगहो ॥ गौ० ॥ शिव०॥ ९ ॥ शब्द रूप रस गन्ध नहीं । नहीं फरस, नहीं वेदहो ॥ गौ०॥ बोले नहीं, चाले नहीं । मौनपणु नहीं खेदहो ॥ गौ० ॥ शिव० ॥ १० ॥ ग्राम नहीं, नगर नहीं । वस्ती नहीं उजाडहो ॥ गौ० ॥ काळ तिहां वरते नहीं । नहीं रात दिवस तिथी वारहो ॥ गौ ॥ शिव०॥ ११ ॥ राजा नहीं, परजा नहीं । नहीं ठाकर नहीं दासहो ॥ गौ० ॥ मुक्तिमांहे गुरुशिष्य नहीं । नहीं लघु वडाईको वासहो ॥ गौ०॥ शिव०॥ १२ ॥ अनंता सुखमांहे झिली रह्या । अरुपी ज्योत प्रकाशहो ॥ गौ०॥सहु कोइने सुख सारीखा । सघळाने अविचळ वासहो ॥ गौ० ॥ शिव०॥ १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया । वळी अनता जायहो ॥ गौ० ॥ अवर जगा रूंधे नहीं । जोतमें जोत समायहो ॥ गौ०॥ शिव०॥१४॥ केवलज्ञान सहित छे । केवल दर्शन खासहो ॥गौ०॥ क्षायिक समकित दीपती । कदेही न होवे उदासहो ॥ गौ०॥ शिव०॥१५॥ सिद्ध स्वरूप जे ओळखे । आणी मन वैरागहो ॥ गौ०॥ शिव रमणी वेगी वरे । कविकहे सुख अथागहो ॥ गौ०॥शिव०॥इति॥

सोळा स्वप्नकी लावणी.

दुहा—सासण नायक सुरतरु । भय भंजण भगवंत ॥ त्रिशलानंद दिनंद सम । प्रणमुं मन धरीखंत ॥ १ ॥ वली प्रणमुं गौतम गुरु । तप संजम दातार ॥ तास प्रासादें वर्णवु । स्वप्न सोले अधिकार ॥२॥ पाडलिपुर नगरविषे । चन्द्रगुप्त राजिंद ॥ बारा व्रत धारक गुणी । परजाने सुखकंद ॥ ३ ॥ चउदें पूरव ज्ञान शुद्ध । भद्रबाहु मुनिराज ॥ समोसरयां उद्यानमें । तारण तरण जहाज ॥ ४ ॥ पख्वी पोषाके विषे । देख्यां स्वप्ना सोल ॥ पूछे नृप करजोडीने । अर्थ कहो मुनि खोल ॥ ५ ॥ इति ॥

[अगडदम अगडदम—वाजे चौघडा, यह—देशी.]

कल्पवृक्षकी शाखा तूटी, अर्थसुणो यह स्वपनेका । अब जो राजा होवेगा कोइ, संजम वो नहिं लेनेका ॥ दुजे अस्त भया सूर्य अकालें, भेदसुणो अब इस्का सही । पंचम आरे जन्मालियाहे, उन्कु केवल ज्ञान नहीं ॥ नहिं मनपरजव अवधि पूरण, ए अंधकार भया भारी ॥ भद्रबाहु मुनिकहे भूपसू, पंचम आरो दुःखकारी ॥

यह–टेर ॥ चाद देखा तुम चालणी जैसा, तिसरे सुपनाके माही । अलग अलग समाचारी होवेगा, बोल फरक कछु दरसाई ॥ भूत भूतणी नाचते हिलमिल, देखा चौथे सुपने माही । देव गुरु धर्म खोटा जिनकु, लोक मानेगा अधिकाइ ॥ दया–धरमपर बहोत जलेंगे, थोडे जैनधर्म धारी ॥ भद्रबाहु०॥ पचम–आरो०॥ २ ॥ पांचमें देखा सर्प भयकर, बारे फणकर फुकारे । कितेक साल पिछें काल पडेगा, बारे बरस लग भयकारे ॥ उत्तम साधु कर सन्थारा, आतम कारज सारेगा । कायर साधू सो ढीले पडेंगे, हिंसाधर्म विस्तारेंगे ॥ खोटा दे उपदेश लोकोकुं, होवेगा केइ घरबारी ॥ भद्रबाहु० ॥ ३ ॥ छट्टे स्वपने देवविमाणकुं, आता सो देखा फिरतां । जिसका अर्थ सुणो तुम राजिंद, दिलअन्दर आणी थिरता ॥ जघाचारण लब्धिधारक, और–विद्याचारण जाणो । यह दो लब्धिके है धारक, ऐसें मुनिश्वरकी हाणो ॥ वैक्रिय और–आहारिककी लब्धि, यह भी विछेदेगा सारी ॥ भद्र० ॥ ४ ॥ विकसा कमल–उकरडी उपर, जिस्काभेद सुणो भाई । च्यार वर्णमें माहाजनके घर, धरम रहेगा अधिकाई ॥ शास्त्रकी रुचि रहेगी

थोडी, सुणतां निद्रालेवेगा । स्तवन सज्झाय और-ढाळ चोपाइ, जिसमें बहुत खुश रहेवेगा ॥ प्रतिबोध पण इस्में पाकर, होवेगा संजम धारी ॥ भद्र० ॥५॥ आज्ञाका चमत्कार आठमें, भेद सुणो इस्का नीका । उद्योत होवेगा जैनधरमका, बाकी मिथ्या मत होवे फीका ॥ समुंदर सूको तीन दिशा पर, दक्षिणदिश डोहोलो पाणी । दक्षिणदिशामें धरम रहेगा तीन दिशा रहेगा हाणी ॥ पचकल्याणिक हुये जिणपुरमें, धरम हानि जिहां उच्चारी ॥ भद्र० ॥६॥ दशमें सुवर्णकी थाली जिसमें, कुत्ता देखा खीर खाता । उत्तमकुलकी दौलत है सो, जावेगी मध्यम हाता ॥ नट खट मौदा चोर ठगारा, धूरत होवेगा धनवाला । साहुकार सो झुरेगा दिलमें. कहे न शके मनकी ज्वाका ॥ धन सम्पत सज्जनकी हाणी, सत्यवादी कम नर नारी ॥ भद्र०॥७॥ हस्तीके पर ग्यारमें स्वपने, देखा बंदरकू बैठा। नीच राजा सो मालिक होवेगा, उच्च राजा रहेगा हेटा ॥ बारमें स्वपने देखा तुमने, दरियो मरजादा छोडी । बेटा बेटी मात पिताकी, मरजादा राखे थोडी ॥ बहु न करेगी कहेणां, उलटी दुःख देगी भा-

॥ भद्र० ॥ ८ ॥ लाच ग्राही सो क्षत्री होवेगा,
चन देकें नट जावेगा । दगादार विश्वासघाति
नर, सच्चे नरकु हटावेगा ॥ भला सक्सका आ-
दर कमती, पापी आदर पावेगा । गुरु गुराणी-
की चेला चेली, सेवा भक्ति कम चहावेगा ॥ अ-
पनी वडाई करेगा मुखसें, गुरुकु होवेगा दुःख-
कारी ॥ भद्र० ॥ ९ ॥ जोत्या देखी स्वपने तेरमें
वाछरुको महारथ मांही । नादान उमरके धरम
करेगा, संजम लेवेगा उलसाई ॥ लज्जासुं तप
संजम पाली, तप जपमें चित्त देवेगा। वुड्ढा धेटा हो-
वेगा धर्ममें, आलस अधिको रहेवेगा ॥ सरिखा
नहि सब लडका बुड्ढा, समुचय भाव कह्या जहारी
॥ भद्र०॥ १० ॥ रत्नकी क्रांति मंदी देखी, चउ-
दमा स्वपनामें जाणो । भरतक्षेत्रका साधुसतको
हेत इकलास थोडो मानो ॥ क्रोधी केशी अरु अ-
भिमानी, अपनी वात जमावेगा। भलीसीख
देवेगा कोइ उस्का अवगुण बतावेगा ॥ अल्प
वेगा संजमवता, होवेगा वहोतसा लिंगधारी
भद्र० ॥ ११ ॥ राज-कुवर सो चढ्या पोठि
देखा स्वपने पदरमें । राजा जैनधरम तज देवे
राचेगा मिथ्या करम ॥ वात करे जो सचाव

उस्की थोडी मानेगा । झूटेकी परतीत करेगा, खोटेका पक्ष ताणेगा ॥ धर्मीपुरुषकी करेगा थ॰ पापीका आदर भारी ॥ भद्र० ॥ १२ ॥ हस्ती देखे सोळमें, विन मावत आपस मांहि वारंवार दुष्काळ पडेगा, मन चहाया वर्षा नाहि ॥ मातपितागुरु वातको करतां, विच विच वात क रेगा छोटा । भाइ भाइमें सम्पत ओछी, बोलेग निर्थक खोटा ॥ पिता पक्षको आदर ओछो, यापक्षसुं करेगा यारी ॥ भद्र० ॥ १३ ॥ कायदा वाळा प्रमाणिक न्यायी, गुणिजन थोडा होवेगा झगडा तंटा निरर्थक करकें, राजमाही धन ख वेगा ॥ कहेण न माने भला सकसकी, फिर-पी पस्तावेगा । एकविश हजार वरसलग गाजि ऐसी रीत कर जावेगा । अर्थ सुणी यह सोले स मका, राजा हुया दृढव्रतधारी ॥ भद्र०॥१४॥ सं उंगणीशें साल मेंतिर्मेका, फागण वदि ग्यारस अ । तिलोक ऋषि कहे स्वप्न लावणी, ग्राम कड बणाई ॥ पंचम आरो दुःखम नामें, दुःखहै इण अधिकाई । धरमध्यान और-समता राखे, उन सुख समजो भाई ॥ ऐसो जाणकें करजो सुकृ उतरोगे भवजल पारी ॥ भद्रबाहु० ॥१५॥ इति

परम पूज्य पाद श्री कहानजीऋषिजी महाराजका
आदि (प्रथम=मूळ) सम्प्रदायकी

संक्षिप्तमें गुरु पट्टावली का सारांस.

(चाल–हरी गीत–छन्द.)

श्री महावीरके पाटानु पाट । ज्ञानी हुवा महा मुनी॥
लुकागच्छ–लवजी ऋषि । क्षमावंत महा गुणी ॥१॥
तस्य शिष्य ऋषि सोमजी । शुद्ध ज्ञानकी प्रकाशी ध्वनी॥
पुज्यश्री कहानजी ऋषिकी । सम्प्रदाय आदि से सुनी।२।
तस्य शिष्य ताराऋषिजी । उत्कृष्टा हुवा गुण मणी ।
तस्याशिष्य कालाऋषिजीकी । दयाधर्ममें महिमा घणी ।३।
तस्य शिष्य बक्षुऋषि का । धनूजीऋषि शिरोमणी ॥
तस्यशिष्य पूज्य यवताऋषिजीने । तारेबहु प्राणीमणी॥४
तस्य सुशिष्य कवी शिरोमणी । मम दादा गुरु जाणिये ॥
पुज्यश्री तिलोक ऋषिजी । परमपडित वखाणिये ॥५॥
तस पाटवी कृपानिधान । श्री गुरु मम ध्याइए ॥
परम पुज्य बाल ब्रह्मचारी । सतशिरोमणी गाइए ॥६॥
नाम आपको रत्नऋषीजी। ज्ञानागार गुण चिंतामणी॥
तस्य तणो शिशु दगडुऋषि। चरण वदे मिती घणी ।७।


इतिश्री नवम प्रकरण समाप्त.

श्रीजिनेश्वराय नमो नमः

प्रकरण–नववा.

धर्मरुची मुनिकी सज्झाय.

चंपा-नगर निरोपम सुंदर । जठे धर्मरुची रिख आया ॥ मास पारणे गुरु आग्याले । गोचरिया सिधायाहो ॥ मुनिवर–धर्मरुची रिख वंदू ॥ श्रृ–टेर॥ १॥ भव भव पाप निकाचित संचित । दूकृत दूर निकंदुहो ॥ मुनिवर–धर्मरुची० ॥२॥ निचीदृष्टि धरण सिर शोभे । मुनिश्वर गुणभंडारे ॥ भीक्षा अटल करता आया । नागेसरी श्रीधर द्वारेहो ॥ मुनिवर–धर्म० ॥३॥ खारो तुम्बो जहेर हलाहळ । मुनिश्वरने वहेरायो ॥ सहेज उखरडी आई हमघर । कहो बाहेर कुण जावेहो ॥ मुनि० धर्म०॥४॥ पूरण जाणी पाछावळिया । गुरु आगे आय धरीयो ॥ कोण दातार मिल्यो रिख तोने । पूरण पातर भरियोहो ॥ मु०॥ध०॥५॥ ना ना करतां मुजने वहिरायो । भाव उलट मन आणी ॥ चाखीने गुरु निरणय कीधो । जहेर हलाहल जाणीहो ॥ मु०॥ध०॥६॥ अखज अभोज कुटक सम

खारो। जो मुनिवर तुं खासी ॥ निरवळ कोठो जहेर हळाहळ। अकाले मरजासीहो ॥मु०॥घ०॥ ७॥ आग्याले परठवणने चाल्या। निरवद ठोर मुनिआया॥ बिन्दूएक परठ्या उपर। किडिया वहू मरजायाहो ॥ मु०॥घ०॥ ८॥ अल्प आहारथी एहवी हिंसा। सर्वथी अनरथ जाणी ॥ परम अभयरस भावउलट धर। किडियाकी करुणा आणीहो ॥ मु०॥ घ०॥९॥ देह पडंता दया जो निपजे। तो मोटो उपगारो ॥ खीर खांड सम जाणी हो मुनिश्वर। ततक्षण करगया आहार हो ॥ मु०॥ घ०॥१०॥ प्रवल पीडा शरीरमें व्यापी। आवणकी शक्ति जो थाकी ॥ पादूगमन करथो सन्थारो। समता दृढता राखीहो ॥ मु०॥ घ०॥११॥ सर्वार्थसिद्ध पहुंता शुभ जोगे। महा रमणीक विमाणे ॥ चउसठ मणको मोती लटके। करणीके परमाणेहो ॥ मु०॥ घ०॥१२॥ खवर करणने मुनिश्वर आया। रिखजी काळज कीधो ॥ धींग धींग इण नागसरीने। मुनिश्वरकुं विप दीधोहो ॥ मु० ॥ घ० ॥ १३ ॥ हुई फजीती कर्म बहु बांध्या। पहुंती नरक दुवारो ॥ धन धन इण धर्मरुचीने। करगखेवो पारहो ॥ मु०॥ घ०॥ १४ ॥ पेमठ् साल

जोधाणा मांहे। सुखे करयो चौमासो ॥ रत्नचंद्जी कहे यह मुनिश्वरका। नामथकी शिव वासोहो ॥ मु० ॥ ध०॥ १५ ॥ इति ॥

अरणक मुनिको स्तवन.

अरणक मुनिवर चाल्या गौचरी। तडके दाजे सीसोजी ॥ पाय उभराणा वेळु परजळे ॥ तन सुखमाळ मुनिसोजी ॥ अरणक मुनिवर चाल्या गौचरी ॥ यह–टेर ॥ १ ॥ मुख कुमलानोरे मालती फूल ज्युं। उभो गोखा हेटोजी ॥ खरी दुपेहरारे दिठो एकलो। मोह्यो माननी मीठोजी ॥ अरणक० ॥ २ ॥ वयण रंगीलीरे नयणा विंदियो। रिख थंभ्यो तिणठायोजी ॥ दासीने कहेरे जाय उतावळी। रिख तेडीने ल्याओजी ॥ अर० ॥३॥ पावन कीजेहो मुजघर आगणो। वहेरो मोदक सारोजी ॥ नव जोबनमेरे काया कांई दहो। सफल करो संसारोजी ॥ अर०॥४॥ चद्रा वदनीसु चारित्र चूकीयो। सुख विलसें दीन रातोजी ॥ एकदिन गोखेरे रमता सोगटा। तव दिठो नीज मातोजी॥ अर० ॥ ५ ॥ अरणक अरणक करती मा फिरे। गळिया गळिया बझारोजी ॥ कहो किण दिठोरे

म्हारो वाल्हडो । आरे बहु नर नारीजी ॥ अर०॥ ६॥ तिहांथी उतरीरे जननीके पाय नम्यो । बहु लाज्यो मन माहोजी ॥ धिगर वच्छ तुजनेरे चारित्र चुकीयो । जेहथी शिवपुर जायोजी ॥ अर० ॥७॥ अगन धुकतीरे सिला उपरे । अरणक अणसण कीधोजी ॥ समय सुंदर कहे धन ते मुनिवर । मन वछीत फल लीधोजी ॥ अर०॥ ८॥ इति ॥

ढंढण ऋषिको स्तवन.

ढंढण रिखजीने वंदणा हूं वारी । उत्कृष्टो अणगाररे हूंवारी लाल ॥ अभिग्रह कीधो एहवो हूं वारी । लभधे लेशुं आहाररे हूं वारी लाल ॥ ढंढण ऋषिजीने वंदणा हूंवारी ॥ यह-टे ॥१॥ दिनप्रतिजा वे गौचरी हू वारी । नहिमिले सुजतो भातरे हूं वारी लाल ॥ मुळ न लिजे असुजतो हूं वारी । पिंजर हुयगयो गातरे हूं वारी लाल ॥ ढंढण० ॥२॥ हरीपूछे श्रीनेमने हूं वारी । मुनिवर सहँस अठाररे हू वारी लाल ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हूं वारी । मुजने कहो किरताररे हूं वारी लाल ढं० ॥३॥ ढंढण अधिको दाखीयो हू वारी । श्री मुख नेमाजिणंद रे हूं वारी लाल ॥ कृष्ण उमाह्यो

दवा-हूं वारी । धन जाधव कुळ चंदरे हूं वारी लाल ॥ ढ० ॥४॥ गळियामें मुनिवर मिल्या हूं वारी। यंधा कृष्णनरेसरे-हूं वारी लाल ॥ कोइक गाथा पती देखने हूं वारी । उपनो भाव विशेषरे हू वारी लाल ॥ढ०॥५॥ मुजघर आवो साधुजी हूं वारी । वहिरो मोदक अभिलाषरे हू वारी लाल ॥ वेहेरीने पाछा फिऱ्या हू वारी । आया प्रभुजीके पासरे-हूं वारी लाल ॥ढ०॥६॥ मुज लभध मोदक मिल्या हूं वारी । मुजने कहो किरपाळरे-हू वारी लाल॥लभध नहीओ वच्छ ताहरी हूं वारी॥ श्रीपति लभध निहाळरे-हू वारी लाल ॥ ढ० ॥७॥ तो मुजने कळपे नही हूं वारी । चाल्या परठण ठोररे हू वारी लाल ॥ ईट निहाळे जायने हू वारी । चुर्‍या करम कठोररे हूं वारी लाल ॥ ढ० ॥८॥ आई शुद्ध भावना हू वारी । उपनो केवळ ग्यानरे हू वारी लाल॥ढंढण ऋषि मुगतेगया हु वारी॥ कहे जिनहर्ष सुजाणरे-हू वारी लाल ॥ ढ० ॥९॥ इति ॥

चित्तऋषि अने ब्रह्मदत्त राजाको स्तवन.

चित्तकहे-ब्रह्म रायने । कछुदिलमाहे आणो हो ॥ पूरव भवकी प्रीतडी, तुमेमूळ न जाणोहो ॥ पं-

धव बोल मानो हो ॥यह-टेर॥१॥ कतवारीरा सुत
ज्युं, सांधो दे आण्योहो ॥ जाती स्मरण ग्यानथी,
पूरव भव जाण्योहो ॥ बधव० ॥ २ ॥ देसदसायण
राजाघरे, पहिले भव दासोहो ॥ दुजे भव कालिं
जरे, हुया मृग वनवासोहो ॥ ब०॥ ३ ॥ तीजेभव
गंगातटे, आपे हंसला हुताहो ॥ चौथेभव चंडा
लरे घर, जन्म्या पूताहो ॥ ब०॥ ४॥ चित्त संभूत
दोनुंजणा, गुणबहुला पायाहो ॥ सरणे आयो आ
पणे, तिण पंडित पढायाहो ॥ ब०॥ ५ ॥ राजान
गरीथी काढीया, आपे मरणो मांड्योहो ॥ वन
मांहे गुरुउपदेशथी, आपा घर छोड्याहो ॥ ब०
६ ॥ संजम ले तपशा करी, लब्धधारी हूताहो ॥
गावां नगरां विचरता, हस्तीनापूर पहूंताहो ॥ ब०
॥ ७ ॥ निमुची ब्राह्मण ओळख्या, नगरीथी क
ढाव्याहो ॥ कोपचढ्यो दोनुं जणा, आपे संथार
ठायाहो ॥ ब०॥८॥ धुवोयें कीधो लब्धथी, नगर
भय पायो हो ॥ चक्रवर्ति निज परिवारसु, आवि
तुरत खमाव्याहो ॥ ब०॥ ९ ॥ रत्नाराणी रायकी
आई सीस नमायोहो ॥ पगपुंज्या केसांथकी, थारे
मन भायाहो ॥ ब०॥ १०॥ नीयाणो तुमे करयो
फळ हारयोहो ॥ म्हेथाने बंधव बरजीयो

तुमे नाही विचारयोहो ॥ व०॥ ११ ॥ लळनी गुळनी विमाणमें, भव पाचमो हुयोहो ॥ तुमे तिहांथी चवीकरी, कंपीलापूर आव्याहो ॥ व०॥१२॥ हमे तिहाथी चवीकरी, गाथापती हुयाहो ॥ संजम भार लेईकरी, तोसुं मिलवाने आयाहो ॥व०॥१३॥ चक्रवार्त पदवी थें लिवी, ऋद्धिसगळी पाईहो ॥ किधो सोई पामियो, हवे कमी नही कांईहो ॥व० ।१४॥ समरथ पदवी पामीया, आवे जनम सुधारोहो ॥ संसारका सुख कारिमा, विपया रस निवारोहो ॥ व० ॥ १५॥ रायकहे सुणो साधुजी, कछु और बतावोहो ॥ या ऋद्धितो छुटेनही, पछे थें पिस्तासोहो ॥ व०॥१६॥ थें आवो म्हारा राजमें, नरभव सुख माणोहो ॥ साधपणामाही छे कीसो, नित मांगणे खाणोहो ॥ व० ॥१७॥ चित्त कहे सुणो रायजी, इसडी किम जाणोहो ॥ हे ऋद्धितो छोडी घणी। गिणती कुण आणेहो ॥ व० ॥ १८ ॥ हुं आयो थाने केवणने, या ऋद्धि तुमे त्यागोहो ॥ वैरागे मन वाळिने, धर्म मारग लागोहो ॥ व० ॥१९॥ भिन्न भिन्न भाव कह्या घणा, नहीं आवे वैराग हो ॥ भारी करमा जीवडा, ते किणविध जागेहो ॥व०॥२०॥नियाणो तुमे करयो,

खट खंड साधनकोहो ॥ इण करणीसुं जाणजो, थांकां नरके डेराहो ॥ व०॥२१॥ पाचुं भव भेळा किया, आपे दोनुं भाईहो ॥ आव मिळणोछे दोहिलो, जिम परवत राईहो ॥ व० ॥२२॥ ब्रह्मदत्त पहुतो नरक सप्तमी, चित्त मुक्ति मझारीहो ॥ कर जोडी कवीजण कहे, आवागमण निवारोहो ॥ व०॥२३॥ इति ॥

मृघा पुत्रको स्तवन.

सुगरीव नगर सुहामणोजी । राजावळभद्र नाम ॥ तसघर राणी मृघावतीजी । तसनंदन गुणधाम –ए माता ॥ खीण लाखीणी रे जाय ॥ यह–टेर ॥ १ ॥ एकादिन बेठागोखडेजी । राण्याके परिवार ॥ सिस दाजे ने रवी तपेजी । दिठा तव अणगार ए माता ॥ खीण० ॥ २ ॥ मुनिदेखी भव सांभल्योजी । मन वसीयोरे वैराग ॥ हरष धरीने उठीयाजी । लागा माताजीके पाय ए जननी ॥ अनुमत दे मोरी माय ॥यह–टेर॥ ३ ॥ तुं सुखमाळ सूहामणोजी । भोगो संसारका भोग ॥ जोवन वय पाछीपडे जब । आदरजो तुम जोगरे जाया ॥ तुजाविन घडीरे छ मास ॥ यह–टेर ॥ ४ ॥ पाव–पलकरी खबरनहीं ए माय । करे काळकोजी साज.

॥ काळ अजाण्यो झडपडेजी । ज्युं तितर पर–बाज ए माता ॥ खीण०॥५॥ रत्न जडीत घर आंगणोजी । तुं सुंदर आवतार ॥ मोटाकुळकी उपनीजी । काईछोडो निरधार रे जाया ॥ तुजबिन० ॥ ६ ॥ बाजीगर बाजी रचिये ए माय । खिणमें खेरो जी थाय ॥ ज्युं संसारकी सम्मदाजी । देखतही विरलाय ए माता ॥ खीण०॥७॥ पिलंग पथरणे पोढणोजी । तु भोगीजे रसाळ ॥ कनक कचोळे जिमणोजी । काचलडीमें आहार रे जाया ॥ तुजबिन० ॥८॥ सायरजल पीयाघणा ए माय । चुंग्या माताजीका थान ॥ तृप्तनहीं हुवो जीवडोजी । अधिक अरोग्यो धान ए माता ॥ खीण०॥ ९ ॥ चारित्र छे जाया दोहिलोजी । चारित्र खांडाकी धार ॥ विन अपराधे झुंजणोजी । ओषध नहीं किगार रे जाया ॥ तुजबिन० ॥१०॥ चारित्र छे माता सोहलोजी । चारित्र सुखकीजी खाण ॥ चवदेई राज लोकका- जी । फेरा टाळण हार ए माता ॥ खीण०॥ ११ ॥ सियाळे सी लागसीजी । उनाळे लूरे वाय ॥ चौमासें मेला कापडाजी । यहदुःख सह्योनहीं जाय रे जाया ॥ तुजबिन०॥१२॥ वनमें छे एक मृघलोजी ॥ कुणकरे उणकी ज सार ॥ मृघानी परे चि-

चरसु जी । एकलडो अणगार ए माता ॥ खीण०॥ १३॥ मात वचन ले निकल्याजी । मृघापुत्र कुमार॥ पंचमहाव्रत आदरयाजी । लीधो संजम भार ए माता ॥ खीण०॥१४॥ एक मासकी सलेखणाजी । उपज्यो केवलज्ञान ॥ कर्म खपाय मुक्ते गयाजी । ज्यारा लिजो नितमत्ये नाम ए माता ॥ खीण० ॥१५॥इति॥

प्रसन्चंद्र राजऋषिको स्तवन.

प्रसन्चंद–प्रणमुं तुह्मारा पाय । तुमे मोहटा ऋषीराय–प्रसन्चद । प्रणमुं तुह्मारा पाय ॥ यह–टेर ॥ राजछोडी रळियामणुरे । जानी अथीर संसार ॥ वैरागे मन वाळीयोरे । लीधो संजम भार ॥ प्रसन्० ॥ प्रणमुं० ॥ तुमे० ॥ प्रसन्० ॥ प्रणमु० ॥ १॥ समशाने काउस्सग्ग रहीरे । पग उपर पग चढाय ॥ भुजा दो उंची करीरे । सूरजसामें दृष्टि लगाय ॥ प्रसन्० ॥ २॥ दुर्मुख दूत वचन सुणीरे । कोप चढ्यो ततकाळ ॥ मनसुं संग्राम मांडीयोरे । जीव पड्यो जजाळ ॥ प्र० ॥३॥ श्रेणिक प्रश्न पूछे तदारे । स्वामी एहनी कोण गति थाय ॥ भगवंतकहे हमणा मरेतो ॥ सातमी नरके जाय ॥ प्र० ॥४॥ क्षणएक अंतरे पूछीयोरे । सर्वारथसिद्ध वि-

मान ॥ बाजी देवकी दुंदभीरे । ऋषि पाम्या केवल ज्ञान ॥ प्र० ॥५॥ प्रसन्नचंद्र ऋषि मुगतें गयारे । श्रीमहावीरका शिष्य ॥ रुपविजयकहे धन्य धन्य ते । दीठा हे आज प्रतक्ष ॥ प्र० ॥६॥ इति॥

वाहूवळ ऋषिकी सज्झाय.

राजतणारे अति लोभीया । भरत बाहूवल झुंझे हो ॥ मुठ उपाडी मारवा । वाहुवळ प्रतिबुझे हो ॥१॥ वीरा म्हारा गजथकी उतरो । गज चढ्या केवळ नही होसी हो ॥ बंधव गजथकी उतरो ॥ यह—टेग ॥ बंधव गजथकी उतरो । ब्राह्मी सुंदरी इम बोले हो ॥ श्रीऋषभ जिणेश्वर मोकली । बाहूबल तुम पासे हो ॥ वीरा० ॥ गज चढ्या० ॥ बंधव०॥२॥ लोच करी संजम लियो । आयो वळी अभिमान हो ॥ लघु बंधव वंदु नही । काउस्सग्ग रह्या शुभ ध्यान हो ॥ वीरा० ॥ ३ ॥ वरस दिवस काउस्सग्ग रह्या । वेलडिया विंटाया हो ॥ पंखी माळा माडिया । सीत तापसु सुकाया हो ॥ वीरा०॥ ४ ॥ साधवी वचन सुनीकरी । चमक्या चित्त मझार हो ॥ हय गय रथ पायक तज्या । पीण चडियो अहंकार हो ॥ वीरा०॥ ५ ॥ वैरागे मन वाळीयो । छोड्यो निज अभिमान हो ॥ पगउठायो

मुनी वंदवा। पाम्य केवळ ज्ञान हो ॥ वीरा० ॥ ६ ॥ पहुंता केवली परिषदा। वाहूबळ ऋषिराया हो ॥ अजर अमर पदवी ये लीधी । समयसुदर वंदे पाय हो ॥ वीरा० ॥ ७ ॥ इति ॥

धन्नामुनिको स्तवन.

(असवारीकी,—देशी.)

श्रेणिक पूछे वीरजी भाखे। उत्तम मुनिश्वर सारा ॥ रजमें तज है तरतम जोगे। अधिक धन्नो अणगारा ॥ धन्नामुनि—धन मानव भव पायो। श्रीमुख यूं फुरमायो ॥ धन्ना० ॥ यह—टेर ॥ १ ॥ श्रेणिक राजा आतमहित काजा। धन्नामुनिपे आवे ॥ शीश नमावे मुख गुण गावे। जोतां तृप्ति नहीं होवे ॥ धन्नामुनि—धन० ॥ श्रीमुख० ॥ धन्नामुनि० ॥२॥ नार बत्तीसें अपछरा सरिखी। धन्न बत्तीसें क्रोडो ॥ संसारनें पूठ दीवी मुनिश्वरजी शिवपुर सामां दोडो ॥ धनामुनि० ॥ ३ ॥ निरंतर तप बेले बेले। पारणे उज्झित आहारे ॥ वणिमग काग श्वान नहीं वाछे। ते किम तुम कंठ उतारो ॥ धन्ना० ॥४॥ वार इकीस जलमांही धोई। ते अन्न खाईजलपीयो ॥ ऐसो तप सुणी उरकंपे। धन्य धन्य थाको जीयो ॥ ध० ॥५॥ चवदे हजार मु-

निश्वर मांहे। आपनें वीर वखाण्यां ॥ दर्शन आपको पुण्यवत्त पावे । मैं पिण आज पिछाण्यां ॥ध० ॥६॥ नवमास शुद्ध संजम पाळी सर्वार्थसिद्ध जावे ॥ रामचंद्र कहे ऐसें मुनिवरजी । क्यूं नहीं मुगत सिधावे? ॥ ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

दशारणभद्र राजाकी—लावणी.

वीर जिन वंदनको आया । दशारणभद्र वडे राया ॥ यह–टेर ॥ पधारयां वीर जिनद भारी । दशारण नगरीके बारी ॥ मुनिश्वर चउदा सहस्र लारी । आरज्या छत्तीस सहस्र सारी ॥ दुहा ॥ समवसरण देवां रच्यो । बेठा श्रीजिनराज ॥ इन्द्र इन्द्राणी सेवाकरे । पाम्या हर्ष उल्हास ॥ वीर जिन० ॥ दशारण०॥१॥ खबर राजेंद्र भणी लागी । वीरजिन आय उतरयां बागी ॥ जावणो दर्शनके काजे । करूं सजाइ बहु साजे ॥ दुहा ॥ हाथी घोडा रथ पालखी । पायदळरे परिवार ॥ भाइ बेठा उमराव अतेउर । सबकूं लीधा लार ॥वीरजिन० ॥२ ॥ अठारा सहस्र गज गाजे । घुडला लख चौवीससें छाजे ॥ एकवीसें सहस्र रथ जोती । पालखी एक सहस्र सोहती ॥ दुहा ॥ हाथी घुमें घुडला हिंसें । रथ्थकरे झणकार ॥ पायदळ मुखके आगळे । त्रो-

ले जयजयकार ।।वीर०।।३।। पांचसें अंतेउर लारे । करत है नवा नवा सिणगारे ।। पहेरीया रत्न-जडित गहेणा । वाजतां वाजत्री वयणा ।। दुहा ।। छत्र चमर दुलावता । चाल्या मध्य वजार ।। राय आपको आडम्बर देखी ।। गर्व कर्यो तिणवार ।। वीर० ।।४।। स्वर्गसें इंदरभी आया । भेव्या जिन-वरका पाया ।। ग्यानमें सर्ववात जाणी । दशार-णभद्र वडो मानी ।। दुहा ।। मान उतारण कारणे । इंद्रदियो आदेश ।। एक ऐरावत ऐसो लावो । ज्युं गर्व गळे विशेप ।। वीर० ।।५।। चौसठ सहस्र गज छाजे । गगन विच उभाहीं गाजे ।। एकेकको ऐसो रूप आयो । सुणता आश्चर्य पायो ।। दुहा ।। एक एकके मुख पांचसें । मुख मुखपे आठ दंत ।। दंत दंत आठ वावडी । जिणमें कमळ महंत ।। वीर० ।।६।। पांखडी लाख लाख ज्याके । नाटक पडे वत्तिससें ताके ।। इन्द्रको इन्द्रासण सोव्हे । क-रणका उपर मन मोव्हे ।। दुहा ।। जिणपर इन्द्र विराजीया । लारे सहु-परिवार ।। दशारणभद्रजी देखके । गर्व गळ्यो तिणवार ।। वीर०।।७।। चिंत-वत आपने दिल्मांही । वडाई किस विध रहे भाई ।। इन्द्रसें जीतूं हूं नाही । करूं उपाय कठातांई ।।

॥ दुहा ॥ अवसर देख संजम लियो । दशारणभद्र नरिंद्र ॥ तूरत आइ उतावलो । पगेलाग्यो सक्रेइंद्र ॥ वीर० ॥ ८ ॥ इन्द्र जद मुनिश्वरसें बोले । नही कोइ आपके तोले ॥ और तो शक्तीधणी म्हारे । देव तो दिक्षा नहीधारे ॥ दुहा ॥ धन्यधन्यहो मुनिरायजी । तुमे राख्यो मान अखंड ॥ वार वार गुण गावतो । इन्द्रगयो गगनके मंद ॥ वीर॥०॥९॥ मुनिश्वर संजम शुद्ध पाले । दोष सहु आतमका टाले ॥ मिटाया जन्म मरण फेरा । आतमा ओटक हुवा तेरा ॥ दुहा ॥ गुरुदेव परसादसें सुणजो भविजन लोक ॥ जो करणी साची करेतो । मिलसें सगला थोक ॥ वीर०॥ १० ॥ संवत उगणीससो सोव्हे । साल तेंतीस मन मोव्हे ॥ आसोज शुद्ध पंचमी गुरुवारी । गावे हीरालाल हितकारी ॥ दुहा ॥ देश हाडोतीके विषे । कोटो मोटो शहर ॥ चोमासो करयो रामपुरामें । कुयार सतकी लहेर ॥ वीर० ॥ ११ ॥ इति ॥

भरत चक्रवर्तिको स्तवन.

अमरपद पायाहो-भरतेश्वर मोहटा राजवी । मुगतिपद पायाहो-भरतेश्वर मोहटा राजवी ॥ यह -टेर ॥ सर्वार्थसिद्ध थकी चवि आया । नगरी व-

नीता मांय ॥ ऋषभदेवजी तात तुम्हारा । सुमंगळादेवी माय ॥ अमर०॥ भरतेश्वर० ॥ मुगति०॥ भरतेश्वर० ॥ १ ॥ लाख बरस पूरब तांई । कंवरपद महाराज ॥ खटलख लाख पूरबतांई । राजपदवी भोगवी श्रेयकार ॥ अमरपद० ॥ २ ॥ साठ सहस्र वर्षलग तांई । दिग्विजय अधिकार ॥ अष्टभगत त्रीदस आराधी । वशकिधा भूपाळ ॥ अमरपद० ॥ ३ ॥ रतन चंतुर्दश नवनीद नायक । राणी चौसट हजार ॥ महेल चंयालीस भोमीया सरे । नाटकको धुंदकार ॥ अमरपद०॥ ४ ॥ दोयक्रोड देवता क्लासरे । तनतना रखवाळ ॥ लक्ष चोरयांसी रथ हयवर गयवर । छिंनुंक्रोड झुंझार ॥ अमरपद०॥ ५ ॥ आरीसाका भुवनमांहेजी । आयो उज्वल ध्यान ॥ अनित्य भावना भावता सरे । पाया केवल ज्ञान ॥ अमरपद०॥ ६ ॥ संजम ले पधारीया सरे । भरी सभाके मांय ॥ दश सहस्र सज्झाए नरपत । मुगति पंथ बताय ॥ अमरपद० ॥ ७ ॥ तीजा अंगके मायनेसजी । चौथाको अधिकार ॥ उगी उगीने उगीयो सजी । पुन्यसणो जयकार ॥ अमरपद०॥ ८॥ भरत खंडको चक्रवर्ती । पहेलो भरतेश्वरजी नाम ॥ ऐसाग्रनीको ध्यान

ध्यावता । पावे सुख आराम ॥ अमरपद० ॥ ९ ॥
लाख पुरव लग पालीयो सजी । केवलपद अनगार
॥ अनशणकरी अष्टापद उपरे सजी । पाया भवको
पार ॥ अमरपद० ॥ १० ॥ उगणीसें पिचतालीस व-
रसें । रतनपूर चौमास ॥ हीरालालकहे पूज्य प-
सादे । पुरे मनकी आस ॥ अमरपद० ॥ ११ ॥ इति ॥

करकंड्डू प्रत्येक बुद्धकी सज्झाय.

चंपा नगरी अति भली-हूं वारी । दधिवाहन
भूपालरे-हूं वारी लाल ॥ पद्मावती कुंखे उपन्थो हूं
वारी । कर्म कीधो चडालरे-हूं वारी लाल ॥ क-
रकंड्डूने करूं वंदना-हूं वारी ॥ यह-टेर ॥ १ ॥
करकड्डूने करु वदना-हू वारी । पहिले प्रत्यक बु-
द्धरे हू वारी लाल ॥ गिरुवाका गुण गावतां हूं
वारी । समकित होवे शुद्धरे हू वारी लाल ॥ क-
रकड्डूने० ॥ २ ॥ लीधी ते वांसकी लाकडी हू वारी
हुयो कचनपुर रायरे हू वारी लाल ॥ वापसुं
संग्राम मांडियो हू वारी । साधवी दियो समजा-
यरे हूं वारी लाल ॥ करकंड्डूने० ॥ ३ ॥ वृषभ रुप
देखी करी हू वारी । प्रतिबोध पाम्यो नरेशरे हू
वारी लाल ॥ उत्तम संयम आदरयो-हू वारी ।
देवता दीयो वेषरे हूं वारी लाल ॥ करकंड्डूने० ॥

४ ॥ कर्म खपावी मुगतें गया हूं वारी । करकंडू ऋषिरायरे हूं वारी लाल ॥ समय सुंदर कहे सा-धुने हूं वारी । प्रणम्यां पातक जायरे हू वारी लाल ॥ करकडूने०॥ ५ ॥ इति. ॥

खडी भाषामें राजुलको स्तवन.

राजुल खडीग रंग महेलोमें । सब अनामिले सारीक् ॥ राजुल राहा देख थाडी । रहेग दिन थोडा ॥ आरेसखी—रहेग दिनथोडा०॥ सब सखीयनसें कहतीक । जाधव लिखभेजूं पाती ॥ मेररे वालमसें ॥ अरे सखी—मेररे ०॥ १ ॥ मै भेजूं बुलवाना क् । प्रितम जल्दीसें आना ॥ बडेरे तारीफसें ॥ आरे०॥ बडेरे०॥ दर मजला कुच करना । बरोबर सैन्या सब लाना ॥ आयेरे जल्दीसें ॥ आरे० ॥ आयेरे०॥ २ ॥ जाय पहुंच्या हालकारा । नेमने बाहेर दिया डेरा ॥ कियाहो नग्गारा ॥ आरे० ॥ कियाहो०॥ सब गरमी हुई तनमें । राजुल खुशी हुइ दिलमें ॥ प्रेमकी वाता ॥ आरे० ॥ प्रेमकी० ॥ ३॥ तूं सुण सजनी मेरी । राजुल राहा देखे तेरी ॥ रह्याग दिनथोडा ॥ आरे० ॥ रह्याग० ॥ सहेली कहेग राजुल कूं । कौनसा तेरा वालम ॥ मुझे कब मालम् । आहेरे मन मनकी ॥ आरे०॥

माहेरे०॥ ४ ॥ देख आस्वार घोडेवाला ।गळोमें मोतनकी माळा ॥ तुरांजी फुलनका । आरे० ॥ तुरा०॥ दीसें आलूवेला । कानमें कुंडल मतवाला ॥ बडेरे दुशाला ॥ आरे०॥ बडे०॥५॥ जामा महिमा भारी । चढत है घोडे आसवारी ॥ चलेग रस्तेसें ॥ आरे० ॥ चलेग० ॥ आगु बाजा बाजेक् । आयेजी मेरे नेमीनाथ माहाराज ॥ खडेग आंगणोमें ॥आरे०॥ खडेग०॥६ ॥ सिरपर सेला भारीक् । राजुल राहा देख थारी ॥ रहेग दिन्थोडा ॥ आरे०॥ रहेग०॥ हारणी कहेग हारणोसें । बालम् कहेसो करणाक् ॥ लडके बचेकूं रखना । पडारे आन्देसा ॥ आरे० ॥पडाग०॥ ७॥ सबसाके बूलवाया । सिकार सब खानेकू आया ॥ ब्यावके खातर ॥ आरे०॥ ब्यावके०॥ आलम् सारी आई क् । बोलती राहा जकमका माई ॥ बडीरे फजरोमें ॥ आरे०॥ बडीरे०॥ ८ ॥ सब कारण है इसका क् । नेमने बडाकिया दिल्को ॥ रथ फिरवाया ॥ आरे०॥ रथ०॥ राजुल खडी खडी रोती क् । बालम् पिहु पिहु करती ॥ हुवाग उजीयाला ॥ आरे०॥ हुवाग०॥ ९ ॥ सहेली सखीरे मेरी बाई । तुम जल्दीसें जाना ॥ रुठे मेरे बालम् समजाना ।

४ ॥ कर्म खपावी मुगतें गया हू वारी । करकंडू ऋषिरायरे हूं वारी लाल ॥ समय सुंदर कहे सा-धुने हूं वारी ।प्रणम्यां पातक जायरे हू वारी लाल ॥ करकडूने० ॥ ५ ॥ इति ॥

खडी भाषामें राजुलको स्तवन.

॥ राजुल खडीग रंग महेलोमें । सब अनामिके सारीक् ॥ राजुल राहा देख थाडी । रहेग दिन-थोडा ॥ आरेसखी–रहेग दिनथोडा० ॥ सब सखी-यनसें कइतीक ।जाधव लिखभेजूं पाती ॥ मेरेरे बालमूसें ॥ अरे सखी–मेरेरे ०॥ १ ॥ मैं भेजूं बूलवा-ना क् । मितम जल्दीसें आना ॥ वडेरे तारीफसें ॥ आरे०॥ वडेरे०॥ दूर मजला कुच करना । बरो-बर शैन्या सब लाना ॥ आयेरे जल्दीसें ॥ आरे० ॥ आयेरे०॥ २ ॥ जाय पहुंच्या हालकारा । नेमने बाहेर दिया डेरा ॥ कियाहो नग्गारा ॥ आरे० ॥ कियाहो०॥ सब गरमी हुई तनमें । राजुल खुशी हुइ दिल्में ॥ प्रेमकी वाता ॥ आरे० ॥ प्रेमकी० ॥ ३॥ तूं सुण सजनी मेरी । राजुल राहा देखे तेरी ॥ रह्याग दिनथोडा ॥ आरे० ॥ रह्याग० ॥ सहेली कहेग राजुल कूं । कौन्सा तेरा बालम् ॥ मुझे कब मालम् । आहेरे मन् मन्की ॥ आरे०॥

आहेरे०॥ ४ ॥ देख आस्वार घोडेवाला । गलोमें मोतनकी माळा ॥ तुराजी फुलनका । आरे० ॥ तुरा०॥ दीसें आलूबेला । कानमें कुंडल मतवाला ॥ बडेरे दुशाला ॥ आरे०॥ बडे०॥५॥ जामा महिमा भारी । चडत है घोडे आसवारी ॥ चलेग र-स्तेसें ॥ आरे०॥ चलेग० ॥ आंगु बाजा बाजेक् ॥ आयेजी मेरे नेमीनाथ माहाराज ॥ खडेग आंग-णोमें ॥आरे०॥ खडेग०॥६ ॥ सिरपर सेला भारी क् । राजुल राहा देख थारी ॥ रहेग दिन थोडा ॥ आरे०॥ रहेग०॥ हारणी कहेग हारणोसें । बालम् कहेसो करणाक् ॥ लडके बच्चेकूं रखना । पडारे आन्देसा ॥ आरे० ॥पडाग०॥ ७ ॥ सबसाले बूल बाया । सिकार सब खानेकूं आया ॥ ब्यावके खातर ॥ आरे०॥ ब्यावके०॥ आलम् सारी आई क् । बोलता राहा जलमका भाई ॥ बडीरे फज-रोमें ॥ आरे०॥ बडीरे०॥ ८ ॥ सब कारण है इस-का क् । नेमने बडाकिया दिल्को ॥ रथ फिरवा-या ॥ आरे०॥ रथ०॥ राजुल खडी खडी रोती क् । बालम् पिहु पिहु करती ॥ हुवाग उजीयाळा ॥ आरे०॥ हुवाग०॥ ९ ॥ सहेली सखीरे मेरी बाई । तुम जल्दीसें जाना ॥ रुठे मेरे बालम् समजाना ।

४ ॥ कर्म खपावी मुगतें गया हूं वारी । करकंडु ऋषिरायरे हूं वारी लाल ॥ समय सुंदर कहे सा- धुने हूं वारी ॥ प्रणम्यां पातक जायरे हू वारी लाल ॥ करकडूने० ॥ ५ ॥ इति ॥

खडी भाषामें राजुलको स्तवन.

॥ राजुल खडीग रंग महेलोमें । सब अनामिके सारीक् ॥ राजुल राहा देख थाडी । रहेग दिन् थोडा ॥ आरेसखी—रहेग दिनथोडा० ॥ सब सखी- यनसें कइतीक । जाधव लिखभेजूं पाती ॥ मेररे वालमूसें ॥ अरे सखी—मेररे० ॥ १ ॥ मैं भेजूं बूलवा- ना क् । मितम जल्दीसें आना ॥ बडेरे तारीफसें ॥ आरे० ॥ बडेरे० ॥ दूर मजला कुच करना । बरो- बर शैन्या सब् लाना ॥ आयेरे जल्दीसें ॥ आरे० ॥ आयेरे० ॥ २ ॥ जाय पहुंच्या हालकारा । नेमने बाहेर दिया डेरा ॥ कियाहो नग्गारा ॥ आरे० ॥ कियाहो० ॥ सब गरमी हुई तनमें । राजुल खुशी हुइ दिल्में ॥ प्रेमकी वाता ॥ आरे० ॥ प्रेमकी० ॥ ३॥ तूं सुण सजनी मेरी । राजुल राहा देखे तेरी ॥ रह्याग दिनथोडा ॥ आरे० ॥ रह्याग० ॥ सहेली कहेग राजुल कूं । कौनसा तेरा वालम् ॥ मुझे कच मालम् । आदेरे मन् मनकी ॥ आरे० ॥

आहेरे०॥ ४ ॥ देख—आस्वार घोडेवाला । गलोमें मोतनकी माला ॥ तुराजी फुलनका । आरे० ॥ तुरा०॥ दीसे आलूवेला । कानमें कुंडल मतवाला ॥ बडेरे दुशाला ॥ आरे०॥ बडे०॥५॥ जामा महिमा भारी । चडत है घोडे आसवारी ॥ चलेग-रस्तेसें ॥ आरे० ॥ चलेग० ॥ आगु बाजा बाजेकू । आयेजी मेरे नेमीनाथ माहाराज ॥ खडेग आंगणोमें ॥आरे०॥ खडेग०॥६ ॥ सिरपर सेला भारी. कू । राजुल राहा देख थारी ॥ रहेग दिन्थोडा ॥ आरे०॥ रहेग०॥ हारणी कहेग हारणोसें । बालम् कहेसो करणाकू ॥ लडके बच्चेकूं रखना । पडारें आन्देसा ॥ आरे० ॥पडाग०॥ ७॥ सबसाके बूल-वाया । सिकार सब खानेकूं आया ॥ ब्यावके खातर ॥ आरे०॥ ब्यावके०॥ आलम् सारी आई कू । बोलता राहा जलमका भाई ॥ बडीरे फजरोमें ॥ आरे०॥ बडीरे०॥ ८ ॥ सब कारण है इसका कू । नेमने बडाकिया दिल्को ॥ रथ फिरवाया ॥ आरे०॥ रथ०॥ राजुल खडी खडी रोती कू । बालम् पिहु पिहु करती ॥ हुवाग उजीयाला ॥ आरे०॥ हुवाग०॥ ९ ॥ सहेली सखीरे मेरी बाई । तुम जल्दीसें जाना ॥ रुदे मेरे बालम् समजाना ।

४ ॥ कर्म खपावी मुगतें गया हूं वारी । करकंडू ऋषिरायरे हूं वारी लाल ॥ समय सुंदर कहे सा- धुने हूं वारी । प्रणम्यां पातक जायरे हूं वारी लाल ॥ करकंडूने० ॥ ५ ॥ इति ॥

खडी भाषामें राजुलको स्तवन.

राजुल खडीग रंग महेलोमें । सब अनामिलें सारीक ॥ राजुल राहा देखे थाडी । रहेग दिन थोडा ॥ आरेसखी–रहेग दिनथोडा० ॥ सब सखी- यनसें कहतीक । जाधव लिखभेजूं पाती ॥ मेरेरे वालमूसें ॥ अरे सखी–मेरेरे ०॥ १ ॥ मैं भेजूं बुलवा- ना क । प्रितम जल्दीसें आना ॥ बडेरे तारीफूसें ॥ आरे०॥ वडेरे०॥ दूर मजला कुच करना । बरो- बर शेन्या सब लाना ॥ आयेरे जल्दीसें ॥ आरे० ॥ आयेरे०॥ २ ॥ जाय पहुंच्या हालकारा । नेमने बाहेर दिया डेरा ॥ कियाहो नग्गारा ॥ आरे० ॥ कियाहो०॥ सब गरमी हुई तनमें । राजुल खुशी हुइ दिलमें ॥ प्रेमकी वाता ॥ आरे० ॥ प्रेमकी० ॥ ३॥ तूं सुण सजनी मेरी । राजुल राहा देखे तेरी ॥ रह्याग दिनथोडा ॥ आरे० ॥ रह्याग० ॥ सहेली कहेग राजुल कूं । कौनसा तेरा वालम ॥ मुझे कब मालम । आहेरे मन मनकी ॥ आरे०॥

आहेरे०॥ ४ ॥ देख—आस्वार घोडेवाला ।गलोमें मोतनकी माला ॥ तुरांजी फुलनका । आरे० ॥ तुरा०॥ दीसें आलूबेला । कानमें कुंडल मतवाला ॥ बडेरे दुशाला ॥ आरे०॥ ,बडे०॥५॥ जामा महिमा भारी । चढत है घोडे आसवारी ॥ चलेग रस्तेसें ॥ आरे० ॥ चलेग० ॥ आंगु बाजा बाजेक् ॥ आयेजी मेरे नेमीनाथ माहाराज ॥ खडेग आंगणोमें ॥आरे०॥ खडेग०॥६ ॥ सिरपर सेला भारी क् । राजुल राहा देख थारी ॥ रहेग दिन्थोडा ॥ आरे०॥ रहेग०॥ हारणी कहेग हारणोसें । बालम् कहेसो करणाक् ॥ लडके बच्चेकुं रखना । पडारें आन्देसा ॥ आरे० ॥पडाग०॥ ७ ॥ सबसाले चूलन वाया । सिकार सब खानेकुं आया ॥ ब्यावके खातर ॥ आरे०॥ ब्यावके०॥ आलम् सारी आई क् । बोलता राहा जलमका भाई ॥ बडीरे फजरोमें ॥ आरे०॥ बडीरे०॥ ८ ॥ सब कारण है इसका क् । नेमने बडाकिया दिल्को ॥ रथ फिरवान या ॥ आरे०॥ रथ०॥ राजुल खडी खडी रोती क् । बालम् पिहु पिहु करती ॥ हुवाग उजीयाला ॥ आरे०॥ हुवाग०॥ ९ ॥ सहेली सखीरे मेरी बाई । तुम जल्दीसें जाना ॥ रुठे मेरे बालम् समजाना ।

पंदील जरतारी। तुरा मोत्यांचा, त्यास भारी ॥ लावीला आहे ॥ आरे० ॥ लावीला० ॥ केस ते कुरळ बाई । भव्य करण नयण पाही ॥ मुख चन्द्राचें ॥ आरे० ॥ मुख० ॥७॥ नाशिका शरण मोठे । नसे तो उणेपणा कोठे ॥ कंठी त्यां माळा ॥ आरे० ॥ कंठी० ॥ रुळतात मोतीयाच्या । आंगुळ्या हिरा जडावाच्या ॥ कडे ग सोन्याचें ॥ आरे० ॥कडे०॥ ॥८॥ मनगटी । जयाबाई ॥ पाहातां झोकी । तोष देई ॥ आसा ग सुन्दर गे ॥ आरे० ॥ आसा० ॥ सब पती येथें आला । पाहा त्या नेमनाथजीला ॥ आहे ग दिनयोदा ॥ आरे० ॥ आहे० ॥९॥ पुढे तेव्धी पहा त्या दिवसी । नेमजी आले परणन्याशी ॥ राजमतीला ॥ आरे० ॥ राज० ॥ बइसोनी रथा वरती । पुढें वाजंत्री वाजीताती ॥ मधुर बज्यांचे ॥ आरे० ॥ मधुर० ॥१०॥ पाहुनी नेमजीला । पशुने शोर आतिकेला ॥ आला ग तो कानी ॥ आरे० ॥ आला० ॥ ऐकोनी शब्द त्यांचे । वेधले चित्त नेमजीचें ॥ सारथीस पुसें ॥ आरे० ॥ ११ ॥ ह्मणे पशु कशा साठी । बांधीले आज येथें गोठी ॥ सांगाहो मजला ॥ आरे० ॥ सांगाहो० ॥ सारथी ह्मणे नाहीं । पशुची गिणती

21

येथे कांहीं ॥ मोर सुक बगळे ॥ आरे० ॥ मोर० ॥
१२ ॥ मेंढरें आज्यापुत्र । ह्यांचे होईल उद्या सत्र
॥ तुझ्यारे वा साठी ॥ आरे० ॥ तुझ्यारे वा० ॥
मरतील उद्या सारे । ह्मणुनी ते रुदती पहा वा
रे ॥ ऐसें आयकूणी ॥ आरे० ॥ ऐसें० ॥१३॥ ने-
मजी विमळ झाले । ह्मणे पाहिजे मुक्त केले ॥
ह्याकी सर्वासी ॥ आरे० ॥ ह्याकी० ॥ बोलुनी त्व-
रीत ऐसें । मोकळे केले एक सरसे ॥ ह्मणे हो
धिक्कार ॥ आरे० ॥ ह्मणेहो० ॥१४॥ धिक्कार आसो
यासी । जे की मारीतात जीवासी ॥ नको मज
त्याचा ॥ आरे० ॥ नको० ॥ हा स्नेह फुकट वा
रे । निघाले तेथुन माघारे ॥ गेले गिरनारी ॥
आरे० ॥ गेले० ॥ १५ ॥ त्यागुनी आशुपणाला ।
तया परी आस्थिर लक्ष्मीला ॥ घेतली दिक्षा ॥
॥ आरे० ॥ घेतली० ॥ उपटोनी केस सारे । झाले
श्वेताम्बर वारे ॥ जक्त- उद्धारा ॥आरे०॥ जक्त०
॥ १६ ॥ इकडे ती वेडी झाली । राजमती ह्मणे
कैसी केली ॥ पातळ तूं माया ॥ आरे प्रभू० ॥
पातळ० ॥ माया हे नेमीनाथा । नसे मज तुजवीण
कोणी त्राता ॥ बोलुनी ऐसें ॥ आरे० ॥ बोलुनी०
॥ १७ ॥ जाउनी गीरनारी । नेमीनाथासी नम-

स्कारी ॥ ह्मणे द्या दिक्षा ॥ आरे० ॥ ह्मणे० ॥ दिक्षा ती त्वरीत आता । मला सोडुनी कोठे जाता ॥ छ्यात्र मी तुमची ॥ आरे० ॥ छ्यात्र० ॥१८॥तुमची मी खरीझाले । शेवटी मोक्षपदी गेले ॥ गणुरे ह्मणे दोघे ॥आरे०॥गणुरे०॥१९॥ इति ॥

राजमती महासती रिष्टनेमी देवरकु समझावे स्वाध्याय.

राजुल इणपरे विनवेहो; मुनिश्वर । थारोचित्त चळियो तुं घेर ॥ थोडासुखाके कारणेहो, मुनिश्वर । किउं पड्यो अंध जेहेर ॥ सुगुणा साधुजीहो; मुनिश्वर । थारो चित्त चळियो तुं घेर ॥ यह–टेर ॥ १ ॥ पचमहाव्रत आदर्यां हो; मुनिश्वर । मेरु जेवडो भार ॥ वमीयाकी वांछ्या करोहो; मुनिश्वर । धीक थारो जमार ॥ सुगुणा० ॥ मुनिश्वर ॥ थारो० ॥ २ ॥ वैरागे मन वाळने हो; मुनिश्वर । लिधो संजम भार ॥ आब कायर भाव किसो करोहो; मुनिश्वर । देख पराई नार ॥ सुगुणा०॥३॥राजपंथने छोडने हो; मुनिश्वर । उजडमें मत जाय.॥ अमृत भोजन चाखने हो; मुनि- कुकस खाय वलाय ॥ सुगुणा०॥४॥गज अस-

वारी छांडने हो; मुनिश्वर। खर उपर मतबेस ॥ स्वर्ग तणा सुख छोडने हो; मुनिश्वर । पाताळे मत पेस सुगुणा० ॥५॥ चंदण बाळ कोयला करो हो; मुनिश्वर । आंबा काट बबूळ ॥ कुण वावे घर आंगणे हो; मुनिश्वर । तिम थारो कांई सुळ ॥ सुगुणा०॥६॥ घर घर फिरनो गौचरी हो; मुनिश्वर । देखशो सुन्दर नार ॥ हड नामें वृक्षकी परे हो, मुनिश्वर । मोटो उठायो भार ॥ सुगुणा० ॥७॥ वमीयाकी वांछया करो हो, मुनिश्वर। गंधन कुळ मति होय ॥ रतन-चिंतामणि पायने हो; मुनिश्वर । कीचडमें मत खोय ॥ सुगुणा० ॥८॥ थें तो अधक विष्णुका पोतरा हो; मुनिश्वर । समुद्र-विजयजीका नद ॥ हुं भोजग-विष्णुकी पोतरी हो; मुनिश्वर । उग्रसेनजीकी धीय ॥ सुगुणा० ॥ ९॥ कुलमोटो आपातणो हो; मुनिश्वर । जिण साहमो तुं जोय॥ कामभोगने वांछना हो; मुनिश्वर। भलो नहीं रहेसी कोय ॥सुगुणा० ॥१०॥ गुळ भंडारी सारिखो हो; मुनिश्वर । हम्माल ऊठायो भार ॥ बोज मजुरी अराथियो हो; मुनिश्वर । नहीं माल सिरदार ॥ सुगुणा०॥ ११ ॥ घणो रुप नारी तणो हो; मुनिश्वर । वस्तर ने सिणगार ॥ देख देख

वचनसुण्या राजुल तणाहो, मुनिवर । मन दियो ठिकाणे आन ॥ धनधन तु मोटीसती हो; मुनिवर । माता थें राख्यो ह्यारो मान॥सुगुणा०॥२०॥ ए दोनुं उत्तम कह्या हो; मुनिवर।पाम्यां केवल ज्ञान ॥ करम खपाइ मुगते गयाहो; मुनिवर । किजे जिनरो ध्यान ॥ सुगुणा० ॥२१॥ समत अठारे बावने हो; मुनिवर । श्रावण मास मझार ॥ रिख चोथमलजी इम भणे हो, मुनिवर । सुद पंचमी मंगलवार ॥ सुगुणा० ॥ २२ ॥ इति ॥

राजमती महासतीको स्तवन.

उग्रसेनकी लली २ । नेमजी वंदण-गिरनार चली ॥ सती राजमती हो; सती राजमती । प्रभुजी वदण-गिरनार चली ॥ यह-टेर ॥ मारग जाता-वर्षा हे मेघ २ ॥ भिनी झिनी साडीया ने २। नवरग वेश ॥ उग्रसेनकी०॥ नेमजी०॥ सती०॥ सती० ॥ प्रभूजी०॥१॥ देख गुफा मांहे-पेठी तिणवार २ ॥ चिरनिचोवे राणी२ । राजुल नार ॥ उग्रसेनकी० ॥ २ ॥ नवलो रूप देखे रिष्टनेम ॥ सजम छोड ने २ । धरीयो मन प्रेम ॥ उग्र०॥३॥ तुजकुळ देवर सामो धीर २ ॥ शीळरत्नमत २ । छोडो मेरा वीर ॥ उग्र०॥ ४ ॥ विविध वचन कह्या-आण्यो हे मा-

सिदावसी हो; मुनिश्वर। कुण कहेसी अणगार॥ सुगुणा० ॥१२॥ मन गमतो इंद्रिया तणो हो; मुनिवर। सुख विलश्यो घर मांय॥ ज्यासुं तो न्यारा रह्या हो; मुनिश्वर। त्याग किया जिनराय॥ सुगुणा० ॥ १३ ॥ आवे वैश्रमण-इन्द्र देवता हो; मुनिश्वर। नळ कुवेरकी जात॥ सुपनामें वांछु नहीं हो; मुनिश्वर। थारी तो कित्तनीक बात॥ सुगुणा० ॥ १४ ॥ जिहां जिहां तुमे विचरस्यो हो; मुनिश्वर। नगरीने वलि ग्राम ॥ नारी देख चित्त डोलस्यो हो; मुनिश्वर। नारी नरकको ठाम॥ सुगुणा० ॥ १५॥ सहूं सरिखा नर नहीं हो; मुनिवर। नहीं सरिखी नार॥ केई भुंडाने केई भला हो; मुनिवर। चल्योजाय ससार॥ सुगुणा० ॥ १६ ॥ ब्राह्मी-सुन्दरी वेनडी हो; मुनिवर। सतीयामें सिरदार॥करणी कर मुगते गईहो; मुनिवर। नाम लिया निस्तार॥ सुगुणा० ॥१७॥ तीर्थंकर बावीसमा हो; मुनिवर। जगमें मोटा होय॥ बालपणे तज निसर्यां हो; मुनिवर। वचन सामोजोय॥ सुगुणा० ॥१८॥ नारी दुःखकी वेलडी हो; मुनिवर। नारी दुःखाकी खाण॥ करणी करो चित्त निरमली हो; मुनिवर। कह्यो हामारो मान॥ सुगुणा०॥१९॥

वचनसुण्या राजुल तणाहो, मुनिवर । मन दियो ठिकाणे आन ॥ धनधन तु मोटीसती हो; मुनिवर । माता थें राख्यो म्हारो मान ॥सुगुणा०॥२०॥ ए दोनुं उत्तम कह्या हो; मुनिवर । पाम्या केवल ज्ञान ॥ करम खपाइ मुगते गयाहो; मुनिवर । किजे जिनरो ध्यान ॥ सुगुणा० ॥२१॥ समत अठारे बावने हो; मुनिवर । श्रावण मास मझार ॥ रिख चोथमलजी इम भणे हो, मुनिवर । सुद पंचमी मंगलवार ॥ सुगुणा० ॥ २२ ॥ इति ॥

राजमती महासतीको स्तवन.

उग्रसेनकी लली २ । नेमजी वदण-गिरनार चली ॥ सती राजमती हो; सती राजमती । प्रभुजी वंदण-गिरनार चली ॥ यह-टेर ॥ मारग जाता-वर्षो हे मेघ २ ॥ भिनी झिनी साडीया ने २ । नवरग वेश ॥ उग्रसेनकी०॥ नेमजी०॥ सती०॥ सती० ॥ प्रभूजी०॥१॥ देख गुफा माहे-पेठी तिणवार २ ॥ चिरनिचोवे राणी २ । राजुल नार ॥ उग्रसेनकी० ॥ २ ॥ नवलो रूप देखे रिष्टनेम ॥ सजम छोड ने २ । वरीयो मन प्रेम ॥ उग्र०॥३॥ तुजकुल देवर सापो धीर २ ॥ शीलरतनमत २ । छोडो मेरा वीर ॥ उग्र०॥ ४ ॥ विविध वचन कही-आण्यो हे मा-

म २ ॥ देवरने राजुल राणी २ । दियो समजाय ॥ उम०॥५॥ श्रीनेमीश्वरजीके–लागु छुं पाय२ ॥ मुगतमहेलमें २। विराज्यां जाय ॥उम०॥६॥ इति॥

मनोरमा महासतीकी स्वाध्याय.

मोहनगारी मनोरमा। शेठ सुदर्शनकी नारी रे ॥ शील प्रभावे शासन सुरी। हुई जस सान्निध्य-कारीरे ॥ मोहनगारी मनोरमा। शेठ सुद-र्शनकी नारी रे ॥ यह–टेर ॥१॥ दधिवाहन नृ-पकी प्रिया। अभया दीयो कलंक रे ॥ कोप्यो चंपापति कहे। शूली रोपण वंक रे ॥ मोहनगारी० ॥ शेठ० ॥ २ ॥ ते निसुणीने मनोरमा। करे का-उस्सग्ग धर्यो ध्यान रे ॥ दंपती शील जो नि-र्मलो। तो वडजो शासन माम रे ॥ मोहनगारी०। ३ ॥ शूलीको सिंहासन हुयो। शासनदेवी हजूर रे ॥ संजम ग्रही हुवा केवली। दंपती दोय सनूर रे ॥ मोहनगारी०॥ ४ ॥ ज्ञानविमल गुण शीलसुं शासन शोभा चढावे रे ॥ सुर नर सवि तस किं-करा। शिवसुंदरी ते पावे रे ॥ मोहनगारी०॥५॥इति

रुखमणी महासतीकी स्वाध्याय.

विचरंता ग्रामो ग्राम। नेमिजिनेश्वर स्वा

आछे लाल ॥ नगरी द्वारामति आवियाजी ॥१॥
कृष्णादिक नर नार । सहु मिली परिषदा वाँर-
आछेलाल ॥ नेमि वदण तिहां आवियाजी ॥२॥
देवे देशना जिनराय । आवे सवकु दाय-आछे
लाल ॥ रुक्मणी पूछे श्रीनेमिनेजी ॥ ३ ॥ पुत्रको
महारे विजोग । कोन कर्मके संजोग-आछे लाल
॥ भगवंत मुजने कहोजी ॥ ४ ॥ तुं हुती नृपकी
नार । पूरव भव कोई वार-आछे लाल ॥ उपवन
रमवाने संचर्या जी ॥ ५ ॥ फिरता वन मझार
। देख्योएक सहकार-आछेलाल ॥ मोरडी वियाणी
तिहा कणेजी ॥ ६ ॥ साथेहुतो तुम नाथ । इंडा
लिया हाथ-आछेलाल ॥ कंकूवरणा ते हुयाजी ॥
७॥ नहि ओळख्ये तिहां मोर । करवा लागी सोर
-आछेलाल ॥ सोळा घडी नही सेवीयाजी ॥ ८ ॥
तिण अवसर घमघोर । मोरडा करेहे सोर—आछे
लाल ॥ चौ दिशि चपके वीजलीजी ॥ ९ ॥ पछे
वर्षो तिहा मेह । इंडा धोवाया तेह—आछे लाल ॥
सोळाघडीपछे सेवीयाजी ॥ १० ॥ हसता ते बां-
ध्याकर्म । नहि ओळख्यो जैनधर्म-आछे लाल ॥
रोता नही छुटे प्राणीयाजी ॥ ११ ॥ तिहा बांधी
अंतराय । भाखे श्रीजिनराय—आछेलाल ॥ सो·

लाघडीका वर्ष सोला हुयाजी ॥ १२॥ देशना सु णी अभिराम । रुखमणी राणी ताम–आछे लाल ॥ सुधो ते संयम आदरयोजी ॥ १३ ॥ स्थिरराख्या मनवचकाय। शिवपुरी नगरीमें जाय —आछे लाल ॥ कर्म खपावी मुगतें गयाजी ॥ १४ ॥ तेहनो छे विस्तार । अंतगड सूत्र मझार–आछेलाल ॥ राज· विजय रगे भणे जी ॥१५॥ इति ॥

चेलणा सतीकी स्वाध्याय.

वीर वखाणी राणी चेलणाजी ॥ यह–टेर ॥ वीर वदी घर आवताजी । चेलणा दीठोरे निग्रंथ ॥ गात्र वनमाहि काऊसग रह्याजी । साधता मुगतीको पंथ ॥ वीर वखाणी० ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणाजी । सतीय सिरोमणी जाण ॥ चेडाकी साते सुताजी । श्रेणीक प्रियल प्रमाण ॥ वीर०॥ २ ॥ सीत=थंडार सबलो-पडेजी । चेलणा प्रीतम पास ॥ चारित्रीयो चित्तमें वस्योजी । सो बाहिर रह्यो हाथ ॥ वीर० ॥३॥ अवक जागी कहे चेलणाजी । किम करता होसें तेह ॥ कामणीरे मन कुभाव वस्योजी । श्रेणीक पडयोरे सन्देह ॥ वीर०॥ ४ ॥ अंतेऊर परजालजोजी । श्रेणीक दियोरे आदेस ॥ भगवंत संशय भांगीयोजी । नयक्यो

चित्त नरेस ॥ वीर० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकाजी । पेसतां नगर मझार ॥ धुंवा धकरोल देखी कहेजी । जा जा शुंडा अभय कुमार ॥ वीर० ॥ ६ ॥ तातको वचन पाळीनेजी । व्रत लियो अभय कुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणाजी । पामसे भवतणो पार ॥ वीर०॥ ७ ॥ इति ॥

अरणक श्रावकजीको स्तवन.

(घरछूटे, धनछूटे, और–कहोतो सबि छूटे, पिण–संग न छूटे, यह–देशी)

धन छोडुं, घर छोडुं, । प्राण कहोतो अबी छोडूं ॥ पिण धर्म न छोडू ॥ यह–टेर ॥ जहाज डुबेतो–जोर किसीका । मै क्या जहाज भणी बुडुं ॥ धन० ॥ घर०॥ प्राण०॥ पिण०॥१॥ लाखो लोक-मुझे सतावे । किनसें लड मोहोवत तोडूं ॥ धन० ॥ २ ॥ धर्म हारेसें-जन्म न सुधरे । हीरा पत्थरसे किम फोडू ॥ धन०॥ ३ ॥ धर्म विना नर पशू बराबर । सुना जंगलमें–किम दोडू ॥ धन०॥ ४ ॥ श्री वीतरागके धर्मका शरणा । दूजा–अधर्मसें–मनमोडू ॥ धन०॥ ५॥ मुनिरामकहे धन–अरणक श्रावक । जिनकी महिमा किम जोडू ॥ धन० ॥ ६ ॥ इति ॥

सुलसा श्राविकाजीकी स्वाध्याय.

(इण अवसर एक आवी जंबुकी रे, यह–देशी.)

धन धन सुलसा साची श्राविकाजी। जेहने निश्चळ धर्मको ध्यान रे॥ समकित धारी नारी जे सतीजी। जेहने वीर दियो बहुमान रे॥ धन धन सुलसा साची श्राविकाजी॥ यह–टेर॥ ॥ १ ॥ एकादिन अम्बड तापस प्रतिबोधवाजी। कहे एहवु वीर जिणेश रे॥ नगरी राजगृही सुलसा भणीजी। कहेजो हमारो धर्म सन्देशरे॥ धन धन०॥ २ ॥ सुनकर अम्बड मनमे चिंतवेजी। धर्मलाभ इशोजी वयणरे॥ एहवुं कहवावे जिनवर जे भणीजी। कैसो श्रेष्ट दृढ तस समकित रतन्रे॥ धन०॥ ३ ॥ अम्बड तापस, परीक्षा कारणेजी। आव्यो राजगृहीके बाहेररे॥ पहिले ब्रह्मा रुप विकुर्व्युजी। वैक्रिय शक्तितणे अनुसाररे॥ धन०॥ ४ ॥ पहेली पोळे प्रगट्या देखनेजी। चौमुख ब्रह्मा वंदन कोटरे॥ सघळी राज प्रजा सुलसा विनाजी। तेहने आवी नमें वेकरजोडजी॥ धन०॥ ५ ॥ दुजे दिन दक्षिण पोळे जायनेजी। धरियो कृष्णतणो अवताररे॥ आव्या पुरजन तिहां सघळा मिळीजी। नहीं आई सुलसा सम-

कित धाररे ॥ धन०॥ ६ ॥ तीजेदिवसें पश्चिम वारणेजी । धरियु इश्वर रुप महंतरे ॥ तिमहिज चौथे हुयो पचीसमोजी । आवी समोसर्यो अरिहंतरे ॥धन०॥ ७॥ तो पण सुलसा नही आइ वदवाजी । तेहतु जाणी समकित साचरे ॥ अम्बड सुलसानें प्रणमी करीजी । करजोडी कहे एहवी वाचरे ॥ धन०॥ ८ ॥ धन्य तु समकितधारी शिरोमणिजी । धन्य तुं समकित विचवा वीरे ॥ इम प्रसशी कहे सुलसा भणीजी । जिनजीये कहिछे धर्म आशीसरे ॥ धन०॥ ९ ॥ निश्चल समकित देखी सतीतणुजी । ते पण हुओ दृढ मनमांयरे ॥ इणपरे शांतिविमळ कवीरायनोजी । बुद्धकल्याणविमळ गुण गायरे ॥ धन० ॥ १० ॥ इति ॥

श्रीकृष्ण लीला.

(तूही तूही याद, आवेरे दरदमें, यह-देशी)

जल जमुना तट, आच्छा जमुना तट, भला जमुना तट, जावेरे सावरीयो ॥ जावेरे सावरीयो ने, जावेरे गोविंदो ॥ जल जमुना तट जावेरे मावरीयो ॥ यह-टेर॥ माता यशोदा महीरे विलोवे । माखण मागी खावेरे कवरीयो ॥ जल० ॥ आच्छा० भला०॥ जावेरे०॥जावेरे०॥ जावेरे० ॥ जल०॥ १ ॥

दधी दूध वेचण जावेरे गुवालण। मार्गमें राड मांडेरे पातरीयो ॥ जल ॥ २ ॥ धेनू चराइ-वंसरी वजाइ। गोरधन नाम गिरवर धरीयो ॥ जल० ॥ ३॥ लेकर दंडा-मिलकर संडा॥ कहान कवर जब रमण निसरीयो ॥ जल० ॥ ४ ॥ खेलत गेंद गइ जमुनामें। जाय पडी जिहां काली द्रह भरीयो॥ जल० ॥ ५ ॥ कोइनही कहाडे-सबही ठाहडे ॥ कहान कवरजी झट जाय पडीयो ॥ जल० ॥ ६॥ नागनाथ गेंद लायोरे गोविंदो। देख रहा सब गायका गवळीयो ॥७॥ वर्षज सोला करी रंगरोला। नाम जक्तमें अहीरको धरीयो ॥ जल० ॥ ॥८॥ कंश विदारी मथुरा धारी। सेवरा मंडपे भामाजी वरीयो ॥ जल० ॥९॥ जक्त वल्लभ जग नाम धरायो। पूर्व पुन्यको संचय करीयो॥ जल० १० ॥ कहे हीरालाल जक्त यशः गावे। कीर्तीको जल-जक्तमे पसरीयो ॥ जल० ॥ ११ ॥ इति ॥

शुद्ध समकितको स्तवन.

समकित रतन चिंतामणी। वांछित सुखको दातारोजी ॥ जिन करणी आती राखजो। टालो पंच अतिचारोजी ॥ समकित रतन चिंतामणी ॥ यह-टेर ॥ १ ॥ पुन्य जोगे मानव भव लह्यो।

उत्तमकुल आवतारोजी ॥ समकित सरधा है दोहली। कोथळी भर विवहारोजी ॥ समकित०॥२॥ कायक खए कायक उपसमें । क्षय उपसम कही जगभाणोजी ॥ सासवादान पडता थका । वेदेसो वेदक जाणोजी ॥ समकित० ॥ ३ ॥ सातुं क्षयथी क्षायिक आवे । दाखी श्रीजिनरायाजी ॥ क्षायिक आया जावे नहीं । आगम भेद बतायाजी ॥ सम० ॥ ४ ॥ ए निश्चय समगतिका । ते तो केवली जानेजी ॥ छद्मस्त तो विवहारथी । द्रव्य क्रियासुं पहिच्यानोजी ॥ सम० ॥ ५ ॥ देव अरिहंत निग्रंथ गुरू । धर्म जिन आज्ञा प्रमाणोजी ॥ ए तीनु तत्व समाचरे । सो विवहार वखाण्योजी ॥ सम०॥ ६ ॥ छे आवळका प्रमाण ही । फरसें समकित प्राणीजी ॥ अर्धपुद्गलमेसु शिव लहे । भाख्यो केवल ज्ञानीजी ॥ सम०॥ ७ ॥ तप संजम किरीया करे । जो समकित विना कोईजी ॥ छ्यार उपर जिम लिपनो । अंक विना सुनो होवेजी ॥ ८ ॥ इण कारण सुणो बुधजणा । समकित दृढ करी राखोजी ॥ मिथ्याभर्म निवारीने । जो शिव सुख अभिलाषोजी ॥ सम० ॥९॥ मास मास तपस्या करे । कुस अग्र जल आहारोजी ॥ समकित

॥ जिन० ॥ झुटा० ॥ ११ ॥ चेतन कहे सत्ता भी मांहीं । सुनो सासन सिरदार ॥ इमानुदार है गव्हा हमारे । जाणे सव संसारजी ॥ जिन० ॥ मुगती०॥ १२ ॥ मै चेतन अनाथ प्रभुजी । करम फिरे भी भारी ॥ जीव अनते राहा चलतकुं । लुट चौरयासीमें डारीजी ॥ जिन० ॥ मुगती० ॥ १३ ॥ वडे वडे पंडित इण लुटे । ऐसादम बतलाया ॥ धरम कहा और-पाप कराया । ऐसा करज चढायाजी ॥ जिन० ॥ मुगती ॥ १४ ॥ हिंसामांहि धरम वताया । तपशा सेती डिगाया ॥ इंद्रिया सुखमें मगन करीनें । झुटाजाल फैलायाजी ॥ जिन०॥ मुगती० ॥ १५ ॥ ऐसाकरो इनूसाफ प्रभुजी । अपिल होने नही पावे ॥ हा करसी चेतनकी होवे । जनम् मरण मिटजावेजी ॥ जिन० ॥ मुगती०॥१६॥ज्ञान दर्शन करी मुनूसफी॥ दोनोको समझाया ॥ चेतनकी डिगरी करदीनी । करमोकी करज वतायाजी ॥ जिन० ॥ मुगती०॥ १७ ॥ असल करज जो था करमोका । चेतन सेती दिलाया ॥ शुद्ध संजम जद करी जमानत । आगेका दुःख मिटायाजी ॥ जिन० ॥ मुगती० ॥१८॥ आश्रव छोड सम्वरको धारो । तपशामें चित्त

लावो ॥ जल्दी करज अदा कर चेतन । सिधा मुगतिकों जावोजी ॥ जिन०॥ मुगती० ॥ १९ ॥ शुद्ध संजम जद करी जमानत । चेतन डिगरी पाई ॥ फागुण शुद्ध दशमी दिन मंगल । सन उगणीसें आठोइजी ॥ जिन०॥मुगती०॥२०॥ इति॥

पंच परमेष्टी प्रार्थना छंद.

(ललित–छद)

प्रथम प्रार्थना, प्रेमसुं करूं । अरिहंतदेवको, ध्यान में धरूं ॥ सकल जक्तका, स्वामीछो खरा । अरर ! नाथजी, आप ईश्वरा ॥१॥ शरण राखजो, सिद्ध शाश्वता । अधिक अतरे, राखू आसता ॥ करम फासको, त्रास तोडवा । अरर ! वैरीको, संग छोडवा ॥ २ ॥ अनुप ज्ञानकाऽचार्य ओपता । धरम ध्यानको, बीज बोवता ॥ करग्रही करूं, विनती सदा । अरर ! ज्ञानकी देवो सम्पदा ॥३॥ दिल्रशा उपाध्यायजी खरे । लुली लुली नमू, प्रत्यक्षरे ॥ सकल धर्मका, धोरी स्वामरे । अरर ! तोडिया, क्रोध कामरे ॥ ४ ॥ स्रमण सर्वी, सेव ते सजू । शुद्ध मने भला, भावसें भजूं गुणानिधी गुरु, ज्ञान आपजो । अरर ! कर्मका, काापजो ॥ ५ ॥ सरस्वती मया, शुद्ध धो

गीरा। दिल न आनजो, दोष माहेरा ॥ गरिवदासकी, गहन विनती। शरण सत्य द्यो, निरमळी मती ॥ ६ ॥ इति ॥

पंचपरमेष्टी प्रभाती नमन पद.

(चाल—गजल.)

प्रभात उठ पंच प्रमेष्टी नमो खरी। तुमनामथी संसार जाय-छीन्नमें तरी ॥ प्रभात०॥ १ ॥ यह–टेर ॥ अरिहत देव गुण अती, सहाय्यदोगीरी। सुनी वाणी आपकी हमारा–चित्त लिया हरी ॥ प्रभात०॥ तुम०॥ प्रभात०॥ २ ॥ सकलकार्य सिद्ध-अष्ट–गुण तो धरी। शत्रुकर्म तोड आप–शीव तो वरी ॥ प्रभात०॥ ३ ॥ आचार्य उपाध्याय–परमपूज्य तो सिरी। छत्तीस और–पचीस गुण–ज्ञानकी झरी ॥ प्रभात०॥ ४ ॥ सत्तावीस साधुगुण –गग नीर तो भरी । गुण एकसो ने आठ जाय –पाप तो डरी ॥ प्रभात० ॥ ५ ॥ प्राणनाथ पंचप्रभु–तोडीये अरी। देओ ज्ञान करो पार दया–धर्म आदरी ॥ प्रभात० ॥ ६ ॥ आरज करे करजोड–चंपालालजी अती। उतारो भवपार प्रभु–यह विनती ॥ प्रभात० ॥ ७ ॥ इति ॥

पंच परमेष्टी प्रभाती स्तवन.

(राजा हूं मै कोमका, और–इंदर मेरा नाम, यह–देशी.)

पह उठी मैं सदा नमूं प्रभु–पंच प्रमेष्टी नाम । इणकरमोंके लिये–नहीं मुजे आराम ॥ यह–टेर ॥ दील लगा है आपसें प्रभु–नहीं औरसें काम । अरजी तो मेरी कीजीयें–लगे नहीं कछु दाम् ॥ पह० ॥ इण० ॥ १ ॥ लक्ष चौरयाशी योनी का प्रभु–बडा विकट है ठाम । फिरते फिरते मै थकी –मिलानहीं आराम ॥ पह० ॥ २ ॥ आष्ट कर्मकू तोड देओ प्रभु–आयो शरणें श्याम । मनके अंदर आपकूं–बहोत करू प्रणाम ॥ पह० ॥ ३ ॥ आप तरे संसारसे प्रभु–मुजे चढी हे धाम । ज्ञान तो मुजकु दीजीये–पावूं पद निरवाण ॥ पह० ॥ ४ ॥ सुख दीजो दुःख मेटजो प्रभु–यही तुम्हारी वाण । मोय गरीब-की विनती–सुणजो कृपानिधान ॥ पह० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्रीजिनेश्वर प्रभुसे विनंती.

[चाल–कल्याण]

जय जय जिनेश्वरा, तुच इश्वरा । नम्र थइने नमूं, सदा धरा धरा ॥ यह–टेर ॥ विनंती मागु छुं हुं स्वामी । भवजल तरवा पाज ॥ हुं अपराधी

पापी पुरो । माफकरो माहाराज ॥ जय जय०
तुच०॥नम्र०॥सदा०॥१॥ सदबुद्धि आपो सेवकं
। छो स्वामी सुखकार ॥ कुड कपट दिलमें नहं
धारूं । निराधार आधार ॥ जय जय०॥२॥ एव
आसरो अतरजामी । और नहीं कोइ आस ॥ श
रणे छुं सेवक हु थारो । प्रीते राखो पास ॥ जय
॥ ३ ॥ संसारीक माया बंधनमें । वळग्यो छु
दिन ॥ कहे पानाचद तुज शरणें । सुख दुःख
कर्माधिन ॥ जय० ॥ ४ ॥ इति ॥

श्रीजिन वाणी—स्तवन.

(चाल—महाड, [सोकडलीरो साल] यह—देशी.)

श्री वीर परूप्यो धर्म—म्हाने वाहालो लागेजी ॥ म्हाने वाहालो०॥ श्रीवीर०॥ यह—टेर ॥ दुवा दशांगी वाणी जाणी, अमृत कुंपी समान। जन्म जरा नें मरण मिटावे, देवेपद निरवाण ॥ म्हाने०॥ वाहालो० ॥ १ ॥ और अनेरा देवकी वाणी, मानी अनती वार ॥ तो पण प्राणी सुखनहीं पायो, फिरीयो गतीमांहे च्यार ॥ म्हाने० ॥ २ ॥ अबके उत्तम पुन्य संजोगे, जोग मिल्यो दश बोल ॥ सुणी सरधी परती तिणपरे, पावे सुख अमोल ॥ म्हाने०॥ ३ ॥ इति ॥

श्री ऋषभदेव प्रभुको पारणो.

घडा एकसो आठ सबी मन । रस भरीयोछे निको ॥ उलट भावसूं दान वेहेरायो । मांड दीयो छे पोखो ॥ ए म्हारी रस सेलडी । आदिजिनेश्वर कियो पारणो ॥ यह-टेर ॥ देव दुंदुभी वाजरही है। सोनैयाकी निरखा ॥ चारे माससु कियो पारणो । गइ भुक ने त्रिरखा ॥ ए म्हारी० ॥ २ ॥ ऋद्धि वृद्धि ने मनोकामना । घरघर मंगलाचार ॥ दुनिया हारष वधामणोजीकांई । आखातीज तीव्हारे ॥ ए म्हारी०॥३॥ चिंताचूरण विघ्ननिवारण। पुरो मनकी आस ॥ सेवक कहे म्हारी आरज सुणजो । श्रीऋषभदेव महाराज ॥ ए-म्हारी०॥ ४ ॥ दान शील तप भावनाजीकांई । शिवपुर मारग च्यार ॥ कर्मखपायके मुक्तिगयाजीकांई । पुछे वरत्या जय जय कार ॥ ए म्हारी० ॥५॥ इति ॥

श्री शितलनाथ प्रभुसे विनंती.

(चाल-धनाश्री)

तारो जगताधार। शीतल जिन तारो जगताधार ॥यह-टेर ॥ मानव पायो, पुन्यउदये । जरिय न सेव्यो सार ॥ शीतल०॥ तारो०॥ तारो०॥ शी०॥१॥

कामीक्रोधी, लोभी निवड्यो । जननी वेठ्यो भार ॥ शीतल० ॥ २ ॥ मोह रूपी, मायामें पडियो । हुयो जुगारी ज्यार ॥ शी० ॥ ३ ॥ तुमवीना जिनजी, यह बालककी । कहो कोनलेशे सार ॥ शी० ॥ ४ ॥ माठा करमी, हुयो मतिमंद । प्यार कर्‍यो परनार ॥ शी० ॥५॥ पूरण पापी, वन्यो हुं आज । धिक् धिक् मुजअवतार ॥ शी०॥६॥ बुगला सारिखो, हुं वहुं ठगीया । त्राह्य किधा नरनार ॥ शी० ॥७॥ ए सहु पापो, माफी आपो । क्षमाकरो इणवार ॥ शी० ॥८॥ नदा माता, जिनका जाया । दढरथ राजकुमार ॥ शी० ॥ ९ ॥ भद्दीलपुरमें, जन्मे प्रभूजी । शिवशुभ कंछन सार शी० ॥१०॥ दोय करजोडी, सेवक विनवे । कर करुणा किरतार ॥ शी० ॥ ११ ॥ परम दयाल, देवतु साचो । कृपाकरो इणवार ॥ शी०॥१२॥ इति

श्री शांतिनाथ प्रभुको स्तवन.

(थयाछोरे पति तेज प्यारी; यह–देशी.)

नमुछरे-प्रभु शांति जिनंदजी, करी दरीशन आजे ॥ यह–टेर ॥ पुर्वभवे मेघरथका भवमें, कर्‍यां दयाका काम ॥ करी काम, राख्यो नाम, शिव धाम, पुरी हाम ॥ एम कर्‍यो निश्चय शिवनगरी

जावा, शांतिजिनंदराजे ॥ नमुछुरे०॥ करी०॥ १ ॥ बाज ग्रहेछे मुजने राजा, कहे कबुतर एम् ॥ पिंडी कापी, मांस आपी, काटे मापी, दया थापी ॥ तीर्थंकर पद बांध्यो प्रभु त्यारे, करयां दयाका काज ॥ नमुछुरे० ॥२॥ पंचम चक्री केरी पदवी, भोगवी तुमे महाराज ॥ केइ राजा, छोडी माजा, धरी कज्या, पाय पुज्या ॥ एम बालमित्र पण पाय तुम्हारा, पुजे प्रभु आजे ॥ नमुछुरे० ॥ ३ ॥ इति ॥

नेमजीकी–लावणी.

(राजा हूं मै कोमका, और–इंदर मेरा नाम, यह–देशी)

आयेथे पीया व्याहकु, तुम सजके खुब बरात । तोरणसें रथ फेर चले, ये है कैसीबात ॥ यह–टेर ॥ सुणोहो यादव रायजी, तुमहो मेरेनाथ । जातेहो कहां छोडके, जरा पकडो मेराहाथ ॥ आये०॥तुम० ॥ तोरणसें० ॥ ये है०॥१॥ तुमहो मेरे अंतरजामी, नवभवके महाराज । तुमसिवाय कोईनहीं, जगमें मेरेतो सरताज ॥ आवो मेरे घरमें स्वामी, मनधर हरष अपार । अरजी हमारी सुणजो साहिब, मुझपर दयाविचार ॥ आ० ॥ २ ॥ दिलकी–दिलमें रही है मेरे, किसको करुं पुकार । मैं भी तुम्हारे संगचलूंगी, आखिर गढगिरनार ॥ लिखाहै लेख

विधाताने, ओ कौन मिटावन हार। होनीथीसो होगई, अब तुम्हारे हाथ करार ॥ आ०॥३॥ मुक्तपुरी जानेका रस्ता, धरा ठियाहै आप। ज्ञानध्यानसें दूरकियासव, जगत जाळका पाप ॥ राजेमतीकी अरजी ऐसी, सुणजो दीनदयाल। इंद्र चंद्र कहे अब राजुलजी, करी है मंगळ माल ॥ आ०॥ ४॥ इति ॥

श्री पार्श्वनाथ प्रभुको स्तवन

(चाल–धनाश्री)

पारसनाथ आधार, मेरोरे प्रभू–पारसनाथ आधार ॥यह–टेर॥ जस पसाई नाग नागणी, पाया सुर आवतार ॥ मेरोरे० ॥ १ ॥ आश्वसेन नंदन, जगतके वंदन। शिवपदके दातार ॥ मेरोरे०॥२॥ नव हास्त शरीरं, निल वरणं। उतारो भवपार ॥ मेरोरे० ॥३॥ कमठ अभिमानी, तप अज्ञानी। उपसर्ग दियो अपार॥ मेरोरे०॥४॥ धरणेंद्र आये, अधर उठाये। उपसर्ग दियो टाळ॥मेरोरे०॥५॥ ज्ञाणचंदकी, अरज सुणिजें। उतारो भवपार॥ मेरोरे०॥ ६ ॥ इति ॥

श्री महावीर स्वामीको स्तवन

(आ अरजी–अराजिनवरजी, यह–देशी.)

महावीरजी–करूं एक अरजी२। तुमकरो सेव-

-ककां काज, राखो मोरी लाज । दुःख दुरकरजी
॥ यह–टेर ॥ शुक्ल त्रयोदशी चैत्र मासकी । जन्म
तिथी कहवाय ॥ राय सिधारथ त्रसला राणी ।
मनमें हरख न माय ॥ दुःख दुरकरजी ॥ महा० ॥
करूं० ॥ तुम० ॥ राखो० ॥ दु ख० ॥ १ ॥ सुरनर
इंद्र मळी सहु आवी । करे जन्म मोहोत्सव ताम ॥
द्वादस दिवसें मात तात मळी । वर्द्धमान ठवे नाम
॥ दु ख०॥ महा०॥ २ ॥ बाळवयें एकदिवसें प्रभु-
नी । क्रिडा करवा जाय ॥ इंद्र प्रसस्यां प्रभुबळ
ीवा । सुर आवे एक त्यांय ॥ दु ख० ॥ महा०॥
॥ बुद्धिवंता सहु बाळक साथें । सुर बाळक
जाय ॥ ताड प्रमाणे रूप करीनें । प्रभुको अ-
र उठाय ॥ दु ख० ॥ महा० ॥ ४ ॥ अवधि ज्ञा-
ें आप प्रभूजी । सुर जाण्यो तत्काळ ॥ महा
र मुष्टीसें मारी । पेसाड्यो पाताळ ॥ दु ख० ॥
०॥ ५ ॥ कर जोडी सुर चरण नमंता । बोले
धरी धीर ॥ सुर नर इंद्रें जेम वखाण्या । तेम
छो महावीर ॥ दु ख० ॥ महा० ॥ ६ ॥ म-
रजिन नाम तिहां स्थापी । सुर गयो सहवा
बाळमित्रकी अर्जे स्विकारी । मनसुखकी
भास ॥ दु ख० ॥ महा० ॥ ७ ॥ इति ॥

श्री महावीर प्रभुको आर्जी.

श्रीमहावीर स्वामी, अंतरज्यामी, शिवग गामी, पुरोहमारी आस ॥ प्रणमुं शिर नमी, कु मती वमी, सुमती स्वामी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ श्रीमहा० ॥ अंतर० ॥ शिव० पुरो० ॥ प्रणमु ॥ कुमती० ॥ सुमती० ॥ पूरो० ॥ यह–टेर ॥ चाल–साखी ॥ परम करम संच्याखर हों। सेव्या विषय–विकार ॥ आतमदोष नहीं आ वधारयो। गर्वसहित गमार ॥ चाल–बदल, प्रथम= सुरुकी ॥ बांध्याकर्म अपारी, विनंती हमारी, चि त्तमें धारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ श्रीमहा० ॥ अतर० ॥ शिवगत० ॥ पुरो० ॥ प्रणमु० ॥ कुमती० ॥ सुमती० ॥ पुरो० ॥ १ ॥ चाल– साखी ॥ आयो हुं आपके आसरे जी। बाह ग्रह्याकी लाज ॥ भमतां भवजल पार उतारो। गिरवा गरीब निवाज ॥ चाल–बदल, प्रथम=अव्वलकी ॥ यह छे आर्जी हमारी, किजो स्वीकारी, छो उपकारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ श्रीमहावीर० ॥ प्रणमु० ॥२ ॥ चाल–साखी ॥ वीरप्रभु मुज हार हीयाका। आ- तमका आधार ॥ तुमचरणांबुज वासता तर हुस अपार ॥ चाल–बदल०

आधारी, सुरत प्यारी, लिजो उगारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो०॥ ३ ॥ चाल–साखी ॥ जन्मो जन्म हुं दास तुहारो । वाहाला प्रभु विस्वास ॥ चम्पालालजी, मुनिपरतापे । अरजी कालीदास ॥ चाल–बदल, तुरकी ॥ किधी क्रोड आफरी, चित्त विचारी, ल्यो अवधारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ ४ ॥ इति ॥

श्री महावीर स्वामीको स्तवन.

मनडो मोह्योजी २ । महावीर स्वामी म्हाने दर्शण देइदोजीक् ॥ मनडो मो०॥ यह–टेर ॥ दसमां स्वर्गथकी चविआया । बहोत्तर वरस स्थिती पायाजी ॥ पूरवला पुन्यारा जोगे । नाथ कहवायाजीक् ॥ मनडो०॥ मनडो० ॥ महावीर०॥ मनडो०॥ १ ॥ सिद्धारथ राजाजीका नंदन । त्रसलादेवी जायाजी ॥ तीनलोकमें रूप अनोपम । अधिको पायाजीक् ॥ मनडो०॥ २ ॥ तीर्थंकर पदवीसुं आया । ग्यान घनेरो लायाजी ॥ भवीजीवाका कार्य सुधारयां । पछे मुगत सिधायाजीक् ॥ मनडो० ॥ ३ ॥ मनमें जो नर ध्यावे । ओ नर सुख अनंता पावेजी ॥ जन्म जराने मरण मिटावे । फेर गरभ नहीं आवेजीक् ॥ मनडो०॥ ४ ॥ गुरु हमारा रामरतनजी । दीयो पाप छीटकाइजी ॥ चोट लगी

श्री महावीर प्रभुको आर्जी.

श्रीमहावीर स्वामी, अंतरज्यामी, शिवगत गामी, पुरोहमारी आस ॥ प्रणमुं शिर नमी, कुमती वमी, सुमती स्वामी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ श्रीमहा० ॥ अतर० ॥ शिव० ॥ पुरो० ॥ प्रणमु ॥ कुमती० ॥ सुमती० ॥ पूरो० ॥ यह-टेर ॥ चाल-साखी ॥ परम करम संच्याखरा हमें। सेव्या विषय-विकार ॥ आतमदोष नहीं आवधारयो। गर्वसहित गमार ॥ चाल-बदल, प्रथम= सुरुकी ॥ बांध्याकर्म अपारी, विनंती म्हारी, चित्तमें धारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ श्रीमहा० ॥ अंतर० ॥ शिवगत० ॥ पुरो० ॥ प्रणमु० ॥ कुमती० ॥ सुमती० ॥ पुरो० ॥ १ ॥ चाल-साखी ॥ आयो हुं आपके आसरे जी। बाह ग्रह्याकी काज ॥ भमतां भवजळ पारउतारो। गिरवा गरीब निवाज ॥ चाल-बदल, प्रथम=अव्वलकी ॥ यह छे आर्जी हमारी, लिजो स्वीकारी, छो उपकारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ श्रीमहावीर० ॥ प्रणमु० ॥ २ ॥ चाल-साखी ॥ वीरप्रभु मुज हार हीयाका। आतमका आधार ॥ तुमचरणांबुज वासना मेरी। अंतर हुस अपार, ॥ चाल-बदल, प्रथमकी ॥ छो विश्व

आधारी, सुरत प्यारी, लिजो उगारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो०॥ ३ ॥ चाल–साखी ॥ जन्मो जन्म हुं दास तुह्मारो। वाहाला मझ विस्वास ॥ चम्पालाल-जी मुनिपरतापे। अरजी कालीदास ॥ चाल–बदल, मुरकी ॥ किधी कोड आपरी, चित्त विचारी, ल्यो अवधारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ ४ ॥ इति ॥

श्री महावीर स्वामीको स्तवन.

मनडो मोह्योजी २। महावीर स्वामी म्हाने द-र्शण देइदोजीक् ॥ मनडो मो०॥ यह–टेर ॥ दसमां स्वर्गथकी चविआया। बहोत्तर बरस स्थिती पा-याजी ॥ पूरवला पुन्यारा जोगे। नाथ कहवाया-जीक् ॥ मनडो०॥ मनडो० ॥ महावीर०॥ मनडो०॥ १ ॥ सिद्धारथ राजाजीका नंदन। त्रसलादेवी ...ायाजी ॥ तीनलोकमें रूप अनोपम। अधिको ...याजीक् ॥ मनडो०॥ २ ॥ तीर्थंकर पदवीसुं आ-...। ध्यान घनेरो लायाजी ॥ भवीजीवाका कार्य ...ार्यां। पछे मुगत सिधायाजीरु ॥ मनडो० ॥ ...॥ मनमें जो नर ध्यावे। ओ नर सुख अनंता ...जी ॥ जन्म जराने मरण मिटावे। फेर गरभ आवेजीक् ॥ मनडो०॥ ४ ॥ गुरु हमारा रा-...नजी.।. दीयो पाप छीटकाइजी ॥ चोट लगी

श्री महावीर प्रभुको आर्जी.

श्रीमहावीर स्वामी, अंतरज्यामी, शिवगत गामी, पुरोहमारी आस ॥ प्रणमुं शिर नमी, कुमती वमी, सुमती स्वामी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ श्रीमहा० ॥ अतर० ॥ शिव० ॥ पुरो० ॥ प्रणमु ॥ कुमती० ॥ सुमती० ॥ पूरो० ॥ यह–टेर ॥ चाल–साखी ॥ परम करम संच्याखरा हें। सेव्या विषय–विकार ॥ आतमदोष नहीं आवधारयो। गर्वसहित गमार ॥ चाल–बदल, प्रथम= सुरुकी ॥ बांध्याकर्म अपारी, विनंती ह्मारी, चित्तमें धारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ पुरो० ॥ श्रीमहा० ॥ अतर० ॥ शिवगत० ॥ पुरो० ॥ प्रणमु० ॥ कुमती० ॥ सुमती० ॥ पुरो० ॥ १ ॥ चाल–साखी ॥ आयो हुं आपके आसरे जी। बाह ग्रह्याकी लाज ॥ भमतां भवजल पारउतारो। गिरवा गरीब निवाज ॥ चाल–बदल, प्रथम=अव्वलकी ॥ यह छे आर्जी हमारी, क्रिजो स्वीकारी, छो उपकारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ श्रीमहावीर० ॥ प्रणमु० ॥ २ ॥ चाल–साखी ॥ वीरप्रभु तुज हार हीयाका। आतमका आधार ॥ तुमचरणांबुज वासना मेरी। अंतर हुस अपार ॥ चाल–बदल, प्रथमकी ॥ छो विश्व

आधारी, सुरत प्यारी, लिजो उगारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो०॥ ३ ॥ चाल--साखी ॥ जन्मो जन्म हुं दास तुह्मारो । वाहाला प्रभु विस्वास ॥ चम्पालाल-जी मुनिपरतापे । अरजी कालीदास ॥ चाल--बवल, सुरुकी ॥ किधी क्रोड आफरी, चित्त विचारी, त्यो अवधारी, पुरोहमारी आस ॥ पुरो० ॥ ४ ॥ इति ॥

श्री महावीर स्वामीको स्तवन.

मनडो मोह्योजी २ । महावीर स्वामी म्हाने दर्शण देइदोजीक् ॥ मनडो मो०॥ यह--टेर ॥ दसमां स्वर्गथकी चविआया । बहोत्तर वरस स्थिती पायाजी ॥ पूरवला पुन्यारा जोगे । नाथ कहवायाजीक् ॥ मनडो०॥ मनडो० ॥ महावीर०॥ मनडो०॥ १ ॥ सिद्धारथ राजाजीका नंदन । त्रसलादेवी जायाजी ॥ तीनलोकमें रूप अनोपम । अधिको पायाजीक् ॥ मनडो०॥ २ ॥ तीर्थंकर पदवीसुं आया । ग्यान घनेरो लायाजी ॥ भवीजीवाका कार्य सुधार्या । पछे मुगत सिधायाजीक् ॥ मनडो० ॥ ३ ॥ मनमें जो नर ध्यावे । ओ नर सुख अनंता पावेजी ॥ जन्म जराने मरण मिटावे । फेर गरभ नहीं आवेजीक् ॥ मनडो०॥ ४ ॥ गुरु हमारा रामरतनजी । पाप छीटकाइजी ॥ चोंट लगी

निजनाम धनीकी । म्हारा हीरदामें खटकीजीक् ॥ मनडो० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्री महावीर स्वामीको स्तवन.

मोरा सासन पति बडभागी । ज्यासुं मिळनेकी इच्छालागी ॥ मोरा०॥ यह–टेर ॥ माता त्रसलादेवीका नंदा । ज्याने सेवे सुर नर वृंदा ॥ त्रिभुवनमें बडाहे सोभागी ॥ मोरा० ॥ १ ॥ गौतमस्वामी गणधर पहिला । स्वामी सुधरमा पाटवी चेला ॥ ज्याके शिष्ये जंबु सा वैरागी ॥ मोरा०॥ ॥२॥ छत्र तीन सिरपर छाजे । स्फटिक सिंव्हासण आप विराजे ॥ चौसट इंद्र हुवा अनुरागी ॥ मोरा० ॥ ३ ॥ वाणी वरसत अमृत धारा । मानु देखत लागोछो प्यारा ॥ वाणी सुण सुण हुवा केइ त्यागी ॥ मोरा० ॥ ४ ॥ जंबुस्वामी पुछे सीर नामी । आप जाणोछो कैसाथा स्वामी ॥ ज्याको चरित्र सुणवा लवलागी ॥ मोरा०॥५॥ स्वामी सुधरमा इणपरे बोले । माहारा स्वामीके नहीकोई तोले ॥ अनंत ज्ञानी बडा है सोभागी ॥ मोरा०॥ ६ ॥ त्रिभुवनमें दायक छो दाता । भक्तवच्छल करजो साता ॥ अक्षय सम्पत दीजो हुं मांगी ॥ मोरा० ॥ ७ ॥ संवत उगणीसें साल गुणसट्टे ।

धारा नगरीमें करदीयो थाटे । देवीलालजी मुनी वैरागी ॥ मोरा० ॥ ८ ॥ इति ॥

श्री महावीर प्रभुसें अरजी.

महावीर जिणंद,२ । कर्मोंके फंदसें छुडाय दो ॥ यह–टेर ॥ तपस्याकी तोफ, ग्यानका गोळा । 'मोह' का बुरुज उडायदो ॥ महा०॥ महा०॥ कर्मोंके०॥१॥ लक्ष चौरयासी जीवाजोनसें । जन्म मरण मिटायदो ॥ महा०॥२॥ हुकमीचंदकी याही आरज है । मोकु शिवपुर पहुचायदो ॥ महा०॥३॥ इति ॥

संसारसें उद्धार उपदेशी पद.

(तूही तूही याद आवेरे दरदमें, यह–देशी.)

सिरी जिनराज–शरणो धरमको । अहो जिनराज–शरणो धरमको ॥ शरणो धरमकोने–चरणो सुगतको ॥ सिरी जिनराज० ॥ अहो जिनराज० ॥ यह–टेर ॥ संसार सागरघोर हे व्यरथा ॥ नीर तृष्णा–भरयोरे भरमको ॥ सिरी० ॥१॥ राग द्वेष दोय–मगर मोटका । पाने पड्या गळजावेरे घननको ॥ सिरी० ॥ २ ॥ भव सागरमें–भटकत भटकत । धरम जहाज–मिलो रे तारणको ॥ सिरी० ॥ ३ ॥ भवी–जीव प्राणी बेठा आई । सत

गुरु मिलीया नांव खेवणको ॥ सिरी० ॥४॥ कहे हीरालाल-सुणो भवीप्राणी । चालोरे मुगतमें-ठाम आनंदको ॥ सिरी० ॥ ५ ॥ इति ॥

उपदेशी-स्तवन.

(गुरुजीनें ग्यान दियो भारीरे, गुरु० ॥ यह-देशी.)

ध्यान जिनराज तणा धरणारे, ध्यान जिनराज तणा धरणा ॥ यो संसार असार समज नर, आखिर है मरणा ॥ यह-टेर ॥ लक्ष चौरयांसीमें वार अनंती । पड्या तोय फिरणा ॥ अवसर पाय करे नहीं कारज । फिर कब है करणा ॥ ध्यान० ॥ ध्यान० ॥ यो ससार०॥ आखिर० ॥ १ ॥ पूर्व पुन्यसें मिल्यो मनुष्य भव । और उज्वल वरणा ॥ जैनधर्मका उपदेश पायकर । किम निचे गिरना ॥ ध्यान०॥ २॥ ना तेरे मात पिता सुत बंधव । ना पतनी परणा ॥ ना तेरा माल खजाना । मुरख नाहक दिल धरणा ॥ ध्यान०॥३॥ राग द्वेष ओर-विषय विकारा। याकूं परिहरणा ॥ लालकहे भज नाथ निरंजन। है साचा शरणा ॥ ध्यान०॥४॥इति॥

गुरुदर्शन-विनंति-पद.

भ्रुकमतजावोजी गुरुछाने । विछडमत जाजो-

जी गुरुह्माने ॥ म्हे अरज करुछु थाने ॥ मुल० ॥ यह-टेर॥ सद्गुरु प्रेम हिया विच जडीया । प्रगट कहु क्या छाने ॥ जो मुजसें अपराध वनेतो । करम दोष गुरुह्माने ॥ मुल० ॥ विछड०॥ म्हे० ॥ मुल० ॥ १ ॥ भवसागर जलसें भरीयो । जीव तरण नहीं जाणें ॥ जीरण नाव जोजरी डुबे । पारकरो गुरुह्माने ॥ मुल० ॥२॥ मै चाकरमें चूक पडीतो । गुरु अवगुण नहीमाने ॥ मैं वालक गुन्हाकिया वहुतेरा । पिता विरुद इम जाणे ॥ मुल० ॥ ३ ॥ मेरीदौड जिहांलग सदगुरुजी । न-मस्कार चरणामें ॥ भेरूंदास करजोड विनवे । धन धन है संतानें ॥ मुल० ॥ ४ ॥ इति ॥

गुरुदर्शन-स्तवन.

(ख्यालकी -देशी)

गुरुदेव हमारा; थाकां दर्शनकी म्हारे भावना॥ सुणो सखी सहेल्या; तन धन वारुरे-करसूं वधा-वणा ॥ यह-टेर ॥ तीनलोकको द्रव्यही सारो । करूं भेट तो थोडो ॥ दर्शन करके करू विनंती । क्यूं दीयो दर्शन मोडोजी ॥ गुरु० ॥ थाकां०॥ सुणो० तन० ॥ १ ॥ मातपिता सुत मित्रऽरु स्वामी । खडे खडे सब झांखे ॥ समरथ नहीं कोइ नरक टा-

ळगा । बांह पकड गुरु राखेजी ॥ गुरु० ॥ २ ॥ अंधत्व टाळीने नेत्र दिये और । अपूज्यको पूज्य बनाये ॥ पशुता टाळी जन्म सुधारी । नर पंक्तिमें लायेजी ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ भव भवमें मुझ सद्गुरु सेवा । दीजो वरमशु मांगूं ॥ मुनिराम कहे गुरु दर्शन दीजो । लुळ लुळ चरणे लागूंजी॥गुरु॥४॥इति

गुरु ज्ञान-उपदेशी स्तवन.

(चतुर परनारी मत निरखो, यह-देशी.)

- गुरुजीने ग्यानदीयो भारीरे, गुरुजीने ग्यानदीयो भारी ॥ यो संसार असार जाणने; संजम सुखकारी ॥ यह-टेर ॥ ओछो आउखो घटतो घटतो, छिनछिनमें जावे ॥ वार वार यो मनुष्य जमारो, फेर नहीपावे ॥ गुरुजीने० ॥ गुरुजीने० ॥ यो ससार० ॥ सजम०॥ १ ॥ काचीजी काया, काचीमाया; काचो संसारो॥ आल्प सुखाके कारणें, यो जनम मती हारो ॥ गुरु० ॥ २ ॥ चार दीनाको चटको मटको, देखी मतभूलो ॥ तन धन जोवन कारमो-थे इणमें मती फूलो ॥ गुरु० ॥३॥ चमत्कारहै विजळी जैसो, यो जग है काचो ॥ चेतणो होयतो चेतजो कोइ, यो धरम वडोसाचो ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ उगणीसें छत्तीस सालमें, कण-

जेहे आया ॥ रत्नचंदजी महाराज प्रशादे, हीरालाल गाया ॥ गुरु० ॥ ५ ॥ इति ॥

मुनिमार्ग कठिन–स्तवन.

कवरा साधतणो आचार । योतो चालनो खांडाधार ॥ यह–टेर ॥ मेरूगिरी उठानो मस्तक । पिनी आगनकी झाल ॥ मेणका दातसें चणा चावंना । सहजनही तिणवार ॥ कवरा० ॥ येतो० ॥ १ ॥ भुजाकरके सागर तिरणो । जावनो पेलेपार ॥ सन्मुखपर उपर चढणो । दुष्कर गंगाधार ॥ कवरा० ॥ २ ॥ दो दस उपर दोय परिसा । सहेना दुकर कार ॥ भ्रमर भिक्षाके कारणेस कांई । फिरणो उंच नीच घर द्वार ॥ कवरा० ॥ ३ ॥ शित उष्ण विरखा ऋतु सहेनो । करणो उग्र विहार ॥ वालुकवळ मुखमाहि मेल्यो । स्वादनही लिगार ॥ कवरा० ॥ ४ ॥ हेतु दृष्टांत अनेक लगाया । माने नही कुमार ॥ हीरालालकहे रस संजमको । चढीयो हीरदे मझार ॥ कवरा० ॥५॥ इति ॥

मुनि वंदना गुण स्तवन पद.

(वारीया वारीया वारीया रे, यह–देशी.)

वंदना वंदना वंदनारे–गुरुदेवने म्हारी वंदना

॥ यह–टेर ॥ वंदना करयासुं–मान जो जावे । उचा पदने स्थापनारे ॥ गुरुदेवने० ॥वंदना०३रे ॥ ग्यानीगुरुजीने म्हारी–वंदना० ॥१॥ विनय करथां सुं–ज्ञान जो आवे । भव–भवको दुःख हारनारे ॥ गुरुदेवने० ॥ २ ॥ गुरुजीबुलाया–तेत उच्चारो । करजोडीने बोलनारे ॥ गुरुदेवने० ॥ ३ ॥ भाव-भक्ती मनसुं नितधारो । गुरु–चरणे चित्तधरनारे ॥ गुरुदेवने०॥४॥ रत्नऋषि कहे–विनयअराधो । सहेजमें होवे तीरनारे ॥ गुरुदेवने० ॥ ५ ॥ इति ॥

जैन साधूको सुख.

(बनीरे भाई बनी, यह–देशी)

मजारे भाई मजा । जैनमुनीराजको सदामजा ॥यह–टेर॥ ना काहूका लेना, ना काहूका देना । फीकरकूं दीनी जिन रजा ॥ जैन मुनी०॥ मजारे० ॥ जैन मुनी० ॥ १ ॥ कदीक माल मसाले खावे । कदीक सूके टूके खाजा ॥ जैनमुनी० ॥ २ ॥ कदीक महल हवेलीमें रहते । कदीक झाडके नीचे सेजा ॥ जैन० ॥ ३ ॥ कदीक मुखमल मुलमुल ओढे । कदीक नहिढाके पूरीलज्जा ॥ जैन०॥४॥ ग्राम ग्राममें सज्जन जिनोंके । थाटेपाटे धर्मगजा ॥ जैन० ५ ॥ कछुनहीं तोटा, बाजे सदा मोटा । हरतीहै

जिनोंसें कजा ॥ जैन०॥ ६ ॥ सबराजनके राज महाराजा । अमोल कहे पुन्नसजा ॥ जैन०॥७॥ इति ॥

नेम-राजुल्की गजल.

राजुल पूकारे नेमपिया, ऐसी क्या करी । तुम छोडके चलेजी चुक, हामूसें क्या परी ॥ यह-टेर ॥ आपका वदन् दिखाय, मेरा चित्तलिया हारी ॥ राजुल० ॥ ऐसी० ॥ तुम० ॥ हामूसें०॥ राजुल० ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ हुई आसकी निराश, उदासिनता भरी । जीया वशनहीं मेरा,मितम पीडमें पडी ॥ राजुल० ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ हामूसें रह्यो नही जाय, प्रितम् तुम् विना घडी । संगळिजींये दयाल, धर्म आदरी ॥ राजुल० ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥ निशदिन तुम्हारा लेतनाम, ज्ञानकी झरी । मुनि चन्द्रविजय चरण कमल, चित्तमें धरी ॥ रा०॥ ऐसी०॥४॥ इति ॥

मनकूं सिखामण विषे पद.

मना तोकु-किसविध कर समजाऊ । चेतन तोकुं-किसविध कर समजाऊं । तोकु वारं वार चेताऊंरे ॥ मना० ॥ तोकु० ॥ यह-टेर ॥ हाथीहोयतो-पकड मंगाऊं, पायमें जंजिर डलाऊं । मावतहोयके-उपर बैठुतो, अकुशदेके चलाउं ॥ मना-

तोकु०॥ चेतन तोकु०॥ तोकु वार वार०॥ मना तोकु० ॥ १ ॥ लोहो होयतो–धमण धमाऊं, दोए दोए ऐरण रोपाऊ। ले घनसें घनघोर मचाऊं, पाणी करणे चलाऊ ॥ मना तोकु० ॥ २ ॥ सोनोहोयतो –स्वागीमंगाऊं, करडातावदेवाऊं। ले फुकनीने– फुकनेकुं बैठुतो, जत्रिमें तार खैचाऊ ॥ मना० ॥ ३ ॥ गायन होयतो–गाय रिझाऊ, अंतर वयण बजाऊं। जिन्नदासकी याही अरजहै, ज्योतीमें जोत समाऊ ॥ मना० ॥ ४ ॥ इति ॥

धनका गर्व निषेधक पद.

(फागणकी–देशीमें.)

फूले मतिरे, हारे–फूले मति, धन सम्पत पामी । फूके मतिरे ॥ यह–टेर ॥ पुन्नजोगे या एकट्ठीहोवे । पुन्यहव्या यहनी पडे खामी ॥ फूले०॥ हारे–फू-ले० ॥ धन० ॥ फूले० ॥ १ ॥ विजलीजिम अथिर सहुए। कदी न रहे एकण ठामी ॥ फूले०॥ २ ॥ इन्द्र राजा सेठ बडेबडे जोधे । छोडीगया होइहोई स्वामी ॥ फूले० ॥ ३ ॥ दुःखइणसें कोइनही जावे । आईनही किणरे कामी ॥ फूले० ॥ ४ ॥ स्वार्थ-छोड परमारथ कीजे। अमोलकहे पाचोआरामी ॥ फूले० ॥ ५ ॥ इति ॥

व्यर्थ देह अभिमान पद.

(राग— भीम पलासी, ताल—दादरो)

गोरे गोरे मुखको, गुमान छांड बावरे ॥ गोरे गोरे.॥ गुमान०॥ रंगतो पतग तेरो,कल उडजायगो ॥गोरे गोरे मुखको, गुमान छाड बावरे ॥यह-टेर ॥ १ ॥ धुंवाजैसो देहतेरो, जातहुं न लागेदेरी ॥ धुवा० ॥ जातहु० ॥ नदीकेकिनारे वृक्ष, काल बहे जायगो ॥ गोरे गोरे० ॥ गुमान० ॥ रगतो०॥कल० गोरे गोरे० ॥ २ ॥ ममताको छाडमन, धरलेप्रभुको ध्यान ॥ममताको० ॥धरले० ॥ जुवानीको मांसतेरो, श्वाननहीं खायगो ॥ गोरे गोरे० ॥ ३ ॥ कहे गुनी तानसेन, सुनो शाह अकबर ॥कहे० ॥ सुनो० ॥ बाधीमुठी आयोजैसो, हाथपसार जायगो ॥ गोरे गोरे० ॥ ४ ॥ इति ॥

निर्दोष—जीवन पद.

राग— भीम पलासी; ताल—लावणी.

(देखो सतो अजब तमासा, यह—देशी.)

कर गुजरान गरीबीमें, मगरुरी किस्पर करतारे ॥ नाशवंतवस्तु ह्यजगमें, ममता क्यों तु धरतारे ॥ १ ॥ कर गुजरान गरीबीमें, मगरुरी किस्पर

करतारे ॥ यह–टेर ॥ मट्टी चुनचुन महेल बनाया, गवारकहे घरमेरारे ॥ ना घरतेरा, ना घरमेरा । चीडीया रैन बशेरारे ॥ कर० ॥ मगरुरी०॥ कर० ॥२॥ इस दुनियामें कोइनहि अपना, आपना अपना तुं क्यों कहतारे ॥ कचीमट्टीका बनातुं पुतला, घडी पलकमें ढलतारे ॥ कर० ॥ ३ ॥ इस दुनियाके नाटक चेटक, देख भटकते फिरतारे ॥ कहेतकबीर समजके मूरख, प्रभुनाम क्यों नहि समरतारे ॥ कर० ॥ ४ ॥ इति ॥

उपदेशी–पद.

भैया कैसें गमाते उत्तम जनम ॥ यह–टेर ॥ पीर भवानी पत्थर पूजो । करते हिंसा अजाण ॥ संतज्ञानी धरमीदेखी । करतेद्वेष गुमान ॥ भैया०॥१॥ कंदमूळ अभक्षकों खावो । पीवोअणगळ पाणी ॥ खोटाधदा गुणिकी निंधा । परनारीपे चित्तठाणी ॥ भैया० ॥२॥ नाटक जूवा वेश्या कुसंगे । भमके रात गमाते ॥ दयासमाई मुनिदर्शणगुण । करता दिल् शरमाते॥ भैया० ॥ ३ ॥ गाल्या गावे खावे खेले । फाग गधे हो स्वार ॥ माततात गुरुजात कजावे । लाजेनहि गीवार ॥ भैया० ॥ ४ ॥ धनजोवनके मदमें फसके । अमोल सीखनहीं माने ॥

॥ तो फिर-रोवे उरासिरकुटी । पेली समजावे थाने ॥ मैय० ॥ ५ ॥ इति ॥

उपदेशी-लघु पद.

[बतादे सखी-कोण गली गये शाम, यह-देशी]

बतादे भइया, इसजगमें तेरा कोण ॥ इस० ॥ बतादे० ॥ इस० ॥ यह-टेर ॥ देहसें स्नेह-करेक्यौं व्यर्थ । न रहे कीयाजादूटोन ॥ बतादे० ॥ इस०॥ इस० ॥ बतादे०॥ इस० ॥१॥ धनदौलतकुछ-काम न आता । पुन्यखूटे जावे जू पोन ॥ बतादे० ॥ २ ॥ सजन सभी स्वारथकेहै। जी जी करे-धन होन ॥ बतादे०॥३॥ क्षमा दया दान-यह धर्म तेरा । लेले अमोलसुख जोन ॥ बतादे०॥ ४ ॥ इति ॥

विपत गामी जीवन नाव.

[चाल-कवाली.]

डुबा मैं जा रहाहूं; करपार नैयां मेरी ॥ डुबा मै जा रहा हू ॥ यह-टेर॥ भवसिन्धु हय अपारा, जिसका न पारपाया; हैरतमें आ रहाहूं ॥ करपार० ॥ डुबा मै० ॥ १ ॥ मद क्रोध लोभमाया, तोफान्-शिरपे आया; चक्कर मैं खा रहाहू ॥ कर० ॥ २ ॥ मिथ्या अधेराछाया, रास्ता मेरा भूलाया, उलटा

मैं जा रहाहूं ॥ कर० ॥ ३ ॥ परमाद चोर आया, पुरुपार्थधन चुराया; आलसमें आ रहाहूं ॥ कर० ॥४॥प्रभु–तारन तरन तुंहीहो,भवदुःख हरन तुंहीहो; निश्चय मैं ला रहाहूं ॥ कर० ॥ ५ ॥ न्यायत हय मजेदारा, टुक दिजीयो सहारा, मैं शिरझका रहाहूं ॥ कर० ॥ ६ ॥ इति ॥

अतिउत्तम उपदेशी स्तवन.

(मनडो मोह्योजीर, महावीर स्वामी थाने दर्शन देवोजीक् ॥ म० ॥ यह–देशी.)

लारे लाग्योरे, लारे लाग्योरे–यो पाप करम दुःखदेगो आगेरे ॥ लारे० ॥ यह–टेर ॥ वालपणो तुने खेल गमायो । जवानीमें तिरीया चाव्हेरे ॥ फिरे भटक्तो घरघरमे । थने शरम नहीं आवेरे ॥ लारे० ॥ लारे० ॥ यो पाप० ॥ लारे० ॥ १ ॥ मातपिता सवकुटुम्ब कवीलो । धन दौलत परिवारोरे ॥ मेलमेलकर गयामोटका । ते हारयां जमारोरे ॥ लारे०॥२॥ अब आयोबुढापो गईजवानी । इंद्रियाजोरहटायोरे ॥ मनकी मनमें रहगईथारे । फेर पस्तावेरे ॥ लारे० ॥ ३ ॥ सुखसम्पतने कायाकाची । लेवो जिनवरजीनें जाचीरे ॥ गुरुहमारा रामरतनजीके । सातारांचीरे ॥ लारे०॥४॥इति ॥

अतिउत्तम-उपदेशी-बंजारा.

यो मायाजाल डमेरो । इणमें नहीं सुखको खेरो ॥ यह-टेर ॥ क्यों चहिये हाथीघोडो । क्यों दुःखसें माया जोडो । क्यों फोगट तड़फातोडो ॥ चाल-बदल ॥ इन्में नहीसार, जाओला हार, पडे-ळामार, (चाल-प्रथमकी) जमारो घेरो ॥ इणमें० ॥ यो मायाजाल० ॥ इणमें० ॥ १ ॥ झुटा क्यों झगड़ा मारो । क्यों परधन-देख विचारो । क्यों परस्त्री पर चित्तनिहारो ॥ चाल-बदल ॥ थारीनहीं चीज, व्यर्थमत रीझ, देखतजरीज, (चाल-प्रथमकी) मळेनहीं सारो ॥ इणमें० ॥ २ ॥ या कायादिसे काची, इणमें काइ जाणोथे साची, देखोनी थोडी पाळी ॥ चाल-बदल ॥ दया मन धार, छोडो संसा-र, मिलेअधिकार, (चाल-प्रथमकी) टळेनरकको फेरो ॥ इणमें० ॥ ३ ॥ ससार जहरको प्यालो । इणमें नहीं कोइ जीवेलो ॥ कुछ करणा होयसो करलो ॥ चाल-बदल ॥ करोमत देर, सिराने मेर, कालको घेर, (चाल-प्रथमकी) उभो तैयारो ॥ इणमें० ॥ ४ ॥ इति ॥

उपदेशी-बंजारा. ॥ २ ॥

करो धरम तपशा भारी । जीउ लागे

कारी ॥ यह–टेर ॥ थारो वरस वरस युं जावे । थारो दिनदिन नेडो आवेजी ॥ कोई कालकरेगा पुकारी ॥ जीउ लागे० ॥ करो धरम० ॥ जीउ लागे० ॥ १ ॥ जेरा मनमें निश्चय राखो । अजी लोभ परो थे न्हाकोजी । जिणसुं भलीहोयगा थारी ॥ जीउं० ॥ २ ॥ ए मातपिता सुत भाई । थारेसंग नही चलसीकोइजी । तू करणीजासी थारी ॥ ॥ जीउं० ॥ ३ ॥ तूं मत गुथेना खोटा । तने जम मारेला सोटाजी ॥ थाने देसी महादुःखभारी ॥ जीउ० ॥ ४ ॥ ब्राह्मण रामकृष्णका कहेना । सवझुटाकेनादेनाजी ॥ परनार महादुःखकारी ॥ जीउं० ॥ ५ ॥ इति ॥

निर्पक्ष सत्यदयाधर्म परशंस्या लावणी.

महानंदकारी जैनधर्मजग । देतेज्ञानी इस्को आदर ॥ मुर्ख रीत क्याजाणेइस्की । दूर रहे करके नाऽदर ॥ यह–टेर ॥ तावधतको रुचेनहीं भोजन । नीरोगीखाते नित रुचीधर ॥ चंदचोरकूं है दुःखकारी । साहूकार फीरे मजाकर ॥ सूर्यदेखके विश्वसुखपावे । घूघूकूं होता दुःखअन्दर ॥ मूर्ख० ॥ दूर० ॥ महानंदकारी० ॥ देतेज्ञानी० ॥ मूर्ख० ॥ दूर० ॥ १ ॥ साकरस्वाद सुघडजन जाने । क्याजाने कुम्भारका खर ॥ चीनीअयलको खातेरु-

चीसें । ओर–लोक लातेहै डर ॥ रत्नहारकूं तो- देवंदर । जत्नकरी राखे सुन्दर ॥ मूर्ख०॥२॥ ज- व्हेरपरिक्षा जव्हेरीजाणे । गिवारव्हाकें ज्यौ कं- कर ॥ भ्रमरभोगी पुष्पकों पैछाणे । मख्खी जा बैठे भिष्टापर ॥ केसरकस्तूरी ओलखे नागर । क्या- जाणे उस्कू सुकर ॥ मूर्ख०॥ ३ ॥ ज्ञानवातंतो रुचे ज्ञानीको । मूर्खको रुचे कथा–भाकड ॥ ठाकरठा- करीमें खुशरहते । चाकरीमें सुशरहेचाकर ॥जैसा वो वैसीवस्तूमें राजी । हमकोउस्की नहीफीकर ॥ मूर्ख०॥ ४ ॥ पाखडी पाखडमें राजी । अच्छेसें खुशरहे चातुर ॥ दुकृत्सें दु ख, सुकृत्सें सुख । यहज्ञानीका हुकम् सदर ॥ अमोलिकरिख सुमतकों अराधी । सुखपावेगा अजर अमर । मूर्ख०॥५॥इति।

तत्व पैछान–लावणी.

जैन धर्म जिसमीलाहै प्यारे । ओर–धर्मकू क्या करणा ॥ श्रावक कर्म पैछाणलिया । फिर–ओर कर्मकू क्याकरणा ॥ यह–टेर ॥ देवतिर्थंकर जान- लिया फीर । ओर–देवकों क्याकरणा ॥ निग्रन्थ- गुरुकी सेव भीलीफिर । ओर–सेवकों क्याक- रणा ॥ निरवद्यधर्म पैछानलीयाफिर । ओर–पै- छानकों क्याकरणा ॥ जोतिस्वरुपी जाणलीया

फिर। और-जानके क्याकरणा॥ दिल जीनोका, नर्महुवाफिर। और-नर्मको क्याकरणा॥ श्रावक०॥ और-कर्मकू०॥ जैनधर्म०॥ और-कर्मकूं०।। श्रावक०॥ और-कर्मकू०॥ १॥ आत्मसाधन जिननेकीयाफिर। और-साधनकों क्याकरणा॥ जिनवचन आराधलियाफिर। और-आराधके क्याकरणा॥ ज्ञानसागरकों पायगयेफिर। डाबरडोयके क्याकरणा॥ होनहारसो होगुजरी फिर। उसकू रोयके क्याकरणा॥ शिवमंदिरसुख पर्मपीलाफिर। और-पर्मकों क्याकरणा॥ श्रावक०॥ २॥ अनुभवअमृत भोजनमीलाफिर। भोगजेहरकों क्याकरणा॥ ज्ञानलहेरमें चित्तलगाफिर। विषयलहेरकों क्याकरणा॥ जोगाश्रमजिन धारणकियाफिर। रसनास्वादकों क्याकरणा। कुटम्ब-कबीला छोडदियाफिर। उन्कीयादकों क्याकरणा॥ सिर-पेर-जिनोंने. नंगेकियेफिर। लोकशर्मकों क्याकरणा॥ श्रावक०॥३॥ पुन्यसंचके जो लायाफिर। धनसंचके क्याकरणा॥ पक्षपात जब छोडदियातब। व्रातखेंचके क्याकरणा॥ वैभव अशाश्वत जानलियाफिर। उसमें राचकें क्याकरणा॥ दे-

॥ संजम ज्ञानके मांय, आप लयलीन ॥ आ०॥ वाणी आपकी निरपक्ष–शास्त्र प्रमाण २ ॥ नर-नारीसुनके, मनमें वैरागआवे ॥ म०॥ नेत्रोंसें करुणाका नीर–ढळाढळ जावेर ॥ जद दोनो धडेको तोड, घडा एक कीया ॥ ध० ॥ इण ॥ ३ ॥ वाणी आपकी मिष्टमधुर, आमृतसें प्यारी ॥ आ० ॥ व्याख्यान सुनाके–धर्म दिपाया भारी२ ॥ दान शील तपकी वृद्धि–हुई बहुविध ॥ हु०॥ दया परेभावनासें–हुवा धर्म प्रसिद्ध२ ॥ नंदरामजीने तन मन धनमें, धर्म दिपाया ॥ध०॥ इण० ॥ ४ ॥ सम्मत उगणीससें, आडुसटके साल ॥ आ० ॥ कार्तिक शुद्ध नव्मी–वार भलो मंगल२ प्रेमसिंग क्षत्री, भक्ति मन चाहावे ॥म०॥ ऐसें जगप्रसिद्ध मुनिकादर्श–सदा मनभावे२॥ धन्य रहो आप मुनिराज,धर्म दीपाया ॥ ध०॥ इण ॥५॥ इति ॥

॥८॥ गुरु चेलाको संवाद.

गुरु–देख्योरे चेला विनरुख छाया ॥ देख्योरे चेला विनधन माया ॥ देख्योरे चेला विनफास बंधन । देख्योरे चेला विन [illegible] न्दण ॥१॥ चेला–देख्यो गुरुजी [illegible] गुरुजी विन[illegible]माया ॥

॥-स० ॥ चौमासो करयो रायचूर-आनद बहु॥ पावेर॥ तुमशरणआयो दगडुरिख, जाणो हीवे थारो ॥ जाणो० ॥ छो पज्यो० ॥ ३ ॥ इति ॥

अर्वा-तेलंगा देश (मद्रास=चिनापट्टन) में
दगडू-ऋषिजी मुनिका आवागमनसें पवित्र जैनधर्म उन्नति.

(चाल-लावणी)

मुनि-दुगडूऋषिजी महाराज, चौमासो कियो ॥ चौ० ॥ इण मद्रास नक्सके विच-बडो-जस-लियो२ ॥ यह-टेर ॥ गुरुआपका-पवित्र, बाल-ब्रह्मचारी ॥ बा० ॥ नामशोभे-रत्नरिख-चरण ब-लिहारी२ ॥ उनके तुम सुशिष्य, बडे सुर वीर ॥ ब० ॥ अनार्यदेशके माय-करयो विहार२ ॥ यथा योग्यजाणी गुरुदेव, हुकमफरमायो ॥ हु० ॥ इण० ॥ बडो० ॥ मुनि ० ॥ चौमासो० ॥ चौमासो० ॥ इण० ॥ बडो० ॥ १ ॥ आषाडशुद्ध, नवमी बुधवार ॥ न० ॥ ॥ आप पधारे-फरमकुडा मझार२ ॥ तब नंदरा-मजीकहे, आरज आवधारो ॥ आ० ॥ चौमासो नक्सा बजार-कृपामुनि करो२ ॥ आषाडशुद्ध दिन, नर्कसेमें आया ॥ न० ॥ इण० ॥२

॥ संजम ज्ञानके मांय, आप लयलीन ॥ आ०॥ वाणी आपकी निरपक्ष-शास्त्र प्रमाण २ ॥ नर-नारीसुनके मनमें वैरागआवे ॥ म०॥ नेत्रोसें करुणाका नीर-दळादळ जावे२ ॥ जद दोनो धडेको तोड, धडा एक कीया ॥ ध० ॥ इण ॥ ३ ॥ वाणी आपकी मिष्टमधुर, आमृतसें प्यारी ॥ आ० ॥ व्याख्यान सुनाके-धर्म दिपाया भारी२ ॥ दान शील तपकी वृद्धि-हुई बहुविध ॥ इ०॥ दया परभावनासें-हुवा धर्म प्रसिद्ध२ ॥ नंदरामजीने तन मन धनसें, धर्म दिपाया ॥ ध० ॥ इण० ॥ ४ ॥ सम्मत उगणीससें, आडुसटके साल ॥ आ० ॥ कार्तिक शुद्ध नवमी-वार भलो मंगल२ ॥ प्रेमसिंग क्षत्री, भक्ति मन चाहावे ॥म०॥ ऐसें जगप्रसिद्ध मुनिकादर्श-सदा मनभावे२॥ धन्य रहो आप मुनिराज, धर्म दीपाया ॥ ध०॥ इण ॥५॥ इति ॥

॥७॥ गुरु चेलाको संवाद. ॥॥

गुरु-देख्योरे चेला विनरुख छाया । देख्योरे चेला विनधन माया ॥ देख्योरे चेला विनफास बधन । देख्योरे चेला विन चोरी दन्डण ॥१॥ चेला-देख्यो गुरुजी विनरुख छाया । देख्यो गुरुजी विनधन माया ॥ देख्यो गुरुजी ..

बंधन । देख्योगुरुजी विनचोरी दन्डण ॥२॥

गुरु-कहोनी चेला विनरुख छाया । कहोनी चेला विनधन माया ॥ कहोनी चेला विनफास बंधन । कहोनी चेला विनचोरी दन्डण ॥३॥

चेला-वादलगुरुजी विनरुख छाया । विद्या-गुरुजी विनधन माया ॥ मोह गुरुजी विनफास बंधन । चुगली गुरुजी विनचोरी दन्डण ॥४॥

गुरु-देख्योरे चेला विनरोग गळता । देख्योरे चेला विन अग्निजलता ॥ देख्योरेचेला विनप्यार प्यारा ॥ देख्योरे चेला विनखार खारा ॥५॥

चेला-देख्योगुरुजी विनरोगगळता । देख्यो-गुरुजी विनअग्निजळता ॥ देख्योगुरुजी विनप्यार प्यारा । देख्योगुरुजी विनखार खारा ॥६॥

गुरु-कहोनी चेला विनराग गळता । कहोनी चेला विनअग्निजळता ॥ कहोनी चेला विनप्यार प्यारा । कहोनी चेला विनखार खारा ॥७॥

चेला-चितागुरुजी विनरोग गळता । क्रोध गुरुजी विनअग्निजळता ॥ साधुगुरुजी विनप्यार प्यारा । हिंसागुरुजी विनखार खारा ॥८॥

गुरु-देख्योरे चेला विनपाळ सरवर । देख्योरे चेला विनपान तरुवर ॥ देख्योरेचेला विन पाँख

सुवो । देख्योरे चेला विनमोत मुवो ॥ ९ ॥

चेला–देख्योगुरुजी विनपाळ सरवर । देख्यो गुरुजी विनपान तरुवर ॥ देख्योगुरुजी विनपांख सुवो । देख्योगुरुजी विनमोत मुवो ॥ १० ॥

गुरु–कहोनी चेला विनपाळ सरवर । कहोनी चेला विनपान तरुवर ॥ कहोनी चेला विनपांख सुवो । कहोनी चेला विनमोत मुवो ॥ ११ ॥

चेला–तृष्णा गुरुजी विनपाळ सरवर । नेत्र गुरुजी विनपान तरुवर ॥ मन गुरुजी विनपांख सुवो ॥ निद्रा गुरुजी विनमोत मुवो ॥१२॥ इति ॥

दोन् जैन मित्रांचा संवाद.

पहिला–मित्रा तू कोठे जासी । हर्षातुर फार दिससी । ॥ का आनंदी बनलासी । वद काय असे ते मजसी ॥१॥

दुसरा–मज कार्य असे बा फार । सांगाया नच कीं थार ॥ जाउदे आधिरे मजला । मग सांगिन ते मी तुजला ॥ २ ॥

पहिला–तू बनला शास्त्राभ्यासी । मग आमची किंमत कैची ॥ कोणत्या कामी मिळवीला । बा नफा सांग तू मजला ॥ ३ ॥

दुसरा–जातसे मी जैन सभेला । जी नवी आली सद्याला ॥ मिळविला नाहि मी पैका । नच कवडी अथवा रुका ॥ ४ ॥

पहिला–तू असे अज्ञानी फार। नको बोलूंस फार ॥ कोठूनि काढली सभा। का पडलासी या लोभा ॥ कवणें तुज दिधलें ज्ञान। का मिरविसी शहाणपण ॥५॥

दुसरा–उपकार मानितो त्याचे। ज्यानें केले परिश्रम साचे॥ आम्हांसी दिधले ज्ञान। जैनसभा केली निर्माण॥ अरुणोदय आतां झाला। अज्ञान जाइल विलयाला ॥६॥

पहिला–बा, अवचित पडली गाठ। म्हणोनि, वाटे मज ठीक ॥ तू बनशिल वेडापीर। मग फिरशील की घरोघर ॥ नच होईल तुजला सहाय। मग बा तू करशिल काय? ॥ कोठूनि वेड हें शिरलें। कवणें तुज हें सुचविलें ॥ सांग बा नाव मजसी। मी पाहुनी घतो त्यासी ॥७॥

दुसरा–मम धर्मगुरू असती बा ते। जे ठाउक त्रैलोक्याते ॥ उपमा कोणती धावी। त्यां सर्वोत्तमासी बा मी ॥८॥

पहिला–नको लागु तयाचे नादी। करशिल तू अनहित आधी ॥ मीं सांगतसें उपाय। ते श्रवण करी लवलाह्य ॥ नित्यकरित असावा धन्दा। नको पडूं संभेच्या फंदा ॥ पुष्कळसें धन मिळवावें। जगीनांव तुह्मी कमवावें ॥ चांगला मान मिळवावा। मग सैल खिसा सोडावा॥ करावी सुन्दर नवरी। जी बहु असे रूपाळी ॥ केडी तिजला बनवावें। हसबन्ड आपण कीं व्हावें ॥ बांधावें सुरेख घरदार। मग व्हावें आपण साहुकार ॥ जगिहेची नाव मिळवावें। मग कृतकृत्य कीं व्हावें ॥९॥

दुसरा—स्वधर्माऽभिमान धरावा । आपुला प्राण अ-र्पावा ॥ कुरिती बंद कराव्या । शिक्षणासी जोर द्यावा ॥ कुसम्प हाकुनि द्यावे । अज्ञान मूळ तोडावें ॥ हे इष्ट असे कर्तव्य । कथितो मी तुजला सर्व ॥ सभेमध्ये जात असावें । देशाकरिता नित्य झटावें ॥ लेक्चरें सुबकसी द्यावी । सभा थक्क करुनी सोडावी ॥ मग सहजाचे हो-ईल कीर्ती । जेथे सूख असें बहु अन्ती ॥ १० ॥

पहिला—जोहलासी बहु तू शहाणा । सोडूनि दे रे हा बाणा ॥ ससारा करिता झटरे । कर पोरा लेकरा थकचिरे ॥ वाटेल ती चैन तू कररे । जगी सौख्य ब-हुतचि घेरे ॥ मेल्यावर जासील वाया । दे सुख बा या तनुकाया ॥ ११ ॥

दुसरा—देशाकरिता मी झिजविन काया । धर्मा-करिता मरेन वाया ॥ संघाकरिता सोडिन माना । जैना करिता वर्चिन प्राणा ॥ प्रभुइष्ट पिता महावीर । त्यास नमवीन आपले शीर ॥ तैसेच गुरुचरणाला । नच धा-णिककी कवणाला ॥ धर्माचा धरिन अभिमान । जगा-कडेहो देईन कान ॥ मन रंजवीन बा मी तेथे । जे मोक्ष सुखाते देते ॥ १२ ॥

पहिला—बा खरे अमती तव बोल । मिहि वर्तनकी सम बोल ॥ सांग बा नांव सद्गुरुचे । जे आधार सर्वे ...

दुसरा-गुरुरत्नऋषि त्या ह्मणती। ते केवळ मौक्तिक पक्की॥ काय सांगु तयांची कीर्ति। जी वदवेना गजमती॥ ज्ञानफन्ड त्यानी स्थापविला। जो दिव्य असा मुदाला॥ ज्ञानामृत त्यानी दिधले। आह्मा मज्ञ नना पाजिलें॥ किती वर्णू तयांचे बोल। जे असति बहु अमोल॥ १४॥

प्राहिला-अहा, मिला तव उपकार। मजला न फिटे साचार॥ धर्ममार्ग मज दाविला। बहु उपकार तू केला॥ चकजाकँ समेला तेथें। पाहुँ धर्मगुरु चरणातें॥१५॥इति॥

व्यवहार सम्यक्त्वके ६७ भेदका थोकडा, ❀ उसका १२ बोल. ❀

१प०बोले सर्दहणाका ४भेद	८मेबोलेप्रभाविकाका ८भेद.
२दूजेबोले लिंगका ३भेद.	९नवमेंबोले, आगारका६भेद
३तीजेबोले विनयका१०भेद	१० दशमें बोले जयणा [रक्षा] का ६भेद
४चौथेबोले शुद्धताका३भेद	
५पाचमें बोले लक्षणका५भेद	११ इग्यारमें बोले स्थानकका ६ भेद.
६छट्टेबोले दुषणका ५भेद.	
७सातमें बोले भूषणका५भेद	१२में बोले प्रभावनाका ६भे.

अब उपरोक्त विषयोका विस्तार!

१ पहिले बोले सर्दहणाका च्यार भेद, तेकहेछे—

-१ परमअर्थको परिचयकरे, २ परमअर्थका जाणवा नकी सेवा-भक्तिकरे, ३ समकित धर्म प्राप्त होके (पायने) वम्यो तेहनी संगतवरजे, ४ कुतीर्थिया-की संगत वरजे।

२ दूजेबोले लिंगका तीन भेद तेकहेछे-१ जिमतरुणो पुरुष रंग-रागऊपर राचे, तिम श्री-वीतराग=सर्वज्ञप्रभूका वाणीऊपर राचे, २ तीन दिनको भूको खीर सकरका भोजननें आदरकरे, तिम श्रीवीतराग सर्वज्ञप्रभूका वाणीनें आदरकरे, ३ भणवाकी चायना हुयनें भणावणवालो मिल्या-सुं राजीहोवे, तिम श्रीवीतरागसर्वज्ञ देवाधिदेव-की वाणी सुणकर हर्षवंत हुवे।

३ तीजेबोले विनयका दस भेद तेकहेछे-१ अरिहंतदेवको विनय, २ सिद्ध प्रभूको विनय, ३ आचार्यजीको विनय, ४ उपाध्यायजीको विनय, ५ स्थीवरजीको विनय, ६ कुलको विनय, ७ गण क-तां गच्छ=समुदायको विनय, ८ चतुर्विधसंघ (सा-धु, साधवी, श्रावक, श्राविका) को विनय, ९ सा-धर्मी कहेता सरिखा व्रत वालाको विनय, १० क्रि-यावंतको विनय ॥ इतना जनानें बहुमान दीजो, भक्ति करजो, टालजो।

४ चौथेबोले शुद्धताका तीन भेद तेकहेछे १ मनशुद्धता, २ वचन शुद्धता, ३ काया शुद्धता १ मन करके श्रीवीतराग सर्वज्ञदेवाधिदेवने ध्यावे अनेरादेवनें नहीं ध्यावे, २ वचनथकी श्रीवीतरागसर्वज्ञदेवाधिदेवका गुणग्रामकरे, अनेरादेवका नहींकरे, ३ कायाथकी श्रीवीतरागसर्वज्ञदेवाधिदेवको नमस्कार करे, अनेरादेवकुं नहीं करे।

५ पाचमें बोले लक्षणका पांच भेद तेकहेछे १ सम, २ संवेग, ३ निर्वेग, ४ अनुकम्पा, ५ आस्ता॥ १ सम कहेतां शत्रुतथामित्र के उपर समभाव राखे, २ संवेग कहेतां वैराग्यभाव राखे, ३ निर्वेग कहेतां आरंभपरिग्रहथकी निवर्तवो वाछे, ४ अनुकम्पा कहेतां परजीवकु दुःखीदेखके करुणा करे, अर्थात् साताउपजावे, ५ आस्ता कहेता जीवादिक सुक्षम भाव सुणके मुरझावेनहीं, तथा केवली परूपीत (प्रणित) निर्पक्ष सत्य दयाधर्मकी आस्ता राखे

६ छट्टेबोले दूषणका पाच भेद तेकहेछे १ शंका, २ कंखा, ३ वितिगिच्छा, ४ परपाखंडीकी प्रशंसा, ५ परपाखंडीको संस्तव परिचय॥ १ शंका कहेता श्रीवीतरागसर्वज्ञदेवका वचन (वाक्य) मांहे सन्देसो लावे, २ कंखा कहेता अन्यतीर्थियोंका

आडम्बर देखके चायनाकरे; ३ वितिगिच्छा क-हेतां धर्म=करणीका फळमते सन्देह लावे तथा साधु साध्वीका मलिनवस्त्र देखने दुर्गन्छा तथा दुर्वा-छनादिक करे, ४ परपाखडीकी प्रशंसा कहेतां अ-न्यतीर्थीकी किर्ती=तारीफ करे, ५ परपाखडीको संस्तव परिचय कहेतां अन्यतीर्थीयोके पास जा वणो आवणो तथा विशेष संगत करे।

७ सातमें बोले भूषणका पांच भेद तेकहेछे -१ जैनधर्ममें धीरजवंतहुवे, २ जैनधर्मकू दीपावे, ३ जैनधर्मकी भक्तिकरे, ४ जैनधर्ममें चतुरहोवे, ५ च्यार तीर्थ (साधु, साध्वी, श्रावक श्राविका,) की सेवा भक्तिकरे।

८ आठमें बोले प्रभाविका का आठ भेद तेकहेछे-१ जिणकाळे जितना सूत्र=सिद्धान्त होवे तिहनो जाणहोवे, २ मोटा मंडाणसुं धर्मकथा कह कर भव्यजीवाकू प्रतिबोधे, ३ प्रयोक्तवादी कहता यथाशक्ति यथार्थ वाद=विवादकरे, ४ अतीतादिक हेतां तीनकाळकी वातजाणे, ५ विकट तपस्या-रे, ६ अनेकविद्याको जाणहोवे, ७ प्रसिद्ध व्रत-ा, ८ कवी ... सत्यशा...

९ 'नवमें बोले आगारका छे भेद' तेकहेछे— १ देवभिओगेणं, २ रायभिओगेणं, ३ गुरुनिग्घाएणं, ४ गणभिओगेणं, ५ वलभिओगेणं, ६ वितिकंतारेणं ॥ १ देवभिओगेणं कहेतां देवताकाभयथकी, २ रायभिओगेणं कहेतां राजाका भयथकी, ३ गुरु निग्घाएण कहेतां मातापिता आदि बडा (जेष्ट) का कहेणाथकी, ४ गणभिओगेणं कहेतां न्यात=जात का भयथकी, ५ वलभिओगेणं कहेतां बलवंतका भयथकी, ६ वितिकंतारेणं कहेतां आटवी मांहे काळ पड्या थकां गरीव दुर्वलका भय थकी !

१० 'दशमें बोले जयणा (रक्षा) का छे भेद' तेकहेछे—१ अलाप, २ सलाप, ३ दान, ४ प्रदान, ५ वंदणा, ६ गुणग्राम ॥ १ अलाप कहेतां समकितीको वतळावनो, (बोलणो.) २ सलाप कहेतां विशेप मिष्ट वचनोंसें बोलणो, ३ दान कहेतां प्रतिलाभनो, ४ प्रदान कहेतां बहुमानदेवनो, ५ वंदणा कहेतां नमस्कार करणो, ६ गुणग्राम कहेतां जस किर्ति=प्रशंस्याकरणी !

११ 'इग्यारमें बोले स्थानक का छे भेद' तेकहेछे—१धरम रूपी नगर, समकित रूपी दरवाजो,

३ धरम रुपी कोठ, समकित रुपी नींव, ३ धरम रुपी वृक्ष, समकित रुपी बीज, ४ धरम रुपी दुकान, समकित रुपी वस्तु, ५ धरम रुपी रतन, समकित रुपी मंजुस=तीजोरी, ६ धरम रुपी भोजन, समकित रुपी थाळ।

२ चारमे बोले भावनाका छे भेद, ते कहे छे, १ जीव चेतन्य लक्षण, २ जीव द्रव्य शाश्वता छे, ३ जीव आठ कर्मका कर्ता छे, ४ जीव पुण्य पाप से सुख दुःखका भोगता छे, ५ अभवी जीवकुं मोक्ष नहीं, ६ भवी जीवकुं आठ कर्म खपायासुं मोक्ष छे।

मोक्ष जावण का च्यार कारण—१ ज्ञान, २ दर्शन, ३ चारित्र, ४ तप। ॥ इति श्री व्यवहार सम्यक्त्वके छव भेदका थोकडो समाप्त ॥

☞ सुचना—समकितीकों यहां थोकडो अवश्य (जरूर) सिखकर जाणपणो करणो चाहिजे जी।

पचीस बोलका थोकडा प्रारंभ.

१ पाहिले बोले गति	६ छट्टे बोले प्राण, १०
२ दूजे बोले जाति ५	७ सातमे बोले शरीर ५
३ तीजे बोले काया	८ आठमे बोले जोग, १५
४ चौथे बोले इन्द्रिय. ५	९ नवमे बोले उपयोग १२
	१० दशमे बोले कर्म ८

९ 'नवमें वोले आगारका छे भेद' तेकहेछे-१ देवभिओगेणं, २ रायाभिओगेणं, ३ गुरुनिग्गाएणं, ४ गणाभिओगेणं, ५ वलभिओगेणं, ६ वितिकंतारेणं ॥ १ देवभिओगेणं कहेतां देवताकाभयथकी, २ रायाभिओगेणं कहेतां राजाको भयथकी, ३ गुरु निग्घाएण कहेतां मातापिता आदि वडा (जेष्ट) का कहेणाथकी, ४ गणभिओगेणं कहेतां न्यात=जात का भयथकी, ५ वलभिओगेणं कहेतां बलवंतका भयथकी, ६ वितिकंतारेणं कहेतां आटवी मांहे काळ पड्या थकां गरीव दुर्वलका भय थकी !

१० 'दशमें वोले जयणा (रक्षा) का छे भेद' तेकहेछे-१ अलाप, २ सलाप, ३ दान, ४ प्रदान, ५ वंदणा, ६ गुणग्राम ॥ १ अलाप कहेतां समकितीको वतळावनो, (बोलणो.) २ सळाम कहेतां विशेष मिष्ट वचनोसें बोलणो, ३ दान कहेतां प्रतिलाभनो, ४ प्रदान कहेतां वहुमानदेवनो, ५ वंदणा कहेतां नमस्कार करणो, ६ गुणग्राम कहेतां जस किर्ति=प्रशंस्याकरणी !

११ 'इग्यारमें बोले स्थानक का छे भेद' तेकहेछे-१धरम रुपी नगर; समकित रुपी दरवाजो,

तेन्द्रिय, (कान) २ चक्षुइन्द्रिय (आँख) ३ घ्राणेन्द्रिय (नाक) ४ रसेन्द्रिय (जीभ) ५ स्पर्शेन्द्रिय (शरीर) ।

५ ' पाचमें बोले पर्या छे ' तेकहेछे–१ आहार पर्या, २ शरीर पर्या, ३ इन्द्रिय पर्या, ४ मनपर्या, ५ वचन पर्या, ६ श्वासोश्वास पर्या ।

६ ' छट्टेबोछे प्राण दश ' तेकहेछे– १ श्रोतेन्द्रिय वल्प्राण, २ चक्षुइन्द्रिय वल्प्राण, ३ घ्राणेन्द्रिय वल्प्राण, ४ रसेन्द्रिय वल्प्राण, ५ स्पर्शेन्द्रिय वल्प्राण, ६ मनबल्प्राण, ७ वचन वल्प्राण, ८ काया वल्प्राण, ९ श्वासोश्वास वल्प्राण, १० आउखो (आयुष्य) वल्प्राण ।

७ ' सातमें बोले शरीर पाच ' तेकहेछे १ उदारिक शरीर, २ वैक्रिय शरीर ३ आहारक शरीर, ४ तेजस शरीर, ५ कार्मण शरीर ।

८ ' आठमें बोले जोग पंदरा ' तेकहेछे–१ [मनका च्यार जोग] १ सत्य मन जोग, २ असत्य मन जोग, ३ मिश्र मन जोग, ४ व्यवहार मन जोग, [वचनका च्यार जोग] १ सत्यवचन जोग, २ असत्यवचन जोग, ३ मिश्रवचन जोग, ४ व्यववचन जोग [कायाका सात जोग] १ उ-

११ इग्यारमें बोले गुणस्थान. १४	१८ आठारमें बोले दृष्टि. ३
१२ बारमें बोले पाँचइन्द्रियका विषय. २३	१९ उगणीसमें बोले ध्यान. ४
१३ तेरमें बोले दशप्रकारको मिथ्यात्त्व. १०	२० बिसमें बोले षटद्रव्यका भेद. ३०
१४ चौदमें बोले छोटीनवतत्त्वका भेद. ११५	२१ एकवीसमें बोले रासि. २
१५ पंदरमें बोले आत्मा. ८	२२ बावीसमें बोले श्रावकजीका व्रत. १२
१६ सोळमें बोले दंडक २४	२३ तेवीसमें बोले मुनिमहासतीका महाव्रत. ५
१७ सत्तरमें बोले लेश्या. ६	२४ चौवीसमें बोलेभांगा. ४९
	२५ पचीसमें बोले चारित्र. ५

उपरोक्त विषयोका विस्तार कहेछे.

१ 'पहिलेबोले गति च्यार' तेकहेछे-१ नरक गति, २ तिर्यंच गति, ३ मनुष्य गति, ४ देव गति।

२ 'दूजेबोले जात् पांच' तेकहेछे-१ एकेन्द्रिय जाति, २ बेइन्द्रिय जाति, ३ तेइन्द्रिय जाति, ४ चौरिन्द्रिय जाति, पंचेन्द्रिय जाति।

३ 'तीजेबोले काया छे,' तेकहेछे-१ पृथ्वीकाय, २ आपकाय, ३ तेउकाय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय, ६ त्रसकाय।

४ 'चउथेबोले इन्द्रिय पांच' तेकहेछे-१ श्रो-

वनडा का) गुणस्थान, ८ निवृत्तिवादर गुणस्थान, ९ अनिवृत्तिवादर गुणस्थान, १० सुक्ष्म सम्पराय गुणस्थान, ११ उपशान्त मोहनीय गुणस्थान, १२ क्षीणमोहनीय गुणस्थान, १३ सयोगी केवली गुणस्थान, १४ अयोगी केवली गुणस्थान !

१२ ' वारमें बोले पाच इन्द्रियका तेवीस विषय ' तेकहेछे– [श्रोतेन्द्रियका तीन विषय.] १ जीव शब्द, २ अजीवशब्द, ३ मिश्रशब्द [चक्षुइन्द्रियका पाच विषय.] १ कालो,२ लिलो (हिरवो) ३ रातो (लाल) ४ पीलो, ५ धोलो [घ्राणेन्द्रियका दो विषय.] १ सुभिगध, २ दुभिगध [रसेन्द्रियका पांच विषय] १ कडवो, २ कषायलो, ३ खाटो, ४ मीठो, तीखो, [स्पर्शेन्द्रियका आठ विषय] १ हलको, २ भारी, ३ सित (थन्डो) ४ उष्ण (उनो) ५ लखो, ६ चोपड्यो, ७ खरदरो, ८ सुंवालो !

१३ ' तेरमे बोले दशप्रकारको मिथ्यात्व ' तेकहेछे–१ जीवनें अजीव सर्ध्वे (जाणे) तथा कहेतो मिथ्यात, २ अजीवनें जीव सर्धेतो मिथ्यात, ३ धर्मनें अधर्म सर्धेतो मिथ्यात, ४ अधर्मनें धर्म जाणेतो मिथ्यात, ५ साधुनें असाधु कहेतो

-दारिक काय जोग, ३ औदारिक मिश्र काय जोग, ४ वैक्रिय काय जोग, ५ वैक्रियमिश्र काय जोग, ५ आहारक काय जोग, ६ आहारक मिश्र काय जोग, ७ कार्मणकाय जोग।

नवमें बोले उपयोग बारा, तेकहेछे-[ज्ञानका पाँच उपयोग] १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मनपर्यवज्ञान, ५ केवलज्ञान [अज्ञानका तीन उपयोग] १ मतिअज्ञान, २ श्रुतअज्ञान, ३ विभंगअज्ञान, [दर्शनका च्यार उपयोग] १ चक्षुदर्शन, २ अचक्षुदर्शन, ३ अवधिदर्शन, ४ केवलदर्शन।

१० दशमें बोले कर्म आठ, तेकहेछे-१ ज्ञानावरणीय कर्म, २ दर्शना वरणीय कर्म, ३ वेदनीय कर्म, ४ मोहनीय कर्म, ५ नामकर्म, ६ गोत्रकर्म, ७ आउखो (आयुष्य) कर्म, ८ अन्तरायकर्म।

११ इग्यारमें बोले गुणठाणा=गुणस्थान चउदे, तेकहेछे- १ मिथ्यात्त्व गुणस्थान, २ सास्वादान गुणस्थान, ३ मिश्रगुणस्थान, ४ अव्रति सम्यक्दृष्टि (देवताकां) गुणस्थान, ५ देशविरति (श्रावकजीकां) गुणस्थान, ६ प्रमादी (साधुजीकां) गुणस्थान, ७ अप्रमादी (अत्यन्त वैरागी

बनडा का) गुणस्थान, ८ निवृत्तिवादर गुणस्थान, ९ अनिवृत्तिवादर गुणस्थान, १० सुक्ष्म सम्पराय गुणस्थान, ११ उपशान्त मोहनीय गुणस्थान, १२ क्षीणमोहनीय गुणस्थान, १३ सयोगी केवली गुणस्थान, १४ अयोगी केवली गुणस्थान।

१२ ' वारमें बोले पाच इन्द्रियका तेवीस विषय। तेकहेछे— [श्रोतेन्द्रियका तीन विषय.] १ जीव शब्द, २ अजीवशब्द, ३ मिश्रशब्द [चक्षुइन्द्रियका पांच विषय.] १ कालो,२ लिलो (हिरवो) ३ रातो (लाल) ४ पीलो; ५ धोलो [घ्राणेन्द्रियका दो विषय.] १ सुभिगंध, २ दुभिगंध [रसेन्द्रियका पाच विषय] १ कडवो, २ कषायलो, ३ खाटो, ४ मीठो, तीखो, [स्पर्शेन्द्रियका आठ विषय] १ हलको, २ भारी, ३ सित (थन्डो) ४ उष्ण (उन्हो) ५ लूखो, ६ चोपड्यो, ७ खरदरो, ८ सुंवालो !

१३ ' तेरमें बोले दशप्रकारको मिथ्यात्व। तेकहेछे–१ जीवनें अजीव सर्धे (जाणे) तथा कहेतो मिथ्यात्, २ अजीवनें जीव सर्धेतो मिथ्यात्, ३ धर्मनें अधर्म सर्धेतो मिथ्यात्, ४ अधर्मनें धर्म जाणेतो मिथ्यात्, ५ साधुनें असाधु केहेतो

मिथ्यात्, ६ असाधुनें साधु कहेतो मिथ्यात्, ७ संसारका मार्गनें मोक्षको मार्ग जाणेतो मिथ्यात्, ८ मोक्षका मार्गनें संसारको मार्ग जाणेतो मिथ्यात्, ९ आठकर्मथकी मुकाणा तेहने अमुकाणा कहेतो मिथ्यात्, १० अठकर्मथकी अमुकाणा तेहने मुकाणा कहेतो मिथ्यात्!

१४ 'चउदमें बोले छोटीनवतत्त्वका जाणपणाविषे एकसो पदरा भेद,' तेकहेछे—

१ जीव तत्त्वका १४ भेद	६ सम्वर तत्त्वका २० भेद.
२ अजीव तत्त्वका १४ भेद.	७ निर्जरा तत्त्वका १२ भेद.
३ पुण्य तत्त्वका ९ भेद.	८ बन्ध तत्त्वका ४ भेद.
४ पाप तत्त्वका १८ भेद	९ मोक्ष तत्त्वका ४ भेद.
५ आश्रव तत्त्वका २० भेद	(यह सर्व ११५ भेद हुए.)

१ 'जीव तत्त्वका चउदे भेद,' तेकहेछे—[सुक्षम एकेन्द्रियका दो भेद] १ अपर्यासा, २ पर्यासा [बादर एकेन्द्रियका दो भेद.] १ अपर्यासा, २ पर्यासा [बेइन्द्रियका दो भेद.] १ अपर्यासा, २ पर्यासा [तेइन्द्रियका दो भेद.] १ अपर्यासा, २ पर्यासा [चौरिन्द्रियका दो भेद.] १ अपर्यासा, २ पर्यासा [असन्नी पचेन्द्रियका दो भेद] १ अपर्यासा, पर्यासा [सन्नी पचेन्द्रियका दो भेद] १ अपर्यासा, २ पर्यासा!

"२" अजीवतत्त्वके चउदे भेद ' तेकहेछे-[धर्मास्तिकायका तीन भेद.] १ खंध, २ देश, ३ प्रदेश [अधर्मास्तिकायका तीन भेद.] १ खंध, २ देश, ३ प्रदेश [आकास्तिकायका तीन भेद] १ खंध, २ देश, ३ प्रदेश ॥ दसमो-काळ [पुद्गलास्तिकायका च्यार भेद.] १ खंध, २ देश, ३ प्रदेश, ४ परमाणुपुद्गल छुटो !

"३" पुण्यतत्त्वका नव भेद ' तेकहेछे-१ अन्न पुण्य, २ पाण पुण्य, ३ लयण पुण्य, ४ सयण पुण्य, ५ वथ्थ (वस्त्र) पुण्य, ६ मन पुण्य, ७ वचन पुण्य, ८ काया पुण्य, ९ नमस्कार पुण्य।

"४" पापतत्त्वका आद्रा भेद ' तेकहेछे-१ प्राणातिपात=जीवकी हिंसाकरेतो पाप, २ मृषावाद=झुट बोलेतो पाप, ३ अदत्तादान=चोरीकरेतो पाप, ४ मैथुन=कुशिलसेवेतो पाप, ५ परिग्रह राखेतो पाप, ६ क्रोध करेतो पाप, ७ मान=अहंकार करेतो पाप, ८ माया=कपटाई करतो पाप, ९ लोभकरेतो पाप, १० राग=संसार पर 'प्रीति' राखेतो पाप, ११ द्वेषकरेतो पाप, १२ कलह=क्लेश करेतो पाप, १३ अभ्याख्यान=झुटो आळ देवेतो पाप, १४ पैशुन्य=चहाडी, चुगली करेतो

पाप, १५ परपरिवाद=दुसराकी निंद्याकरेतो पाप, १६ रति, अरति=सुख आयासुं हर्ष माने, तथा दुःख आयासुं शोक करेतो पाप, १७ मायामोसो =कपट सहित झुट बोलेतो पाप, १८ मिथ्यादर्शन शल्य=खोटीश्रद्धा (हिंसादिक अधर्मकी श्रद्धा रक्खेतो, तथा केवळी=सर्वज्ञ प्रणीत सूत्र=सिद्धांतमें शका कंखादिक मनमें शल्यराखेतो पाप है

५ "आश्रवतत्त्वका वीस भेद" तेकहेछे—१ प्राणातिपात=जीवकी हिंसाकरेतो आश्रव, २ मृषावाद=झुटबोलेतो आश्रव, ३ अदत्तादान=चोरी करेतो आश्रव, ४ मैथुन=कुशिल सेवेतो आश्रव, ५ परिग्रह राखेतो आश्रव, ६ श्रोतेन्द्रिय मोकळी (खुली) रक्खेतो आश्रव, ७ चक्षुइन्द्रिय मोकळी रक्खेतो आश्रव, ८ घ्राणेन्द्रिय मोकळी रक्खेतो आश्रव, ९ रसेन्द्रिय मोकळी रक्खेतो आश्रव, १० स्पर्शेन्द्रिय मोकळी रक्खेतो आश्रव, ११ मिथ्यात्व=कुदेव, कुगुरु, कुधर्म मानेतो आश्रव, १२ अव्रत=व्रत=पच्चक्खाण नहींकरेतो आश्रव, १३ प्रमाद=आळस करेतो आश्रव, १४ [illegible] पाय करेतो आश्रव, १५ अशुभजोग=माठाजोग प्रवर्तावेतो आश्रव, १६ मन मोकळो रक्खेतो आश्रव

श्रव, १७ वचन मोकळो रख्खेतो आश्रव, १८ काया मोकळी रख्खेतो आश्रव, १९ भंड उपकरण अजयणासूं लेवे, तथा अजयणासूं मेलेतो आश्रव, २० सुई कुसग-मात्र अजयणासूं लेवे, तथा अजयणासूं मेलेतो आश्रव ।

६ 'सम्वरतत्वका वीस् भेद' सेकहेछे-१ प्राणातिपात=जीवकी हिंसा नहीकरेतो सम्वर, २ मृषावाद=झुट नहींबोलेतो सम्बर, ३ अदत्तादान =चोरी नहीकरेतो सम्वर, ४ मैथुन=कुशील नहीसेवेतो सम्वर, ५ परिग्रह नहीराखेतो सम्वर, ६ श्रोतेन्द्रिय वश करेतो सम्वर, ७ चक्षुइन्द्रिय वसकरेतो सम्वर, ८ घ्राणेन्द्रिय वशकरेतो सम्वर, ९ रसेन्द्रिय वशकरेतो सम्वर, १० स्पर्शेन्द्रिय वशकरेतो सम्वर, ११ समकित शुद्ध पाळेतो सम्वर, १२ व्रत पचख्खाण शुद्ध पाळेतो सम्वर, १३ प्रमाद=आळस नहीकरेतो सम्वर, १४ कषाय नहीकरेतो सम्वर, १५ शुभजोग प्रवर्तावेतो सम्वर, १६ मन वशकरेतो सम्वर, १७ वचन वशकरेतो सम्वर, १८ काया वशकरेतो सम्वर, १९ भंड उपकरण जयणासूं लेवे, तथा जयणासूं रख्खेतो सम्वर, २० सुई कुसग-मात्र जयणासूं लेवे, तथा जयणासूं रख्खेतो सम्वर।

कुमार, ८ दिशा कुमार, ९ पवन कुमार, १० स्तनित कुमार [पांच स्थावरका पांच दंडक] तेहना नाम— १ इन्दीथावर काय, २ बंभी थावरकाय, ३ सप्पी थावरकाय, ४ सुमतिथावर काय, ५ पयावच्च थावर काय [विकलेन्द्रियका तीन दंडक] १ बेन्द्रिय, २ तेन्द्रिय, ३ चौरेन्द्रिय, [तिर्यंच पंचेन्द्रियको एक दंडक] तेहना भेद— जलचर, थलचर, खेचर, उरपर, भुजपर ॥ मनुष्यको १ दंडक ॥ वाणव्यन्तरको १ दंडक ॥ जोतिषिको १ दंडक ॥ विमाणिक देवताको १ दंडक ।

१७ सत्तरावें बोले लेश्या छे तेकहछे—१ कृष्णलेश्या, २ निललेश्या, ३ कापोतलेश्या, ४ तेजूलेश्या, ५ पद्मलेश्या, ६ शुक्लिलेश्या ।

१८ आठारमें बोले दृष्टि तीन तेकहेछे—१ सम दृष्टि, २ मिथ्या दृष्टि, ३ सम मिथ्या दृष्टि ।

१९ उगणीसमें बोले ध्यान च्यार तेकहेछे—१ आर्तध्यान, २ रौद्रध्यान, ३ धर्मध्यान, शुक्लध्यान ।

२० बीसमें बोले पट्द्रव्यका भेद तीस ते-कहेछे—१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ काळास्तिकाय, ५ जीवास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय ।

७ निर्जरातत्त्वका बारा भेद ते कहेछे-१ अणसण, २ ऊणोदरी, ३ भिक्षाचरी, ४ रसपरित्याग, ५ कायाक्लेश, ६ पडिसंलेहणा, ७ प्रायश्चित, ८ विनय, ९ वैयावच्च, १० सझ्झाय, ११ ध्यान, १२ काउस्सग !

८ बन्धतत्त्वका च्यार भेद ते कहेछे-१प्रकृतिबन्ध, २ स्थिति बन्ध, ३ अनुभाग बन्ध, ४ प्रदेश बन्ध !

९ मोक्षतत्त्वका च्यार भेद तेकहेछे-१ ज्ञान, २ दर्शन, ३ चारित्र, ४ तप !

१५ पंदरमें बोले आत्मा आठ तेकहेछे-१ द्रव्य आत्मा, २ कषाय आत्मा, ३ जोग आत्मा, ४ उपयोग आत्मा, ५ ज्ञान आत्मा, ६ दर्शन आत्मा, ७ चारित्र आत्मा, ८ वीर्य आत्मा !

१६ सोळमें बोले दन्डक चोवीस ते कहेछे-[सात नारकीको एक दंडक] तेहना नाम -१ गम्मा, २ वंसा, ३ सीला, ४ अंजणा, ५ रीठा, ६ मघा, ७ माघवई ॥ आव तेहना गोत्र-१ रत्नप्रभा, २ शर्कराप्रभा, ३ वालुप्रभा, ४ पंकप्रभा, ५ धुमप्रभा, ६ तमप्रभा, ७ तमस्तमाप्रभा [भवनपतिका दस दंडक] तेहना नाम-१ असुर कुमार, २ नाग कुमार, ३ सुवर्ण कुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्नि कुमार, ६ द्वीप कुमार, ७ उदधि

कुमार, ८ दिशा कुमार, ९ पवन कुमार, १० स्त-नित कुमार [पांच स्थावरका पांच दंडक] तेह-ना नाम— १ इन्दीथावर काय, २ वंभी थावर-काय, ३ सप्पी थावरकाय, ४ सुमतिथावर काय, ५ पयावच्च थावर काय [विकलेन्द्रियका तीन दं-डक] १ बेन्द्रिय, २ तेन्द्रिय, ३ चौरेन्द्रिय, [ति-र्यंच पंचेन्द्रियको एक दंडक] तेहना भेद— जल-चर, थलचर, खेचर, उरपर, भुजपर ॥ मनुष्यको १ दंडक ॥ वाणव्यन्तरको १ दंडक ॥ जोतिषिको १ दंडक ॥ विमाणिक देवताको १ दंडक ।

१७ सत्तरावें बोले लेश्या छे, तेकहेछे—१ कृ-ष्णलेश्या, २ निललेश्या, ३ कापोतलेश्या, ४ ते-जूलेश्या, ५ पद्मलेश्या, ६ शुक्लेश्या ।

१८ आठारमें बोले दृष्टि तीन, तेकहेछे—१ सम दृष्टि, २ मिथ्या दृष्टि, ३ सम मिथ्या दृष्टि ।

१९ उगणीसमें बोले ध्यान च्यार, तेकहेछे—१ आर्तध्यान, २ रौद्रध्यान, ३ धर्मध्यान, शुक्लध्यान।

२० बीसमें बोले पट्द्रव्यका भेद तीस, ते-कहेछे—१ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आ-काशास्तिकाय, ४ कालास्तिकाय, ५ जीवास्ति-काय, पुद्गलास्तिकाय ।

अब—एकेक द्रव्यका पांच२ भेद ॥ १ धर्मास्तिकाय ने पांच बोलकरके ओळखजो—१ द्रव्यथकी एकद्रव्य (द्रव) २ क्षेत्रथकी आखालोक प्रमाणे; ३ काळथकी आदि अन्त रहित; भावथकी अरूपी=वर्णनहीं, गन्धनहीं, रसनहीं, स्पर्शनहीं, गुणथकी चळणगुण; पाणीमें माछळाको दृष्टान्त।

२ अधर्मास्तिकायने पांच बोलकरके ओळखजो—१ द्रव्यथकी एक द्रव; २ क्षेत्रथकी आखालोक प्रमाणें; ३ काळथकी आदि अन्त रहित; ४ भावथकी अरूपी=वर्णनहीं, गन्धनहीं, रसनहीं, स्पर्शनहीं. ५ गुणथकी स्थिरगुण; थकाहुवा पन्थीने छायाको दृष्टान्त।

३ आकाशास्तिकाय ने पांच बोलकरके ओळखजो—१ द्रव्यथकी एकद्रव्य; २ क्षेत्रथकी लोकालोकप्रमाणें; ३ काळथकी आदि अन्त रहित; ४ भावथकी अरूपी=वर्णनहीं; गन्धनहीं, रसनहीं, स्पर्शनहीं; ५ गुणथकी आकाशमें विकाशको गुण ॥ दूधमें पतासाको, तथा भींतमें खूंटीको, दृष्टान्त।

४ काळास्तिकाय ने पांच बोलकरके ओळखजो—१ द्रव्यथकी एक द्रव्य तथा अनंता द्रव्य ते अनंता काळचक्र हुवा, इणवास्ते अनंता द्रव्य २ क्षेत्रथकी अढाईद्वीप प्रमाणें; ३ काळथकी आदि

अन्त रहित; ४ भावथकी अरूपी=वर्णनहीं, गन्धनहीं, रसनहीं, स्पर्शनहीं; ५ गुणथकी वर्त्तनो लक्षण! कतरनी को दृष्टान्त, तथा नवाने जूनो करे; जूनाने खपावे!

५ जीवास्तिकाय ने पांच बोलकरके ओळखजो—१ द्रव्यथकी जीव अनंता; २ क्षेत्रथकी आखालोकप्रमाणें, ३ काळथकी आदि अन्त रहित ४ भावथकी अरूपी=वर्णनहीं, गन्धनहीं, रसनहीं, स्पर्शनहीं, ५ गुणथकी चैतन्य गुण; चन्द्रमाको दृष्टान्त!

६ पुद्गलास्तिकाय ने पांच बोलकरके ओळखजो—१ द्रव्यथकी पुद्गल अनंता; २ क्षेत्रथकी आखालोकप्रमाणें; ३ काळथकी आदि अन्त रहित; ४ भावथकी रूपी=वर्णहै, गन्धहै, रसहै, स्पर्शहै; ५ गुणथकी पूरण गलन=सडन, पडन, विध्वंसण; बादळाको दृष्टान्त!

२१ एकवीसमें बोले रासि दोय तेकहेछे—१ जीव रासि, २ अजीव रासि!

२२ बावीसमें बोले श्रावकजीका व्रत बारा तेकहेछे—१ पहिलाव्रतमें श्रावकजी त्रसजीव हणवाका (मारवाका) त्यागकरे, थावरजीवकी मर्यादाकरे॥ दुसरा व्रतमें मोटको झूट बोलेनहीं॥ तीजाव्रतमें ——— चोरीकरेनहीं॥ ...

पराई स्त्री का त्यागकरे, तथा परणेली स्वताकी स्त्री की मर्यादाकरे ॥ पांचमा व्रतमें, परिग्रहकी मर्यादाकरे ॥ छट्टाव्रतमें. छे दिशाकी मर्यादाकरे ॥ सातमा व्रतमें पंदराकर्मादानका त्यागकरे, तथा छव्वीसबोलकी मर्यादाकरे ॥ आठमा व्रतमें अनर्थादंडका त्यागकरे ॥ नवमा व्रतमें त्रिकाल शुद्ध सामायिक करे ॥ दशमा व्रतमें देसावगासिक पोषध करे ॥ इग्यारमा व्रतमें प्रतिपूर्ण पोषध करे ॥ बारमा व्रतमें मुनि महासतीको शुद्ध=निर्दोष आहार पाणी प्रमुख १४ प्रकारको दानदेवे !

२३ ' तेवीसमें बोले मुनि महासतीका महाव्रत पांच ' तेकहेछे–१ पहिला महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथाप्रकारे कोईभी जीवकी हिंसा करेनहीं, करावेनहीं, करताने भलोजाणेनहीं ॥ मन वचन काया करने; तीन करण, तीन जोगसू !

दूसरा महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथाप्रकारे झूट बोलेनहीं, बोलावेनहीं, बोलताने भलोजाणेनहीं ॥ मन वचन काया करने; तीनकरण–तीनजोगसूं !

तीसरा महाव्रतमें साधुजीमहाराज, सर्वथाप्रकारे चोरीकरेनहीं, करावेनहीं, करताने भलोजाणे ॥ मनवचन कायाकरनें; तीनकरण–तीनजोगसूं !

चौथा महाव्रतमें साधुजी महाराज सर्वथाप्रकारे मैथुन सेवेनहीं, सेवावेनहीं, सेवतांने भलोजाणेनहीं ॥ मन वचन काया करने; तीनकरण–तीनजोगसूं !

पांचवा महाव्रतमें साधुजीमहाराज सर्वथाप्रकारे परिग्रह राखेनहीं, रखावेनहीं, राखतानें भलोजाणेनहीं ॥मनवचन कायाकरणे;तीनकरण तीनजोगसूं॥

२४, चौवीसमेंवोले गुणपचास भांगाका जाणपणो कहेछे–॥ अंक ११ इग्याराको भांगाउपजे नव, एककरण, एकजोगसूं केणा॥ १ करूनहीं मणसा, २ करूंनहीं वयसा, ३ करूनहीं कायसा ॥ ४ कराउंनहीं मणसा, ५ कराउनहीं वयसा, ६ कराउंनहीं कायसा ॥ ७ अणमोदुंनहीं (भलोजाणुंनहीं) मणसा, ८ अणमोदुंनहीं वयसा, अणमोदुंनहीं कायसा !

आंक १–१२ को, भांगाउपजे नव, एककरण दोजोगसूं केणा॥ १ करूनहीं मणसा वयसा, २ करूंनहीं मणसा कायसा, ३ करूनहीं वयसा कायसा ॥ ४ कराउनहीं मणसा वयसा, ५ कराउनहीं मणसा कायसा, ६ कराउंनहीं वयसा कायसा, ॥ ७ अणमोदुंनहीं मणसा वयसा, ८ अणमोदुंनहीं मणसा कायसा, ९ अणमोदुनहीं वयसा कायसा !

आंक १–१ उपजे तीन, एककरण

तीनजोगसूं केणा ॥ १ करूंनहीं मणसा वयसा कायसा ॥ २ कराउंनहीं मणसा वयसा कायसा ॥ ३ अणमोदुंनहीं मणसा वयसा कायसा ॥

आंक १-२१ को, भांगाउपजे नव, दोकरण एकजोगसूं केणा ॥ १ करूंनहीं कराउंनहीं मणसा, २ करूंनहीं कराउंनहीं वयसा, ३ करूंनहीं कराउंनहीं कायसा ॥ ४ करूंनहीं अणमोदुंनहीं मणसा, ५ करूंनहीं अणमोदुंनहीं वयसा, ६ करूंनहीं अणमोदुंनहीं कायसा ॥ ७ कराउंनहीं अणमोदुंनहीं मणसा, ८ कराउंनहीं अणमोदुंनहीं वयसा, ९ कराउंनहीं अणमोदुंनहीं कायसा ।

आंक १-२२ को, भांगाउपजे नऊ, दोकरण दोजोगसूं केणा ॥ १ करूंनहीं कराउनहीं मणसा वयसा, २ करूनहीं कराउंनहीं मणसा कायसा, ३ करूंनहीं कराउंनहीं वयसा कायसा ॥ ४ करूंनहीं अणमोदुंनहीं मणसा वयसा, ५ करूंनहीं अणमोदुंनहीं मणसा कायसा, ६ करूंनहीं अणमोदुनहीं वयसा कायसा ॥ ७ कराउंनही अणमोदुंनहीं मणसा वयसा, ८ कराउंनहीं अणमोदुंनहीं मणसा कायसा, ९ कराउंनहीं अणमोदुंनहीं वयसा कायसा ।

आंक १-२३ को, भांगाउपजे तीन, दोकरण

तीनजोगसू केणा ॥ १ करूंनहीं कराउंनहीं मणसा वयसा कायसा, २ करूंनहीं अणमोदूंनहीं मणसा वयसा कायसा, ३ कराउंनहीं अणमोदूंनहीं मणसा वयसा कायसा ।

आंक १-३१ को, भांगाउपजे तीन, तीनकरण एकजोगसूं केणा ॥ १ करूनहीं कराउनहीं अणमोदूंनहीं मणसा, २ करूनहीं कराउंनहीं अणमोदूनहीं वयसा, ३ करूंनहीं कराउनहीं अणमोदूनहीं कायसा ।

आंक १-३२ को, भांगाउपजे तीन, तीनकरण दोजोगसू केणा ॥ १ करूंनहीं कराउंनहीं अणमोदुनहीं मणसा वयसा, २ करूनहीं कराउंनहीं अणमोदूंनहीं मणसा कायसा, ३ करूंनहीं कराउंनहीं अणमोदूनहीं वयसा कायसा ।

आंक १-३३ को, भांगाउपजे एक, तीनकरण तीनजोगसू केणा, ॥ करूंनहीं कराउनहीं अणमोदुनहीं मणसा वयसा कायसा ।

२५, पच्चीसमें बोले चारित्रपांच, तेकहेछे-१ सामायिक चारित्र, २ छेदोपस्थापनीय चारित्र, ३ परिहार विशुद्ध चारित्र, ४ सूक्ष्म सम्पराय चारित्र, ५ जथाख्यात चारित्र । ॥ इतिश्री पच्चीस बोलका थोकड़ा समाप्तम् ॥

बत्तीस–असज्झाय.

(१) प्रातःकाळ=सूर्यउदयहोते, (२) मध्यान्में, (३) संझा समय=सूर्यअस्तहोते, (४) मध्यान्रात्रीमें =आधरात्रीमें; इन् च्यारही वक्तमें सदा=हामेशां एकर मुहूर्ततक् असज्झाय (अस्वाध्याय) होतीहै। (५) कार्तिकशुक्लपूर्णिमा, (६) मार्गशीर्षकृष्ण प्रतिपदा, (७) चैत्रशुक्लपूर्णिमा, (८) वैशाखकृष्णप्रतिपदा, (९) आषाढशुक्लपूर्णिमा, (१०) श्रावणकृष्णप्रतिपदा, (११) भाद्रपदशुक्लपूर्णिमा, (१२) आश्विन कृष्णप्रतिपदा, इन् ८ दिनोंमें सम्पूर्ण दिन और–रात् असज्झाय रहेतीहै। (१३) आकाशमें तारातुटेतो एकमुहूर्ततक्, (१४) वडीफजर और–शाम् तथा दूसरी कोइभी वक्तमें 'दिशा लाल' रंगकी रहे वहां तक्, (१५) आकाशमें गर्जना करे (गाजे) तो एकमुहूर्त तक्, (१६) बिजली चमकेतो एकमुहूर्ततक्, (१७) आकाशमें कडाइड २ कडकेतोआठपहरतक्, (१८) बाळचन्द्र=प्रत्येक शुक्लपक्षकी प्रतिपदा, द्वितिया, तृतिया, यह ३ तिथीके रात्रिमें चन्द्रमा रहे वहांतक्, (१९) आकाशमें मनुष्य पशु पिशाचादिकके चिन्हदिखे वहां तक्, (२०) काली धूंइ (धूवर) पडे वहां तक्, (२१) ठार तथा

शमें धूलके गोटे चढेहुवे दृष्टिआवे वहातक, (२३) हड्डी (हाडका) दृष्टिआवे वहातक, (२४) मास दृष्टिआवे वहातक, (२५) रुद्र (रक्त=लोइ=खुन) तथा रस्सी (पीप=पु) दृष्टिआवे वहातक, (२६) विष्टा दृष्टिआवे वहातक, (२७) स्मशाण दृष्टिआवे वहातक, तथा स्मशाणके च्यारो तरफ १००–१०० हाथ जमीन तक, (२८) चन्द्रग्रहण खग्रासहोवेतो बारामहरतक, अगर कमहोवेतो कमवक्ततक, अर्थात्–ग्रहणपरसें वो प्रमाण विचार लेना, (२९) सूर्यग्रहण खग्रासहोवेतो बारामहरतक, अगर कमहोवेतो कमवक्ततक, अर्थात्–ग्रहणपरसें वोभी अनुमान=प्रमाण समजलेना, (३०) सूत्र=सिद्धान्तकी सज्झाय करनेंवाले जिस देशमें होवे उस देशका राजानीके मृत्यूकी हडताले रहे वहांतक, तथा वहापर कोइ बडा (प्रख्यात) आदमी (मनुष्य) गुजरा (मरा) होवेतो ओहीं एकदीनतक, (३१) उसदेशकेराज्यमें विग्रहोवे अगर राजाओंका युद्धहोवे वहातक, (३२) पचेन्द्रियका कलेवर (जीव रहित शरीर) पडाहोवे वहासें च्यारोतरफ १००–१०० हाथतक ॥ इति ॥

सुचना यह ३२ प्रकारकी असज्झाय वर्जकर (टाळकर) सूत्र=सिद्धान्त पढना (वाचना, घोखना) चाहिये। और सूत्र बांचनेंवालोंकों . . . उनकाबहुमान करना।

यह जीवके पाचलक्षणपरसे—पंचम् गति तकका;

संक्षिप्तमें सारांश खुलासा.

१ यहजीव सुपारीको साथी, उपरसु काठो (कठोर), मायसु (अन्दरसें) काठो, वो जीव मरणे कठे (कहा) जावे ? उत्तर—नरकगतिमें जावे।

२ यहजीव खारक (खजुर), को साथी, उपरसु सी- ठो। मायसु काठो, वो जीव मरणे कठेजावे ? उत्तर— तिर्यचगतिमें जावे।

३ यहजीव बदामको साथी, उपरसु काठो। मायसु कोमल (नरम), वो जीव मरणे कठेजावे ? उत्तर— देवगतिमें जावे।

४ यहजीव नारेळको साथी, उपरसु काठो। मायसु कोमल, वो जीव मरणे कठेजावे ? उत्तर—मनुष्य ग- तिमें जावे !

५ यहजीव द्राक्षको साथी, उपरसु कोमल। मायसु कोमल, वो जीव मरणे कठेजावे ? उत्तर—मोक्षगतिमें जावे!

॥ इति श्री नवमा प्रकरण समाप्तम्॥

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

इति श्रीमलोकागच्छान्तरीय आदि (प्रथम=मुळ) सम्प्रदायिकके स्वामी—परमपूज्यपाद श्रीमान श्री

कहानजीऋपिजी महाराजके अनुयायि–प्रवरप-
ण्डित कवीवरेन्द, श्रीतिलोकऋषिजी महारजके पा-
टवीशिष्ये–पूज्यपाद जैनाचार्य श्रीरत्नऋषिजी महा-
राजके सुशिष्य सरळस्वभावी मुनिश्री दगडुऋषिजी
महाराज सग्रहित और–अनुवादित “ रत्न अमोल
मणि प्रकाशिका ” अपर नाम ‘ आवश्यक निर्पक्ष
सत्य बोध. ’ नामक ग्रन्थका प्रथम–भाग समाप्त.

श्री “ रत्न अमोल मणि प्रकाशिका ”
अपर नाम. ‘ आवश्यक निर्पक्ष सत्य बोध. ’
नामक ग्रन्थका प्रथम–भाग का शुद्धि पत्रम्.

☞ अहो–प्रियपाठक गणों ! प्रथम निमन
लिखीत अशुद्धियोंको शुद्ध करके, फिर–यत्ना
सहित पडीयेगाजी.

पृष्टांक	पक्ति–लैन	अशुद्ध.	शुद्ध.	
१	८	प्रकाशिका	प्रकाशिका	॥१॥
१	१५	म्ससयक्त्व	सम्यक्त्व	
२	टीप. १६	चोविश	बत्तीस	
५	१	विज्ञते	विंज्ञते	
६	टीप. २१	चतुमुखी	चतुर्मुखी	

पृष्टांक.	लैन=ओली	अशुद्ध	शुद्ध.
६	११	योजना)	योजन.)
६	१२	जिसमें	जिससें
६	१६	जिसमें	जिससें
७	४	ग्रन्थ	गन्ध
७	१०	हई)	हुई.)
७	१६	बीली	विछी
७	टीप २१	चरणं	चपणं
७	टीप. २१	भासाए	भाषाए
८	८	अथवा	अथवा
१०	१९	विशेप	विशेष
११	१	विरोध	विरोध
१४	५	हुवे हुवे	हुवे हुव
१४	१२	अपक्षासें	आपेक्षासें
१६	१३	किचित	किंचित
१७	१५	देवका	देनका
२३	हेडिंग. ६	समय.	संयम.
२७	१३	हाजाय,	होजाय,
२७	२१	(उमयोगमें	(उपयोगमें
२९	७	हालकपणा	हालके पणा
३०	१	श्रृंगार	शृंगार
३०	८	(४८ मिनीट	(४८ मिनीट)
३०	१३	(विकार) द्रष्टीसें	विकार दृष्टिसें

शुद्धि पत्रम्

पृष्टाक	पक्ति=ओ.	अशुद्ध	शुद्ध
३०	१८	पडादादिक	पडदादिक
३२	७	(शृगार)	शृगार
३३	१५	कराया.	कराया होय,
३५	७	'भंजन दौप'	'भंजन दोष.'
३८	१६	साधु	साधुसें
४०	१०	श्रद्ध	श्रद्धा
५७	१५	दुर्णोको	दुर्गुणों को
६२	२१	धेर्यवंत	धैर्यवंत
६४	१९	करेके	करके
७०	९	१९ 'कायन्तु'=	१९ 'कयन्तु'
७०	१७	सागस्य	सागरस्य
७१	१	वाला	वाले
७२	९	अर्थमेंतो	अर्थमेतो
७९	७	हात्रेगा ?	होवेगा ?
८१	३	सपात्र	सत्पात्र
८३	१०	लानसें	लानेसें
८७	१२	भटीके	मट्टीके
८८	४	पाठ	पाट
८८	५	पाठ	पाट
१०३	७	दुहा	दोहा—
१०४	–	वाळी	वाली

पृष्टांक	पंक्ति=लैन	अशुद्ध	शुद्ध
१०५	१०	उवज्झयाण	उवज्झायाणं,
१०५	१८	सम्मणोमि,	सम्माणेमि,
१०६	१०	पसरा—	पासरा—
१०७	८	' सामायि '	' सामायिक '
१०७	१५	वाहयाए,-	वहियाए,
११२	हेडिंग १	प्रकरण)	पृष्टांक. ११२
११२	हेडिंग १	११२	(प्रकरण,
११२	३	पुरिसुत्तामाणं	पुरिसुत्तमाणं,
११२	४	पुडरियाणं	पुंडरियाणं,
११४	३	आलेउ	आलेउं
११४	९	वचवका	वचनका
११४	१२	आहर	आहार
११४	१५	सामायियमें	सामायिकमें
११५	१८	दुहा—	दोहा—
११५	१९	रचाना	रचना
१२०	१३	द्रष्टीसें,	दृष्टीसें
१२०	१५	आदारे,	आन्दें
१३२	२	होउंगा ?	[illegible]

टाक	पक्ती	अशुद्ध	शुद्ध
१४९	१४	उत्कष्टा	उत्कृष्टा
१५०	११	प्र०	प्रतिक्रमण
१५४	टीप.२०	मै	में
१५४	टीप.२१	में,	में लिखाहै,
१५५	२	चरिताचरित,	चारित्र,
१५५	हेडिंग ७	आवश्यक.	आवश्यक प्रारभ
१५५	टीप. १७	आवश्मकमें	आवशकर्मे
१५७	७	उत्तरीकणेणं	उत्तरी करणेण,
१५७	टीप. १४	लगा,	लगाहोवे
१५७	टीप. १२	'पश्चात्तापे शुद्धती'	'पश्चात्तापेन शुद्ध्यति'
१५८	२	हुज्जमे	हुज्ज मे
१५८	विधी ११	आव	अब
१५९	विधी ५	करणेके	करणेके लिये—
१६३	१२	ऐसी	ऐसी अभक्ष
१६७	११	होय,	होय, परठावण-की थोडी जागा देखीहोय,
१६८	३	१ मुजती	१ सुजती
१६९	२०	दुव्विहिंतिओ	दुव्विचिंतिओ,
१७०	सूचना १२	हुवा हुवा	हुवा
१७०	२०	धायो	ध्यायो

पृष्टांक	ओली	अशुद्ध	शुद्ध.
१८८	हेडिंग १६	अणुव्रत	गुणव्रत
१८९	५	तिर्छि,	३ तिर्छि,
१८९	हेडिंग ११	अणुव्रत	गुणव्रत
१८९	१२	अणुव्रत	गुणव्रत
१९२	हेडिंग २०	अणुव्रत	गुणव्रत
१९२	२१	अणुव्रत	गुणव्रत
१९३	हेडिंग १९	अणुव्रत	शिक्षाव्रत
१९३	२०	व्रत,	शिक्षाव्रत,
१९४	हेडिंग १२	अणुव्रत	शिक्षाव्रत
१९४	१३	व्रत,	शिक्षाव्रत,
१९५	हेडिंग १४	अणुव्रत	शिक्षाव्रत
१९५	१५	व्रत,	शिक्षाव्रत
१९५	१८	विलेपणाका	विलेपणका
१९७	हेडिंग ४	अणुव्रत	शिक्षाव्रत
१९७	९	व्रत,	शिक्षाव्रत,
१९९	७	चच्चख्खामि,	पच्चख्खामि,
२०१	१	सिद्ध	सिद्ध केवली
२०१	हेडिंग ७	धमस्सका	धम्मस्सका
२०१	८	अभ्भुठिउमि,	अभ्भुठिओमि,
२०१	९	विरउमि.	विरओमि
२०१	विधी १९	जोड	जोडकर
२०२	[illegible]	[illegible]रमानजी,	विहरमानजी,

पृष्टाक.	लैन	अशुद्ध.	शुद्ध.
२०९	हेडिंग १२	वंदणा	समुच्चय वंदणा
२११	हेडिंग १३	सवैय्या एकतीसा	पंचपरमेष्टि महिमा सवैय्या एकतीसा.
			धारी हे ॥
२१२	२	धारी हे	
२१३	हेडिंग १७	+ फिर दोहा कहना *	फिर-प्रभुस्तुति तथा उपदेशी दोहा कहना
२१५	हेडिंग १६	अडाइद्विप	अढ्ढाइ द्वीप
२१५	१७	अडाइद्विप	अढ्ढाइ द्वीप
२२२	हेडिंग १२	प्रमाणें	प्रमाणें ४
२२३	३	साता	यथा शक्ति साता
२२३	६	झुठाको	झुठाको
२२४	५	सपाविउ	संपाविओ
२२६	८	आवशक	आवशक
२२८	९	मांहेरे	माह्यरे
२३०	५	भगु ने जसा	भग्गु ने जस्सा।
२३०	२०	मृगा पुत्र	मृघापुत्र
२३६	११	अनुत्तरववघाइमा	अनुत्तर ववाइमें
२३७	१४	हुषा	हुवा
२४२	१२	जीव	जीव
२४२	२०	निकदं	निकंद
२४३	५	विग्रे	विग्रह

पृष्टांक	पक्ति.	अशुद्धः	शुद्ध
२४४	६	स्त्रोत	स्तोत्र
२४५	१३	उज्जक	उज्वल
२४७	२०	जयसुखकार ।१।	जयसुखकार, नवकार ॥१॥
२४९	१८	वढावे,	बढावे,
२५१	७	जग	तुम जग
२५२	४	झूठ	झूट
२५३	५	रुव ।	रूप ।
२५३	२१	जीव ।	जींव ।
२५४	७	विमास ॥	वियास ॥
२५४	१७	द्रगकाल	दृगकाल
२५५	२	ध्यान	ध्यान जो
२५५	८	गरिव	गरिव
२५५	१४	नासे	भागे
२५५	१६	सज्यन	सज्जन
२५७	१	स्मामी	स्वामी ॥
२५७	१३	महाराजके,	महाराजको,
२५८	३	मुजन	मुजने
२५८	४	चरणारे	चरणारो ॥
२५८	१७	क्रुश	द्वेष
२६३	४	वरणी	वरणी
२६९	१६	[illegible]	विद्याचारी

पृष्टांक	लैन.	अशुद्ध	शुद्ध
२७८	९	चरणी	चरची
२७६	६	बाजरे	बाजेरे
२७७	१०	नव्हराते ॥	नव्हरावे ॥
२७९	९	दुरेटले ॥	दुरे टाले ॥
२८०	२०	नम	मन
२८३	२०	शिसेमणी	शिरोमणि
२८४	१७	हजारके	हजारके ॥
२८५	५	॥ दुहा ॥	॥ दोहा ॥
२८५	१५	व्यव्हनमें	ब्याव्हनमें
२८८	१०	अछेरारे	अछेरारे ॥
२८९	५	वदु	॥ वंदु०॥ वंदु० ॥
२८९	६	च्याको	ज्याको
२९२	१९	सदाइमगावे	सदा इम गावे ॥
२९४	१	तकवार,	तलवार,
३००	५	मारावाको ।	मारवाको
३०१	१३	माइत्तो	माईतो
३०२	१	विच	विष
३०२	७	खिस्था	खिस्या
३०३	५	वेरागीया	वेरागीया
३०५	१	सरे	
३०५	८	अतर	अन्तर
३१०	उ. होडिंग	प्रकरण.)	३१०

पृष्ठांक	ओली.	अशुद्ध	शुद्ध
३१०	उ होडिंग	३१०	प्रकरण.)
३१०	१२	सां	सो–
३१२	१	ज्रूटेकी	झूटेकी
३१२	१०	वाका	वाला
३१२	१५	संवत	सवत
३१४	१९	नवम	अष्टम
३२६	१	पाम्य	पाम्या
३२७	१०	॥ दुहा ॥	॥ दोहा–
३३०	१	ऋपघुदेवंजी	ऋषभ देवजी
३३०	२	॥ भरतेश्वर० ॥	॥ भरतेश्वर०॥
३३१	९	उपन्थो	उपन्यो
३३२	६	आनामिले	आनमिले
३३४	६	शिवपूरके	शिवपूरके
३३६	१५	वज्याचे	वज्यांचे
३३६	१८	वेघले	वेधले
३३८	होडिंग ६	रिष्टनेमी	रहनेमी
३४१	१८	रिष्टनेम ॥	रहनेम ॥
३५१	६	बुलावो ॥	बुलावो ॥
३५८	१३	विनवे ।	विनचे ।
३६६	१२	मिल्थो	मिल्यो
३७४	२१	जोवनके	जोवनके
३८४	१४	विनराग	विनरोग

पृष्टांक.	लैन.	अशुद्ध.	शुद्ध
३८८	१७	७ सातमें	७ सातमें
३९०	९	अनुकम्या	अनुकम्पा
३९२	१५	२ सलाम	२ सलाप
३९३	२६	वोले	वोले
३९६	१०	अचक्षुर्शन	अचक्षु दर्शन
४०४	७	२ अधर्मा- स्कायने	२ अधर्मास्ति- काय ने

☞ इन सिवाय औरभी–मेरी अल्पबुद्धिसें तथा नजर चुकसें परमादके कारणसें–रहस्व दीर्घ का ना मात्रा अक्षर चरण रेघ पूर्णविराम स्वल्पवीराम अर्धवीराम विसर्ग उद्गार चिन्ह, प्रश्न चिन्ह वगेरे बहुतही चुक रहगइहै! सो सुज्ञजन कृपा करके सुधारकर यत्ना युक्त पढियेगाजी !